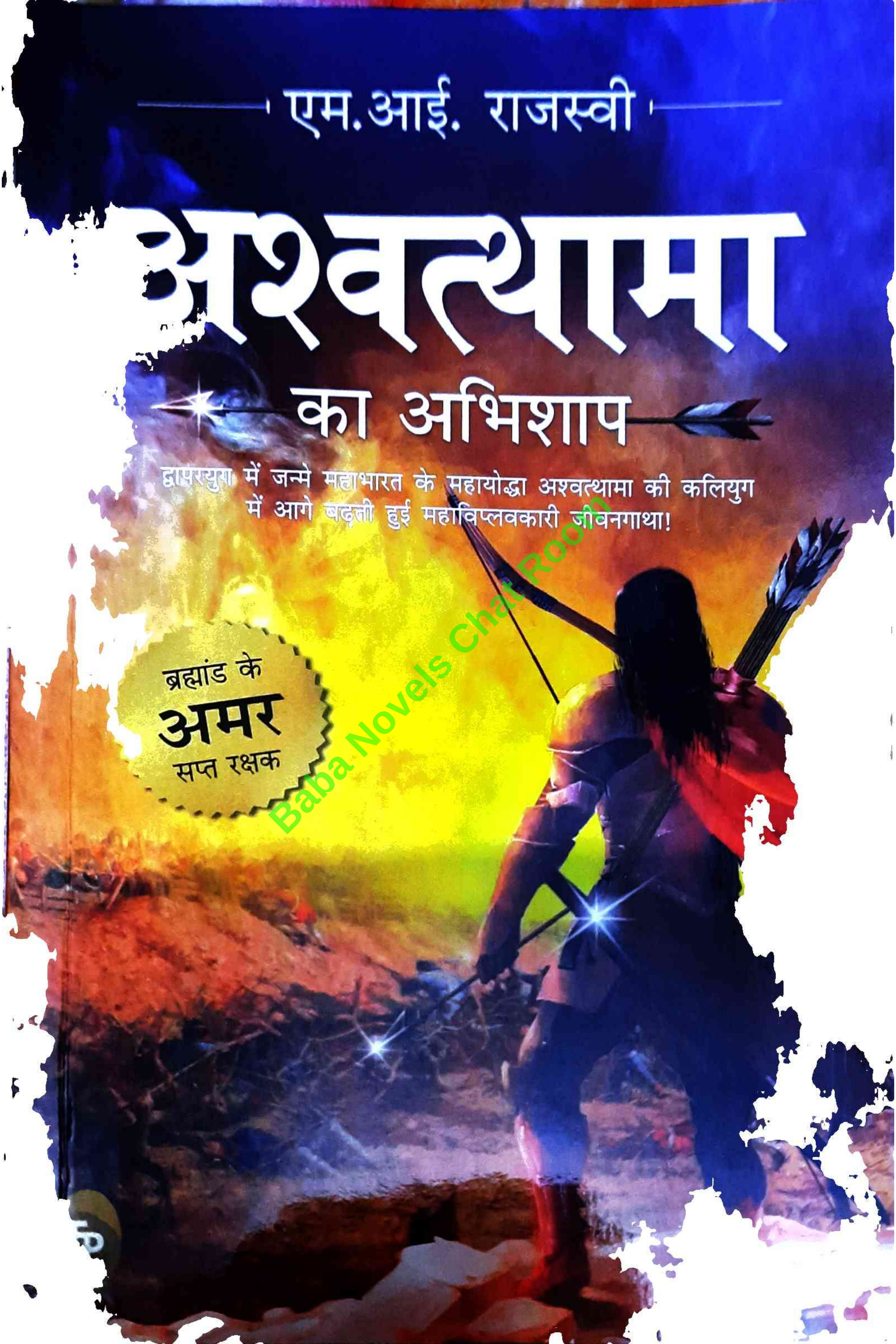

Baba Novels Chat Room

"हम चाहते हैं कि स्वेच्छाचारी शासकों तक यह संदेश पहुंचे कि यदि उन्होंने शक्ति के अहंकार में मानवता को पीड़ित किया तो हम 'ब्रह्मांड के सप्त रक्षक' उसे दंडित करेंगे। हम नियति द्वारा नियुक्त शांति की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

—अमर महायोद्धा अश्वत्थामा

अश्वत्थामा के नेतृत्व में अमर सप्त रक्षकों का ब्रह्मांड में शांति स्थापना का प्रयास ही है—'**अश्वत्थामा का अभिशाप**'।

Baba Novels Chat Room

अश्वत्थामा

का अभिशाप

द्वापरयुग के महायोद्धा अश्वत्थामा के नेतृत्व में ब्रह्मांड के अमर सप्त रक्षकों का कलियुग में पृथ्वीलोक को विनाश से बचाने का प्रयास!

Baba Novels Chat Room

लेखक

एम.आई. राजस्वी

(उ.प्र. हिंदी संस्थान से सम्मानित)

FINGERPRINT!

अमर सप्त रक्षक पौराणिक पात्रों का रक्षक स्वरूप

अश्वत्थामा—महाभारत का एक महायोद्धा! पांडवों के गुरु आचार्य द्रोण का पुत्र!! पराक्रम में अतिश्रेष्ठ!!! सहस्रों वर्ष पूर्व हुए महाभारत के महायुद्ध में अपने पिता की कपटपूर्ण हत्या के पश्चात् प्रतिशोधस्वरूप उन्होंने द्रौपदी के पांचों पुत्रों की नृशंसता से हत्या कर दी थी और नारायणास्त्र चलाकर पांडवों का समूल विनाश करना चाहा था। भगवान श्रीकृष्ण ने उस अपराध के लिए अश्वत्थामा के मस्तक से मणि निकालकर उन्हें चिरकाल तक पीड़ित होने का दंड दिया। अनंतकाल तक पीड़ा झेलने के लिए अनायास ही अमरता का वरदान प्राप्त अश्वत्थामा को जब अपने अपराध का बोध हुआ तो वे प्रायश्चित्त हेतु तपस्यारत हो गए।

अश्वत्थामा के अमरत्व का तथ्य विभिन्न शास्त्रों में वर्णित किया गया है। अत: आने वाले युगों में भी उनके अस्तित्व पर जन-साधारण का विश्वास बना रहा। दंतकथाओं में उनकी चर्चा यदा-कदा होती रही। आधुनिक जगत भी इससे अछूता नहीं है। यद्यपि इंटरनेट की दुनिया में कदम रख चुका आधुनिक जगत ऐसी चर्चाओं को नहीं मानता, तथापि इंटरनेट पर उनसे संबंधित विभिन्न कहानियां और वीडियो खूब प्रचलित हुए हैं।

अश्वत्थामा के जीवित होने की खबर प्राय: मीडिया में वायरल होती रहती है। इसी कड़ी में दावा किया जाता रहा है कि अश्वत्थामा को मध्य प्रदेश के बुरहानपुर में असीरगढ़ के किले के आसपास के बीहड़ में देखा जाता रहा है। बहुत से लोग उसे देखने का दावा करते है, परंतु प्रमाण किसी के पास नहीं है। उनसे जुड़ी कई कहानियां भी आंचलिक क्षेत्रों में प्रचलित हैं। कोई कहता है, अश्वत्थामा को देखने वाला अंधा हो जाता है तो कोई गूंगा हो जाने की पुष्टि करता है।

ऐसे में दिल्ली के एक नए चैनल का पत्रकार प्रभास अश्वत्थामा की खोज के लिए बुरहानपुर पहुंच जाता है। यह नक्सलाइट प्रभावित क्षेत्र है। यहां आकर प्रभास नक्सली नेटवर्क के बारे में कुछ रहस्य जान जाता है। एक दिन वह अपने मूल मिशन में कामयाब हो जाता है और अश्वत्थामा से साक्षात्कार करता है। अश्वत्थामा

Baba Novels Chat Room

जब सामने आता है तो घटनाक्रम इस प्रकार घूमता है कि वह महायोद्धा शिवभक्त एक शिवद्रोही को दंड देने के लिए उत्तर कोरिया चला जाता है। उत्तर कोरिया का तानाशाह, जो दुनिया को हाइड्रोजन बम बनाकर भयभीत कर रहा है, अपने ही देशवासियों को प्रतिबंधित जीवन जीने के लिए विवश करता है। ऐसे में अश्वत्थामा न केवल उसके अहंकार को चूर-चूर करते हैं, बल्कि उसकी आयुधशाला को जलमग्न करके संसार को उसके शस्त्र-भंडार से मुक्ति भी दिलाते हैं।

विश्व-रक्षक की भूमिका में आ चुके अश्वत्थामा को आधुनिक युग में प्रवेश करने और पुरातन युग से सामंजस्य स्थापित करने में छह अन्य अमर पौराणिक पात्र—लंकापति विभीषण, असुरराज बलि, रामभक्त हनुमान, आचार्य कृप, महर्षि व्यास एवं भगवान परशुराम सहयोग प्रदान करते हैं। ब्रह्मांड के इन सप्त रक्षकों के परम पुण्य कृत्यों से परिपूर्ण प्रस्तुत पुस्तक **'अश्वत्थामा का अभिशाप'** में **प्राचीन और नवीन के संबंधों को प्रभावशाली ढंग से उकेरने का प्रयास किया गया है। भारतीय संस्कृति की रक्षा में नई पीढ़ी को प्रेरित करने का उद्देश्य ही इस कथानक का प्रमुख लक्ष्य है। हमें नवीनता के नभ में उड़ान भरनी है तो प्राचीनता का भी सम्मान करना होगा, क्योंकि बहुरंगी भारत प्राचीन सभ्यता के स्तंभों पर टिककर ही भव्य बनता है।**

मुझे आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि अश्वत्थामा सहित अमर सप्त रक्षक पौराणिक पात्रों का इस पुस्तक में प्रस्तुत रक्षक स्वरूप पाठकों को अवश्य पसंद आएगा। कृपया पुस्तक के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत कराएं।

—एम.आई. राजस्वी
m.i.rajasve@gmail.com

Baba Novels Chat Room

अनुक्रमणिका

1. टी.वी. चैनल्स पर अश्वत्थामा 11
2. तानाशाह किम-जोंग-उन का विप्लवकारी भाषण 15
3. कोरियन क्रांतिकारी सांग-सी-चिन 19
4. चिरकालिक तपस्या में व्यवधान 23
5. हाइड्रोजन बम का परीक्षण 27
6. असीरगढ़ के किले में अश्वत्थामा 31
7. नक्सली-आतंकी गठजोड़ 35
8. अश्वत्थामा के विचरण की पुष्टि 39
9. दो चिरंजीवियों का मानसिक संपर्क 43
10. एमेले की अश्वत्थामा-कथा 49
11. बागी और आंतकी में अंतर 53
12. आतंकी सरगना की दहशतनाक योजना 59
13. अश्वत्थामा की खोज में: एक नई टीम 63
14. अश्वत्थामा की साक्षात् उपस्थिति 69
15. अमेरिका को करारा जवाब 77
16. अश्वत्थामा की उद्विग्नता 81
17. सैयादी पर एन.आई.ए. की नजर 85
18. एमेले का 'डबल क्रॉस गेम' 93
19. सांग-सी को सत्य-दर्शन 101
20. अश्वत्थामा की कलिमानव से भेंट 107
21. सैयादी का 'लिटमस टेस्ट' 113
22. सांग-सी का शांति-उपदेश 117
23. दुर्लभ पूजा-पुष्प 121
24. यार-मार राक्षस 127
25. इंटरनेशनल डेस्ट्रॉय स्क्वायड 131

Baba Novels Chat Room

26. प्रेम और अहिंसा का संदेश 139
27. सांप्रदायिक दंगा भड़काने की साजिश 147
28. सांग-सी का शांति-संदेश 151
29. नरक की सैर 155
30. किम-जोंग-उन...जिंदाबाद! 159
31. नक्सलाइट के विरुद्ध अभियान 163
32. अश्वत्थामा को महर्षि का संदेश 167
33. दहलावर का छद्म वेश 173
34. बुद्धं शरणम् गच्छामि 179
35. प्रभास की योजना 183
36. किम-जोंग-उन के दिशा-निर्देश 189
37. साधु वेश में असाधु 195
38. छोटा राजन के ऑफिस में 199
39. सिमरन संकट में 205
40. अश्वत्थामा का संकल्प 209
41. किम-जोंग-उन की कुटिल योजना 217
42. छोटा राजन की राह का रोड़ा 227
43. अश्वत्थामा की अखंड शिवभक्ति 231
44. अश्वत्थामा के अभिशाप का प्रभाव 239
45. अश्वत्थामा-वेदव्यास और लंकापति विभीषण का मानसिक संपर्क 245
46. बलि, व्यास और विभीषण का मानसिक संवाद 251
47. अश्वत्थामा : प्राणों का रक्षक 261
48. बंदरों का भयंकर उत्पात 267
49. एन.एस.जी. की घेराबंदी 271
50. अश्वत्थामा उत्तर कोरिया में 275
51. प्रभास अश्वत्थामा की गुफा में 281
52. अश्वत्थामा डैथ चैंबर में 287
53. अश्वत्थामा का प्रलयंकारी रूप 291
54. किम-जोंग-उन को महर्षि परशुराम का शाप 299
55. पौराणिक और आधुनिक युग की मित्रता 303
56. 'अश्वत्थामा का अभिशाप' के अमर पात्र 309

Baba Novels Chat Room

1

टी.वी. चैनल्स पर अश्वत्थामा

"महाभारत के आचार्य द्रोण और उनके पुत्र अश्वत्थामा के बारे में तो थोड़ा बहुत जानता ही होगा या वह भी नहीं जानता?"
"जानता हूं। दोनों पिता-पुत्र महान योद्धा थे-कौरवों की ओर से लड़े थे। द्रोणाचार्य को युधिष्ठिर ने 'नरो वा कुंजरो' कहकर मरवा दिया था और अश्वत्थामा भी पता नहीं कैसे मरा, पर जीत पांडवों की ही हुई।"
"अश्वत्थामा मरा नहीं था। पुराणों के अनुसार, संसार में सात पौराणिक पात्र ऐसे हैं, जो अभी भी जिंदा हैं। अश्वत्थामा उनमें से एक है।"

Baba Novels Chat Room

नई दिल्ली, भारत! प्रफुल्ल सेठी एक ऐसा बिजनेसमैन था, जो हर तीसरे साल अपना बिजनेस बदल लेता था। वास्तव में उसका पुश्तैनी बिजनेस खेती था। पंजाब के एक गांव में उसके पुरखे उसके लिए हजारों एकड़ जमीन छोड़ गए थे। जब प्रफुल्ल सेठी पढ़-लिखकर बिजनेस में आया तो उसने घर की जमा-पूंजी और बड़े प्रॉपर्टी लोन से रियल स्टेट में हाथ डाला और एक नई कॉलोनी बसाकर करोड़ों कमा लिये। उसने वह कमाऊ धंधा अपने बड़े भाई को सौंप दिया और खुद दिल्ली चला आया।

प्रफुल्ल ने साउथ दिल्ली की पॉश कॉलोनी साकेत में बड़ी-सी कोठी खरीदी और करोल बाग में हार्डवेयर मशीनरी का बड़ा काम शुरू किया। इस काम में उसकी कमाई तो अच्छी थी, पर एक कसक बाकी थी कि धनाढ्य होते हुए भी उसकी कोई राष्ट्रीय पहचान नहीं थी।

गहन मंथन के बाद प्रफुल्ल ने छोटे भाई को अपना धंधा सौंपा और राष्ट्रीय पहचान बनाने का लक्ष्य लेकर न्यूज चैनल की दुनिया में कूद पड़ा, जो उसका नया मौजूदा कारोबार था। सेठी-24 नाम से उसने न्यूज चैनल लांच किया, जो अभी कुछ खास पॉपुलर नहीं हो सका था। मजाकिया स्वभाव का सरदार प्रफुल्ल सेठी अपने कर्मचारियों के साथ दोस्ताना माहौल बनाए रखता था और अपने रिपोर्टर्स से नित्य-प्रति सलाह-मशविरा करता रहता था जिससे उसका चैनल छा जाए। उसके पास नौजवान रिपोर्टर्स की ऊर्जावान टीम थी जिसमें उसे सबसे काबिल प्रभास टिचकुले लगता था। प्रभास टिचकुले मूल रूप से मराठी था, जो जन्म से दिल्ली वाला था। अगर भगवान ने उसे थोड़ा कद और दिया होता तो वह साउथ के बाहुबली स्टार प्रभास जैसा ही दिखता जिसकी वह भरपूर कोशिश करता भी था। सेठी के साथ उसका तालमेल कुछ अलग ही था। इन दिनों दिल्ली में सीएम और एलजी के बीच चल रहे मनमुटाव की कवरेज वही करता था।

"कोई मजा आ रहा है!" सेठी ने अपने सामने बैठे प्रभास से कहा—"जैसी तेरी काबलियत बताते हैं और मैं तुझे पगार देता हूं, उस लिहाज से तू मेरे लिए बोझ ही बनता जा रहा है। तू टी.आर.पी. में जरा भी इजाफा नहीं कर पाया।"

"सरजी, जिस देश में सैकड़ों वैराइटी के चैनल हैं, टफ कंपीटीशन है, उसमें इतनी जल्दी टी.आर.पी. का छप्पर नहीं फाड़ा जा सकता।" प्रभास ने साफ लहजे में कहा—"असल कमाई विज्ञापन से होती है और विज्ञापन तब मिलते हैं, जब चैनल लीक से हटकर कुछ दिखाते हैं। आप दिल्ली की गलियों में ही भटक रहे हैं। बाकी नेशनल और इंटरनेशनल खबरें तो हम दूसरे चैनलों से कंपोज कर रहे हैं।"

"अबे, तू यह कहना चाहता है कि मुझे बिजनेस की समझ नहीं है?" सेठी ने आंखें निकालकर कहा—"बेटा, मैं अपने पीछे दो बड़े बिजनेस सक्सेस करके आया हूं और देखना इसे भी वैसा ही करके दिखाऊंगा। मैं ऐसे ही कुर्सी नहीं तोड़ रहा हूं। मेरे माइंड में आइडिया पक रहे हैं, इसीलिए तू हाजिर है।"

"मुझे जो काम मिलता है, मैं करके दिखाता हूं।" प्रभास तनकर बोला—"आज तक हमारे चैनल पर जो भी थोड़ी बहुत टी.आर.पी. की कृपा है, वह मेरे सदके है।"

"तेरा मतलब बाकी लोगों को मैं फालतू में पगार दे रहा हूं?" सेठी ने हैरानी प्रकट की।

"ऐसा तो नहीं है, पर...आप काम की बात बोलिए न। मुझे क्यों याद किया?"

"याद नहीं किया बे! बुलाया है। मुझे चैनल की टी.आर.पी. बढ़ाने का कठिन काम सरलता से करके दिखाना है और इसके लिए तुझे एक नए मिशन पर फुल

Baba Novels Chat Room

टाइम के लिए जाना होगा। तेरी वापसी की ही यह शर्त होगी कि तूने कुछ नया करके लाना है और तू ऐसा कर सकता है।"

"हुक्म कीजिए! ममता बनर्जी का इंटरव्यू लाना है?"

"नहीं।" सेठी ने बात की दिशा मोड़ते हुए कहा—"तूने बचपन में टी.वी. पर बी.आर. चोपड़ा का महाभारत देखा होगा?"

"देखा है। उससे क्या मतलब, कुछ समझ में नहीं आया?"

"महाभारत के आचार्य द्रोण और उनके पुत्र अश्वत्थामा के बारे में तो थोड़ा बहुत जानता ही होगा या वह भी नहीं जानता?"

"जानता हूं। दोनों पिता-पुत्र महान योद्धा थे—उन्होंने कौरवों की ओर से युद्ध किया था। द्रोणाचार्य को युधिष्ठिर ने 'नरो वा कुंजरो' कहकर मरवा दिया था और अश्वत्थामा भी पता नहीं कैसे मरा, पर अंत में जीत पांडवों की ही हुई।"

"अश्वत्थामा मरा नहीं था। हमारे पुराणों के अनुसार संसार में सात पौराणिक पात्र ऐसे हैं, जो अभी भी जिंदा हैं। अश्वत्थामा उनमें से एक है।"

"क्या?" प्रभास चौंका—"जिंदा हैं? युग बीत गए और जिंदा हैं?"

"यकीन नहीं होता, ऐसी ही जनश्रुति है। हनुमान, कृपाचार्य, राजा बलि, परशुराम, विभीषण, वेदव्यास और अश्वत्थामा—ये सात पौराणिक पात्र अभी भी जिंदा बताए जाते हैं। कुछ लोग जामवंत, मार्कण्डेय, देवर्षि और सप्त ऋषियों को भी चिरंजीवी बताते हैं।"

"हिंदू धर्म में बड़े मकड़जाल फैले हैं। इसमें ऐसे-ऐसे विरोधाभास हैं कि समझ में नहीं आता कि सत्य क्या है और असत्य क्या! गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि जो जन्मा है, वह मरेगा। मृत्यु शाश्वत् है। इधर सेठी-24 के सेठी जी बोलते हैं कि कुछ लोग हजारों सालों बाद भी जिंदा हैं। ऐसा कैसे संभव है?"

"सेठी नहीं बोलता बे! पुराण बोलते हैं, प्रमाण बोलते हैं।"

"आप उस न्यूज की बात कर रहे हैं, जो कुछ चैनल्स पर अश्वत्थामा को लेकर सनसनीखेज अंदाज में परोसी जा रही है।"

"यानी बिलकुल ही अनजान तो तू नहीं है। कुछ तो जानता है।"

"सर, जब चैनल वर्ल्ड में हूं, भले ही छोटे से चैनल से जुड़ा हूं, पर जानकारी तो रखनी पड़ती है। अश्वत्थामा से जुड़ी खबर मुझे तो उन चैनलों का स्टंट लगता है, क्योंकि इसमें कोई सच्चाई नहीं है।"

"मगर मध्य प्रदेश के बुरहानपुर के जंगलों में उसे देखा गया और आसपास की बस्तियों के कई लोग उसका जिक्र करते बताए जाते हैं। वहां वह किसी मंदिर में रोज पूजा करने आता है और किसी-किसी को दिखाई भी देता है। बहुत से बड़े-बुजुर्ग इसका सत्यापन करते हैं।"

Babe Novels Chat Room

"सरजी! इंडिया में अंधविश्वास का बोलबाला है जिसका कई सदियों तक तो विदेशी शासकों ने फायदा उठाया, अब घरेलू अपराधी फायदा उठा रहे हैं। अश्वत्थामा के मामले में भी कुछ ऐसा ही लगता है। नक्सलाइट प्रभावित क्षेत्रों में नक्सलियों ने आसपास के रहने वालों को यह कथा परोसी हो सकती है। सीधे-सादे ग्रामीणों को बहका दिया हो सकता है। कोई नक्सली ही अश्वत्थामा के गेटअप में वहां विचरता हो सकता है। वहां कौन उसका आधार कार्ड मांगने वाला है?"

"यह सब तू इसी कुर्सी पर बैठकर सिद्ध कर देगा! तूने कहा कि ऐसा हो सकता है और सब मान लेंगे। अबे! कुछ हाथ-पैर हिला। जैसा सोचकर बताया है, वैसा ही सिद्ध करके ला। उस अश्वत्थामा बने नक्सली से मिल। फोटो निकाल उसकी। सच्चाई जान और तब मेरे एकाउंट से तेरी अगली पगार अपडेट होगी।"

"क्या...क्या मतलब?" प्रभास चौंका–"मैं नक्सलियों के पास जाऊं?"

"स्टोरी के पास जा, अपना काम कर। यह ले मेरा ए.टी.एम. कार्ड, खर्चे के लिए।"

"आपका ए.टी.एम. कार्ड! मजा आ गया।"

"इतना खुश मत हो। इसकी लिमिट है। इतना पागल नहीं हूं मैं कि अपने खजाने की चाभी एक हैंडसम, कुंवारे और नाकारा बंदे को सौंप दूं। तेरी जरूरत का सामान तुझे मिल जाएगा, खाने का काम चल जाएगा और खर्चे का हिसाब लिखना।"

"कोई और नहीं जा सकता?" प्रभास ने धीरे से कहा।

"बाकी सबके पास काम है। यहां मैं और तू ही खाली बैठे हैं।"

"तो आप भी चलिए न! खर्चे में झोल भी न पड़ेगा। आप साथ होंगे तो मेरी फिजूलखर्ची भी थमेगी और काम में निष्ठा भी बढ़ेगी।"

"कह तो तू ठीक ही रहा है। चल, तेरी भाभी को ऑफिस संभालने के लिए बोल देता हूं और मैं तेरे साथ चलता हूं। फील्ड का तजुर्बा भी हो जाएगा।"

"कब चलना है? मैं तैयारी करूं!"

"कर ले। कभी भी चल पडेंगे। प्लेन से चलेंगे।"

"प्लेन! ट्रेन से नहीं?"

"एक चैनल का मालिक कहीं ट्रेन में धक्के खाता है। अभी बुलेट ट्रेन आने तक तो मैं दिल्ली मेट्रो में भी सफर न करूंगा। तू चाहे तो ट्रेन से जा सकता है।"

"मैं ऐसा क्यों चाहने लगा! आखिर चैनल के मिशन पर जा रहा हूं।"

"मध्य प्रदेश जा रहा है, मंगल ग्रह पर नहीं।"

प्रभास हंसकर उठ खड़ा हुआ।

Baba Novels Chat Room

2

तानाशाह किम-जोंग-उन का विप्लवकारी भाषण

Baba Novels Chat Room

मेरे प्यारे उत्तरियो! इस मंच से मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि कुछ दिन बाद ही आप संसार के श्रेष्ठ और शक्तिशाली साम्राज्यों में पहले पायदान पर होंगे। मैं आपको शक्ति का वह स्रोत उपलब्ध कराऊंगा, जो इन चौधरी बने देशों को भयभीत कर देगा। जीवन की उत्तरजीविता के विषय में हिटलर ने कहा भी है कि जो श्रेष्ठ होगा, वही जिएगा। मैं आपको श्रेष्ठ बनाऊंगा। इस महान लक्ष्य में जो बाधा बनेगा, वह मृत्युदंड का पात्र होगा। राष्ट्र की रक्षा और सुरक्षा मेरा धर्म है और जो इसके विपरीत गया, भले ही मेरा सहोदर क्यों न हो, मारा जाएगा।

"पावर! आज सारा खेल पावर का है। ग्लोबलाइजेशन के दौर में विश्व के मानचित्र पर अपनी जगह बनाने और अपना प्रभुत्व जमाने की चुनौती है। तकनीक के नए युग में वैश्विक सीमाएं बौनी हो गई हैं। बाजारीकरण और आर्थिक सरोकारों ने विश्व को उस समंदर का रूप दे दिया है जिसमें सभी देश छोटी-बड़ी मछली के तौर पर तैर रहे हैं। यहां भी वही सिद्धांत लागू है, जो समंदर की दुनिया में है। बड़ी मछली छोटी मछलियों को खा जाती है। आज अमेरिका, चीन, जापान और रूस जैसे बड़े शक्तिशाली देश छोटे देशों को अपने आर्थिक जाल में फंसाते जा रहे हैं। इन बड़े देशों ने छोटे देशों की अर्थव्यवस्था की लगाम अपने हाथ में लेने का

बड़ा सपना संजो रखा है। जो प्रतिकार नहीं करता, वह अफगानिस्तान, इराक और पाकिस्तान की तरह इनके रहमोकरम पर आश्रित हो जाता है। इन देशों में सरकारें स्वदेशी हैं, पर शासन विदेशी है। यहां के शासक निर्णय लेने में स्वतंत्र नहीं हैं और 'व्हाइट हाउस' की ओर देखते हैं। देखें भी क्यों नहीं, अमेरिका की तनी भृकुटि उन्हें कंपकंपा देती है। वह सेना भेजकर सब ध्वस्त कर सकता है। यह अमेरिकी दादागिरी है, जो कई दशकों से चल रही है...विश्व स्तर पर चल रही है।''

इस प्रभावशाली आवाज का स्वामी किम-जोंग-उन था, जो उत्तर कोरिया का शासक था। चीन और जापान सागर के मिलान बिंदु पर स्थित कोरिया प्रायद्वीप सन् 1948 तक कोरिया गणराज्य के नाम से जाना जाता था। विश्व के इतिहास में सन् 1947-48 को विभाजनकारी वर्ष के रूप में देखा जाता है। इसी कालखंड में भारतवर्ष का भारत और पाकिस्तान में विभाजन हुआ और इसी वर्ष में कोरिया गणराज्य का दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया में। एक मत के अनुसार, इस विभाजन के पीछे अमेरिका की कूटनीति का हाथ था।

सन् 1910 से कोरियाई प्रायद्वीप पर जापान का शासन था, जो द्वितीय विश्वयुद्ध तक रहा। दूसरे विश्वयुद्ध में जापान की करारी हार और अमेरिका का वैश्विक वर्चस्व बढ़ने के बाद अमेरिकी प्रशासन ने इस प्रायद्वीप को 38वीं समानांतर रेखा के द्वारा दो भागों में विभाजित करके दक्षिण भाग को अपने नियंत्रण में ले लिया और उत्तर कोरिया सोवियत संघ के नियंत्रण में चला गया। उस समय यहां किम सुंग द्वितीय की साम्यवादी सरकार के अंतर्गत 'डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया' का गठन हुआ।

कोरिया का विभाजन कोरियाई लोगों की सहमति से नहीं हुआ था। यह अमेरिका और सोवियत संघ की साम्राज्यवादी चौधराहट का परिणाम था जिसके विरोध में समूचे कोरियाई थे और इसमें उत्तर कोरियाई लोग कुछ अधिक ही उग्र व दु:साहसी थे। पितृ-सत्तात्मक प्रणाली को मान्यता देनेवाले इस क्षेत्र के शासन में निहित शक्ति ही सबसे प्रधान होती थी, जबकि दक्षिण कोरिया में गणतंत्रात्मक शासन को स्वीकार कर लिया गया था।

सोवियत संघ स्टालिन के नेतृत्व में साम्यवाद का विस्तार कर रहा था और उसी ने उत्तर कोरिया की सेनाओं को दक्षिण कोरिया पर आक्रमण करने के लिए उकसाकर अमेरिका के सामने गंभीर चुनौती पेश कर दी। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रूमैन ने पश्चिमी शक्तियों को कोरिया प्रायद्वीप में हस्तक्षेप करने का आदेश दे दिया।

सितंबर, 1950 में संयुक्त राष्ट्र संघ की सेनाएं सिओल में घुस गईं और उत्तर कोरिया पर हमले की योजना बनने लगी। चीन ने इसका विरोध किया,

Baba Novels Chat Room

मगर अमेरिकी कूटनीति के कारण प्योंगयांग संयुक्त सेनाओं के अधीन हो गया। यद्यपि चीन ने नंवबर, 1950 में सैन्य अभियान चलाकर मात्र दो माह में ही उत्तर कोरिया को स्वतंत्र करा दिया। अब तीसरे विश्वयुद्ध के संकेत मिलने लगे थे और यदि अमेरिका अपने हितों को ध्यान में रखकर युद्ध-विराम की घोषणा न करता तो अगला विश्वयुद्ध और भी भयानक होता। इस घटनाक्रम से उत्तर कोरिया और अमेरिका के बीच वैमनस्य बढ़ गया। समय के साथ यह शत्रुता बढ़ती ही गई और जब उत्तर कोरिया का शासक किम-जोंग-उन बना, तो अमेरिका के प्रति अपनी नफरत से वह पूरी दुनिया के लोगों को परिचित कराने लगा।

तानाशाह किम-जोंग-उन के नेतृत्व में उत्तर कोरिया अपने परमाणु कार्यक्रम का विस्तार कर रहा था। समय-समय पर तानाशाह अपने देशवासियों को संबोधित करता था जिससे वह लोगों में देश और अपने प्रति आस्था का संचार कर देता था। ऐसे ही एक अवसर पर वह आज राष्ट्र को संबोधित कर रहा था।

''क्या अमेरिका तमाम देशों की लाइफस्टाइल तय करेगा?'' किम-जोंग-उन कोड़े जैसी फटकार भरी आवाज में बोला–"उसकी इजाजत लेकर ही सब देश कोई काम करेंगे! क्या मजाक है यह! कौन नहीं जानता कि परमाणु अस्त्र अमेरिका ने सबसे पहले बनाया भी और चलाया भी। अब कोई देश न बनाएगा! ऐसा...ऐसा आदेश व्हाइट हाउस जारी करता है। सी.टी.बी.टी. बिल बनाकर उस पर हस्ताक्षर कराकर सब देशों को परमाणु-अस्त्रविहीन रखकर खुद परमाणु-अस्त्रसंपन्न बना रहना चाहता है। इंडिया जैसे बड़े देशों पर उसका जोर नहीं चलता तो वह छोटे देशों पर जोर आजमाता है। हम क्या भूल गए हैं कि सत्तर साल पहले हमारे साथ क्या किया गया था? हमें गुलाम बना लिया था। ताकत के दम पर हमें डरा दिया गया। हमारी अपनी कोई नीति हमारे लोगों के लिए काम नहीं आने दी गई। दक्षिण वालों को तो चापलूसी की आदत ही पड़ गई है, मगर हम कभी न ऐसे थे और न होंगे। हम अमेरिका के किसी प्रतिबंध को नहीं मानते। हम अपनी रक्षा और सुरक्षा प्रणाली में वृद्धि करने जा रहे हैं। किसी हस्तक्षेप को हम स्वीकार नहीं करेंगे। शीघ्र ही अमेरिका और उसके हिमायती देखेंगे और महसूस करेंगे कि हम अब रक्षा प्रणाली में ही संपूर्ण नहीं, बल्कि आक्रामक नीति में भी हम उनसे कहीं आगे हैं।"

तानाशाह शासक के इस भाषण को उत्तर कोरिया के घर-घर में देखा जा रहा था और अधिकांश लोग बड़े उत्साह से उसका स्वागत व समर्थन कर रहे थे।

"हो सकता है, अमेरिका, रूस शक्तिशाली हों, मगर इसका अर्थ यह तो नहीं कि उन्हें छोटे देशों को गाइडलाइन जारी करने का अधिकार मिल गया है कि किस देश को क्या करना चाहिए और क्या नहीं। कोई और ऐसे आदेश मानता हो तो

Baba Novels Chat Room

मानता रहे, पर हम बाध्य नहीं हैं। हम भयभीत भी नहीं हैं। हम पिछलग्गू बनकर नहीं रह सकते। हम बराबरी का अधिकार चाहते हैं और यह अकारण नहीं चाहते। हम इसके योग्य हैं। हम हर प्रकार से सक्षम हैं। तकनीक, अर्थव्यवस्था और सैन्य क्षमता में हम अब किसी से कम नहीं हैं। हमारे पास उच्च कोटि के वैज्ञानिक हैं, तकनीक हैं और प्रतिभाएं हैं। हम भी अब परमाणुसंपन्न राष्ट्रों की श्रेणी में गिने जाने वाले हैं। कुछ समय बाद ही सारा संसार देखेगा कि हम छोटे से देश के निवासी कितने सामर्थ्यवान हैं। हमारी ओर नजर तिरछी करके देखने वाला चाहे जो भी हो, समतल कर दिया जाएगा। हम दुनिया के नक्शे से उसका नामोनिशान मिटा देंगे।"

तानाशाह के इस विप्लवकारी भाषण ने उसके समर्थकों में जैसे जोश भर दिया।

"हम भूल नहीं गए, जब अमेरिका ने हमारी इच्छा के विरुद्ध विभाजन रेखा खींच दी थी। साम्यवाद का विध्वंस करना चाहा था। यह टीस आज हर कोरियाई के दिल में चुभती है। दक्षिण वाले भले ही अपमानजनक समझौतों के साथ शत्रुओं से मित्रता का दावा करते हों, पर हम उत्तरियों को गुलाम बनकर रहने की न आदत है और न चाहत। हम अपनी स्वतंत्रता को किसी रूस, अमेरिका या जापान की आर्थिक सहायता के बदले गिरवी नहीं रख सकते। महान किम-इल-सुंग ने कहा था कि एक दिन उत्तरी साम्राज्य शिखर पर होगा और वह दिन शीघ्र ही आने वाला है। मेरे प्यारे उत्तरियो! इस मंच से मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि कुछ दिन बाद ही आप संसार के श्रेष्ठ और शक्तिशाली साम्राज्यों में पहले पायदान पर होंगे। मैं आपको शक्ति का वह स्रोत उपलब्ध कराऊंगा, जो इन चौधरी बने देशों को भयभीत कर देगा। जीवन की उत्तरजीविता के विषय में हिटलर ने कहा भी है कि जो श्रेष्ठ होगा, वही जिएगा। मैं आपको श्रेष्ठ बनाऊंगा। इस महान लक्ष्य में जो बाधा बनेगा, वह मृत्युदंड का पात्र होगा। राष्ट्र की रक्षा और सुरक्षा मेरा धर्म है और जो इसके विपरीत गया, भले ही मेरा सहोदर क्यों न हो, मारा जाएगा। हमें श्रेष्ठ बनना है। हमें उन धमकी देने वालों, प्रतिबंध लगाने वालों और धन्नासेठ देशों को जवाब देना है कि हम उत्तरी लोग क्षमतावान शक्तिसंपन्न और नैसर्गिक रूप से स्वतंत्र हैं। हम पर कोई आदेश थोपा नहीं जा सकता। हम ढाई करोड़ लोग एकजुट हैं और शत्रुओं पर भारी पड़ने वाले हैं।''

तानाशाह किम-जोंग-उन का इस प्रकार का भाषण सन् 2016 से ही जारी था, जो समय-समय पर उत्तर कोरिया के लोगों में विप्लवकारी भावना का उदय करता था।

Baba Novels Chat Room

3

कोरियन क्रांतिकारी सांग-सी-चिन

"...वास्तव में उत्तर कोरिया को पूर्ण क्रांति की आवश्यकता है और क्रांति केवल हथियारों से सफल नहीं होती। इसमें बहुत से तत्त्वों का समावेश होता है। क्रांति को जन-समर्थन प्राप्त नहीं है तो उसे क्रांति नहीं, बल्कि विद्रोह कहते हैं और ऐसे विद्रोह का दमन जनता ही कर देती है, इसलिए पहले यह आकलन करो कि तुम विद्रोही हो या क्रांतिकारी। विद्रोही के सीमित लक्ष्य होते हैं। क्रांतिकारी का अंतिम लक्ष्य परिवर्तन लाना होता है और इस अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसे अनेक लक्ष्य भेदने पड़ते हैं। जन-समर्थन प्राप्त करना क्रांति का अनिवार्य तत्त्व है।"

38वीं समानांतर रेखा! कोरिया को दो हिस्सों में विभाजित करने वाली इस रेखा को दक्षिण और उत्तर कोरिया की सीमारेखा कहा जाता है। दोनों ओर सीमा सुरक्षा बलों और सेना का सुदृढ़ पहरा रहता है। लोकतंत्र में विश्वास करनेवाले दक्षिण कोरिया के लोग स्वभाव से शांत और मित्रवत् व्यवहार करते हैं। इसके विपरीत एकदलीय, पितृ-सत्तात्मक प्रणाली पर आधारित तानाशाही शासन के आदी हो चुके उत्तर कोरिया के सैनिक बात-बात पर गोलियां चलाने को तैयार रहते हैं। ऐसा नहीं था कि उत्तर कोरिया में सभी लोग इस सैन्य शासन और तानाशाह को पसंद करते थे। कुछ लोग ऐसे भी थे, जो गणतंत्र

Baba Novels Chat Room

प्रणाली के न केवल समर्थक थे, बल्कि उसे लागू कराने के लिए संघर्षरत भी थे। इन्हें विद्रोही कहा जाता था, जो वास्तव में क्रांतिकारी थे और कोरिया मुक्ति मोर्चा नाम के संगठन तले तानाशाही सरकार को उखाड़ फेंकने के असंभव-से मिशन में जुटे हुए थे। कुछ समय पहले तानाशाह ने अपने हाथों गोली मारकर क्रांति का दमन करने का बीड़ा उठाया था। कोरिया मुक्ति मोर्चा का नेतृत्व सांग-सी-चिन नाम के नौजवान के हाथ में था जिसके पिता ने भी इसी मकसद के लिए अपनी कुरबानी दी थी। सांग-सी अपने पिता के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने के लिए जी-जान से जुटा था। तानाशाही सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए उसे दक्षिण कोरिया और जापान से राजनीतिक मदद मिलती थी। अमेरिका उसके संगठन को आर्थिक मदद देता था।

इस समय जापान सागर में जापान द्वारा निर्मित एक कृत्रिम द्वीप पर सांग-सी और उसके साथियों का ठिकाना था। यह द्वीप क्योंकि जापान के अधिकार में था, तो उन लोगों को किसी प्रकार का भय नहीं था। जापान ने सांग-सी और उसके साथियों को सभी सुविधाएं उपलब्ध करा रखी थीं। इस समय सांग-सी को जापान की खुफिया एजेंसी के वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात करनी थी, जो अभी चार्टर विमान के द्वारा द्वीप पर लैंड करने वाले थे। सांग-सी के साथ उसके तीन विश्वस्त साथी थे और सभी हैलीपैड के पास बनी इमारत के एक विशेष कक्ष में बैठे अपने मददगारों की प्रतीक्षा कर रहे थे।

"कमांडर!" एक क्रांतिकारी ने कहा—"कितनी देर और बैठना पड़ेगा! सुबह से यहीं बैठे हैं। इससे अच्छा किसी योजना पर विचार कर लेते।"

"चिन-सी! इंतजार करना हमारी मजबूरी है।" सांग-सी गहरी सांस लेकर बोला—"पिछले चार महीने में हम एक भी ऐसा काम नहीं कर पाए जिससे हमारे समर्थकों और साथियों का उत्साह बढ़ता हो। हम क्रांति के इस पथ पर जिस लक्ष्य को लेकर चले थे, वह अभी भी हमसे बहुत दूर है। हमने तानाशाह को कम आंका! हम उसकी निर्दयता और सक्रियता को भांप ही न सके और परिणामस्वरूप हमें कोई विशेष सफलता नहीं मिली।"

"हमारा तमाम सिस्टम अस्त-व्यस्त कर दिया गया।" चिन-सी हताश स्वर में बोला—"हमारे कितने ही साथी इस स्वतंत्रता की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे चुके हैं। जुल्मी तानाशाह ने चौराहों पर लटका-लटकाकर हमारे क्रांतिकारी साथियों को निर्दयता से मौत के घाट उतारा है।"

"क्रांति बलिदान मांगती है दोस्त! परिवर्तन शीघ्र नहीं होते। समय लगता है। सदियां गुजर जाती हैं। विश्व में जितनी भी क्रांतियां हुई हैं, उनका इतिहास बताता है कि अंततः क्रांति सफल होती है। जब हिटलर के अत्याचार से मानवता कराह

Baba Novels Chat Room

उठी तो उसके पतन का भयानक दौर आरंभ हुआ। उसकी निर्मम महत्त्वाकांक्षाओं ने कितने बच्चों को यतीम किया, कितनी स्त्रियां विधवा हुईं और कितनी कोखें उजड़ीं मगर जैसा प्रकृति का सिद्धांत है कि एक दिन सबको इंसाफ मिलता है, उसी के अनुसार कुख्यात और दु:साहसी हिटलर को दंड मिला, उसे आत्महत्या करनी पड़ी।"

"हमारा तानाशाह कब ऐसा करेगा! क्यों ऐसा करेगा! हिटलर के जमाने में न इतनी तकनीक विकसित थी और न सुरक्षा के इतने पुख्ता इंतजाम थे। हमारा हिटलर तो उच्च तकनीक से सज्जित और सुरक्षा के ऐसे व्यापक इंतजामों के साथ-साथ इतना सजग है कि अपनी परछाई पर भी भरोसा नहीं करता। हमारे कितने ही प्रयास उसकी सजगता ने विफल कर दिए हैं।"

"अभी वक्त उस पर मेहरबान है दोस्त! जब दीपक बुझता है तो उसकी लौ बुझने से पहले पूरी प्रखरता से लपलपाती है। लगता है, जैसे आसपास सबको भस्म कर देगी, मगर फिर अंधियारे में खो जाती है। ऐसा ही हाल इस तानाशाह का होगा। इसके जुल्म इससे हिसाब मांगेंगे और उन्हीं का यह शिकार बनेगा।"

चिन-सी कुछ कहना चाहता था कि तभी गड़गड़ाहट की तेज आवाज हुई, जो इस बात का संकेत था कि चार्टर विमान हैलीपैड की ओर आ चुका था। कुछ देर में ही हैलीपैड पर चार्टर विमान लैंड हुआ। वह सेवन सीटर विमान था। चार्टर विमान का दरवाजा खुला और उसमें से एक-एक करके छह शख्स उतरे। इनमें से दो को तो सांग-सी पहचानता था। जापानी खुफिया एजेंसी का चीफ असिस्टेंट निंजो हाइबू और जापान के फेमस क्रांतिकारी राइटर मेजी ससूमा से सांग-सी पहले भी मिल चुका था, जबकि चार अन्य लोग अपरिचित थे। कक्ष में आकर सांग-सी से सबसे पहले हाइबू ने हाथ मिलाया तो ससूमा बगलगीर होकर मिला।

"इनसे मिलो यंगमैन!" हाइबू ने परिचय कराया—"ये हैं अमेरिकी सीक्रेट सर्विस के सबसे जांबाज एजेंट मिस्टर स्टीव वार्नर! इनके साथ इनके असिस्टेंट मिस्टर विल्सन।" हाइबू ने एक अन्य शख्स की ओर संकेत किया—"इन साहब को रशियन मिलिट्री का सबसे दक्ष आर्म्ड ट्रेनर माना जाता है और इनका नाम राहीमोर ब्लास्की है। इनके साथ भी इनके असिस्टेंट हैं और शेष बचा यह हमारा असिस्टेंट कम बॉडीगार्ड टोबू!"

हाइबू ने अपने साथ आए लोगों से उनका परिचय कराते हुए कहा—"और ये हैं आज के सबसे कुख्यात तानाशाह के धुर विरोधी सांग-सी-चिन, जो अपने चंद क्रांतिकारी लड़ाकों के साथ क्रांतियज्ञ को आगे बढ़ा रहे हैं।"

"कहां बढ़ा पा रहे हैं सर!" सांग-सी हताश स्वर में बोला—"हमारा दुश्मन हमसे हर क्षेत्र में आगे है। उसने हमारे नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया है। हमारी

Baba Novels Chat Room

एक भी चाल सीधी नहीं पड़ी। हर प्लानिंग बैकफायर कर गई है। उस आदमी की सजगता के सामने हमारी सभी गुप्त योजनाएं विफल हो रही हैं।"

"ताकत और तकनीक जब किसी की महत्त्वाकांक्षाओं को पोषित करने लगती हैं, तो वह शख्स खुद को अजेय समझने लगता है।" ससूमा दार्शनिक अंदाज में बोला—"विश्व का इतिहास गवाह है कि जब-जब इन तानाशाहों ने मानवता को कष्ट दिया है, तब-तब इनके पतन के लिए जनशक्ति प्रबल हुई है।"

"अब हमें आप जैसे विद्वान मददगारों का ही सहारा है। हम अपने शीश अर्पण कर सकते हैं, बशर्ते एक शीश कटने पर जरा भी सफलता मिलने की आशा हो।" सांग-सी ने कहा—"इस समय हमारे दिमाग कुंद हो गए हैं। उस आदमी ने हमारे प्रायद्वीप को आयुधगृह में बदलने की ठान ली है। वह हर हाथ में विध्वंसकारी हथियार थमाने का बीड़ा उठा चुका है। वह भोजन की चिंता नहीं करता, उसे तो संसार का सबसे शक्तिशाली तानाशाह बनना है। वह सम्राट के विभूषण से अलंकृत होने की इच्छा रखता है। सम्राट भी ऐसा-वैसा नहीं, चक्रवर्ती सम्राट!"

"ऐसे सपने देखना उन लोगों का शगल होता है जिन्हें विरासत में सत्ता मिलती है। वह सामंतशाही के भीषण दौर का रक्त है जिसमें दया नाम का एंटीजन ही नहीं होता है। तानाशाह के बचपन को खंगालोगे तो जानोगे कि यह आज ही नहीं, बल्कि उम्र के दसवें वर्ष से ही ऐसे दुःसाहस भरे कार्य करता आ रहा है।" ससूमा ने बताया।

"लोकतंत्र के युग में ऐसी डिक्टेटरशिप कहां स्वीकार है सर?"

"यह तो लोक से पूछो, क्योंकि तानाशाह को अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए आधी शक्ति लोगों से मिलती है। शेष आधी वह भय का साम्राज्य उत्पन्न करके बना लेता है। जब जनमत उसके विरुद्ध हो जाएगा, तो एक दिन उसका पतन भी हो जाएगा। वास्तव में उत्तर कोरिया को पूर्ण क्रांति की आवश्यकता है और क्रांति केवल हथियारों से सफल नहीं होती। इसमें बहुत से तत्त्वों का समावेश होता है। क्रांति को जन-समर्थन प्राप्त नहीं है तो उसे क्रांति नहीं, बल्कि विद्रोह कहते हैं और ऐसे विद्रोह का दमन जनता ही कर देती है, इसलिए पहले यह आकलन करो कि तुम विद्रोही हो या क्रांतिकारी। विद्रोही के सीमित लक्ष्य होते हैं। क्रांतिकारी का अंतिम लक्ष्य परिवर्तन लाना होता है और इस अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसे अनेक लक्ष्य भेदने पड़ते हैं। जन-समर्थन प्राप्त करना क्रांति का अनिवार्य तत्त्व है।" ससूमा ने गंभीर स्वर में अपना विचार व्यक्त किया, जो सबको पसंद आया।

ससूमा यूं ही विख्यात रिवोल्यूशनर राइटर नहीं था!

Baba Novels Chat Room

4

चिरकालिक तपस्या में व्यवधान

राजा बलि सागर की अनंत गहराई में समाधिस्थ थे। भगवान परशुराम हिम-शृंखलाओं में कहीं थे। कृपाचार्य, वेदव्यास भी विकट अरण्यों में समाधिस्थ थे। रामभक्त हनुमान अवश्य रामजन्म भूमि के क्षेत्र में कहीं रहकर मानव-लीलाओं को देख रहे थे। अश्वत्थामा के विषय में उन्हें ज्ञात था कि वे विंध्याचल की पहाड़ियों पर शिवभक्ति में लीन थे। सभी चिरंजीवी यदा-कदा परस्पर संवाद कर लेते थे।

Baba Novels Chat Room

हिंद महासागर का अथाह जल ठांठे मार रहा था। दूर-दूर तक नीले जल की विस्तृत चादर फैली हुई थी, जिसके ऊपर कुहासा-सा छाया हुआ था। इसी जल-विस्तार में अनेक छोटे-छोटे द्वीप भी थे, जिनमें से अधिकांश पर मानव के कदम पड़ चुके थे। इस द्वीपशृंखला में कई ऐसे द्वीप अब भी थे, जो अपनी दुर्गम बनावट और प्राकृतिक जैव-विविधता के कारण मानवीय प्रयासों से अछूते रह गए थे। इन द्वीपों पर भीषणतम जंगल थे और इनमें ऐसे-ऐसे भयानक जीव-जंतु रहते थे कि यदि कोई मनुष्य वहां पहुंचा भी हो तो जीवित नहीं बचा होगा। ऐसे ही दुर्गम द्वीपों में से एक शंकुल द्वीप भी था, जो अपनी विचित्र बनावट के कारण मनुष्य से अछूता था।

समुद्र की अथाह गहराई में करीब बीस किलोमीटर के व्यास में इस शंकुल द्वीप का आधार था, जो जल के तल पर शंकु के आकार में लगभग पंद्रह सौ मीटर ऊपर उठा हुआ था। चारों ओर शैवाल भित्तियां थीं और उन पर विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां उगी हुई थीं। कुहासे से घिरा यह द्वीप

समीप पहुंचने पर ही नजर आता था। अथाह जल की बेलगाम लहरों के निरंतर टकराते रहने से द्वीप की बाहरी दीवारों की चट्टानें विभिन्न आकारों में कट गई थीं और कहीं-कहीं तो कई-कई मीटर लंबे प्रस्तर भालों की शक्ल ले चुकी थीं।

इसी शंकुल द्वीप की एक गार में से निरंतर एक ऐसी ध्वनि आ रही थी, जो वहां के वातावरण के कारण अस्पष्ट थी, मगर बहुत ध्यान से सुनने पर यह 'राऽऽऽऽऽम' में बदल जाती थी। स्वर उच्च था और मानव कंठ से ही निकलता प्रतीत होता था। स्पष्ट था कि दुर्गम द्वीप पर कोई रामभक्त तपस्यारत था।

वह प्राकृतिक गुफा घने जंगल के लगभग मध्य में थी और प्रथम दृष्ट्या दिखाई भी नहीं देती थी। कुछ विचित्र प्रकार के भयानक जीव वहां देखे जा सकते थे। गुफा के विशाल द्वारा पर अनेक कंटीली झाड़ियां थीं जिनसे आगे गुफा का विस्तार था। घनघोर अंधेरे में वहां हाथ को हाथ नहीं सूझता था। गुफा अंदर से अनेक भागों में विभाजित थी और आगे बढ़ते-बढ़ते वह अष्टकोणीय हॉल में बदल गई थी, जहां लगभग चालीस खंभे थे। इस हॉल के बिलकुल बीचोबीच विशाल स्थान खाली था और इसी स्थान पर वह दिव्य पुरुष बैठा समाधिस्थ था। उसके शरीर से जगमग प्रकाश फूट रहा था, जो वहां के अंधकार को नष्ट कर रहा था।

वह कोई साधारण तपस्वी नहीं था। आम इंसान से इतर उसकी देहयष्टि बहुत विशाल थी। एक साधारण आदमी खड़े होकर जितना लंबा होता है, उतना वह तपस्वी पद्मासन में बैठा दिखाई पड़ता था। उसकी भुजाएं बहुत लंबी थीं, अत्यंत सुडौल व मांसल थीं। सिर की केश-राशि पीठ को ढककर भूमि पर एकत्र हो रही थी। उसके चेहरे पर बाल नहीं थे, जो उसकी दिव्यता का प्रमाण थे। उसका आकर्षक मुखमंडल, तनी हुई ग्रीवा और बलिष्ठ वक्ष था।

नेत्र बंद किए वह तपस्वी निश्चय ही कोई पौराणिक कथाओं का पात्र प्रतीत होता था। वह अपने होंठों से निरंतर 'राम-राम' का जाप कर रहा था। उसके सम्मुख एक पारदर्शी और फुटबाल के आकार का गोला रखा था जिसमें नीले रंग का द्रव सदृश तत्त्व स्थिर था। जाने कब से वह तपस्वी उस दुर्गम और निर्जन स्थान पर तपस्यारत था। उसके स्वर के अतिरिक्त वहां ऐसी निःस्तब्धता व्याप्त थी कि उसके द्वारा श्वास लेने का भी स्पष्ट आभास होता था।

वास्तव में यह तपस्वी कोई और नहीं, बल्कि रामायण काल के प्रमुख पात्र, लंकाधीश रावण के विद्रोही भाई विभीषण थे। असुर कुल में जन्मे विभीषण प्रवृत्ति से धार्मिक, रामभक्त और मानवतावादी थे, जो राम-रावण युद्ध में श्रीराम की शरण में चले गये थे और बाद में लंका के अधिपति बने। वे जानते थे कि लंकापति रावण एक प्रकांड विद्वान थे और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निपुण थे। उन्होंने उस

Baba Novels Chat Room

समय ऐसे तत्त्वों की खोज कर ली थी, जिनसे संसार बहुत बाद में परिचित हुआ। उन्हीं में से एक तत्त्व 'विध्वंसा' था जिसे रावण ने खोजा था। यदि राम-रावण युद्ध न हुआ होता तो रावण विश्वविजय के लिए इसका प्रयोग अवश्य करता।

श्रीराम से युद्ध के समय रावण ने इस घातक अस्त्र का प्रयोग संभवतः अपनी प्रजा के हित को ध्यान में रखते हुए नहीं किया था, क्योंकि उससे अधिक कौन जानता था कि श्रीराम स्वयं नारायण के अवतार हैं। उस समय 'विध्वंसा' उसके वैज्ञानिक शस्त्रागार में सुरक्षित रहा।

जब विभीषण लंका के राजा बने तो रावण की पत्नी मंदोदरी ने उन्हें 'विध्वंसा' के विषय में बताया कि वह अत्यंत विनाशकारी 'तत्त्व' है जिसे नष्ट भी नहीं किया जा सकता। अतः उसकी सुरक्षा ही उसके प्रभाव से बचने का उपाय है। विभीषण ने 'विध्वंसा' को सुरक्षित किया, परंतु दुर्भाग्य से एक दिन शापित लंका समुद्र में विलीन हो गई। विभीषण ने 'विध्वंसा को संभाला, पर उसका आधा भाग खंडित होकर समुद्र में बह गया।

विभीषण जानते थे कि आने वाले युग में मानव की महत्त्वाकांक्षाएं अतिवादी हो जाएंगी और यदि किसी निर्मम व्यक्ति को 'विध्वंसा' प्राप्त हो गया, तो यह मानवता ही नहीं, सपूंर्ण सृष्टि खतरे में पड़ जाएगी। उन्होंने अथाह सागर में विध्वंसा को बहुत खोजा, पर सफल नहीं हुए। राम-रावण के युद्ध में असत्य का पक्ष छोड़कर सत्य की शरण लेने के कारण श्रीराम ने रावण का संहार कर विभीषण को लंका का राजा बनाया और उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान दिया। इस प्रकार विभीषण अमर हो गए। अब शेष 'विध्वंसा' को सुरक्षित अपने पास रखकर वे इस निर्जन द्वीप पर तपस्यारत हुए। नियम के अनुसार, यदि संसार में कहीं 'विध्वंसा' का प्रयोग होता है, तो उनके पास स्थिर शेष विध्वंसा अस्थिर हो जाने वाला था।

तपस्यारत विभीषण को हजारों वर्ष गुजरने के बाद बीसवीं शताब्दी में एक बार अनुभव हुआ कि 'विध्वंसा' किसी प्रकार मानव को प्राप्त हो गया है। यह जानकर वे चिंतित हो उठे। यह द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका द्वारा जापान पर किया गया परमाणु हमला था, तब विभीषण के सामने रखा पात्र अस्थिर हुआ था। वे तत्काल तपस्या से उठकर उसकी खोज में निकल पड़े थे और समूचे भारतवर्ष में घूमकर भी कुछ नहीं जान पाए थे। इसका कारण मानवों से दूरी और किसी से भी संवाद का अभाव रहा। उसके लगभग अस्सी वर्ष बाद तक फिर कोई वैसी घटना घटित नहीं हुई थी।

विश्व आधुनिक होकर इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर गया था। यह बात तो विभीषण भी जानते थे कि मानव विज्ञान के साथ प्रगतिशील होगा और उसके

Baba Novels Chat Room

सभी स्थापित मानदंड ध्वस्त होते जाएंगे, पर उन्हें यह अनुमान नहीं था कि मानवीय संसार इतना निर्मम और विकृत हो जाएगा। इस विषय पर वे अपने जैसे अन्य सभी सप्त चिरंजीवी पौराणिक दिव्यात्माओं से मानसिक संवाद करते रहते थे, जो उन्हीं की भांति प्रभु-भक्ति में लीन होकर गुप्त स्थानों पर अपने अमरत्व को जी रहे थे।

राजा बलि सागर की अनंत गहराई में समाधिस्थ होकर तपस्या कर रहे थे। भगवान परशुराम हिम-शृंखलाओं में कहीं थे। कृपाचार्य, वेदव्यास भी विकट अरण्यों में समाधिस्थ थे। रामभक्त हनुमान अवश्य रामजन्म भूमि के क्षेत्र में कहीं रहकर मानव-लीलाओं को देख रहे थे। अश्वत्थामा के विषय में उन्हें ज्ञात था कि वे विंध्याचल की पहाड़ियों पर शिवभक्ति में लीन थे। सभी चिरंजीवी यदा-कदा परस्पर संवाद कर लेते थे।

तपस्यारत चिरंजीवी दिव्यात्माओं में विभीषण ही एकमात्र ऐसे थे जिनके पास लक्ष्य था, शेष ईशभक्ति में लीन थे। वे 'विध्वंसा' और उसके जैसे ब्रह्मास्त्रों को मानव समाज से दूर रखने का लक्ष्य लेकर तपस्यारत थे, क्योंकि ऐसे सभी ब्रह्मास्त्र लंकापति रावण और उनके पुत्र मेघनाद आदि द्वारा प्राप्त किए गए थे। यदि इनसे मानव समाज पीड़ित होता तो प्रत्यक्ष में न सही, अप्रत्यक्ष ही लंका को ही कलंक लगता।

ऐसा नहीं था कि महाभारत के महायुद्ध में ब्रह्मास्त्रों का प्रयोग नहीं हुआ था, पर तब भगवान परशुराम ने विभीषण को सलाह दी थी कि वह युद्ध स्वयं वासुदेव श्रीकृष्ण की प्रेरणा से लड़ा जा रहा है। अतः उसमें किसी हस्तक्षेप का औचित्य नहीं बनता, तब विभीषण अपने स्थान पर ही बैठे रहे।

सदियां बीत जाने के बाद एक दिन दिव्यद्रष्टा मुनि वेदव्यास ने विभीषण को संकेत दिया कि शीघ्र ही उन्हें अपने लक्ष्य की ओर प्रस्थान करना पड़ सकता है, क्योंकि संसार ऐसी ही दशा में मुड़ रहा है। स्पष्ट तो वेदव्यास ने कुछ नहीं बताया, पर विभीषण सजग हो गए थे।

अंततः वह दिन भी आ गया, जब उनके सामने रखा विशिष्ट तत्त्व 'विध्वंसा' से भरा पात्र जोर से प्रकंपित हुआ और उनकी समाधि भंग हो गई। विभीषण ने इस बार पात्र को इस स्थिति में रखा था कि वह उस कंपन के केंद्र और दिशा में झुक जाए जिससे उन्हें लक्ष्य की दिशा में जाने में पहले की भांति कठिनाई न हो।

Babu Novels Chat Room

5

हाइड्रोजन बम का परीक्षण

"यह...यह हाइड्रोजन बम था!" रक्षा विशेषज्ञ ने चिंतित स्वर में कहा—"यह इस कालखंड का सबसे विध्वंसकारी, परमाणु बम से भी तीन गुना अधिक शक्तिशाली बम है, जो यदि अपनी पूरी क्षमता से प्रयोग हो तो एक ही बार में एशिया महाद्वीप का अस्तित्व मिटा देगा।" इस महाविस्फोट ने दूर-दूर तक अपना प्रभाव दिखाया था। चीन के सीमावर्ती क्षेत्र में पहाड़ दरक गए और बाह्य आबादी को जान-माल का भारी नुकसान उठाना पड़ा। रशियन टैरेटरी में भी इस भूकंप ने खलबली मचा दी थी।

Baba Novels Chat Room

पीत सागर और जापान सागर के मिलान बिंदु पर कोरियाई द्वीप स्थित है। प्राकृतिक रूप से अत्यंत समृद्ध इस प्रायद्वीप के कुल भू-भाग का क्षेत्रफल 21,982 वर्ग कि.मी. है जिसमें कोरिया देश स्थित है। कोरिया दो भागों में बंटा हुआ है-उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया!

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कभी उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया एक ही थे, जो सत्ता-संघर्षों के कारण विभाजित हो गए। इनके विभाजन में एकरसता नहीं दिखाई देती। जहां क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर कोरिया दक्षिण कोरिया से कुछ बड़ा है, वहीं आबादी के हिसाब से दक्षिण कोरिया की जनसंख्या उत्तर कोरिया से दुगनी से भी अधिक है। स्पष्ट है कि कोरिया के विभाजन में उत्तर कोरियाई महत्त्वाकांक्षाओं की प्रमुख भूमिका रही है। स्वाभाविक रूप से जहां दक्षिण कोरिया विश्व समुदाय के साथ शांतिपूर्वक संबंध बनाए रखने

का पक्षधर रहा है, वहीं उत्तर कोरिया में विप्लवी, स्वयंभू और उच्च महत्त्वांकाक्षी शासकों ने एक बार फिर से हिटलरी युग का स्मरण करा दिया है।

उत्तर कोरिया के वर्तमान तानाशाह किम-जोंग-उन ने अपनी सनक भरी महत्त्वाकांक्षाओं के चलते विश्व-शांति को खतरे में डालने के ऐसे सभी कार्य किए हैं, जो संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रतिबंधित हैं। सवा दो करोड़ की जनसंख्या वाला यह छोटा-सा देश, जिसकी राजधानी प्योंगयांग है, ने तकनीकी दृष्टि से बहुत तेजी से विकास किया है।

उत्तर कोरिया का सकल घरेलू उत्पाद 22,029 यू.एस. डॉलर है, जो भारत की जी.डी.पी. का लगभग सात गुना है, यहां तक कि चीन की जी.डी.पी. से भी तीन गुना अधिक है। कह सकते हैं कि उत्तर कोरिया की अर्थव्यवस्था समृद्ध दशा में है और यही एक बड़ा कारण है जिसने वहां के तानाशाह को असीमित अहंकार से भर दिया है। वह कोरियाई हिटलर मानवता का जैसे घोर शत्रु बनने जा रहा है। रासायनिक हथियारों की विध्वंसकारी प्रकृति पर समस्त विश्व चिंतन कर रहा है। अणु बम से भी दो से तीन गुना अधिक विध्वंसकारी हथियारों को मानव समाज के लिए घातक मानकर दुनिया के सभी प्रमुख राष्ट्र इन पर प्रतिबंध लगाने को सहमत हुए हैं, मगर यह तानाशाह विश्व समुदाय के किसी प्रतिबंध की परवाह नहीं करता।

तानाशाह किम-जोंग-उन अपनी सनक और हिटलरी मानसिकता के चलते स्वयं को संसार के सबसे शक्तिशाली शासक के रूप में स्वीकार कराना चाहता है। रक्षा कार्यक्रम के नाम पर वह उत्तर कोरिया को परमाणु शक्ति का एक ऐसा केंद्र बना देना चाहता है जिसके घर-घर में परमाणु बम उपलब्ध हों। पिछले कुछ सालों से उसने जितने परमाणु परीक्षण किए हैं, उनसे रूस, अमेरिका, चीन व भारत भी स्तब्ध हैं।

ऐसा भी नहीं है कि अकेला उत्तर कोरिया ही विश्व में परमाणुसंपन्न राष्ट्र है, अपितु कई अन्य देशों में भी परमाणु शक्ति का विशाल भंडार है। अंतर है तो केवल मानसिकता का! जहां अन्य परमाणु शक्तिसंपन्न देश रक्षात्मक रूप से इन विध्वंसकारी हथियारों को सहेजे बैठे हैं, वहीं कोरियाई हिटलर उनके दम पर विश्व को तीसरे विश्वयुद्ध की आग में झोंकने को तत्पर है।

अगस्त, 2017 से सितंबर, 2017 तक के छोटे-से समयांतराल में तानाशाह ने अपनी तानाशाही को मुहरबंद करते हुए निरंतर पांच परीक्षण किए। इससे विश्व समुदाय चिंतित हो उठा। आज भी तानाशाह किम-जोंग-उन के नेतृत्व में उत्तर कोरिया का परमाणु अनुसंधान केंद्र एक ऐसे महाविनाशकारी हाइड्रोजन बम का भूमिगत परीक्षण करने जा रहा था, जो विश्व-शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा था।

Baba Novels Chat Room

ऐसा नहीं था कि तानाशाह की मनमानी का विरोध करने वाला कोई नहीं था। कुछ वर्ष पूर्व तानाशाह के भाई ने इस विषय पर अपना विरोध जताया था, तो तानाशाह ने अपने हाथों से उसे गोली मार दी थी।

"जो भी मेरी सोच के शुरू होने से अंत तक की रेखा के किसी भी बिंदु पर, कैसा भी हस्तक्षेप करेगा, उसका यही हश्र होगा।" तानाशाह का भयावह मंत्र था।

इसके बाद विरोध के स्वर मुखर होने लगभग बंद हो गए थे, मगर अंदरूनी विरोध आज भी कुछ हृदयों में पनप रहा था। इन सबसे बेपरवाह तानाशाह पिछले कुछ सप्ताह से 'कार्स' (Korean Automic Research Centre) में स्थायी रूप से निवास कर रहा था। इतने दिनों में कोई यह दावा नहीं कर सकता था कि तानाशाह कभी लगातार दो घंटे की नींद भी लेता हो। उसके आसपास कड़ी सुरक्षा थी, पर वह स्वयं इतना सतर्क था कि किसी सुरक्षाकर्मी पर भी विश्वास नहीं करता था। उसने अपने सुरक्षा दस्ते के कुछ लोगों के परिवारों को अपनी शाही कैद में रखा हुआ था जिससे वे सुरक्षाकर्मी उसके संकेत पर कुछ भी करने को विवश थे। उसका खुफिया तंत्र भी ऐसे ही दबाव में गजब की परफॉर्मेंस देता था।

तानाशाह तानाशाही की हर बारीकी जानता था, तभी तो वह खाने की वस्तुएं भी औरों को चखाने के बाद खाता था। वह विश्व को अपनी शक्ति के सामने झुकाने का ऐसा असंभव स्वप्न देखता था जिसे देखते हुए कितने ही तानाशाह इस दुनिया से कूच कर गए थे। आज उसके स्वप्न का एक अध्याय और संपन्न हो जाने वाला था, जब दुनिया हाइड्रोजन बम का परीक्षण देखेगी।

तानाशाह कार्स के उस भाग में जहां परीक्षण होना था, अपने सुरक्षाबलों से घिरा हुआ था। सैकड़ों वैज्ञानिक अपने काम में जुटे थे। हाइड्रोजन बम को लांच करने की तैयारी आखिरी चरण में चल रही थी।

दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में उस समय हड़कंप मच गया, जब भयानक विस्फोट की आवाज के साथ भूकंप का तीव्र झटका समूचे कोरियाई प्रायद्वीप को प्रकंपित कर गया। राजधानी के रक्षा सदन में उस समय राष्ट्रपति की अध्यक्षता में आपातकालीन मीटिंग चल रही थी। अभी पांच मिनट पहले ही उत्तर कोरिया में मौजूद उनके मुखबिर ने जानकारी दी थी कि तानाशाह ने उस हफ्ते का छठा और सबसे शक्तिशाली परमाणु परीक्षण करने का इरादा किया है और कार्स में इसकी पूरी तैयारियां हो चुकी हैं। अभी वह कुछ और बता पाता कि संबंध-विच्छेद हो गया।

दक्षिण कोरिया के विदेश मंत्री सिम-वांग-यू, जो इस विषय पर वार्ता कर रहे थे, आह भरकर रह गए। अभी वे इस पर कोई प्रतिक्रिया दे पाते, तब तक महाविस्फोट हुआ और पृथ्वी में जो कंपन हुआ, उसने सबको राष्ट्रपति सहित कुर्सियों से गिरा दिया।

यह भूकंप इतना जबरदस्त था कि सदन में रखी प्रत्येक चीज अस्त-व्यस्त हो गई और वहां भगदड़ मच गई। सुरक्षाकर्मी राष्ट्रपति को लेकर बाहर की ओर भागे।

बाहर का दृश्य और भी भयावह था। कई ऊंची इमारतें भर-भराकर गिर गई थीं। सदन की इमारत भूकंपरोधी होने के कारण उस झटके से प्रकंपित अवश्य हुई, पर अपने स्थान पर खड़ी रही।

"यह...यह हाइड्रोजन बम था!" रक्षा विशेषज्ञ ने चिंतित स्वर में कहा—"यह इस कालखंड का सबसे विध्वंसकारी, परमाणु बम से भी तीन गुना अधिक शक्तिशाली बम है, जो यदि अपनी पूरी क्षमता से प्रयोग हो तो एक ही बार में एशिया महाद्वीप का अस्तित्व मिटा देगा।"

"यह...यह पागल तानाशाह मानवता का घोर शत्रु है।" राष्ट्रपति ने विवशता से दांत पीसे—"काश...यह हमारे हत्थे चढ़ जाए तो हम इसे गोली से उड़ा दें।" राष्ट्रपति ने शीघ्रता से अपने अधिनस्थों को आदेश दिया—"पहले तत्काल अपने समूचे प्रशासन को अलर्ट कर दीजिए। इस भयावह भूकंप ने न जाने कहां-कहां, क्या-क्या प्रलय की होगी। राहत और बचाव कार्य युद्ध स्तर पर आरंभ किए जाएं।"

संबंधित अधिकारी अपने-अपने काम में जुट गए। सेना को इस स्थिति में कमान सौंप दी गई। इस महाविस्फोट ने दूर-दूर तक अपना प्रभाव दिखाया था। चीन के सीमावर्ती क्षेत्र में पहाड़ दरक गए और बाह्य आबादी को जान-माल का भारी नुकसान उठाना पड़ा। रशियन टैरेटरी में भी इस भूकंप ने खलबली मचा दी थी। समूचे विश्व में इस महाविस्फोट की तत्काल सूचना फैल गई और राष्ट्राध्यक्ष एक स्वर में तानाशाह की निंदा करने लगे।

Baba Novels Chat Room

6

असीरगढ़ के किले में अश्वत्थामा

जब पुजारी मंदिर में पहुंचा तो उसने देखा कि शिवलिंग पर दुर्लभ प्रजाति के धतूरे के पुष्प और पत्र चढ़े हुए थे, लेकिन उस शिवभक्त अर्थात् अश्वत्थामा का कुछ अता-पता नहीं था। पुजारी की पूजा सामग्री सुरक्षित रखी थी। उसने भी जल चढ़ाया और फिर अपने गांव आकर गांव वालों को सारा वृत्तांत कह सुनाया।

इस घटना ने अश्वत्थामा की प्रचलित कथा की पुष्टि कर दी थी।

Baba Novels Chat Room

असीरगढ़ का किला मध्य प्रदेश के सतपुड़ा पठार पर उतावली नदी के किनारे ऊंची पहाड़ी पर निर्मित तेरहवीं शताब्दी के इस किले के ध्वंसावशेष आज भी इसे अपने समय का अभेद्य दुर्ग दर्शाते हैं।

बुरहानपुर के विशाल जंगल के विस्तार में निर्मित इस किले को देखने बहुत कम सैलानी पहुंचते हैं। इसका कारण यहां का दुर्गम मार्ग तो है ही, साथ ही जंगल में हिंसक जीवों का होना भी यहां लोगों के आवागमन में बाधा बन रहा है।

असीरगढ़ के किले से सबसे करीबी नगर बुरहानपुर है, जो किले से लगभग पच्चीस किलोमीटर दूर है। यह क्षेत्र कई राजवंशों द्वारा शासित रहा है। यहां ऐसे कई भव्य किले निर्मित हैं, जो पर्यटकों की दृष्टि में इस किले से अधिक सुरक्षित थे।

असीरगढ़ के किले के बारे में कुछ भयभीत कर देने वाली किंवदंतियां भी फैली थीं, जिनके कारण लोग वहां जाने से कतराते थे।

जनश्रुति थी कि उस जंगल में अतृप्त आत्माओं का विचरण होता था, जो वहां जाने वालों को मार डालती थीं। कुछ लोगों का मानना था कि जंगल के उस किले में बने शिव मंदिर में महाभारत काल के प्रमुख अमर योद्धा द्रोणपुत्र अश्वत्थामा नियमित रूप से पूजा करने आते हैं और जंगल में यहां-वहां घूमते रहते हैं।

आसपास के देहात में अश्वत्थामा से जुड़ी बहुत-सी बातें फैली हुई थीं। कुछ चरवाहे दावा भी करते थे कि उन्होंने अश्वत्थामा को देखा है। बड़े-बुजुर्गों में से कुछ इस बात की पुष्टि भी करते थे।

ऐसे लोगों के अनुसार, अश्वत्थामा नौ फुट लंबा और बेहद मजबूत कद-काठी का विशालकाय मनुष्य था जिसके माथे पर कपड़ा बंधा रहता था, जो खून से रंगा होता था।

एक वृद्ध का तो यह भी कहना था कि उसके दादाजी एक बार जंगल से गुजर रहे थे, तो अश्वत्थामा सामने आ गया और वे भय से बेहोश हो गए। जब होश आया तो उनका गमछा और धोती गायब थे। अश्वत्थामा उन्हें ले गया था और अपने मस्तक के घाव पर बांधता था।

कई आदिवासी यह भी बताते थे कि अश्वत्थामा उनके कबीले से आकर रुई और कपड़े ले जाता था और वे लोग आपस में एक-दूसरे पर चोरी का इल्जाम लगाकर लड़ते रहते थे। एक दिन एक औरत ने अश्वत्थामा को देख लिया, पर वह अंधी हो गई थी।

सबसे बड़ा रहस्योद्घाटन एक पुजारी ने किया, जो शिवरात्रि के अवसर पर किले के मंदिर में पूजा करने गया था। उसने देखा कि मंदिर पूरी तरह साफ था और वहां किसी ने पूजा की थी। इसके बाद पुजारी ने भी पूजा की। अगली सुबह उसे जलाभिषेक करना था। अत: उस रात उसने मंदिर में महामृत्युंजय मंत्र का अखंड जाप किया।

जब पुजारी ब्रह्ममुहूर्त में नदी में स्नान करने गया तो वहां नदी में उसे आसमान की ओर हाथ उठाए 'ॐ नम: शिवाय' का जाप करता एक व्यक्ति दिखाई दिया, जो जल के भीतर धड़ तक कितना था, यह तो पता नहीं, पर जल से ऊपर उसकी ऊंचाई पांच फुट से कुछ कम नहीं थी। ऐसा लगता था कि कोई आदमी जिसके पैर नहीं हैं, जल की सतह पर खड़ा ध्यानमग्न था।

पुजारी ने 'ॐ नम: शिवाय' का नाद किया, मगर उस शिवभक्त का ध्यान भंग नहीं हुआ। पुजारी कौतूहल से उसे देख रहा था। सूर्य की लालिमा ने वातावरण में सुरमई प्रकाश फैला दिया था।

इसी के साथ उस शिवभक्त के हाथ सूर्य नमस्कार करने लगे। पुजारी आश्चर्य

Baba Novels Chat Room

में पड़ गया, क्योंकि उस शिवभक्त के हाथ असाधारण रूप से बड़े थे, फिर वह शिवभक्त पानी से बाहर आने लगा तो पुजारी की घिग्घी बंध गई। उसे अपने पुरखों से सुनी अश्वत्थामा की कहानी याद आने लगी थी।

पुजारी ने उस कहानी पर आज तक विश्वास नहीं किया था मगर आज उसके सामने सच में ही वह पौराणिक योद्धा था जिसके बारे में मान्यता थी कि उसे देखने वाला अंधा हो जाता था।

पुजारी भयातुर होकर 'ओम-ओम' का जाप करने लगा, लेकिन निर्विकार भाव से अश्वत्थामा उसके समीप से निकलकर मंदिर की ओर चला गया। पुजारी अंधा तो नहीं हुआ, पर भय से बेहोश हो गया था।

जब पुजारी को होश आया तो चारों ओर धूप खिली हुई थी। उसे सब दिखाई भी दे रहा था। वह यह जानकर बहुत खुश था कि वह अंधा नहीं हुआ था। इसकी वजह उसने अपनी शिव-श्रद्धा को माना।

जब पुजारी मंदिर में पहुंचा तो उसने देखा कि शिवलिंग पर दुर्लभ प्रजाति के धतूरे के पुष्प और पत्र चढ़े हुए थे, लेकिन उस शिवभक्त अर्थात् अश्वत्थामा का कुछ अता-पता नहीं था। पुजारी की पूजा सामग्री सुरक्षित रखी थी। उसने भी जल चढ़ाया और फिर अपने गांव आकर गांव वालों को सारा वृत्तांत कह सुनाया।

इस घटना ने अश्वत्थामा की प्रचलित कथा की पुष्टि कर दी थी। कुछ साहसी पत्रकारों ने इस सच्चाई को जानने के प्रयास शुरू किए और किले में जा छिपे। सवेरा होने पर उन्हें न चाहते हुए भी नींद आ गई, जैसे कोई अदृश्य शक्ति उन्हें जबरन सोने के लिए बाध्य कर रही थी।

जब वे सचेत हुए तो सूर्य का प्रकाश फैला हुआ था। वे मंदिर में गए तो आश्चर्य में पड़ गए। उन्हें भी वही दुर्लभ धतूरे के पुष्प और पत्र शिवलिंग पर चढ़े मिले। इसका मतलब साफ था कि वहां प्रातः पूजा हुई थी।

अगले कई दिन निगरानी करने पर भी उनको पूजा करने वाला तो नहीं दिखा, पर पूजा संपन्न हुई मिली। इसके बाद तकनीक का इस्तेमाल किया गया। कई स्वचालित कैमरे मंदिर में लगाए गए, पर उनमें धुंधलाहट के चित्र ही मिल सके। अंततः चार पत्रकारों ने दु:साहस किया और उन्होंने मंदिर में बैठने का निर्णय लिया।

चारों पत्रकारों ने रात-भर जागकर बारी-बारी से पहरा दिया, मगर सुबह होने पर चारों इस बार भी अनायास ही सो गए। अंततः उन्हें भी यह मानना ही पड़ा कि अश्वत्थामा की कथा में कुछ तो सच है। अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने इस घटना को अखबार में छापा।

Baba Novels Chat Room

इस तरह उस जंगल में लोगों का आना-जाना प्रायः कम होता गया, फिर इस प्रदेश में नक्सलवाद ने सिर उठाया और दुर्गम जंगल नक्सलियों की शरणस्थली बन गया जिससे आम आदमी बिलकुल ही उस ओर जाने से घबराने लगा।

धीरे-धीरे अश्वत्थामा की कहानी भी भुलाई जाने लगी और केवल मीडिया ही यदा-कदा इस ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कराता रहा।

आधुनिकता ने भारतीय समाज को प्राचीनता से दूर कर दिया था, विज्ञान ने बहुत से मिथक तोड़े थे, इंसान सजग, शिक्षित और तर्कशील हो गया था। ऐसे में अश्वत्थामा केवल अफवाह की बात बनकर रह गया था।

यद्यपि कुछ लोग अब भी दावा करते थे कि किले के मंदिर में नियमित रूप से दुर्लभ पुष्प और पत्रों से पूजा होती थी।

Baba Novels Chat Room

7

नक्सली-आतंकी गठजोड़

"इस मंदिर के बारे में कुछ दंतकथाएं भी सुनी जाती हैं।" एक नक्सली ने दबे स्वर में कहा।

"कैसी दंतकथाएं! यह अफवाहों का देश है।"

"सुनते हैं कि यहां हर सुबह सवेरे अश्वत्थामा पूजा करने आते हैं।"

"कौन अश्वत्थामा? कोई पुजारी होगा।"

"नहीं श्रीमान्! वह महाभारत के समय का प्रसिद्ध योद्धा है। बताया जाता है कि इस मंदिर में वे रोज पूजा करने आते हैं...।"

Baba Novels Chat Room

अबू सैयादी-अल-बगदादी वह अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी था, जो आतंकवादियों को प्रशिक्षण देने का विशेषज्ञ था। वह किसी भी देश में किसी बड़ी आतंकी घटना को अंजाम देने के बड़े-बड़े कॉन्ट्रेक्ट भी लेता था। दुनिया-भर में फैले आतंकी समूहों के लिए वह काम करता था। इंटरपोल और रॉ जैसे विभागों में मोस्ट वांटेड अबू सैयाद ने अपने नाम के साथ 'सैयादी' इसलिए जोड़ा कि वह खुद को इंसानों का बेहतरीन शिकारी समझता था।

रूप बदलने में माहिर अबू सैयादी मूल रूप से फिलिस्तीन में जन्मा था और बचपन में ही अपराध की दुनिया में आ गया था। वह जैसे-जैसे बड़ा होता गया, उसकी पैशाचिक प्रवृत्ति बढ़ती गई। इजराइल-फिलिस्तीन विवाद में अबू सैयादी ने जमकर बारूद का व्यापार किया। उसमें देशभक्ति जैसी कोई भावना कभी नहीं रही, इस वजह से वह अपने ही लोगों के विरुद्ध आतंकी योजनाएं बना देता था। उस पर देशद्रोह का केस चला और उसे फांसी

की सजा निश्चित थी, पर इजराइली आतंकी समूह ने उसे मदद पहुंचाकर फरार करा दिया। वह तब से कभी नहीं पकड़ा गया। धीरे-धीरे वह अंतर्राष्ट्रीय अपराध जगत में जाना जाने लगा। जब आई.एस. का उदय हुआ तो अबू सैयादी ने बड़ी कीमत लेकर इसके नेटवर्क को खड़ा करने में मदद की। उसने आई.एस. के नए आतंकियों को प्रशिक्षित किया और उन्हें निर्मम हत्यारे बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अल-कायदा जैसे खूंखार आतंकवादी संगठन के लिए भी उसने काम किया। दुनिया-भर की सुरक्षा एजेंसियां उसके पीछे थीं, मगर वह अव्वल दर्जे का धूर्त छलावे की तरह यहां से वहां विचरण करता रहा।

मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़ में सक्रिय नक्सली संगठन के मुखिया दहलावर ने जब सरकारी दमनचक्र में नक्सलियों को घिरते देखा तो उसने किसी नई तकनीक का सहारा लेने का मन बनाया। उसका संपर्क कुछ बड़े आतंकी संगठनों से भी था। अत: उसे किसी ने सलाह दी कि उसे अपने लोगों को अत्याधुनिक हथियारों और बेहतर प्रशिक्षण से अच्छे परिणाम देने योग्य बना लेना चाहिए। उसने जब किसी ऐसे शख्स के बारे में जानकारी ली तो अबू सैयादी का नाम सामने आया, जो हथियार और प्रशिक्षण दोनों ही उपलब्ध करा सकता था। वह उस समय संयोग से पाकिस्तान में था। दहलावर ने अपने संपर्कों के माध्यम से सैयादी से मुलाकात भी की और एक बड़ी रकम के बदले उसे पंद्रह दिन का ट्रेनर बना लेने में सफलता भी पाई। इसके साथ ही दहलावर ने हथियारों का सौदा भी कर लिया जिनकी डिलीवरी इसी अवधि में हो जाने वाली थी।

सैयादी भेष बदलकर भारत आ गया और मध्य प्रदेश आकर दहलावर से मिला। समय को व्यर्थ न करते हुए सैयादी ने अपना काम शुरू भी कर दिया था। वह नक्सलियों को बड़े खतरनाक दांव-पेच और निर्ममता का सबक देने लगा था। सैयादी सामान्य तौर पर औरत से दूर रहने वाला आदमी था और दहलावर के ऐसे ऑफर को कई बार ठुकरा भी चुका था, पर एक दिन उसने अपनी कसम तब तोड़ दी, जब उसने गैंग की एक खूबसूरत सदस्या को देखा। उसे फिर तो जैसे चस्का ही लग गया।

एक दिन सैयादी कुछ रंगरूट नक्सलियों के साथ जंगल में कुछ जरूरी ट्रेनिंग देने गया, जहां उसे किला दिखाई दिया। उत्सुकतावश वह किले के अंदर भी गया और बड़ा प्रभावित हुआ। उसने वहीं कुछ दिन ठहरने का इरादा किया। शाम होने पर भोजन के लिए हिरन का शिकार किया और उसे भूना गया। हिरन की खाल उतार ली गई और अवशेष इधर-उधर फेंक दिए। यह सारा काम किले में बने मंदिर के पास खुले मैदान में किया गया। यद्यपि एक नक्सली युवक ने हल्का-सा विरोध भी किया था जिसे सैयादी किसी खातिर में नहीं लाया।

Boba Novels Chat Room

"एक कामयाब विद्रोही लड़ाका बनना है तो अपने मन में दबे तमाम डरों को खत्म करो।" सैयादी क्रूरता से बोला—"धर्म का डर सबसे भयानक होता है। इसे अपने पास भी मत फटकने दो, वैसे भी हम मंदिर से तो दूर ही हैं।"

भोजन तैयार था। सैयादी ने अपने हाथों से उसके टुकड़े किए। विशेष प्रकार के मसालों की गंध कह रही थी कि शिकार बहुत लजीज बना था। बस अब खाने की तैयारी हो रही थी कि बादल गरज उठे और हल्की-हल्की बूंदें पड़ने लगीं। बारिश से बचने के लिए सबसे समीप का स्थान मंदिर का बरामदा ही था। सैयादी ने उधर ही चलने को कहा।

"मगर...मंदिर की पवित्रता...।" एक युवक ने प्रतिवाद किया—"हमें किले के अंदर चले जाना चाहिए। वह बहुत दूर तो नहीं है।"

सैयादी किसी भी प्रतिवाद की परवाह किए बिना अपने हिस्से का भोजन लेकर दौड़ता हुआ मंदिर के छोटे-से बरामदे में पहुंच गया। उसके पीछे तीन-चार नक्सली भी पहुंच गए, मगर उनमें से कुछ की अंतरात्मा अभी मरी नहीं थी। अतः वे उधर नहीं गए।

"मूर्ख हैं। पत्थरों में इतनी आस्था रखते हैं। इतनी आस्था अपने काम में रखें तो सरकार को दांतों तले पसीना आ जाए।" सैयादी ने हिकारत से कहा—"भूल गए कि इसी आस्था ने सोमनाथ के मंदिर में गजनवी के हाथों कैसा नरसंहार करा दिया था?"

"हमारे देश की यह बड़ी प्रॉब्लम है।" एक नक्सली बोला—"लोग मां-बाप का तिरस्कार करते हैं, पर धर्म के नाम पर दानी बन जाते हैं। जिंदा इंसानों पर जुल्म करते हैं और पत्थरों के सामने सिर झुकाते हैं।"

सैयादी नक्सली युवक की बात सुनता हुआ बड़ी तन्मयता से अपने हिस्से का भोजन चबा रहा था, तभी जोर से बिजली कड़की तो एक युवक बुरी तरह चीखा।

"सां...सांप...सांप...!"

"कहां?" सैयादी उछलकर खड़ा हो गया।

"तुम्हारे पीछे से मंदिर में घुसा है। काला भुजंग नागराज है। इसका काटा तो पानी भी नहीं मांगता। यहां से चलो। ऐसी डरावनी रात में यहां रुकने से मौत का शिकार बन सकते हैं। जहां शिव मंदिर होता है, वहां बहुत नाग पाए जाते हैं।"

"तुम लोग कैसे विद्रोही बन गए? तुम्हारे अपने अंदर ही इतना डर बसा पड़ा है तो तुम किसी और को क्या डराओगे?" सैयादी बोला—"जंगल के जीव ऐसे ही विचरण करते रहते हैं। ये सब आदमी का शिकार होते हैं। हां, जहरीले सांपों से सावधान रहना चाहिए। खाना खा लो, फिर किले के अंदर चलेंगे।"

Baba Novels Chat Room

"वह...क्या है?" एक युवक थरथराया और उसने मुख्य फाटक की ओर संकेत किया। सबने उधर देखा तो वहां सुर्ख सुलगती आंखें दिखाई दीं, जो किसी भेडिये के वहां होने का संकेत कर रही थीं। सैयादी ने अपनी शक्तिशाली टॉर्च जलाकर उस ओर घुमाई तो सब घबरा उठे। वहां एक नहीं, भेडियों का झुंड था। बारिश की बूंदे टॉर्च के प्रकाश में साफ दिखाई दे रही थीं। सैयादी ने भोजन वहीं फेंक दिया और अपना माउजर निकाला। उसके साथियों ने भी ऐसा ही किया।

"हमें सोचना चाहिए था कि ऐसे खंडहरों में हिंसक पशुओं के समूह रात्रि-विश्राम करते हैं। हमें किला छोड़ना होगा। इससे पहले कि इनकी संख्या बढ़ती जाए, अपने बाकी साथियों को सूचित करो। पीछे जो टूटी दीवार है, उससे निकल चलते हैं।"

"हमारे पास जो बारूद है, वह बारिश में भीग सकता है।"

"उसे यहीं मंदिर में छोड़ दो। सवेरे ले जाएंगे। जब हम ही यहां नहीं रुक पा रहे हैं तो किसी और की क्या मजाल!" सैयादी बोला।

"इस मंदिर के बारे में कुछ दंतकथाएं भी सुनी जाती हैं।" एक नक्सली ने दबे स्वर में कहा।

"कैसी दंतकथाएं! यह अफवाहों का देश है।"

"सुनते हैं कि यहां हर सुबह सवेरे अश्वत्थामा पूजा करने आते हैं।"

"कौन अश्वत्थामा? कोई पुजारी होगा।"

"नहीं श्रीमान्! वह महाभारत के समय का प्रसिद्ध योद्धा है। बताया जाता है कि इस मंदिर में वे रोज पूजा करने आते हैं। कई लोगों ने उन्हें देखा भी है।"

"बकवास!" सैयादी ने मुंह बिचकाया—"महाभारत आज हुआ है! इस देश में ही ऐसी असंभव और अनहोनी बात पर विश्वास किया जा सकता है। हजारों साल पहले कोई आदमी हुआ और आज भी जिंदा है। बकवास!"

"कुछ लोगों ने उन्हें देखा है। सुबह चार बजे वे यहां जरूर आते हैं।"

"अच्छा! चार बजे आता है, दस-बीस मिनट पूजा भी करता होगा। एक टाइमबम सैट कर दो। चार बजकर पंद्रह मिनट का टाइम सैट कर दो। देखते हैं कि क्या होता है... जो भी होगा, अश्वत्थामा या अर्जुन, यहीं बिखरा पड़ा होगा।"

"नहीं, ऐसा कुछ करना ठीक नहीं होगा।" एक युवक ने प्रतिवाद किया—"मंदिर को नुकसान पहुंचने से बेकार बलवा हो जाएगा। प्रशासन सख्त हो जाएगा।"

"अबे! जब इतना बड़ा वीर योद्धा यहां आएगा, तो बम ब्लास्ट क्यों होने देगा?" सैयादी ने कहा और मनमानी करने लगा। उसके साथी आतंकित भाव से स्तब्ध खड़े थे और सैयादी अपने काम में जुट गया था।

Baba Novels Chat Room

8

अश्वत्थामा के विचरण की पुष्टि

"अश्वत्थामा के बारे में क्या कह रहे थे?" प्रभास ने सवाल किया।

"यही कि वह है, पर नहीं है। है, इसलिए कि उस मंदिर में बिना नागा पूजा करने आता है, इसके प्रमाण मिलते हैं। जिन दुर्लभ धतूरे के पुष्प और पत्रों से पूजा होती है, वे उतावली नदी से गिरने वाले खतरनाक जलप्रपात की गहरी खाई में पाए जाते हैं। वहां साधारण इंसान का पहुंच पाना नामुमकिन है। इसका मतलब यह है कि कोई असाधारण व्यक्ति, जैसे अश्वत्थामा ही यह असंभव कार्य संभव कर सकता है।"

Baba Novels Chat Room

प्रभास अपने एंप्लॉयर के साथ बुरहानपुर आ गया था। दोनों एक होटल में ठहरे, जहां सेठी ने अपनी आदत के विपरीत खुलकर पैसा खर्च किया। प्रभास अपने बॉस में आए इस बदलाव पर हैरान था। जो आदमी पाई-पाई का हिसाब रखता था और किसी भी फिजूलखर्ची पर नाराज होकर दिखाता था, उसने महंगे हवाई सफर के बाद महंगे होटल और महंगे खाने पर पैसा खर्च किया था।

"बॉस, हम यहां एक ऐसी स्टोरी की खोज में आए हैं, जिसका नतीजा हमारे अनुकूल ही निकले, इसकी कोई गांरटी नहीं है।" प्रभास ने महंगी ब्रांडेड शराब की चुस्की लेते हुए गंभीरता के साथ कहा–"फिर भी आप इस तरह से खर्च कर रहे हैं, जैसे कहीं से आपको मुफ्त में टूर पैकेज मिला हो! आप कहते थे कि पैसे को सहेजना सीखो।"

"पुत्तर! तू जानता है कि मैं एक बिजनेसमैन हूं। फिजूलखर्ची मेरे शब्दकोष में नहीं है। जो खर्चा तू देख रहा है, वह इन्वेस्टमेंट है। समझ कि

मेरे सबसे तेज जासूस को दिया जाने वाला एडवांस है, जो इस समय की सबसे बड़ी खोज को मेरे नए-नवेले चैनल पर 'टेलीकास्ट' करके मेरा बिजनेस बढ़ाएगा।"

"क्या...क्या मतलब?" प्रभास ने उसे घूरा।

"मतलब साफ है।" सेठी कुटिलता से हंसकर बोला—"मैं इस मिशन पर दो लाख रुपया खर्च करने का मन बना चुका हूं, जो तेरी चार महीने की पगार है। समझ कि वह पगार तुझे एडवांस में मिल गई। अब कंडीशन दो हैं—तू अगर मिशन को किसी सुखद अंजाम तक पहुंचा सका तो तुझे एक का पांच मिलेगा, तेरी पोस्ट बढ़ जाएगी और वह क्या कहते हैं—कुख्यात या विख्यात भी हो जाएगा और अगर तू ऐसे ही घूम-फिरकर खाली हाथ लौटा तो तेरा एंप्लॉयर तुझे खाली हाथ नहीं रहने देगा, तेरा 'रिजाइन लैटर' गुलाबी लिफाफे में गुलाब के फूल समेत तुझे देगा।"

"यह तो सरासर धांधली है।" प्रभास हकबकाकर बोला—"एक असंभव और अफवाही मिशन को आड़ बनाकर मुझे नौकरी से निकालने की साजिश है।"

"कोरी अफवाह तो नहीं है और यह बात तू अच्छी तरह जानता है। यहां के स्थानीय अखबार का एडिटर तेरा दोस्त है, मेरा नहीं और तू उससे बात कर चुका है। रही बात असंभव कहने की तो यह मैं तुझसे उम्मीद नहीं करता। तू नई पीढ़ी का नौजवान है, जो असंभव शब्द को ही नहीं मानते और इसे कोई सजा या साजिश मत कह। यह तेरे अंदर के टेलेंट को निखारने का अवसर है। तेरे अंदर मुझे एक अन्वेषी पत्रकार छुपा हुआ लगता है, उसका बाहर आना जरूरी है।"

"और वह तब बाहर आया माना जाएगा, जब मैं अश्वत्थामा को बंदी बनाकर पंजाब नरेश श्रीमन् प्रफुल्ल सेठी के सम्मुख ले आऊंगा।"

"ऐसा तूने कर दिखाया, किसी करिश्मे से ही सही, तो मैं अपनी छोटी बेटी का हाथ भी तेरे हाथ में दे दूंगा। करोल बाग वाली कोठी और चैनल का टॉप भी तू। अब बोल, यह मिशन तेरी बंद किस्मत के दरवाजे खोलने वाला है या नहीं?"

"बॉस, मुझ पर रहम करो, अगर मेरा आपको अपने चैनल में रहना पसंद नहीं है तो मैं खुद ही रिजाइन दे देता हूं। मेरे पास नौकरी की कमी नहीं है, पर ऐसे घुमाव से मुझे यह अहसास न दिलाइए कि आप मेरे काम से खुश नहीं हैं।"

"तेरा गिलास अभी खाली नहीं हुआ। स्पीड बढ़ा।" सेठी ने कहा।

"बॉस! आप जानते हैं कि मैं मेहनत में कसर नहीं छोड़ता। इस मिशन पर भी मैं अपना बेस्ट ही करूंगा। आप खुद मेरे साथ होंगे और देखेंगे कि...।"

"मैं क्यों साथ में होने लगा। मैं यहां अपने चचेरे भाई से मिलने आया हूं। कल उसके पास जाऊंगा और परसों वापस दिल्ली चला जाऊंगा। जो करना है, तुझे करना है। अकेले ही करना है। जरूरत का हर सामान तू खुद जुटा, पैसा तेरे पास होगा।"

Babe Novels Chat Room

"मैं समझ गया। जो मुझे करना है, वह यह है कि आज से ही नई नौकरी की तलाश शुरू कर देनी है, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि मैं आपकी शर्तें पूरी कर सकूंगा। यह एक टीमवर्क मिशन है और आप मुझे अकेले ही छोड़ जा रहे हैं।"

"जो काम तेरा है, वह तू ही कर। टीम मैंने इसलिए तुझे नहीं दी, क्योंकि इससे सफलता के कई दावेदार हो जाते और तेरा महत्त्व कम हो जाता। भलेमानस, मैं तेरी भलाई के लिए सब कर रहा हूं। तू गधे जैसा बर्ताव मत कर जिसे नमक दिया तो वह आंख फोड़ने की शिकायत करने लगा।"

"आप शुरू से ही सब सोचे बैठे थे। मुझे यहां लाकर फंसा दिया।"

"देख भई, अब ऐसी बात करके मन में यह संदेह पैदा मत कर कि मैंने एक बड़े काम के लिए तुझे चुनकर गलती तो नहीं कर दी। इतनी ब्रांडेड और महंगी दारू हम इसलिए नहीं पी रहे हैं कि हमें ऐसी थकी-थकी बातें करनी हैं। इससे तो तेरे मन में घोर अलर्टनैस आनी चाहिए थी और तूने ताल ठोककर कह देना था कि तू कुछ नहीं तो उस अश्वत्थामा का इंटरव्यू तो जरूर ही लेकर आएगा।"

"मजाक समझ रखा है!" पास में बैठा शख्स बोला जिसकी पीठ उनकी तरफ थी—"आज तक तो न जाने कितने घोड़े लगाए जा चुके हैं, पर नतीजा सिफर रहा है। किसी से अश्वत्थामा का आस-पास का पता तक तो लगा नहीं और ये यहां बैठकर उसका इंटरव्यू लेने की बात कर रहे हैं।"

"कौन हो भई!" सेठी अप्रसन्नता से बोला—"हमारे विषय पर ही कुछ कह रहे हो?"

वह आदमी मुड़ा। शक्ल सूरत से वह खानाबदोश लग रहा था। कपड़े जरूर उसने शानदार पहने हुए थे। बिल्लौरी आंखों में गजब की चमक थी। उसके हाथ में थमा गिलास अभी भी आधा भरा हुआ था।

"आयम् व्योमेश खाजिया! एम.पी. का टॉप डिटेक्टिव! फिलहाल कम लोग जानते हैं, पर जल्दी ही इंडिया-भर में मुझे जाना-पहचाना जाएगा।" वह शख्स बोला।

"मैंने कभी यह नाम नहीं सुना।" सेठी ने कहा।

"न सुना होगा। वास्तव में जब मैं पुरातत्व विभाग से सस्पेंड हुआ तो मैंने अपनी डिटेक्टिव एजेंसी खोल ली। जमीन में दबे खजाने खोजना और पुरानी राजशाही इमारतों में जाकर खोजबीन करना मेरी स्पेशलिटी थी, मगर यह दुनिया मेरे इल्म को समझ नहीं सकी और मैं आज भी अपनी कीर्ति फैलने का इंतजार कर रहा हूं।"

"अश्वत्थामा के बारे में क्या कह रहे थे?" प्रभास ने सवाल किया।

"यही कि वह है, पर नहीं है। है, इसलिए कि उस मंदिर में बिना नागा पूजा करने आता है, इसके प्रमाण मिलते हैं। जिन दुर्लभ धतूरे के पुष्प और पत्रों मुझसे से पूजा होती है, वे उतावली नदी से गिरने वाले खतरनाक जलप्रपात की गहरी खाई में पाए जाते हैं। वहां साधारण इंसान का पहुंच पाना नामुमकिन है। इसका

मतलब यह है कि कोई असाधारण व्यक्ति, जैसे अश्वत्थामा ही यह असंभव कार्य संभव कर सकता है।"

"कुछ ऐसा सुनने में आया है कि तकनीक भी उसके सामने फेल है?"

"फेल ही है। कुछ साल पहले चार पत्रकारों ने कैमरे से उसके फोटो लेने की कोशिश की, मगर फोटो में कुछ भी नहीं आया, फिर और तकनीक आई तो वीडियो कैमरा भी लगाया गया। कुछ दु:साहसी लोगों ने खुद पहरा दिया, पर मंदिर में पूजा तो नियमित होती मिली, मगर पूजा करने वाला नहीं।" खोजिया ने बताया।

"सुना है कि जो भी उसके दर्शन करता है, वह अंधा हो जाता है?"

"मुझे पिछले बीस साल में एक भी आदमी ऐसा नहीं मिला। मेरा घर-बार तो है नहीं, तो मैं घुमक्कड़ी करता रहता हूं। मेरे पास अपनी जीप है, जो मेरा घर है। जहां जीप नहीं जा पाती, वहां मैं पैदल निकल लेता हूं। मुझे आज तक कोई ऐसा आदमी नहीं मिला, जो कहे कि वह अश्वत्थामा को देखने की वजह से अंधा हो गया। कुछ पीढ़ी पहले इस अफवाह पर ज्यादा जोर था, पर तब का समाज इतना ही अंधविश्वासी था।"

"कोई वास्तव में उसे देखने वाला नहीं मिला?"

"मिला। करीब दो माह पहले मिला और उसकी बात में मुझे कुछ सच्चाई मुझसे लगी भी, पर उसने किसी डर से किसी को यह बात नहीं बताई। मुझे बताई और भी वचन लिया कि मैं फोकट में किसी को उसके बारे में न बताऊं।"

"फोकट में मतलब! कुछ कीमत लेकर बता सकते हो?"

"मैं उसका पता बताने या उससे मिलाने का थोड़ा-सा चार्ज लूंगा, बाकी वह अपनी जानकारी की क्या कीमत लेगा, वही बताएगा।"

"जानकारी काम की न निकली या मनगढ़ंत हुई तो?" प्रभास ने पूछा।

"जो उसने मुझे बताया, उससे मुझे नहीं लगता कि वह आदमी झूठ बोल रहा है और फिर किसी मिशन के लिए ऐसे रिस्क तो लेने ही पड़ते हैं। मैं तुमसे कोई जबरदस्ती तो नहीं कर रहा हूं कि भई, मेरी जानकारी खरीदो।"

"तुम कितना चार्ज करते हो?" सेठी ने शंकित स्वर में पूछा।

"मेरा तो बिल भी भर दो तो चलेगा।" खोजिया ने कहा–"इरादा हो तो मैं कुछ खाने का ऑर्डर और कर देता हूं, बस इतना ही।"

"कर दो।" सेठी ने हिसाब लगाया। ज्यादा-से-ज्यादा हजार रुपया।

"उससे अभी मिलना चाहोगे या कल सुबह? दस बज भी चुके हैं।"

"हम अभी निकलेंगे।" प्रभास ने कहा–"क्यों बॉस?"

Baba Novels Chat Room

9

दो चिरंजीवियों का मानसिक संपर्क

Babe Novels Chat Room

"क्या मानव जाति पर आ रहे भावी संकट और अच्छाई पर बुराई के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए हमें कुछ नहीं करना चाहिए?" विभीषण चिंतित स्वर में बोले।

"वत्स विभीषण!" भगवान परशुराम बोले—"मानव जाति में बड़ी विविधता है। बुराई विशाल और शक्तिशाली हो सकती है, पर अच्छाई के प्रतिनिधि मानव उसे परास्त करने में सक्षम हैं। हजारों सालों से ऐसा हो रहा है। बुराई जिस प्रबलता से समाज को पीड़ा देती है, अच्छाई के समर्थक उसे उतनी ही निर्दयता से परास्त भी करते हैं। हर युग और कालखंड में मानवता को कष्ट देने वाले आततायी होते आए हैं और होते रहेंगे। इनके अंत का दायित्व भी श्रीहरि की प्रेरणा से मानव समाज के नायक निभाते रहेंगे। इस समय भी ऐसा ही होना चाहिए। श्रीहरि जिसे इस कालखंड में प्रेरित करेंगे, वही यह दायित्व धारण करेगा।"

विध्वंसा से भरे पात्र में जैसे ही कंपन हुआ, ध्यानस्थ विभीषण सजग हो गए। वह कंपन बहुत अधिक क्षमता का नहीं था जिससे यह तो स्पष्ट हो गया था कि यह 'विध्वंसा' का आंतरिक प्रयोग में हुआ विस्फोट था। पात्र में अस्थिर हो चुका तरल तत्त्व अब पुनः अपनी पूर्व अवस्था में

आकर स्थिर हो गया था। कुछ ही क्षणों में यह सब घटित हो गया था। इसमें तो कोई संदेह नहीं था कि पृथ्वी के गर्भ में हुआ वह विस्फोट निश्चय ही 'विध्वंसा' के तत्त्व से हुआ था।

विभीषण यह समझ गए थे कि किसी ने 'विध्वंसा का परीक्षण-भर किया है और इसकी विध्वंसक शक्ति को मापा है।

संकेतक ने दिशा का जो अनुमान बताया था, वह दक्षिण-पश्चिम था। वे इस समय स्वयं इसी दिशा में तपस्यारत थे तो यह भी निश्चित था कि यह आर्यावर्त या लंकाद्वीप में नहीं हुआ था। अवश्य ही 'विध्वंसा' सुदूर बसने वाली उन यवन अथवा यूरोपियन आदि किसी प्रजाति के हाथ लग गया था, जो अपनी प्रकृति से ही निर्मम और बर्बर थीं।

यह परीक्षण और विस्फोट इतना तो कह ही रहा था कि विध्वंसा अब मानव के हाथों में था और यदि किसी अति महत्त्वाकांक्षी शासक के पास था तो निश्चय ही मानव जाति संकट में थी।

विभीषण ने उसी क्षण ध्यान मुद्रा में जाकर मानसिक संवाद स्थापित किया।

"महान् परशुराम! मेरा प्रणाम स्वीकार करें!" विभीषण ने मानसिक संदेश में कहा।

"चिरंजीवी रहो लंकापति विभीषण! बहुत समय पश्चात् स्मरण किया।" उधर से भी मानसिक संदेश प्राप्त हो गया।

"भगवान परशुराम! कुछ क्षण पहले आपने पृथ्वी में प्रकंपन का अनुभव किया होगा, यदि आप उसके कंप-क्षेत्र में कहीं होंगे?"

"अवश्य किया है लंकापति! हम यह भी समझ गए हैं कि आपका संकेत 'विध्वंसा' की ओर है। हमें भी ऐसा ही प्रतीत होता है कि यह प्रकंपन 'विध्वंसा' का ही परीक्षण है।"

"भगवन्! यह क्षणिक घटना थी जिससे दिशा-ज्ञान का कुछ अनुभव तो हुआ है, परंतु निश्चित केंद्र बिंदु का ज्ञान नहीं हो सका। इस विषय में आपसे मार्गदर्शन चाहता हूं।"

"हे श्रीरामप्रिय! आप यह जानकर संभवतः हत्प्रभ रह जाएंगे कि आज का मानव तकनीक और विज्ञान में बहुत उन्नति कर चुका है।" भगवान परशुराम का गंभीर स्वर उनके मानस से टकराया।

"कैसी उन्नति भगवन्?"

"आपके समय में ब्रह्मांड तो यथावत् विशाल था, परंतु सुदूर महासागरों में स्थित महाद्वीपों में से उसे कुछ का ही ज्ञान था। आज के मानव ने पृथ्वीलोक पर

Baba Novels Chat Room

स्थित सात बड़े महाद्वीपों को खोज लिया है और प्रत्येक द्वीप पर विभिन्न मानव जाति का वास है। इनमें इतनी विविधता है कि एक ही द्वीप पर अनेक छोटे-मोटे देश बसे हैं। सबकी संस्कृति, सभ्यता और हित पृथक हैं। इनके कारण मानव ही मानव का घोर शत्रु बन गया है। देव, यक्ष, गंधर्व की उपाधियां मानव जाति ने धारण कर ली हैं। यहां तक कि आसुरी प्रवृत्तियों के कारण असुर भी इन्हीं में पाए जाने लगे हैं।"

"भगवन्! मेरे अग्रज महापंडित दशानन रावण ने मुझे पहले ही इस विषय में जानकारी प्रदान कर दी थी कि कलियुग में मानव ही समस्त उपाधियों का एकाधिकारी होगा और अपनी इच्छा के अनुसार ही अपनी जीवन-शैली को जिएगा।"

"भगवान वासुदेव ने भी द्वापरयुग में अपने दिव्य ज्ञान के द्वारा मानव के भविष्य का वर्णन किया था लंकापति! कलियुग में होने वाले परिवर्तनों के विषय में स्पष्ट किया था कि कलि के प्रभाव से मानव उन सभी विकारों से ग्रस्त हो जाएगा, जो उसके लिए निषिद्ध हैं। कदाचित् कोई विरला ही जीवन के महत्त्व और मूल उद्देश्य को समझेगा। मानव मन से स्वर्ग-नरक का भय समाप्त होकर आर्थिक स्थिति से उसका आकलन किया जाएगा। धनी लोग पृथ्वी पर ही स्वर्ग का आनंद लेंगे, जबकि निर्धन का जीवन नारकीय होगा। वाद परंपरा में अनीश्वरवाद मुख्य होगा और ईश्वर में विश्वास करने वाले कम-से-कम होते जाएंगे। धर्मवृक्ष शाखाओं में विस्तार लेगा और एक मूल होते हुए भी मानव में धार्मिक सौहार्द का अभाव रहेगा।"

"भगवन्! कलियुग के प्रभाव से मानवीय विकारों को बल मिलना स्वाभाविक ही था। यद्यपि मुझे शताब्दियों से समाधि की अवस्था में तपस्या में लीन रहने के कारण मानव जगत में हुए परिवर्तन का ज्ञान नहीं है, तथापि इतना आभास तो मुझे हो रहा है कि मानव इस समय पृथ्वीलोक पर पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारी हो गया है। अन्य युगों में मानव जाति पर आए संकटों का समाधान करने का दायित्व देवों पर होता था। बुराइयों का विनाश करने के लिए त्रिदेव अथवा उनके द्वारा नियुक्त देव पृथ्वी पर अवतरित होते थे, परंतु कलि के प्रभाव से देव समाज का पृथ्वी पर आवागमन प्रायः कम होता गया और मानव में उनके प्रति आस्था भी कम होती गई।"

"लंकापति! ऐसा कोई युग नहीं रहा जिसमें मानव-कल्याण के लिए देवात्माओं ने पृथ्वीलोक पर विभिन्न रूपों में मानवता का संदेश प्रसारित व प्रचारित न किया हो। युग तो क्या, ऐसा कोई एक क्षण भी रिक्त नहीं रहा, परंतु मूल समस्या यह है कि मानव जाति में सद्मार्ग पर गमन करने वालों और सत्संदेश सुनने वालों

Baba Novels Chat Room

की संख्या न्यून है। विकारों ने अधिकांश मानवों को स्वार्थी व आत्मकेंद्रित कर दिया है और संपूर्ण संसार में द्वेषपूर्ण प्रतिस्पर्धा ने अपना आधिपत्य जमा लिया है। आधिपत्यवादी दृष्टिकोण से मनुष्य, मनुष्य पर शासन करने की प्रवृत्ति पाले बैठा है। विज्ञान ने इसमें अपना योगदान दिया है। यद्यपि विज्ञान को वरदान के रूप में मानव-कल्याण का माध्यम माना गया था, परंतु धीरे-धीरे यह अभिशाप होता जा रहा है।"

"भगवन्! यह तो चिंता का विषय है। इससे तो मानव का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा। आसुरी प्रवृत्तियां शक्तिशाली होकर विनाश का दृश्य उपस्थित कर देंगी। विधि-विधान के अनुसार, कलियुग में भगवान कल्कि का अवतार होगा, जो बुराई के मार्ग पर चलने वालों को दंडित करने वाले और सद्मार्गियों के रक्षक होंगे, परंतु जहां तक मेरा अनुमान है, उसमें तो अभी बहुत समय शेष है, जबकि मानव का पतन अपने चरम पर है।"

"आप सत्य कह रहे हैं लंकापति! आपने वर्तमान दृश्य का सर्वथा उचित मूल्यांकन किया है।"

"भगवन्! आप इस विषय में क्या सोचते हैं? आपने पूर्व में भी तो पृथ्वी से कई बार अत्याचारियों का नाश किया था, फिर इस परिदृश्य में आप इतने तटस्थ क्यों हैं?"

"क्योंकि समय, देश, काल की परिस्थितियों के अनुसार हम अपना कार्य संपन्न कर चुके हैं। विधि के विधान के अनुसार हम अमरत्व के कारण सशरीर इस भूलोक पर भटक रहे हैं, अन्यथा हमारा समय समाप्त हो चुका है। हम कार्यमुक्त हो गए हैं। हमें किसी प्रकार के हस्तक्षेप का अधिकार नहीं है। इस मानवीय असंतुलन को संतुलित करने के लिए जो भी प्रतिनिधि नियुक्त है, वही इस कार्य को करेगा।"

"तो क्या हम निरुद्देश्य अमरत्व भोग रहे हैं भगवन्! क्या हमारा अमरत्व उद्देश्यहीन है?"

"लंकेश! वास्तव में यह अमरत्व हमें दंडस्वरूप मिला है। जिस मोक्ष के लिए जीवात्मा नाना प्रयास करती है, वह हमारे लिए मृग-मरीचिका है। हम इसे कर्म-विधान कह सकते हैं, फिर भी पूर्ण रूप से यह तो नहीं कहा जा सकता है कि हम निरुद्देश्य अमरत्व भोग रहे हैं। मानव-कल्याण ही हमारा उद्देश्य है। इसी कारण हमें अमरत्व मिला है, परंतु हम परिवर्तित समय में प्रत्यक्ष होकर मानव समाज के मध्य नहीं जा सकते। हमें प्रयास करते रहने हैं, परंतु अप्रत्यक्ष रूप से।"

Baba Novels Chat Room

"भगवन्! मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि विध्वंसा के कारण जो संकट मानव समाज पर आने वाला है, हमें उसे रोकने हेतु इस निर्जन स्थान से बाहर निकलना होगा।"

"हे श्रीरामभक्त! आपका यह दायित्वबोध आपके महान विचारों का संकेत है, परंतु सत्य यह है कि समय और परिस्थितियां कदाचित् अनुकूल नहीं हैं। आप हजारों वर्षों से तपस्यारत हैं और मानव समाज इस अवधि में कितना बदल गया है, आपको इसका केवल आभास-भर है। आप यदि मानव समाज के बीच गए तो आपको ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। आपने युग के अनुकूल परिपाटी का कभी पालन नहीं किया–आप अनुकूलन पद्धति से पूर्णतः अपरिचित हैं। आप शक्तिशाली हैं, अजेय भी हैं, परंतु समय से बहुत पीछे कई युग पीछे हैं।"

"आपका तात्पर्य यह है कि मैं 'विध्वंसा' को मानव से सुरक्षित करने में समर्थ नहीं हूं?" विभीषण असमंजस से बोले–"यदि मैं यह कार्य संपन्न नहीं कर सका तो फिर पृथ्वीलोक पर भीषण संकट आ जाएगा।"

"हे रामभक्त! निःसंदेह आप 'विध्वंसा' को मानव से सुरक्षित करने में समर्थ हैं–आपके समक्ष तुच्छ मानव की सब शक्तियां निष्फल हैं, परंतु समस्या इसी शक्ति और सामर्थ्य में निहित है। आप विध्वंसा को प्राप्त करने के लिए जो प्रयास करेंगे, उससे अधिक प्रयास आपको असफल करने के लिए किए जाएंगे। यह कार्य एक विनाशकारी युद्ध जैसा होगा जिसमें वास्तविक शत्रु आपके हाथों से कितने ही निरपराधों के प्राणहरण कराएगा। क्या आप अपने उद्देश्य के लिए ऐसा करने के लिए तत्पर होंगे, कदाचित् नहीं। अतः अभी आपके प्रकट होने का समय नहीं आया।"

"तो क्या मानव जाति पर आ रहे भावी संकट और अच्छाई पर बुराई के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए हमें कुछ नहीं करना चाहिए?" विभीषण चिंतित स्वर में बोले।

"वत्स विभीषण! मानव जाति में बड़ी विविधता है। बुराई विशाल और शक्तिशाली हो सकती है, पर अच्छाई के प्रतिनिधि मानव उसे परास्त करने में सक्षम हैं। हजारों सालों से ऐसा हो रहा है। बुराई जिस प्रबलता से समाज को पीड़ित करती है, अच्छाई के समर्थक उसे उतनी ही निर्दयता से परास्त भी करते हैं। हर युग और कालखंड में मानवता को कष्ट देने वाले आततायी पृथ्वी पर जन्म लेते आए हैं और जन्म लेते रहेंगे। इनके अंत का दायित्व भी हर युग और कालखंड में श्रीहरि की प्रेरणा से मानव समाज के नायक निभाते रहेंगे। इस समय

Baba Novels Chat Room

भी ऐसा ही होना चाहिए। श्रीहरि जिसे इस कालखंड में प्रेरित करेंगे, वही यह दायित्व धारण करेगा।"

"भगवन्! विध्वंसा को हम नष्ट नहीं कर सकते। अतः उसे अति सुरक्षित रखना होगा। क्या कोई मानव यह कार्य कर पाएगा?"

"श्रीहरि की कृपा से पंगु भी पर्वत लांघ जाते हैं। आप निश्‍चिंत रहें। प्रेरणा शीघ्र होगी।"

"जय श्रीराम!" विभीषण को सांत्वना मिली। इसके बाद उनका मानसिक संबंध विच्छेद हो गया था।

Baba Novels Chat Room

10

एमेले की अश्वत्थामा-कथा

"क्या देखा?" अधेड़ उत्सुकता से बोला–"अश्वत्थामा?"
"हां! वह अश्वत्थामा ही था। कंधे पर बड़ा धनुष और तरकश। माथे पर सफेद कपड़ा, लगभग नौ फुट लंबा डील-डौल, बड़ी भुजाएं...उसकी नजर मुझ पर पड़ गई थी और मैं भय से नीचे गिर पड़ा था। ठीक उसके पैरों के पास। मैं मूर्च्छित हो गया था...।"

Baba Novels Chat Room

मुंगेरीलाल 'अकेला' कभी खुद को लोककवि होने के सपने दिखाया करता था। इस सपने को सच करने के लिए वह आड़ी-तिरछी अर्थहीन, कठिन शब्दों से भरी, आदिवासी कविताएं लिखता भी था, जो कभी प्रकाशित नहीं हुईं। बुरहानपुर से बारह मील दूर पहाड़ी इलाके में उसका टोला था, जिसमें चालीस के करीब कच्चे घर थे। मुंगेरीलाल अनाथ था, अकेला था तो उसने अपना उपनाम भी 'अकेला' ही रख लिया था। काम के नाम पर कवित्त ही उसका कर्म था। वह कागज के अलावा पेड़ों, पत्थरों, रेत, खंडहरों की दीवारों पर भी अपनी कविताएं लिखता था और सपने देखता था कि कभी कोई बड़ी पत्रिका उसे मौका जरूर देगी। मुंगेरीलाल शहर आकर जुगाड़ लगाकर भोजन की व्यवस्था करता और शहर-भर में जहां भी जगह मिलती, वहीं अपनी बेतुकी कविता लिखकर नीचे अपना नाम लिख देता। कई बार इस काम के लिए वह पिट भी लिया था।

एक बार किसी बैंक मैनेजर ने नया बंगला खरीदा और उसकी चारदीवारी पर शानदार पेंट किया था। मुंगेरीलाल ने एक दिन वहां कोई कविता लिख दी जिसकी तारीफ में किसी विदूषक ने 'बहुत खूब' क्या लिख दिया, मुंगेरीलाल

ने पूरी दीवार 'कविता संग्रह' बना दी। बैंक मैनेजर ने क्रोध में आकर पुलिस कंपलेंट कर दी और मुंगेरीलाल को छठी का दूध आ गया। वह चुनावी सीजन में एक छुटभैये नेता के संपर्क में आया जिसने उसका राजनीतिक नामकरण कर दिया। उसके नाम के मुंगेरी का 'एम', लाल का 'एल' और अकेला का 'ए' लेकर उसे एम.एल.ए. बना दिया। नेता उसे एम.एल.ए. के स्थान पर 'एमेले' कहा करता था। उसी समय से उसके खाने-पीने की किल्लत दूर हुई और कुछ यश का भी अनुभव हुआ, मगर पैसा कहीं नहीं था। नए कपड़े, मोबाइल और गाड़ी कम-से-कम साइकिल की चाह तो उसे थी ही, तब वह व्योमेश खोजिया के संपर्क में आया।

कैरियर में उसी की तरह असफल खोजिया खानाबदोश था, जो अपनी जीप में एक शहर से दूसरे शहर घूमकर जालसाजी से अपना खर्चा चलाया करता था। एमेले उसका शागिर्द बन गया। अश्वत्थामा की प्रचारित लोककथा के कारण उस क्षेत्र में दूर-दूर से पत्रकार, लेखक और इतिहासकार वहां आते रहते थे और खोजिया उन्हें फंसाकर कुछ रकम ऐंठने में सफल भी रहता था। एमेले से गठजोड़ के बाद खोजिया को और भी सहूलियत हो गई थी। मुंगेरीलाल अपने काम में दक्ष होता गया और ऐसी सजती कहानी पेश करता था कि सुनने वाला उसमें नुक्स नहीं निकाल सकता था। वह कीमत भी ज्यादा नहीं लेता था, इसलिए अभी तक कोई पंगा नहीं पड़ा था।

आज वह अपने टोले में इकलौता आदमी था जिसके पास मोबाइल फोन था, अलबत्ता नेटवर्क की खोज में उसे बरगद के पेड़ पर चढ़ना पड़ता था। जमीन पर तो सौभाग्य से ही नेटवर्क मिल पाता था, इसलिए वह ज्यादातर शहर में ही रहता था, मगर आज अपने नए कपड़े दिखाने टोले में आ गया था। टोले के आदिवासी भोले-भाले लोग उससे प्रभावित तो थे, पर अपनी संघर्ष भरी जिंदगी से जूझते अपने में ही व्यस्त रहते थे और उससे बात करने से कतराते थे। कुछ योगदान उसकी वाचालता का भी था। वह जबरन लोगों को रोककर अपने कसीदे पढ़ता रहता था। आज दोपहर से ही वह वहां लोगों को पका रहा था और अब अकेला अपनी कोठरी में पड़ा था।

करवटें बदलते मुंगेरीलाल को नींद नहीं आ रही थी। अभी कुछ देर पहले बूंदाबांदी भी हुई थी। टोले में सन्नाटा छाया हुआ था। उसने सोच लिया था कि अब वह कभी रात में वहां नहीं रुकेगा। खोजिया की जीप में जो नींद आती थी, वह यहां कहां आ सकती थी! तभी उसने जीप की जानी-पहचानी आवाज सुनी। वह खोजिया की जीप की आवाज थी। जरूर उसका उस्ताद किसी बकरे को फंसा लाया था। फोन लगा नहीं होगा, अत: सीधा चला आया था। उसने अपनी चादर ओढ़ ली थी। जीप उसके झोंपड़े के सामने रुक गई थी। वह तख्त से हिला भी नहीं। कौन-सा दरवाजा खोलना था। दरवाजा तो था ही नहीं।

Baba Novels Chat Room

"एमेले! अरे सो रहा है क्या?" खोजिया की लड़खड़ाती आवाज आई।

वह यूं ही पड़ा रहा, जैसे गहरी नींद में हो। नवागंतुकों के लिए वैसा नाटक करना जरूरी भी था, ताकि उन्हें ऐसा न लगे कि सब कुछ पूर्वनियोजित था। खोजिया ने अपने हाथ में थमी टॉर्च का प्रकाश उस पर डाला, फिर आगे बढ़कर उसे झकझोरा।

"मुझे...मुझे मत मारो। मैं किसी को कुछ नहीं बताऊंगा।"

"यह मैं हूं–खोजिया...जासूस खोजिया। तेरे को कुछ दिन पहले भी मिला था।"

एमेले ने चादर हटाई और भयभीत होकर उसे देखा। इसके साथ ही उसने यह भी देख लिया था कि दो आदमी दरवाजे पर खड़े थे।

"तुम...तुम यहां क्यों आए हो? मैं तुमसे कोई बात नहीं करना चाहता।" एमेले ने गुस्सा करते हुए कहा–"तुम किसे लाए हो? मुझसे 'उस बारे में' सवाल मत करना।"

"पहले शांत हो जाओ। ये दिल्ली से आए बड़े साहब हैं। टी.वी. पर समाचार दिखाते हैं। अगर तुम इनसे बात करोगे तो टी.वी. पर आओगे।"

"वह बहुत बलवान योद्धा है। उसने पहले ही दया की और मुझे जिंदा छोड़ दिया। अब मैंने उसके बारे में किसी को कुछ भी बताया तो वह मुझे मार ही डालेगा।"

"देखो, उसे क्या पता चलेगा! तुमने मुझे भी तो बताया था। क्या उसे पता चला? क्या वह तुम्हें मारने आया? अरे, इत्तफाक से तुम्हें उसके दर्शन हुए थे, वरना कितने ही लोग कोशिश करके थक गए हैं। साहब का कहना है कि तुम उनसे बात करोगे तो वे तुम्हें दो हजार रुपये देंगे और किसी को कुछ नहीं कहेंगे।"

"मैं टी.वी. पर नहीं आना चाहता। उसने कहीं देख लिया तो!"

"अबे, वह तो टी.वी. के बारे में भी कुछ नहीं जानता होगा। वह ठहरा हजारों साल पुराना आदमी। जंगलों में कहीं छुपकर रहता है। अच्छा, चार हजार लेना। इससे ज्यादा एक पैसा नहीं। साहब बड़े दरियादिल हैं।"

"तुम मुझे फंसवा दोगे। चार हजार रुपये में मैं चार महीने मुंबई में कैसे गुजारा कर पाऊंगा, क्योंकि यहां तो मुझे उसका भय नहीं जीने देगा। कैसी बड़ी-बड़ी क्रोध भरी आंखें हैं उसकी। केले के तनों जैसी भुजाएं, चौड़े कंधे।"

"उसे तुमने कब, कहां और कैसे देखा था? यही साहब जानना चाहते हैं। मैं चाहता तो जो तुमने मुझे बताया, वह मैं इन्हें बताकर पैसे कमा लेता, पर मैं ऐसा आदमी नहीं हूं, जो दूसरे की कमाई पर चालाकी दिखाए। आइए साहब, एमेले सब बताएगा।"

दोनों आगंतुक आगे आए। मुंगेरी सिकुड़कर चादर ओढ़े एक ओर बैठ गया था।

"साहब, मैं गरीब आदमी हूं। ऐसी बातें सुनने में भी डरता हूं। मेरा बुरा वक्त था कि मैं उस वीर योद्धा के सामने पड़ गया जिसके दर्शन पाने को आप जैसे साहब लोग राजधानी से यहां आकर इतनी रात गए इस जंगल में भटक रहे हैं।" मुंगेरी

Baba Novels Chat Room

वाक्पटुता का परिचय देते हुए नाटकीयता के साथ कांपकर बोला–"आप बड़े लो हैं। उस वीर योद्धा को आप दुनिया के सामने लाना चाहते हैं, क्योंकि इससे आ ढेर सारा पैसा कमाएंगे। मुझ गरीब का भी भला हो जाए तो कोई हर्ज नहीं है। ज्याद लालच तो नहीं करूंगा, बस दस हजार रुपया...बाबूजी, आपके लिए कोई बड़ी बात नहीं, मगर गरीब मुंगेरी के कुछ सपने जरूर सच हो जाएंगे। बोलिए बाबूजी!"

"ठीक है, बताओ।" अधेड़ आदमी ने गंभीर स्वर में कहा।

"क्या बताऊं साहब! वह दिन याद करता हूं तो नींद भी नहीं आती।" मुंगेरी कांप उठा–"उस दिन मैं शहद की तलाश में जंगल में निकल गया था। भटकते-भटकते मैं असीरगढ़ के किले में जा पहुंचा। शाम हो गई थी और तेज बारिश आ गई थी। रात को वहीं रुकना पड़ा। क्या भयानक रात थी। गीदड़-भेडिए भयानक चीत्कार कर रहे थे। मैं किले से बाहर आकर टूटी दीवार की खोह में छुप गया था। नींद तो कहां आती। बारिश बंद नहीं हो रही थी, पर मैं सुरक्षित स्थान पर था। रात गुजरती रही। बारिश कम हो गई थी और मैं सवेरा होने का इंतजार कर रहा था, तभी मैंने देखा...।"

"क्या देखा?" अधेड़ उत्सुकता से बोला–"अश्वत्थामा?"

"हां! वह अश्वत्थामा ही था। कंधे पर बड़ा धनुष और तरकश। माथे पर सफेद कपड़ा, लगभग नौ फुट लंबा डील-डौल, बड़ी भुजाएं...उसकी नजर मुझ पर पड़ गई थी और मैं भय से नीचे गिर पड़ा था। ठीक उसके पैरों के पास। मैं मूर्च्छित हो गया था। जब होश आया तो दिन निकल आया था, तब मैं धोती पहनता था, जो मेरे बदन पर नहीं थी। एक सफेद मगर खून से सना अंगोछा वहां पड़ा था। मैं जिंदा था, यह हैरानी थी। अंधा भी नहीं हुआ था, यह और भी हैरानी थी। पास ही केले का एक पत्ता पड़ा था जिस पर खून से किसी अजनबी भाषा में कुछ लिखा हुआ था। मैं समझ गया कि दयालु अश्वत्थामा ने मुझे जीवित छोड़कर उस पत्ते पर मेरे लिए संदेश लिख दिया है। मेरी धोती घाव पर बांधने को ले गया और अपना अंगोछा छोड़ गया। वह पत्ता आज भी मेरे पास है और वह अंगोछा भी, पर मैं किसी को उनके बारे में बता नहीं सकता था। आज आपको बताया है।"

"मुझे केले के पत्ते के बारे में तो कुछ भी नहीं बताया था?" खोजिया नाराज हुआ।

"तब मुझे डर ज्यादा लग रहा था और कुछ मिल भी तो नहीं रहा था।" एमेले बोला।

"चलो हमारे साथ। अपने पैसे भी ले लेना और कुछ बातें भी हो जाएंगी।" अधेड़ के साथ आए युवक ने कहा तो मुंगेरी सकपकाया। खोजिया ने उसे आंखों-ही-आंखों में तसल्ली दी और चारों उठ खड़े हुए।

Baba Novels Chat Room

11

बागी और आंतकी में अंतर

"बकवास मत करो।" पान सिंह तेज स्वर में दहाड़ उठा– "बागी और आतंकी में बहुत बड़ा अंतर होता है। बागी अपना अधिकार पाने के लिए हथियार उठाते हैं और आतंकी व्यर्थ ही लोगों का खून बहाने के लिए। तुम कश्मीर के आतंकवाद को बगावत कहते हो। सारी दुनिया जानती है कि हमारा नापाक पड़ोसी पाकिस्तान हमारी तरक्की से जलता है। वह चाहता है कि जैसे उसका देश भुखमरी से जूझ रहा है, वैसे ही इंडिया में भी भुखमरी के हालात बनें। एक असंभव और कभी न पूरा होने वाला सपना देखता है वह, जबकि जानता है कि कश्मीर हमारे सिर का ताज है।"

Baba Novels Chat Room

रात के उस अंधकार में सैयादी अपने साथियों के साथ किले की पिछली टूटी दीवार से बाहर आ गया था। वह शिव मंदिर में टाइम बम लगाकर आया था। इस बात से उसके साथी विचलित थे, मगर किसी में साहस नहीं था कि वह अपना विरोध जता सके। वे अपने मुखिया दहलावर का गुस्सा जानते थे। इन आठ नक्सलियों में पान सिंह नाम का एक हृष्ट-पुष्ट दु:साहसी युवक भी था, जो इस बात को लेकर कुछ ज्यादा ही खिन्न था और दबे स्वर में इसका विरोध भी कर चुका था।

अब वे लोग नदी के किनारे आ गए थे और बारिश बंद हो गई थी, पर आसमान पर अभी भी बादल छाए हुए थे। कृष्ण पक्ष की द्वितीया ही थी तो उतना अंधेरा भी नहीं था।

"हमारा ठिकाना यहां से कितनी दूर है?" सैयादी ने पूछा—"कोई एक्युरेट डिस्टेंस बता सकता है?"

"हमारे बहुत से ठिकाने हैं साब!" एक युवक जल्दी से बोला—"मुख्य ठिकाना तो शहर में ही है, पर हमारे बहुत से अस्थायी ठिकानों में से जो सबसे करीब है, वह यहां से दो कि.मी. दूर है। पंद्रह मिनट में पहुंच जाएंगे। हम उधर ही जा रहे हैं।"

"यह अच्छा रहेगा।" सैयादी सिर हिलाकर बोला—"पुलिस भी तो यहां आती-जाती होगी?"

"पहले बहुत आती थी, पर हमारे मुखिया ने अपनी राजनीतिक पहुंच से पुलिस की कुछ नकेल कस दी है। अब तो किसी खास सूचना पर ही पुलिस जंगल में इतने अंदर तक आ पाती है।"

"क्या तुम बता सकते हो कि तुम लोग सरकार से किस बात को लेकर विद्रोह करते हो?"

"बहुत से कारण है साब! सरकार हमारे लिए कुछ नहीं करती। न शिक्षा, न स्वास्थ्य और न कोई रोजगार। गरीबी तो क्या, हम तो नरक में जीते हैं, ऊपर से बेवजह के अत्याचार! हमारी बहू-बेटियां सुरक्षित नहीं हैं। दबंगों ने हमें जानवरों से बदतर समझा है। अंग्रेजी दौर में हमारी पीढ़ियां शोषित हुई हैं और लोकतंत्र में भी शोषित हो रही हैं।"

"कैसा मुल्क है यह!" सैयादी निहायत ही हिकारत के साथ बोला—"जहां आम आदमी इतना त्रस्त है और हुक्मरान आंखें बंद किए पड़े हैं। लगता है, यही हाल कश्मीर में भी होता होगा। ऐसे असंतोष ही बगावत लाते हैं। देखना, यही हालात रहे तो एक दिन कश्मीर पाकिस्तान में मिल जाएगा, भारत से छिन जाएगा वह।"

"ऐसा कभी नहीं होगा।" पान सिंह दांत पीसकर बोला—"पाकिस्तान के साथ चीन भी आ मिले तो भी कश्मीर हमारा ही रहेगा। हम यहां के बागी जरूर हैं मगर अपने देश के लिए जान लुटा देंगे।"

सैयादी थमककर खड़ा हो गया और पान सिंह को घूरने लगा।

"कश्मीर में तुम्हारे जैसे त्रस्त और शोषित लोग ही बागी हैं। बागी कहीं से भी हो, वह तुम्हारा सखा है। आज भी मैं तुम लोगों के साथ हूं तो कश्मीरी बागियों की वजह से हूं। तुम्हें तो दुआ करनी चाहिए कि कश्मीर के बागी भी अपने मकसद में कामयाब हों और तुम भी, तभी तो व्यवस्था बदलेगी और तुम्हें तुम्हारा हक मिलेगा।"

Baba Novels Chat Room

"बकवास मत करो।" पान सिंह तेज स्वर में दहाड़ उठा—"बागी और आतंकी में बहुत बड़ा अंतर होता है। बागी अपना अधिकार पाने के लिए हथियार उठाते हैं और आतंकी व्यर्थ ही लोगों का खून बहाने के लिए। तुम कश्मीर के आतंकवाद को बगावत कहते हो। सारी दुनिया जानती है कि हमारा नापाक पड़ोसी पाकिस्तान हमारी तरक्की से जलता है। वह चाहता है कि जैसे उसका देश भुखमरी से जूझ रहा है, वैसे ही इंडिया में भी भुखमरी के हालात बनें। एक असंभव और कभी न पूरा होने वाला सपना देखता है वह, जबकि जानता है कि कश्मीर हमारे सिर का ताज है।"

सैयादी ने सुर्ख आंखों से पान सिंह को घूरा।

"तो यह वजह है—नक्सल आंदोलन की नाकामी की। दहलावर जैसे लोग तुम्हारे लिए जान हथेली पर लिए रहते हैं और तुम जैसों की वफादारी अपने आंदोलन से नहीं बल्कि देश से है। उसी व्यवस्था से है, जो तुम्हारे अधिकारों का हनन करती है, जो सरकार तुम्हारे हितों का ध्यान नहीं रखती, तुम उसका गुणगान करते हो।"

"हमारी दुर्दशा में सरकार का इतना हाथ नहीं, जितना भ्रष्ट लोगों का है। यही कारण है कि हमारी लड़ाई सरकार से अधिक उन भ्रष्ट लोगों से है, जो हमारे हक पर डाका डालते हैं।"

"और वह दिल्ली की सरकार नहीं—बड़े-बड़े राजनेता नहीं?" सैयादी ने प्रश्नसूचक ढंग से उसकी ओर देखा।

"वे भी हो सकते हैं मगर इसका जिम्मेदार हमारा देश नहीं है। हम लोग स्थानीय विद्रोही हैं, न कि देशद्रोही...इसलिए इस विषय पर तुम हमें कुछ न सिखाओ।"

सैयादी ने तत्काल उसे गोली मार दी।

पान सिंह कटे पेड़ की तरह ढह गया। उसके साथी भौंचक्का रह गए। कोई समझ नहीं पाया कि अचानक क्या हुआ।

"यह आदमी तुम्हारे गैंग के लिए खतरा ही था। इसके दिल में अपने लक्ष्य से अधिक देशभक्ति थी और यह वह चीज है, जो इंसान को कमजोर करती है। वह हथियार उठा तो सकता है, चला नहीं सकता। ऊपर से कभी भी यह देशभक्ति उसका हृदय परिवर्तन कर सकती है और वह अपने ही साथियों के खिलाफ हो सकता है।"

"मगर...मगर पान सिंह सच ही तो कह रहा था। बागी और आतंकी में फर्क होता है।"

Baba Novels Chat Room

"खामोश! मेरे रिवॉल्वर में गोलियां खत्म नहीं हो गईं हैदर। अगर तू भी इस भेदिये की तरह सोचता है या कोई और भी सोचता है तो मुझे अभी बताए। फैसला यहीं होगा।"

कोई कुछ न बोला।

हैदर नाम का युवक कसमसाकर रह गया।

"इसकी लाश ठिकाने लगाओ।" सैयादी लापरवाही से हंसा और दो युवकों की ओर संकेत करके बोला–"तुम दो जने यह काम करो और बाकी मेरे साथ चलो।"

हैदर ने इशारे से अपने एक साथी को रुकने का निर्देश दिया।

"मैं और हैदर रुक जाते हैं, आप चलिए।"

सैयादी ने जाने से पहले पान सिंह की लाश को ठोकर मारकर हिलाया और आश्वस्त होकर चला गया। बाकी पांच लोग भी हैदर को थपथपाकर उसके पीछे हो लिये।

"यह इसने अच्छा नहीं किया।" हैदर की आवाज भर्रा गई–"पान सिंह सच ही कह रहा था। हम बागी हो सकते हैं देशद्रोही नहीं।"

"उसने तो और भी बुरा किया है–मंदिर में बम लगाकर बलवा फैलाने का काम। देख लेना, कल ही जंगल में फोर्स आ जाएगी और एक बड़ा ऑपरेशन शुरू होगा। हमें चूहों की तरह बिल में घुसना पड़ेगा। पुलिस से ज्यादा हिंदूवादी संगठनों के लोग फरसे, भाले, त्रिशूल लेकर हमारे खून के प्यासे हो जाएंगे। अभी तक भले ही हमारे विरुद्ध कोई बड़ा ऑपरेशन नहीं हुआ, मगर इस घटना से प्रशासन सख्त हो जाएगा।"

"यह तो तू ठीक कह रहा है।" हैदर चिंतित स्वर में बोला–"हमें ऐसा नहीं होने देना चाहिए। सांप्रदायिक दंगे की यह आंच जंगल को ही नहीं, हमारी बस्तियों को भी निगल जाएगी। रामू! तू पानसिंह की लाश को ठीक से ठिकाने लगा, मैं किले में जाकर उस बम को वहां से हटाता हूं। अभी एक ही बजा है। काफी टाइम है।"

"तू बम को 'डिफ्यूज' तो नहीं कर सकता। उसे सावधानी के साथ नदी में फेंकना होगा।"

"मैं यही करूंगा।" हैदर तत्परता के साथ बोला–"मैं निकलता हूं। तू मृत साथी को सम्मान से विदाई देना।"

हैदर अपने साथी को अंतिम बार निहारकर वहां से चल दिया। वह जंगल उसका देखा-भाला था तो उसे अंदाजा था कि किले तक पहुंचने में उसे

Baba Novels Chat Room

कम-से-कम एक घंटा तो तब लगेगा, जब रास्ते में कोई कठिनाई न आए। उस जंगल में हिंसक पशु भी रहते थे और कोई दक्ष व्यक्ति ही उनसे पार पा सकता था। उस पर भी घात लगाए जानवरों से बचना मुश्किल ही था। अपनी स्टेनगन उसने हाथ में ले ली थी और बेहद चौकन्ना होकर दौड़ा चला जा रहा था। कुछ दूर दौड़ने के बाद उसे थमकना पड़ा, क्योंकि पास ही कहीं भेड़ियों की गुर्राहट सुनाई पड़ रही थी।

पगडंडी पर खड़ा हैदर चौकन्ना होकर चारों ओर देखने लगा था। भेड़िये झुरमुट के पीछे आपस में झगड़ रहे थे। उसने धीरे-धीरे कदम बढ़ाए और ट्रिगर पर उंगलियां कस लीं।

अचानक दो भेड़िये सुलगती हुई आंखों से हैदर को घूरते हुए ठीक उसके सामने आ गए।

हैदर ने गोलियां चला दीं।

शोलों ने दोनों भेड़ियों को क्षण-भर में ठंडा कर दिया।

अब हैदर ने भेड़ियों के उस झुरमुट को निशाना बनाकर फिर ट्रिगर दबाया, लेकिन कोई आवाज न उभरी। स्पष्ट था कि पहले फायरों से ही भेड़िये भयभीत होकर भाग गए थे, फिर भी निश्चिंत नहीं हुआ जा सकता था।

हैदर ने फिर से तेजी के साथ दौड़ लगा दी। वह समय से वहां पहुंचना चाहता था।

दौड़ते-दौड़ते हैदर को लगभग चालीस मिनट हो गए थे और जिस जगह वह पहुंचा था, वहां से किला अभी भी पांच किलोमीटर दूर था। दो बजने वाले थे। अचानक पीछे से उस पर हमला हुआ और वह मुंह के बल पथरीली जमीन से टकराया।

हैदर तेजी से पलटा तो एक खूंखार बाघ को खुद से पांच फुट की दूरी पर जंप लगाने की पोजीशन में देखा।

स्टेनगन हैदर के हाथ से छूट गई थी। उसने कड़ा प्रशिक्षण लिया था और ऐसी स्थिति से निबटने की कला उसे आती थी। उसने अपनी कलाई को झटका दिया जिसमें से एक लंबे फल वाला चाकू उछलकर उसके हाथ मे आ गया। बाघ ने जंप लगा दी थी और हैदर ने बेहद फुर्ती से चाकू ऊपर उठाकर ऐन उसके दिल में धंसा दिया था।

एक दहाड़ के साथ ही बाघ ने अपने पंजों से उसकी दाहिनी बांह का मांस कपड़े समेत उधेड़ दिया था। उस तेजी से हुए हमले ने हैदर का जोड़-जोड़ हिला दिया था। बांह में भयानक पीड़ा उठ रही थी।

Baba Novels Chat Room

हैदर जैसे-तैसे मृत बाघ को अपने ऊपर से हटा सका और दर्द से बिलबिलाता हुआ उठ बैठा, फिर खड़ा हुआ और अपनी स्टेनगन बाएं हाथ से उठाई। पूरे शरीर में दर्द की लहर दौड़ रही थी। उसने दांत भींचकर आगे बढ़ना शुरू किया ही था कि दर्द की अधिकता से गिर पड़ा और अचेत हो गया।

लगभग डेढ़ घंटे बाद उसे होश आया तो उसे अपना मकसद याद आया और वह अंपनी संपूर्ण इच्छाशक्ति समेटकर खड़ा हुआ।

"मुझे यह काम करना ही होगा!" उसने दृढ़तापूर्वक खुद से कहा और वह दांत भींचकर चल दिया। उसकी रफ्तार तेज नहीं थी, पर कदमों में संकल्प साफ झलक रहा था।

Baba Novels Chat Room

12

आतंकी सरगना की दहशतनाक योजना

Baba Novels Chat Room

"जनाब! जहां तक मुझे पता है कि बुलेट ट्रेन का डिजाइन और मैटेरियल जापान से इंडिया आया है, जहां उसे असेंबल किया जाएगा और इस काम में जापानी इंजीनियर ही लगेंगे। इंडिया के विशाखापट्टनम में यह कारखाना लगा है जिसके कुछ पार्ट्स कपूरथला में इंडियन तरीके से भी बनाए जा रहे हैं यानी हम किसी एक जगह को भी हिट कर सके तो पूरे प्रोजेक्ट को तबाह कर सकते हैं।"

"हमें दोनों ठिकानों को हिट करना है। हमें मुकम्मल विध्वंस करना है। हिंदुस्तानी हुकूमत और वहां के आवाम का बुलेट ट्रेन में सफर करने का ख्वाब तोड़ना है...।"

हाफिज सईद पाकिस्तान का ऐसा राजनीतिज्ञ धर्मगुरु था जिसने भारत-विरोधी मानसिकता पाल रखी थी। पिछले बीस साल में वह इस तरह पायदान चढ़ता गया कि आज उसे सारी दुनिया में आतंकवाद का सरगना माना जाता था। भारत में 26/11 के हमलों का मास्टरमाइंड हाफिज सईद पाकिस्तान में इतना रसूख रखता था कि अंतर्राष्ट्रीय दबाव होते हुए भी पाक सरकार उस पर कार्यवाही करने से डरती थी। उसके विप्लवी और भारत-विरोधी भाषण निरंतर जारी रहते थे। पाकिस्तान में आतंकवाद एक व्यापार की तरह स्वीकार किया गया और इससे वहां लगभग 26 आतंकी

संगठन बन गए। दुनिया-भर के अन्य आतंकी नेटवर्क से इनका सीधा संपर्क रहा। इससे फायर आर्म्स का बाजार हमेशा ऊंचाई पर रहा। रशियन टेरेटरी और आर्म्स मेकर देशों से इन संगठनों को हथियारों की स्मगलिंग ईरान के रास्ते की जाती है। इन विस्फोटक हथियारों का प्रयोग भारत, अफगानिस्तान और पाकिस्तान में भी किया जाता है। हाफिज सईद ने धीरे-धीरे अपनी ताकत बढ़ाई और लादेन की मौत के बाद उसने लगभग सभी संगठनों की लगाम अपने हाथों में ले ली थी। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान को आतंकी देश घोषित करने की मांग तेजी से उठ रही थी तो सईद पर दिखावे के लिए शिकंजा कसा गया। उसे अरेस्ट किया गया और फिर क्लीन चिट देकर छोड़ दिया गया। ऐसा कई बार हुआ। भारत द्वारा उसके खिलाफ सुबूतों का डेजियर भी पाक सरकार ने नजरअंदाज किया।

यही वह समय था, जब भारत एक नई वैश्विक ताकत के रूप में उभर रहा था। अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और जापान सहित कई देशों से कूटनीतिक संबंध मजबूत करके भारत विकास के क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान बना रहा था। बुलेट ट्रेन परियोजना ऐसी ही एक परियोजना थी, जो भारत को विश्व स्तर पर स्थापित करती थी। बुरी तरह पिछड़ रहा पाकिस्तान का आवाम भारत की तरक्की पर चकित था और अपने हुक्मरानों को कोसता था कि न उन्हें आवाम की फिक्र थी, न विकास की! इन बातों से हाफिज सईद का कलेजा बहुत सुलगता था। हर मोर्चे पर भारत से पिछड़ने का दर्द उसे सालता रहता था। कश्मीर में उसकी पेश नहीं चल पा रही थी, क्योंकि भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन ऑलआउट' से आतंकियों की कमर तोड़ दी थी और टैरर फंडिंग के सभी रास्ते बंद कर दिए थे। अब हाल यह था कि सईद कोई महंगी निवेश करने वाली योजना बनाता था और नतीजा सिफर से कुछ ही बेहतर आता था।

अंतर्राष्ट्रीय निवेशक भारत की ओर आकर्षित हो रहे थे और पाकिस्तान को चीन के साथ ओ.बी.ओ.आर. प्रोजेक्ट (One Belt One Road Project) में भी साझीदारी के लिए चीन और अन्य देशों से कर्ज लेना पड़ रहा था। इन सब चीजों से उसका दिल दहलता था। अंततः सईद ने कुछ नया धमाका करने के उद्देश्य से सभी संगठनों को एक मंच पर आमंत्रित किया और एक बड़ी आतंकवादी मीटिंग का आरंभ उसने जहर उगलते हुए किया।

"हिंदुस्तान! हमारी आंखों का शूल! हमारे वजूद के टुकड़े करने वाला हिंदुस्तान!" हाफिज सईद ने नफरत भरे लहजे में कहा—"हमें आलमी किरदारी में बार-बार नीचा दिखा रहा है। मसला कोई भी हो, वह बाजी मार रहा है। आज के विकसित मुल्क उसे तवज्जो दे रहे हैं और हमारे हुक्मरान या तो कर्ज मांगते हैं या खैरात की ओर देखते हैं। क्यों? क्यों ऐसा होता है? क्या हमारे यहां बेहतरीन

Baba Novels Chat Room

राजनीतिज्ञों की कमी है? क्या हमारे नौजवान नई तकनीक और इंजीनियरिंग में किसी से कम हैं? क्या हमारे पास कुदरती संपदा कम है? क्या हम हौसले में किसी से पीछे हैं? नहीं, इनमें से कोई बात नहीं है। हमारे पास सब साधन हैं। हमारे पास दुनिया के बेहतरीन लड़ाके हैं, तरकीबें और तरतीबें हैं। यह हम ही थे जिन्होंने कई बार घर में घुसकर हिंदुस्तान को खून के आंसू रुलाए हैं। हिंदुस्तान को अपनी ताकत का अहसास कराया है, मगर पिछले कुछ समय से हम कोई ऐसा कारनामा नहीं कर सके जिससे हमारे दिल को ठंडक पहुंचे। आप सब इसी अहद को लेकर, कसम खाकर अपने मुल्क का बदला लेने के लिए ही तो बैठे हैं। क्या कर रहे हैं आप सब?"

"जनाब!" एक लंबे-चौड़े शख्स ने कहा–"आप हमें बताइए कि आपके दिमाग में क्या पक रहा है? क्या करना चाहते हैं आप?

"आज हिंदुस्तान के पास जो पावर है, उसमें जापान का बड़ा हाथ है। जापान ने ही वहां इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स देकर आम आदमी को विकसित भारत का ख्वाब दिखाया है। हमारे यहां अभी रेलसेवा तक भी पुराने ढर्रे की है, जबकि इंडिया ने मेट्रो ट्रेन से लोगों को आधुनिक होने का अहसास कराया है। हवाई सेवा का विस्तार करके उसे आम आदमी की पहुंच में ला दिया है। इससे आवाम का हुकूमत पर भरोसा बढ़ा है।" सईद ने कहा–"और अब बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट जैसे हमारे जख्मों पर नमक छिड़क रहा है। हमारा आवाम इस बात से ज्यादा दुखी है कि क्यों इंडिया दिन-पर-दिन तरक्की कर रहा है। हमें उसकी तरक्की को रोकना होगा। हमें उसे दुनिया के सामने बौना और कमजोर सिद्ध करना होगा। दुनिया को बताना होगा कि वह ऐसे बड़े और अत्याधुनिक प्रोजेक्ट की न सुरक्षा कर सकता है और न इस्तेमाल व संचालन। हमें बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट को ध्वस्त करना होगा।"

"जनाब! आइडिया तो यूनिक है। हम इंडिया के बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट की बैंड बजा सकते हैं। इससे हम इंडिया के हिमायती जापान को भी सबक सिखा सकते हैं।"

"दिन में सपने देखने से थोड़ा सुकून तो मिलता है नवाब अली!" सईद खुश्क लहजे में बोला–"मगर यह होता फर्जी सुकून ही है। दिन का सपना टूट जाता है तो तकलीफ भी बहुत होती है, इसलिए इसे केवल एक सपना मत कहो, इसे अपनी जिंदगी का मकसद बना लो। सोच लो कि हमें यह काम करना ही है। भले ही कितना भी पैसा फूंकना पड़े और कितनी भी कुरबानियां देनी पड़ें।"

"हम तैयार हैं जनाब! आप हुक्म करें, कितना पैसा और कितने आदमी देने होंगे?"

"जैसा बड़ा यह टार्गेट है, उस लिहाज से वहां सिक्योरिटी भी मामूली नहीं होगी। यह प्रोजेक्ट जापान का है, इसलिए सिक्योरिटी में जापान सरकार की साझेदारी भी होगी। एक तरह से हम दो बड़े मुल्कों के खिलाफ एक बड़े मिशन पर काम करने

Baba Novels Chat Room

जा रहे हैं, जो निहायत ही पेचीदा और मुश्किल है, फिर भी हमें हार नहीं माननी है, हमें दहशत नहीं माननी। हम इसलिए इस मिशन से पीछे नहीं हट सकते कि हमारा टार्गेट हाई सिक्योरिटी में है। सिक्योरिटी कभी भी फुलप्रूफ नहीं होती। कहीं-न-कहीं कोई बारीक छेद जरूर होता है और हमें यह खोजना होगा। इसके लिए हमें इल्मगीरों की मदद लेनी होगी, जो हमारे काम की जानकारी उपलब्ध करा सकें।"

"जनाब! जहां तक मुझे पता है कि बुलेट ट्रेन का डिजाइन और मैटेरियल जापान से इंडिया आया है, जहां उसे असेंबल किया जाएगा और इस काम में जापानी इंजीनियर ही लगेंगे। इंडिया के विशाखापट्टनम में यह कारखाना लगा है जिसके कुछ पार्ट्स कपूरथला में इंडियन तरीके से भी बनाए जा रहे हैं यानी हम किसी एक जगह को भी हिट कर सके तो पूरे प्रोजेक्ट को तबाह कर सकते हैं।"

"हमें दोनों ठिकानों को हिट करना है। हमें मुकम्मल विध्वंस करना है। हिंदुस्तानी हुकूमत और वहां के आवाम का बुलेट ट्रेन में सफर करने का ख्वाब तोड़ना है। जापान-इंडिया की दोस्ती में दरार पैदा करनी है और इसके लिए हमें तीन सौ करोड़ खर्च करने होंगे।"

"जनाब! यह कोई बड़ी रकम नहीं है। हमारी छब्बीस तंजीमें और पाकिस्तान सरकार बड़ी आसानी से इस रकम को इकट्ठा कर सकती है। इतने बड़े टार्गेट को हिट करने के लिए इतनी रकम खर्च करना कोई बड़ी बात नहीं। मैं अपनी तंजीम की ओर से दस करोड़ देने को तैयार हूं। आदमी जितने आप कहें, उतने दूंगा।"

"शाबाश नवाब अली!" सईद ने तारीफ भरे लहजे में कहा—"यही जज्बा यहां बैठे हर शख्स में होना चाहिए। हाफिज सईद आपसे वादा करता है कि आपको इस मिशन को पूरा करके दिखाएगा। हमारे पास साधन भी हैं और तरकीब भी।"

"जनाब! हम सबको कोई उज्र नहीं है। हम इतना पैसा देने को तैयार हैं। आदमी भी देने को तैयार हैं मगर हमें इतना तो पता चले कि हमारे पास क्या योजना है?"

"योजना को अभी नहीं बताया जा सकता। षड्यंत्र की पहली शर्त उसे गुप्त रखना होता है, फिर भी आप लोगों की तसल्ली के लिए हम इतना जरूर बता देना चाहते हैं कि हमें सौ करोड़ रुपये में जापान से ही एक शख्स द्वारा बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट के बारे में पूरी जानकारी मिल रही है।"

"गुड! फिर तो शक की कोई गुजांइश ही नहीं।"

"और दो सौ करोड़ में एक ब्लास्ट एक्सपर्ट टीम हमारा यह काम करेगी।"

"आमीन!" सब एक साथ हर्षनाद कर उठे।

Babo Novels Chat Room

13

अश्वत्थामा की खोज में: एक नई टीम

"अश्वत्थामा का किस्सा जन-सामान्य में बहुत प्रचलित है। उसके होने के साक्ष्य मिलते हैं, दिखने के नहीं। उसकी निरंतर निगरानी करनी होगी और यह काम अकेले आप नहीं कर सकते। आपको असिस्टेंट तो चाहिए ही। मैं ठग हूं और कई लोगों को ठग चुका हूं, मगर आपको थोड़ी ही देर में असलियत पता चल गई तो जाहिर है कि आप मेरे भी उस्ताद हो। मुझे हैंडिल कर सकते हैं, डिटेक्ट कर सकते हैं...तो क्या मैं समझूं कि मैं आपका असिस्टेंट हुआ?"

"गोद में बैठकर दाढ़ी छीलना कदरन आसान काम है।" सेठी ने कहा।

"जब गोद में बिठाने वाले को पता होता है कि उसकी गोद में नाई बैठा है तो गहरी नींद लेना अहमकों का काम है और भाई साहब को मैं अहमक नहीं समझता।"

Baba Novels Chat Room

खोजिया की जीप में प्रभास, उसका एंप्लॉयर और मुंगेरीलाल शहर आ गए थे। शहर में अपेक्षाकृत सन्नाटा था। आधी रात से ज्यादा बीत गई थी। अपने होटल के कमरे में आकर प्रभास ने मुंगेरी और खोजिया को बैठने का इशारा किया। सेठी सीधा उसके बिस्तर पर जा गिरा।

"मुझे चार घंटे सोना है, इसलिए बात जरा धीमी आवाज में करना।" सेठी ने हर्षित स्वर में कहा—"मैं कल सुबह चेकआउट कर जाऊंगा। प्रभास,

तेरे काम से मैं खुश हूं। इसी रफ्तार से चलता रहा तो जरूर कुछ कर दिखाएगा। अब मैं सो रहा हूं।"

"बॉस! अभी तो मैंने कुछ भी खास नहीं किया। संयोग से इन लोगों के साथ हमारी मुलाकात हो गई। इन्होंने हमें जो बताया है, अभी उसकी तसदीक होना बाकी है।" प्रभास ने गंभीर स्वर में कहा–"अगर आपने सोना है तो अपने रूम में जाइए।"

"अबे! बातें अगर मजेदार हुईं तो कौन बेवकूफ सोएगा!" सेठी कुटिलता से बोला।

"फिर ठीक है। आप लोग बैठिए, मैं पांच मिनट में आता हूं।" प्रभास ने कहा और उन लोगों को छोड़कर चला गया।

मुंगेरी ने व्याकुलता से खोजिया को देखा जिसने आंखों-ही-आंखों में उसे सांत्वना दी कि वह सब संभाल लेगा।

"बहुत काबिल लड़का है।" सेठी मुदित मन से बोला–"जिस काम पर लग जाता है, उसे पूरा करके ही दम लेता है। सुनता सबकी है, पर करता अपने मन की है। किसी की, मेरी भी बात पर तब तक विश्वास नहीं करता, जब तक उसकी सच्चाई की जांच-परख न कर ले। अभी तक तुमने देखा होगा कि उसने बस तुम्हारी बातें सुनी ही हैं, कोई सवाल नहीं किया। अब सवालों का पोथा खोलकर बैठेगा।"

मुंगेरी साफ-साफ विचलित हुआ।

खोजिया भी हुआ, पर संभल गया।

"साहब! हम कोई फ्रॉड नहीं हैं। गरीब जरूर हैं, पर हमारी दी गई जानकारी दुरुस्त है। हम सवालों से नहीं घबराते।" खोजिया ने हिम्मत करके कहा–"मैंने तो आपकी भलाई चाही और आपको जानकारी दी। आगे एमेले ने भी यही किया। अब अश्वत्थामा से मुलाकात तो हम नहीं करा सकते या उसके साथ फोटो नहीं दिखा सकते।"

"भई! इस बारे में मैं तो कुछ जानता नहीं हूं। मैंने तो अपने काबिल एंप्लॉई की तारीफ की है। यह केस उसी को हैंडओवर किया हुआ है। तुम्हारे खाने के बिल के तीन हजार और इसको दिए जाने वाले दस हजार के मुकाबले अभी जानकारी कन्फर्म नहीं लगती। जो केले का पत्ता और उस पर न समझ में आने वाली भाषा में जो लिखा है, उसका परीक्षण होगा। अंगोछा वाकई वही है, जो तुमने बताया है या कोई कारस्तानी है, यह भी देखना होगा। अपना वीर बालक यही सब इंतजाम करने गया है।"

Baba Novels Chat Room

उसी समय दरवाजा खुला और प्रभास ने कमरे में कदम रखा। उसने दरवाजा अंदर से लॉक कर दिया और उन दोनों व्यक्तियों के सामने बैठकर तेज नजरों से उन्हें घूरने लगा।

"मैं अभी रिसेप्शन से आ रहा हूं।" प्रभास धीरे-धीरे, किंतु कठोर स्वर में बोला—"मैंने वहां एक ही सवाल किया था कि व्योमेश खोजिया और एमेले को जानते हो?"

प्रभास की बात सुनकर उन दोनों के चेहरे का रंग उड़ गया। उनसे बहुत बड़ी गलती हो गई थी। वे इस बात को भूल गए थे कि उस होटल में उन दोनों को हर कोई जानता था कि वे उस्ताद-शागिर्द हैं, लेकिन अब उस गलती को सुधारने का उनके पास समय नहीं था।

"फिर मैंने पुलिस को फोन कर दिया कि दो ठग हमें ठगने आए हैं।" प्रभास के स्वर की कठोरता और बढ़ गई थी—"पुलिस आने वाली होगी। अब तुम लोग अपने श्रीमुख से उचारोगे कि क्या सच्चाई है या पुलिस के पूछने पर ही बताओगे?"

"धंधा है साहब!" खोजिया नर्म और सहज स्वर में बोला—"खानाबदोशी ने कमाने-खाने लायक नहीं छोड़ा तो जेब काटने या चोरी करने से अच्छा मैंने आप जैसे साहब लोगों से थोड़ा गुजारे लायक पैसा कमाने का विचार किया। अश्वत्थामा यहां का ऐसा सब्जेक्ट है जिसके बारे में जानने के लिए रोज ही कोई-न-कोई आता रहता है और मैं उसको सजती-सी जानकारी देकर कुछ पैसा कमा लेता हूं। जब एक दिन एमेले मिला तो मैंने इसे भी अपने साथ शामिल कर लिया। अभी तक हम दोनों पांच या छह लोगों से माल निकाल चुके हैं, पर आप ज्यादा होशियार निकले।"

"इसमें होशियारी जैसी कोई बात नहीं।" प्रभास खुश्क लहजे में बोला—"तुमने कहा कि दो महीने पहले यह तुमसे मिला, मगर जब इससे मिलने गए तो जीप ऐसे ऐन इसके द्वार पर रुकी, जैसे तुम वहां रोज आते-जाते हो, फिर जब यह जागा तो इसकी आंखें बता रही थीं कि यह सोया ही नहीं था। मुझे तभी खटक गया था और मैं तुम दोनों को लेकर यहां आया और रिसेप्शन पर पूछताछ की तो सब कलई खुल गई।"

मुंगेरी तो डर के मारे कांपने लगा था, पर खोजिया संयत था।

"अब आप क्या करेंगे? पुलिस के हाथों हमारी हड्डियां तुड़वाएंगे?" खोजिया ने निर्विकार स्वर में पूछा।

"तुम्हें नहीं लगता कि तुमने ऐसा काम किया है?"

Baba Novels Chat Room

"उससे क्या हो जाएगा साहब! हम सुधर जाएंगे? हमें तो फिर भी पेट भरने के लिए कुछ-न-कुछ तिकड़म भिड़ानी ही पड़ेगी।" खोजिया ने कहा-"बस तरीका बदल लेंगे।"

"यानी सुधरने का कोई इरादा नहीं रखते?"

"रखते तो हैं, पर सुधरकर पेट भरने की गारंटी तो हो। अब नौकरी तो हमें कोई देने से रहा। न हम नौकरी करने लायक रहे हैं, फिर भूखा मरने के लिए सुधरने की कोई तुक नहीं बनती। अब आपको जो कहना है, अपनी बात कह डालिए।"

"कमाल है। गलती तुम्हारी, अपराध तुम्हारा और जरा सी भी झिझक नहीं, शर्म नहीं, डर नहीं। यह तो हद हो गई दीदादिलेरी की!" सेठी ने आंखें निकालते हुए गरजकर कहा-"यह निश्चय ही बड़ा चालाक बंदा है प्रभास! हमने खाने का बिल देने को कहा था और इसने हमसे तीन दिन का उधार चुकता करा लिया। अगर तू जर्नलिस्ट न होता तो मुझे शर्तिया तौर पर दस हजार की चपत और लग जाने वाली थी।"

"लग ही जाती, अगर भाईसाहब ने दिमाग न लगाया होता।" खोजिया ने कहा-"आप बड़े ही किस्मत वाले हैं कि आपको ऐसा काबिल एंप्लॉई मिला। मेरा तो शागिर्द भी घोंचू ही निकला। ठीक से परफॉर्मेंस भी नहीं दे सका। हट बे एमेले!"

"तू पुलिस बुला ही ले प्रभास!" सेठी ने कहा-"यह आदमी जरूरत से ज्यादा चालाक और काइयां है। इसे मसखरी सूझ रही है।"

"क्या कहते हो जासूस शिरोमणि खोजिया! नाम तो तुमने ऐसा रखा है, जैसे तुमने ही बिग-बैंग थ्योरी की खोज की या आकाशगंगाओं का पता लगाया हो। कभी सोचा नहीं कि ऐसी भी नौबत आ जाती है?"

"आप जानते हैं कि आप जिस मिशन पर निकले हैं, उसमें आपको मेरे जैसे असिस्टेंट की सख्त जरूरत है।" खोजिया बेबाकी से बोला-"आप यह भी जानते हैं कि मैं बड़े काम का आदमी हूं। कभी किसी ने मेरी काबलियत नहीं समझी, काम का ही नहीं समझा तो मजबूरन मुझे पेट पालने के लिए दिमाग का इस्तेमाल ठगी के लिए करना पड़ा, वरना मौका मिले तो मैं वाकई नई आकाशगंगा भी खोज सकता हूं।"

प्रभास ने उसके आत्मविश्वास की मन-ही-मन सराहना की। प्रत्यक्ष रूप में वह उसे तेज नजरों से देखता रहा, लेकिन प्रत्युत्तर में खोजिया ने भी पलकें न झपकाईं।

Baba Novels Chat Room

"अश्वत्थामा का किस्सा जन-सामान्य में बहुत प्रचलित है। उसके होने के साक्ष्य मिलते हैं, दिखने के नहीं। उसकी निरंतर निगरानी करनी होगी और यह काम अकेले आप नहीं कर सकते। आपको एक असिस्टेंट की आवश्यकता तो अवश्य ही होगी। मैं ठग हूं और कई लोगों को ठग चुका हूं, मगर आपको थोड़ी ही देर में असलियत पता चल गई तो जाहिर है कि आप मेरे भी उस्ताद हैं। मुझे हैंडिल कर सकते हैं, डिटेक्ट कर सकते हैं...तो क्या मैं समझूं कि मैं आपका असिस्टेंट हुआ?"

"गोद में बैठकर दाढ़ी छीलना कदरन आसान काम होता है।" सेठी ने धीरे से कहा।

"जब गोद में बिठाने वाले को पता होता है कि उसकी गोद में नाई बैठा है तो गहरी नींद लेना अहमकों का काम है और भाई साहब को मैं अहमक नहीं समझता।"

"ठीक है, तुम मेरे साथ रह सकते हो।" प्रभास ने कहा—"लेकिन एमेले का क्या करूं?"

"यह खाना बहुत अच्छा बनाता है। रात-भर जागने की बीमारी भी इसे है। पैदल चलने में बड़ा माहिर है। दोपहर में दो-तीन घंटे की नींद लेता है। महंगे खाने से इसे एलर्जी है। अब इतने गुणवान आदमी को तो आप भी ऐसे ही नहीं छोड़ सकते?"

"अपना खर्च बजट भी बता दो, दोनों का... अफोर्डेबल! हम कोई टाटा-बिरला नहीं हैं।"

"जब तक साथ रहें, दोनों वक्त का खाना! जीप आपके काम आएगी तो उसकी सेहत का ध्यान भी आप ही रखेंगे। साथ छोड़ने पर जो भी मुट्ठी बंद करके देंगे, कुबूल होगा।"

"क्या कहते हो बॉस?" प्रभास ने सेठी से पूछा।

"खाना इसी होटल में खाएंगे?" सेठी ने सवाल किया—"और जैसा अब तक खाते रहे हो, वही खाओगे न?"

"साहब! एमेले को यहां का खाना पचता नहीं, इसलिए यह अपने हाथों से बनाता है, मेरे लिए भी। इस होटल में तो मैं सिर्फ बकरा फंसाने आता था।" खोजिया ने बताया।

"रख ले भई प्रभास! जब ओखली में सिर दे दिया तो मूसल से क्या डरना। यूं तू यह भी नहीं कहेगा कि तुझे इस महत्त्वपूर्ण मिशन पर अकेला भेज दिया।" सेठी ने कहा।

Baba Novels Chat Room

"बहुत बढ़िया! अब आप आराम से चैन की नींद सो जाइए। हम लोग अभी निकल रहे हैं।" प्रभास ने कहा।

"अब कहां जा रहा है? आराम कर...कल से काम पर लगना।"

"अभी चार बजने में दो घंटे हैं। जोश में हैं तो जुट जाते हैं। क्या पता आपकी बुलंद किस्मत आज ही खुलने वाली हो और आप कुछ मसाला लेकर दिल्ली प्रस्थान करें।"

"जा मर। तू भी कोल्हू का बैल ही है और ऐसा आदमी मुझे सख्त पसंद आता है। तेरे खर्चे में फिफ्टी पर्सेंट की बढ़ोत्तरी हुई।" सेठी ने चादर ओढ़ ली।

प्रभास ने अपना बैग पीठ पर लादा। एक बड़ा-सा बैग एमेले को दिया।

"चलो, आज ही उससे मिलने की कोशिश करते हैं।"

खोजिया तत्काल उठ खड़ा हुआ और तीनों बाहर निकलकर जीप में आ बैठे।

Baba Novels Chat Room

14

अश्वत्थामा की साक्षात् उपस्थिति

प्रभास बड़ी फुर्ती से राहदारी के छज्जे पर लटककर नीचे कूद गया और बड़ी तेजी से बाहर की ओर भागा। वह इस अवसर को गंवाना नहीं चाहता था। वह श्योर था कि जो क्षणिक झलक मिली थी, वह अश्वत्थामा की ही थी। इससे भी ज्यादा श्योर वह इस बात को लेकर था कि वह ब्लास्ट निश्चय ही उसके लिए किया गया था। वह मुख्य द्वार पर पहुंचा तो ठिठक गया। वहां एक आदमी खून और धूल में अटा पड़ा था। अश्वत्थामा का दूर-दूर तक पता नहीं था, जैसे वह अदृश्य हो गया हो।

Baba Novels Chat Room

हैदर गिरता-पड़ता किले के पास पहुंच गया था और उसे हर पल ऐसा लग रहा था, जैसे वह बेहोश होकर गिर पड़ेगा। अभी बम फटने में आधा घंटा शेष था, अगर वह घायल न हुआ होता तो एक घंटा पहले ही वहां आ गया होता, फिर भी उसने अल्लाह का शुक्र अदा किया कि वक्त रहते वह वहां पहुंच गया था।

सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था और उस स्तब्धता में हैदर को धौंकनी की तरह चलती अपनी ही सांसों की आवाज सुनाई दे रही थी। वह बुरी तरह थक गया था और अभी समय भी था तो उसने थोड़ी देर रुककर आराम करने का विचार किया। इसके साथ ही वह अपनी घायल बांह पर पट्टी बांधना चाहता था, जो एक मुश्किल काम था। उसने वहीं एक पत्थर पर बैठकर अपनी बांह टटोली। घाव बड़ा था और खून अब भी रिस रहा था।

उसने बाएं हाथ से जेब में से रुमाल निकाला। अपना बैग वह रामू को दे आया था, वरना उसमें फर्स्ट एड का छोटा-मोटा सामान था। उसने रुमाल को बड़ी मुश्किल से घाव के चारों तरफ लपेटा और उसमें गांठ लगाने की कोशिश करने लगा। काफी मशक्कत के बाद वह कामयाब हो पाया।

ऐन तभी उसे एक ऐसी आवाज सुनाई दी, जैसे ठहरे पानी में कुछ गिरने पर होती है। उसने चौंककर नदी की दिशा में देखा। भोर की लालिमा फैल गई थी और तीन सौ मीटर दूर नदी का किनारा था। हैदर को एक परछाई-सी नजर आई। जरूर कोई नदी में प्रातः स्नान कर रहा था। ऐसे निर्जन जंगल में अधिकांश नक्सली ही विचरण करते थे। हो सकता है, उन्हीं में से कोई हो! उससे उसे क्या लेना! बांह में हो रहे दर्द को पीने की भरसक कोशिश करते हुए वह उठ खड़ा हुआ और किले के अंदर बढ़ा। वह जानता था कि उस खंडहर में जो भेड़िये रात दिखाई दिए थे, अभी भी वहां हो सकते थे इसलिए उसे बहुत सावधानी बरतनी थी।

अब चिड़िया चहचहाने लगी थीं और जंगल के वातावरण में शोर-सा मच गया था। वह किले के मुख्य द्वार पर आया ही था कि सन्नाटे में आ गया। किले के अंदर से भेड़ियों का झुंड बाहर की ओर आ रहा था। भले ही उसके पास स्टेनगन थी, पर वह जानता था कि भेड़िये संख्या में और भी अधिक हो सकते थे। उसने फिलहाल छुपकर बचाव करने में ही गनीमत समझी और पीछे हटकर दीवार में बने बड़े-से छेद में घुस गया। वहां से भी उसे अंदर का दृश्य साफ दिखाई दे रहा था।

भेड़िये गिनती में कम-से-कम पचास थे और बाहर की ओर आ रहे थे। टूटी हुई दीवार के जिस छेद में वह बैठा था, वह जमीन से तीन फुट ऊपर था और दो आदमी उसमें आराम से बैठ सकते थे। उसने स्टेनगन को पोजीशन में ले लिया, ताकि हमला होने पर वह फायर कर सके।

भेड़िये बड़ी खामोशी से वहां से निकलकर नदी की ओर जा रहे थे और हैदर को अब उस आदमी की फिक्र सताने लगी, जो नदी में स्नान कर रहा था। भेड़िये जरूर पानी पीने पहुंचेंगे और उस पर हमला कर सकते हैं। क्या वह उसे बचाने की कोशिश करे! पर उसके जिम्मे उससे भी बड़ा काम था! अब मात्र दस मिनट और शेष रह गए थे बम फटने में! पहले यह काम करना जरूरी था। वह किले के अंदर कूद गया और बहुत सावधानी से मंदिर की ओर बढ़ने लगा।

हैदर किसी भी खतरे का सामना करने के लिए तैयार था। मंदिर के बरामदे में पहुंचने के बाद वहां का हाल देखकर उसके मुंह से सैयादी के लिए गाली निकली। वह मंदिर में घुसने से पहले दोनों हाथ जोड़कर श्रद्धापूर्वक बुदबुदाया।

Baba Novels Chat Room

हैदर जूते उतारकर अंदर घुसा। अपनी पेंसिल टॉर्च से उसने देखा कि टाइम बम शिवलिंग के समीप फूल-पत्तियों में ढका रखा था जिसमें से बहुत धीमी बीप-बीप की आवाज आ रही थी। उसने उसे वहां से उठाया और बाहर आया। जूते पैरों में फंसाकर वह तेजी से भागा। अब टाइम बहुत कम मात्र चार मिनट रह गया था। उसका इरादा उसे नदी में फेंकने का था, इसलिए वह दर्द को पीकर प्राणपण से बाहर की ओर भाग रहा था। उसकी निगाह बम की टाइमवाच पर टिकी हुई थी जिसमें प्रतिपल समय घट रहा था। वह मुख्य द्वार पर आ गया तो थमककर रुक गया।

सामने से कोई आ रहा था। असाधारण रूप से लंबा-तगड़ा और बलिष्ठ वह आदमी अपने दोनों हाथों की अंजली बांधे 'ॐ नमः शिवाय' का जाप करता आ रहा था। उसके माथे पर खून से सना कपड़ा बंधा था और वह निश्चिंत होकर उधर ही बढ़ा आ रहा था।

'अश्वत्थामा!' हैदर की पिंडलियां कांप गईं। उसने भी दंतकथा सुनी तो थी, पर कभी उस पर विश्वास नहीं किया था, मगर आज वह प्रत्यक्ष उसके सामने था। क्या...क्या करेगा वह! कहीं मार तो नहीं डालेगा! उसके कंधे पर लटकता बड़ा धनुष और पीठ पर लटका तरकश इस बात का प्रमाण थे कि वह अश्वत्थामा ही था।

क्या करे हैदर! उसके हाथ में मौत का सामान था और अश्वत्थामा के रूप में सामने से भी मौत ही आ रही लगती थी, परंतु हैदर को अश्वत्थामा के हाव-भाव बड़े शांत लग रहे थे। यहां तक कि वह ऐसे उसके समीप से गुजर गया था, जैसे उसने हैदर को देखा ही न हो!

हैदर जैसे स्वप्न से जागा। टाइमवाच में अठारह-सत्रह...सोलह...और निरंतर कम होते सेकंड दिख रहे थे। अब नदी तक नहीं पहुंचा जा सकता था। उसने आव देखा, न ताव और बम को पूरी ताकत से दूर उछाल दिया। बम क्योंकि बाएं हाथ से फेंका गया था तो अधिक दूर नहीं जा सका था और जब फटा तो हैदर भी उसकी चपेट में आ गया। विस्फोटक ने हैदर से टकराकर उसे दूर फेंक दिया जिससे वह अचेत हो गया था।

प्रभास, खोजिया और एमेले किले के समीप ही पहुंच गए थे, तभी उन्होंने एक तेज धमाका सुना तो तीनों उछल पड़े।

"यह...यह तो ब्लास्ट हुआ है।" प्रभास बोला।

"नक्सलाइट एरिया है। ब्लास्ट क्या बड़ी बात है, पर हमें किसी खतरे में नहीं फंसना चाहिए। हम वापस चलते हैं।" खोजिया चिंतित स्वर में बोला।

"पागल हुए हो। देखते हैं कि क्या हुआ है।"

"नक्सली हमें देखते ही गोली मार देंगे। जोश की बात ठीक है, पर होश नहीं खोने चाहिए। इतना 'एग्रेसिव' होने से जान पर 'आफत' आ सकती है।"

"जीप यहीं रोको।" प्रभास दृढ़ता से बोला–"जो मेरी समझ में आ रहा है, अगर वह बात हुई तो समझो, हमारी भाग-दौड़ सार्थक रही।"

"क्या समझ में आ रहा है?"

"इस ब्लास्ट को अश्वत्थामा के लिए किया गया हो सकता है।"

"क्या कह रहे हो?" खोजिया हक्का-बक्का रह गया।

"टाइम देखो। ठीक चार बजे हैं। सबका मानना है कि अश्वत्थामा निश्चित रूप से इसी समय यहां पूजा करने आता है। नक्सली गिरोह इस खंडहर में ठिकाना बनाने का प्रयास कर रहे हो सकते हैं, मगर अश्वत्थामा का भय उन्हें ऐसा नहीं करने देगा। हो सकता है कि किसी ने उसे देख भी लिया हो। उसकी रैकी की गई हो और यह बम उसके रास्ते में रखा गया हो।"

"किस्सागो भी हो। यह खंडहर जंगली हिंसक जीवों का रैनबसेरा है। भेड़िये यहां बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। हो सकता है, यह ब्लास्ट भेड़ियों के लिए किया गया हो।"

"ऐसा भी हो सकता है, पर जाकर तो देखना होगा। वहां भेड़िये मरे पड़े होंगे तो क्लीयर हो जाएगा कि यह कार्रवाई भेड़ियों के लिए थी, वरना मेरी थ्योरी के एंगल से भी सोचने में क्या बुराई है? कल्पना करो कि इस ब्लास्ट की चपेट में अश्वत्थामा आ ही गया हो और मरा भले ही न हो, पर जख्मी तो जरूर हुआ होगा। अचेत पड़ा हो तो हमें उसकी फोटो और फिल्म बनाने का शानदार मौका मिलेगा।"

"कल्पना तो हैदराबादी कबाब की तरह लजीज है, पर यथार्थ में हमें भेड़ियों की छितराई हुई लाशें ही देखने को मिलेंगी।"

"जो भी हो, देखना तो पड़ेगा। इतनी ड्रिल के बाद यूं ही लौट जाना ठीक नहीं लगता।"

"मुझे भी चलना होगा?" एमेले ने पूछा।

"कोई घायल भेड़िया अकेला देखकर नाश्ता करने की सोच सकता है।"

एमेले तत्काल जीप से कूदकर उनके पीछे चल पड़ा।

किला वहां से सौ मीटर दूर था और कहीं किसी प्रकार की हलचल नहीं थी।

"भेड़ियों पर हमला वाली थ्योरी तो बैकफायर कर गई, क्योंकि ऐसा होता तो

Baba Novels Chat Room

कोई घायल, जिंदा बचा भेड़िया भागता-दौड़ता दिखाई देता।" प्रभास बोला—"नहीं तो कोई शोर-शराबा भी जरूर ही होता। देखना, मेरी थ्योरी ही सच निकलेगी।"

"हमें पीछे से जाना चाहिए। एक और रास्ता है। नक्सलियों ने ही ऐसे कई रास्ते बनाए हैं। इससे हम सुरक्षित जगह से हालात का जायजा ले सकते हैं।" खोजिया ने सुझाव दिया।

"ठीक है, चलो।" प्रभास ने सहमति दे दी।

खोजिया उन्हें लेकर किले की दाईं दीवार की ओर गया। वहां पत्थरों को काटकर आदमकद प्रवेश द्वार बनाया गया था। तीनों उसमें घुसे तो एक अंधेरे कमरे में जा पहुंचे। प्रभास ने अपने मोबाइल की फ्लैशलाइट जलाई। सीलन भरे उस कमरे में बाहर की ओर बड़ा-सा दरवाजा था जिसका एक किवाड़ झूल रहा था और दूसरा गायब था। वे वहां से बाहर निकले तो उन्होंने खुद को सीढ़ियों के पास पाया। सीढ़िया चढ़कर वे ऊपरी मंजिल के लंबे-चौड़े दालान में पहुंचे। वहां से किले का विशाल प्रांगण स्पष्ट दिखाई दे रहा था जिसके बीच-ओ-बीच शिव मंदिर नजर आ रहा था। भोर का हल्का-सा उजाला फैलने के कारण सब कुछ स्पष्ट नजर आ रहा था। वहां कहीं कोई नहीं था।

"वहां...वहां...वहां देखो!" एकाएक एमेले चीखा। वह मुख्य द्वार की ओर देख रहा था। प्रभास और खोजिया ने भी उस ओर देखा तो क्षण-भर के लिए उन्हें 'वह' दिखा। किले के मुख्य द्वार से वह बाहर निकल गया था। उसकी हल्की-सी झलक ही दिखाई दी थी। माथे पर लिपटे सफेद कपड़े को देखकर ही तीनों उत्तेजना से भर गए थे।

प्रभास बड़ी फुर्ती से राहदारी के छज्जे पर लटककर नीचे कूद गया और बड़ी तेजी से बाहर की ओर भागा। वह इस अवसर को गंवाना नहीं चाहता था। वह श्योर था कि जो क्षणिक झलक मिली थी, वह अश्वत्थामा की ही थी। इससे भी ज्यादा श्योर वह इस बात को लेकर था कि वह ब्लास्ट निश्चय ही उसके लिए किया गया था। वह मुख्य द्वार पर पहुंचा तो ठिठक गया। वहां एक आदमी खून और धूल में अटा पड़ा था। अश्वत्थामा का दूर-दूर तक पता नहीं था, जैसे वह अदृश्य हो गया हो।

अब तक खोजिया और एमेले भी वहां आ गए थे।

"कहां...कहां गया?" खोजिया चौंककर बोला—"अरे, यह कौन पड़ा है! क्या यही अश्वत्थामा है?"

"वह चला गया।" प्रभास अपनी हथेली पर घूंसा मारकर झुंझलाया—"यह वह है जिसने ब्लास्ट किया और खुद उसकी चपेट में आ गया। हमें इसी रास्ते से आना चाहिए था। ब्लास्ट यहीं हुआ था। बहुत बड़ा...बहुत बड़ा मौका निकल गया।"

Baba Novels Chat Room

"यह जिंदा है।" खोजिया वहां अचेत पड़े आदमी के पास बैठा—"बेहोश है, पर जिंदा है। यह हमें सारी बात बता सकता है। मेरी जीप में फर्स्ट एड का सामान है। इसे वहां ले चलते हैं। इसे बचाना जरूरी है।"

"ले जाओ। मैं इधर-उधर देखकर आता हूं।" प्रभास ने कहा और अंदर लौटकर मंदिर के पास आया।

मंदिर के दालान में भुने मांस के टुकड़े देखकर प्रभास चौंक गया। इसके साथ ही एक और चीज देखकर उसके नेत्र फैल गए। वहां एक खंभे के पास एक स्टेनगन पड़ी थी। फिलहाल उसे मंदिर में झांकना था। वह अंदर झांका तो शिवलिंग को गीला पाया और वहां पुष्प-पत्र भी पड़े देखे। यह तो पक्का हो गया था कि अश्वत्थामा अपने रुटीन के अनुसार पूजा करने आया था और यदि वे सामने के रास्ते से आते तो निश्चय ही उनका आमना-सामना भी हो जाता। कल सुबह 'वह' फिर आएगा! पर क्या इस घटना के विषय में पुलिस को बताना चाहिए! आखिर वहां एक घातक हथियार था! नक्सलाइट से जुड़ा एक अहम सुबूत! नक्सली उनके साथ था। नहीं, पहले उससे कुछ जानकारी ले लेनी चाहिए, तब सोचा जाएगा।

वह वहां से लौटकर अपने साथियों के पास आया, जहां खोजिया बड़ी नफासत से डॉक्टर बना हुआ घायल और अचेत नक्सली का उपचार कर रहा था। एमेले एक अच्छे कंपाउंडर की भूमिका में था।

"यह बम से उतना घायल नहीं हुआ।" खोजिया ने बताया—"इसकी बांह किसी हिंसक पशु ने उधेड़ डाली है। ट्रेनिंग में इन लोगों को इतना ट्रेंड कर दिया जाता है कि इनमें ऐसे घाव और दर्द को सहने की क्षमता अधिक होती है। मैंने इसे इंजेक्शन दे दिया है। यह जल्दी होश में आ जाएगा, लेकिन अंदर क्या देखा?"

"वह अश्वत्थामा ही था और पूजा करके गया है। इस नक्सली ने रात मंदिर में ही गुजारी है। इसने मांस भूनकर खाया और मंदिर को अपवित्र कर दिया है। इसकी स्टेनगन वहीं पड़ी है। इसने अश्वत्थामा पर बम या हैंडग्रेनेड फेंका होगा, पर वह असाधारण आत्मा है तो उसका तो कुछ न बिगड़ा, पर यह जरूर उसकी चपेट में आ गया।"

"इसे अश्वत्थामा ने जिंदा क्यों छोड़ दिया और वह अपने आक्रमणकारी पर क्रोधित क्यों नहीं हुआ?"

"इसके तीन कारण हो सकते हैं— एक, ब्लास्ट उसके यहां आने के समय हुआ था और उस समय उसे अपने इष्ट की पूजा करनी थी। यह समय की प्रतिबद्धता और इष्ट में आस्था का प्रतीक है। दूसरे, वह पूजा करके गया तो यह मृतप्राय पड़ा था। अचेत और निहत्थे पर वह वार नहीं करना चाहता होगा। तीसरे,

Baba Novels Chat Room

हमारी उपस्थिति का भान उसे हो गया था इसलिए वह जल्दी-से-जल्दी यहां से जाना चाहता होगा।"

"यह कमीना होश में आ जाए तो पहले इसकी धुनाई करूंगा, क्योंकि इसने मंदिर अपवित्र किया है।"

"पहले यहां से किसी 'सेफ' जगह चलो। यहां इसके साथी आ सकते हैं। किसी तरह से पुलिस को खबर हो सकती है और यह हमारे हाथ से छिन सकता है।"

"पुलिस को तो हमें ही फोन करना चाहिए।"

"करेंगे, मगर इससे पूछताछ के बाद। इसे जीप में डालो और यहां से हिलो।"

"पुलिस गुस्सा करेगी कि हमने इतनी देर बाद फोन क्यों किया?"

"वह सब मैं देख लूंगा। तुम यहां से चलो।"

खोजिया ने घायल को जीप में डाला और ड्राइविंग सीट पर आ बैठा। प्रभास उसकी बगल में आकर बैठ गया। एमेले घायल के पास बैठ गया। जीप मुड़ी और चल पड़ी। खोजिया वहां के चप्पे-चप्पे से वाकिफ लगता था। वह जीप को एक सुरक्षित स्थान पर ले आया।

"इसे होश आ रहा है।" एमेले ने बताया, तभी प्रभास का फोन बज उठा। उसने देखा कि सेठी ने कॉल किया था। उसने कॉल रिसीव की।

"जवान! चार बजे क्या हुआ? मुझे तो टेंशन में नींद ही नहीं आई।" सेठी की आवाज आई।

"आपका भाग्योदय हो गया। आज उसकी एक मामूली झलक तो मैंने ही देख ली। बॉस! यह जनश्रुति सत्य है। अब मैं दावा कर सकता हूं, मगर कुछ और लोचा भी हो गया है। नक्सलियों ने अश्वत्थामा पर बड़ा हमला किया। बम फेंका है उस पर। जिसने फेंका है, वह मेरे कब्जे में है। उसने करीब से उसे देखा होगा।"

"क्या कह रहा है?" सेठी की हैरान आवाज आई–"बहला तो नहीं रहा है? खुश्की तो नहीं ले रहा है?"

"नहीं बॉस! आ'यम सीरियस। अभी व्हाट्सएप पर उसकी फोटो भेज रहा हूं।"

"अश्वत्थामा की! अरे, मेरा हार्ट अटैक हो जाएगा।"

"बॉस! घायल हमलावर नक्सली की फोटो भेज रहा हूं। अपनी लोकेशन और पोजीशन बता रहा हूं जिससे मेरे बॉस को यह न लगे कि मैं उनसे मजाक नहीं कर रहा हूं।"

"ओह भेज! तसल्ली तो हो जाएगी मुझे कि मिशन पर निकला मेरा जवान तमाम रात भागा फिरा है तो क्या तीर मारा है। नक्सली कुछ बता भी रहा होगा?"

Baba Novels Chat Room

"बॉस! वह अभी-अभी कुनमुनाया है। बम की चपेट में आ गया था। बच गया, करिश्मा है।"

"ठीक है। पूछताछ करने के बाद बताना। पहले तस्वीर भेज।"

प्रभास ने घायल की तस्वीर ली और साथ में अपनी सेल्फी लेकर फॉरवर्ड कर दी। अब घायल कराह रहा था और आंखें खोलने का भी प्रयास कर रहा था।

"आंखें खोल कुकर्मी। मंदिर में बैठकर मांस खाता है। जिसे पांडव कुल के महारथी गदाधारी भीम और गांडीवधारी अर्जुन नहीं मार सके, उस महान योद्धा पर बम फेंकता है।" खोजिया ने क्रोधावेश से कहा।

"मुझे...मुझे...मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। मैं देख नहीं पा रहा हूं।"

प्रभास नक्सली की बात सुनकर सन्नाटे में आ गया। उसने यह जनश्रुति भी सुनी थी कि अश्वत्थामा को देखने वाला अंधा हो जाता है।

Baba Novels Chat Room

15

अमेरिका को करारा जवाब

"...नागरिक और देश की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है और इससे कोई समझौता नहीं किया जा सकता। यह हमारे इंजीनियरों, वैज्ञानिकों और देश के प्रत्येक नागरिक के अपार सहयोग से हो रहा है। हमने किसी से आर्थिक सहायता का ऋण नहीं मांगा। अमेरिका जैसे स्वयंभू चौधरी देश छोटे देशों की प्रगति पर बौखला जाते हैं, धमकियां देते हैं। यह नहीं चलेगा। यह युद्ध की धमकी है। इससे हम नहीं डरते। अमेरिका यह न सोचे कि वह हम पर बल प्रयोग करेगा और हम चुप बैठे रहेंगे। हम अमेरिका का विध्वंस कर देंगे। अमेरिका का ऐसा कोई शहर नहीं, जो हमारी मिसाइलों की जद में न हो। हमने जो हाइड्रोजन बम-परीक्षण किया है, वह न तो पहला है और न ही आखिरी। बहुत जल्द हम एक और परीक्षण करने जा रहे हैं, जो सबको बताएगा कि उत्तर कोरिया के पास दुनिया के सर्वाधिक खतरनाक आग्नेयास्त्र हैं।"

Baba Novels Chat Room

उत्तर कोरिया के द्वारा किए गए हाइड्रोजन बम के परीक्षण ने कोरियाई प्रायद्वीप को तो भय से भर ही दिया था, साथ ही दुनिया-भर के देश भी चिंतित हो उठे थे।

अमेरिका ने इस परीक्षण को विश्व-शांति के लिए खतरा बताकर चेतावनी जारी की कि उत्तर कोरिया के तानाशाह को ऐसे परीक्षण करके परमाणु अप्रसार नियमों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और विश्व में चल रहे शांति-प्रयासों को बाधित नहीं करना चाहिए। अमेरिका इस प्रकार की

हरकतों का केवल मौखिक विरोध ही नहीं करेगा, बल्कि यदि आवश्यकता पड़ी तो बल प्रयोग भी करेगा।

अमेरिका की इस चेतावनी का कोरियन तानाशाह किम-जोंग-उन ने करारा जवाब दिया—

"हम ऐसी गीदड़ भभकी से नहीं डरते। बल प्रयोग की बात करने वाले इस भुलावे में न रहें कि उत्तर कोरिया अब सत्तर साल पुराना पिछड़ा हुआ देश है। हम अपनी संप्रभुता से किसी को नहीं खेलने देंगे। किसी के परामर्श या आदेश या धमकी का हम पर कोई असर नहीं पड़ने वाला। हमें अपने देशवासियों के हित के लिए जो करना चाहिए, हम वही कर रहे हैं। नागरिक और देश की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है और इससे कोई समझौता नहीं किया जा सकता। यह हमारे इंजीनियरों, वैज्ञानिकों और देश के प्रत्येक नागरिक के अपार सहयोग से हो रहा है। हमने किसी से आर्थिक सहायता का ऋण नहीं मांगा। अमेरिका जैसे स्वयंभू चौधरी देश छोटे देशों की प्रगति पर बौखला जाते हैं, धमकियां देते हैं। यह नहीं चलेगा। यह युद्ध की धमकी है। इससे हम नहीं डरते। अमेरिका यह न सोचे कि वह हम पर बल प्रयोग करेगा और हम चुप बैठे रहेंगे। हम अमेरिका का विध्वंस कर देंगे। अमेरिका का ऐसा कोई शहर नहीं, जो हमारी मिसाइलों की जद में न हो। हमने जो हाइड्रोजन बम-परीक्षण किया है, वह न तो पहला है और न ही आखिरी। बहुत जल्द हम एक और परीक्षण करने जा रहे हैं, जो सबको बताएगा कि उत्तर कोरिया के पास दुनिया के सर्वाधिक खतरनाक आग्नेयास्त्र हैं।"

तानाशाह के इस जवाब से दुनिया-भर में हलचल मच गई थी।

सांग-सी अपने विद्रोही साथियों के साथ द्वीप पर बैठा टी.वी. स्क्रीन पर तानाशाह के उस जवाब को सुन रहा था। उसके माथे पर चिंता की लकीरें उभर रही थीं।

"यह आदमी इस देश का बेड़ा गर्क कर देगा।" सांग-सी गंभीर स्वर में बोला—"अपनी ताकत के नशे में यह आदमी उन देशों को चुनौती दे रहा है जिनके सामने टिकना एक दिवास्वप्न है। जिनकी सैन्य क्षमता हमसे कई गुना अधिक है। जिन्होंने विश्वयुद्धों में उन ताकतों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया जिनसे सारी दुनिया कांपती थी। हिटलर जैसे बेलगाम तानाशाह और उसकी शक्तिशाली जर्मन आर्मी तक को अमेरिका की ताकत ने झुका दिया था।"

"अगर परमाणु युद्ध हुआ तो कोरियन द्वीप का नामोनिशान मिट जाएगा। हिरोशिमा और नागासाकी की तरह उस तबाही के चिह्न पीढ़ियों तक उत्तर कोरिया

Baba Novels Chat Room

में दिखाई देंगे।" एक नौजवान ने गंभीर स्वर में कहा—"एक इस आदमी के किए की सजा लाखों बेगुनाहों को भुगतनी होगी।"

"अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसा हमारे देश का विरोध हो रहा है, उससे साफ स्पष्ट होता है कि हमें किसी प्रकार की सैन्य सहायता कहीं से भी प्राप्त नहीं हो सकेगी और हमारे विरुद्ध संयुक्त सेनाओं का प्रबल आक्रमण होगा। तानाशाह समझता है कि वह हाइड्रोजन बम से ही युद्ध जीत लेगा, जबकि सभी के पास परमाणु हथियार हैं।"

"अब उसे कौन समझाए कि एक युद्ध किसी भी देश को विकास के दृष्टिकोण से कई दशक पीछे धकेल देता है। माना कि आज हमारे देश की आर्थिक स्थिति अच्छी है, अर्थव्यवस्था सुदृढ़ है, पर इसका इस्तेमाल केवल हथियारों का जखीरा बढ़ाने में किया जाएगा तो कैसे चलेगा? नागरिक सुविधाओं पर शासन का सख्त पहरा है। लोग अपने ही देश में नजरबंद हो गए हैं। तानाशाह के सैनिक चप्पे-चप्पे पर तैनात हैं और लोग भय के साए में जिंदगी काट रहे हैं।"

"हमें अपना विद्रोह और तेजी के साथ मुखर करना होगा। लोगों को खुद से जोड़ना होगा। तानाशाही शासन को झटके देने होंगे और सेना का मनोबल तोड़ना होगा।"

"इस द्वीप पर छुपे रहकर तो कुछ भी नहीं होगा। हमें मैदान में उतरना होगा। हमें सशस्त्र क्रांति करनी होगी। इसके लिए हमें इस अज्ञातवास का त्याग करना होगा।"

"मगर हम अंदर कैसे जा सकेंगे? तानाशाह ने हमें देशद्रोही घोषित कर रखा है। हमें देखते ही गोली मारने के आदेश जारी किए हैं।"

"हमें कोई रास्ता खोजना होगा।" सांग-सी ने कहा—"मेरे दिमाग में एक योजना है जिससे हम अंदर दाखिल हो सकते हैं।"

"बताओ।" साथी विद्रोही बोला—"एक बार हम अंदर पहुंच गए तो फिर चाहे हमारे प्राण क्यों न चले जाएं, हम तानाशाह से देश को मुक्त कराके ही रहेंगे।"

"यह बड़ा ख्वाब है, मगर यही हमारा लक्ष्य है। सीमित संसाधनों से क्रांति को उग्र रूप देना कठिन अवश्य हो सकता है, असंभव नहीं। मेरे पिता ने बताया था कि जब जुल्म बढ़ता ही जाता है तो क्रांति भी प्रबल होने लगती है।"

"तुम हमें अंदर पहुंचने का तरीका बता रहे थे?"

"हां, हमें भिक्षु बनकर राजधानी पहुंचना होगा। यद्यपि तानाशाह ने सभी आने-जानेवालों पर कड़ी जांच बिठा रखी है, पर बौद्ध भिक्षुओं को कुछ छूट मिली हुई है।"

Baba Novels Chat Room

"वह भी इसलिए कि तानाशाह धार्मिक क्रांति नहीं चाहता, क्योंकि इससे आम आदमी के जुड़ जाने की प्रबल संभावना रहती है। दूसरे, वह जानता है कि बौद्ध धर्म के अनुयायी अहिंसा का कड़ाई से पालन करते हैं। तरीका तो कारगर है, मगर इससे हमारे पास हथियार के नाम पर सुई भी नहीं होगी। बिना हथियारों के हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे जो साथी अंदर हैं, उनके पास भी ज्यादा हथियार नहीं हैं।"

"उनका इंतजाम तो करना होगा। हमारे जापानी मददगार हमें किसी-न-किसी तरह हथियार उपलब्ध करा ही देंगे। हमें जल्दी ही बॉर्डर तक पहुंचना होगा। नॉर्थ में हमारे बहुत से मददगार हैं और वहां हमारे अनेक साथी भी हैं। मिस्टर ससूमा के अनुसार, हमें प्राणों की परवाह नहीं करनी क्योंकि ऐसे बड़े उद्देश्य प्राणों का मोह लेकर पूरे नहीं किए जा सकते। हमें यह जंग निर्णायक रूप से लड़नी होगी।"

"इस बार हम प्रबलता से आक्रमण करेंगे—ठोस योजना बनाकर।"

"योजना तो मिस्टर ससूमा समझाकर गए हैं।" सांग-सी ने कहा तो उसके साथी चौंक गए और उत्सुकता से भर उठे।

Baba Novels Chat Room

16

अश्वत्थामा की उद्विग्नता

अश्वत्थामा ने अपने चिरंजीवी जीवन का एकमात्र ध्येय शिव-साधना को बनाया था, पर आज वह मंदिर को अपवित्र देखकर उद्विग्न हो उठा था...एक मानव किसी ऊर्जा विस्फोट में उसके सामने मारा गया था। इसका अर्थ यह था कि उसके पूजास्थल पर मानवीय गतिविधियां बढ़ गई थीं और वह ऐसा नहीं चाहता था। अश्वत्थामा को आज मार्गदर्शन की विशेष रूप से आवश्यकता महसूस हो रही थी। अतः गुफा में समाधिस्थ होकर उसने अपने मार्गदर्शक से मानसिक संपर्क स्थापित किया।

Baba Novels Chat Room

उतावली नदी अपनी गति से पहाड़ी भाग में मद्धिम और शांत बहती थी, पर जैसे ही ढाल से उतरती थी, वह अत्यंत वेगवान हो जाती थी। ढाल से उतरते हुए नदी का एक कोना एक विशालकाय पहाड़ी से टकराता था और यहीं से एक छोटी धारा जलप्रपात के रूप में गहरी घाटी में गिरती थी। सपाट खड़ी दीवार से गिरती धारा करीब साठ मीटर की ऊंचाई से गिरकर नीचे पत्थरों पर भयानक शोर करती थी। वहां से वह पानी ऊंचे-नीचे तल से होते हुए जिस भूमि को सिंचित करता था, वह कहीं दलदली थी, तो कहीं शुष्क थी और कहीं बेतरतीब जलमग्न थी। शुष्क भूमि पर दुर्लभ प्रजातियों के वृक्ष, पौधे और लताएं थीं। किसी नौका द्वारा भी जलप्रपात तक नहीं पहुंचा जा सकता था। यही कारण था कि वहां मानव के कदम नहीं पड़े थे। जलप्रपात को देख पाना कठिन था। उसके द्वारा निर्मित घाटी मैदान को देखने के लिए भी नदी को विभाजित करने वाली पहाड़ी तक पहुंचना दुःसाहस भरा काम था और कोई बिरला ही उस

दु:साहस को कर सकता था। जलप्रपात की निचली अंतिम गहराई में सपाट दीवार के सामने गिरते वेगवान जल के परदे के पीछे वह गुफा थी, जो पानी के परदे के पीछे छुपी हुई थी। गुफा का द्वार विशाल था जिसमें से हाथी भी गुजर सकता था। कोई नहीं जानता था कि गहरी होती हुई वह गुफा पठार की ऊंचाई की ओर जाकर विभाजक पहाड़ी के उस हिस्से में खुलती थी, जहां पहुंच पाना लगभग असंभव ही था। बाहर की ओर से गुफा का प्रवेश द्वार एक विशाल चट्टान से ढका हुआ था। यह भी पहाड़ से टकराती लहरों के बीच लगभग अदृश्य ही रहता था। यही गुफा 'उसका' निवास थी। 'वह' नदी के रास्ते जल के अंदर होकर वहां तक पहुंचता था और प्रवेश द्वार की चट्टान को ऐसे धकियाता था जैसे साधारण लोग किवाड़ धकेलते हैं। प्रवेश द्वार की चट्टान बाएं से दाएं घूमती और रास्ता बन जाता। अंदर जाकर 'वह' उसे यथावत् बंद करता और गुफा की गहराई में उतरकर अंधकार में लुप्त हो जाता। उसे चौबीस घंटे में केवल एक बार असीरगढ़ के किले में पूजा करने जाना पड़ता था।

वह द्रोणपुत्र था! अश्वत्थामा था! महाभारत का वह महान योद्धा जिसने महाभारत के अंत में प्रतिशोधात्मक रूप से विजयी पांडवों का समूल विनाश लगभग कर ही दिया था। पांडवों के पुत्रों को शिविर में सोते हुए मार डाला था। उनके अंतिम उत्तराधिकारी को, जो अभी गर्भ में ही था, नारायणास्त्र चलाकर समाप्त ही कर दिया था। नारायणास्त्र के प्रभाव से गर्भस्थ शिशु की मृत्यु हो जाने से चारों ओर हाहाकार मच गया था। उस समय भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी योगमाया से नारायणास्त्र को अप्रभावी करके पांडवों के कुल-विनाश को रोकने के लिए गर्भ में मृत हो चुके शिशु को पुनर्जीवन दिया था। यही शिशु आगे चलकर परीक्षित कहा गया।

श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा को उसके अक्षम्य अपराध का दंड देते हुए उसके मस्तक की मणि निकलवा ली और उसे अनंतकाल तक पृथ्वी पर भटकते रहने का अभिशाप दिया जिसे द्रोणपुत्र आज भी भोग रहा था। अश्वत्थामा स्वयं उस अपराधबोध से ग्रस्त रहा और अपने क्रोध में किए गए अक्षम्य अपराध से निरंतर दुखी रहा। यहां-वहां भटकते हुए अश्वत्थामा युगों को बदलते देखता रहा, मानव को बदलते देखता रहा। उसने कितने ही नियमविहीन बर्बर युद्धों को देखा। विनाश और नव-निर्माण को देखा, पर कभी किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया, क्योंकि वह समझता था कि उसे इसका कोई अधिकार नहीं है। इसी क्रम में वह कई सौ वर्ष पूर्व विंध्याचल की ओर आया और दिव्यद्रष्टा वेदव्यास ने उसे इस गुप्त स्थान पर रहकर अपने इष्ट की साधना करने का निर्देश दिया। अश्वत्थामा के सामने विकट समस्या यह थी कि उसके मस्तक का घाव भी उसकी आयु के समान ही चिरंजीवी था और उससे निरंतर रुधिर बहता रहता था। महर्षि वेदव्यास ने

Baba Novels Chat Room

अश्वत्थामा को उस स्थान पर प्रवास का निर्देश इसलिए भी दिया था कि वहां की घाटी में एक दुर्लभ औषधि पाई जाती थी, जो घाव के रक्त प्रवाह को कम करती थी। अब घाव से बहुत ही अल्पमात्रा में बूंद-भर रक्त नियमित रूप से रिसता रहता था और इसके लिए वह मस्तक पर चीर (कपड़े का टुकड़ा) बांध लेता था।

अश्वत्थामा भगवान शिव का अनन्य भक्त था और निकट ही स्थित असीरगढ़ के किले में बने शिव मंदिर में नियमित पूजा करने जाता था। प्रयास करता था कि किसी मानव से उसकी भेंट न हो, फिर भी कई बार हो जाती थी, परंतु वह किसी का अहित न करता था। मानव उसे देखते ही भय से मूर्च्छित हो जाता था। वह उसके वस्त्र अवश्य ले लेता था, क्योंकि वस्त्र उसके घाव पर बांधने के काम आते थे। इसके अतिरिक्त उसने वस्त्रों की व्यवस्था कुछ बस्तियों से भी कर ली थी।

अश्वत्थामा ने अपने चिरंजीवी जीवन का एकमात्र ध्येय शिव-साधना को बनाया था, पर आज वह उद्विग्न हो उठा था। आज उसने मंदिर को अपवित्र देखा था...आज एक मानव किसी ऊर्जा विस्फोट में उसके सामने मारा गया था। इसका अर्थ यह था कि उसके पूजास्थल पर मानवीय गतिविधियां बढ़ गई थीं और वह ऐसा नहीं चाहता था। अश्वत्थामा को आज मार्गदर्शन की विशेष रूप से आवश्यकता महसूस हो रही थी। अतः गुफा में आने के बाद उसने समाधिस्थ होकर अपने मार्गदर्शक से मानसिक संपर्क स्थापित किया।

"हे त्रिकालदर्शी, महर्षि वेदव्यास! मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए!" उसने मानसिक संदेश प्रेषित किया—"मेरी उद्विग्नता बढ़ती जा रही है प्रभु, मेरा मार्गदर्शन कीजिए।"

"निर्विकार रहो द्रोणपुत्र!" अश्वत्थामा को महर्षि वेदव्यास का संदेश प्राप्त हुआ—"यह कैसी उद्विग्नता है वत्स! जो तुम्हारे मन में क्रोध को तरंगित कर रही है?"

"प्रभु! मानव मेरे साधनापथ को बाधित कर रहा है। उसका हस्तक्षेप अब अधिक होता जा रहा है। मेरी पूजा में विघ्न होने लगा है।"

"हम जानते हैं महान योद्धा! नियति किसी लक्ष्य के अंतर्गत ऐसा चक्र चला रही है। तुम्हारे संचित पुण्य, जिनके कारण पहले मानव तुम्हारे दर्शन करने में असमर्थ रहता था, अब कलियुग के प्रभाव से क्षीण हो रहे हैं। नियति तुम्हें पुनः पुण्य संचित करने का अवसर देना चाहती है और इसी कारण ये घटनाक्रम घटित हो रहे हैं।"

"कैसा लक्ष्य महाप्रभु! क्या कर्म से छूटकर मुझे पुनः कर्मरत् होना होगा?"

"नियति क्या चाहती है, यह स्पष्ट करने का हमें अभी अधिकार नहीं है वत्स! यह तो समयबद्ध रूप से सब सामने आता जाएगा।"

"महामुनि, कलियुगी मनुष्य मेरे इष्टदेव के पूजास्थल को दूषित कर रहे हैं। मेरा क्रोध ऐसे दुष्टों को दंडित करने के लिए मुझे प्रेरित कर रहा है।"

Baba Novels Chat Room

"अवश्य कर रहा होगा महावीर! परंतु यह उचित नहीं होगा। भगवान रुद्र उन्हें स्वयं दंडित करने में सक्षम हैं। तुम्हारा हस्तक्षेप समयानुकूल नहीं है। समय से पूर्व किसी सार्थक उद्देश्य के बिना तुम्हारा प्रकट होना ठीक नहीं होगा। यदि नियति चाहेगी और कोई महान पुण्य-संचयकारी कार्य तुम्हें देगी तो उसके अनुसार परिस्थितियां बन जाएंगी। जहां तक हम समझ रहे हैं, शीघ्र ही ऐसा अवसर आने वाला है।"

"तब तक मैं किस प्रकार उन दुष्टों की अधार्मिकता को सहन करूं?"

"तुम्हारे लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं है वत्स! तुम इंद्रियजित हो, विवेकशील हो और धर्मज्ञ हो! छोटे कारणों से बड़े प्रतिबंध नहीं तोड़े जाने चाहिए।"

"आप मेरा मार्गदर्शन कीजिए दिव्यद्रष्टा महर्षि!"

"अपने क्रोध पर नियंत्रण करें द्रोणपुत्र! अपनी नियम पद्धति से विचलित न हों। दुष्टों का स्वभाव सद्जनों को विकारग्रस्त करना होता है। साधारण मनुष्य दुष्टों के कुकृत्यों से क्रोध जैसे विकार से ग्रस्त हो जाते हैं, अहिंसक से हिंसक बन जाते हैं। अत: इनको ध्यान में न आने दें और अपना कार्य करते रहें।"

"जो आज्ञा गुरुदेव! मैं पूजा के समय अपना ध्यान इधर-उधर नहीं भटकने दूंगा।"

"वीर पुरुष, आपसे अधिक कौन जानता है कि इस समय मनुष्य कितने विकारों से ग्रस्त है! स्वार्थ, पापकर्म और अनास्था में डूबा हुआ आज का मनुष्य अपने आकार और आयु में लघु हो गया है और मूल उद्देश्यों को भूलने में विशाल हो गया है। इसी कारण पृथ्वी पर मानव संघर्ष ऐसी विद्रूप स्थिति में पहुंच गया है, जहां निकट के रक्त-संबंधों में भी विश्वसनीयता और स्नेह नहीं रह गया। उसे निश्चय ही उसके कर्मों का फल प्राप्त होता है और यही कारण है कि पापकर्म में डूबे मनुष्य को निम्न कोटि की योनियों में भटकना पड़ रहा है। इस घोर कलियुग में संभवत: मनुष्यों में कोई अपवाद ही है, जो पुन: मानव योनि प्राप्त करता है, अन्यथा सब कीट-पतंगों में जन्म लेते हैं। यह कलि का प्रभाव है कि आज आवागमन से मुक्ति का एकमात्र मार्ग समझा जाने वाला मानव शरीर, इस सत्य से परे हो गया है। अब कीट-पतंगे तो मानव जन्म ले सकते हैं, पर मानव इसके लिए प्रयास तक नहीं करता। तुम्हें मनुष्यों के पापकर्मों से विचलित होकर केवल क्रोध के वशीभूत दंडाधिकारी नहीं बनना है। यह नियति निश्चित करेगी कि तुम्हें क्या करना है।"

"आपने मेरी उद्विग्नता शांत कर दी महामुनि! आपको मेरा शत्-शत् नमन!"

"निर्विकार हो जाओ वत्स! प्रभु रुद्र तुम पर कृपा बनाए रखें।"

इसी के साथ मानसिक संवाद टूट गया।

अश्वत्थामा अब स्वयं को सहज और निर्विकार अनुभव कर रहा था

Baba Novels Chat Room

17

सैयादी पर एन.आई.ए. की नजर

"तुमने अश्वत्थामा को देखा था?" प्रभास ने प्रश्न किया।

"बहुत करीब से।" उसने स्पष्ट झुरझुरी ली–"मैंने उसके बारे में लोगों से सुना जरूर था, पर कभी विश्वास नहीं किया था। मैं मंदिर से बम निकालकर नदी में फेंकने जा रहा था कि वह मेरे सामने आ गया। उस समय मैं जैसे पत्थर का हो गया था। वह बिना कुछ कहे मेरे पास से गुजर गया था और तब तक बम फटने का टाइम हो गया था।"

Baba Novels Chat Room

"मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। मैं अंधा हो गया हूं!"

खोजिया ने घृणा से कहा–"जब भगवान के घर को अपवित्र करेगा और एक महान पौराणिक योद्धा पर जानलेवा हमला करेगा तो अंधा तो अपने आप ही होगा।"

"यह...अश्वत्थामा को देखने से अंधा हुआ है?" एमेले कंपकंपाया–"हमारे पुरखे बताते थे कि जिसने भी अश्वत्थामा को देखा, वही अंधा हो गया।"

"तो तू अंधा क्यों नहीं हुआ?" प्रभास गुर्राकर बोला–"देखा तो तूने भी था उसे। यह उस विस्फोट की चपेट में आकर अंधा हुआ है, जो उसने अश्वत्थामा को मारने के लिए किया था। पत्थरों के बीच हुआ विस्फोट और पत्थर के महीन बारीक टुकड़े इसकी आंखों में घुस गए हैं। अब मुझे इससे कुछ पूछने दो।"

"मैंने कुछ नहीं किया।" घायल हैदर रोते हुए बोला–"न मैंने मंदिर अपवित्र किया और न ही अश्वत्थामा पर हमला किया।"

"पहले अपना नाम बता और सारी बात बता। यह तो निश्चित है कि तू नक्सली है। वहां क्या चाहते हो तुम किले से? क्या गुल खिला रहे हो?"

"मेरा नाम हैदर है। मैं दहलावर गुट का नक्सली हूं। इन दिनों दहलावर ने बागियों को विशेष ट्रेनिंग देने के लिए एक विदेशी आतंकी अबू सैयादी-अल-बगदादी को बुलाया हुआ है। कल रात हम किले में ट्रेनिंग के लिए कैंप लगा रहे थे।"

"अबू सैयादी! वह बड़ा क्रिमिनल! इंटरनेशनल टैररिस्ट!" प्रभास उछल पड़ा—"वह...वह इंडिया में, यहां के जंगल में नक्सलियों का ट्रेनर बना हुआ है?"

"हां, कल रात उसने ही किले में मांस पकाया और खाया। हम लोगों ने भगवान के घर में ऐसा गलत काम करने से मना किया तो उसने मंदिर में ही टाइमबम लगा दिया। हमारे एक साथी ने ज्यादा विरोध किया तो उसे गोली मार दी। वह मुझे और मेरे साथी को उसकी लाश ठिकाने लगाने के लिए छोड़ गया तो मैं मंदिर से बम हटाने को यहां दौड़ता हुआ आया था।"

"तू तो मुसलमान है। तुझे क्या जरूरत आ पड़ी थी बम हटाने की!" खोजिया गुर्राया।

"मुसलमान होने के साथ ही मैं इंसान भी हूं।" हैदर ने अपनी पीड़ा पीते हुए कहा—"मैं अपने मुल्क की धार्मिक कटुता को जानता हूं। अगर मंदिर में ब्लास्ट होता तो हिंदू संगठन आसपास के मुस्लिमों को काटने लगते। सांप्रदायिक दंगा छिड़ जाता। हजारों बच्चे अनाथ और औरतें विधवा हो जातीं।"

"कमाल है एक नक्सली ऐसी बात कह रहा है!"

"हम विद्रोही हैं। अपने समाज और सिस्टम के सताए हुए बागी हैं। हमने अपने हक के लिए हथियार उठाए हैं, न कि लूट-पाट करके लोगों को सताने के लिए।"

"तुमने अश्वत्थामा को देखा था?" प्रभास ने प्रश्न किया।

"बहुत करीब से।" उसने झुरझुरी ली—"मैंने उसके बारे में लोगों से सुना जरूर था, पर कभी विश्वास नहीं किया था। मैं मंदिर से बम निकालकर नदी में फेंकने जा रहा था कि वह मेरे सामने आ गया। उस समय मैं जैसे पत्थर का हो गया था। वह बिना कुछ कहे मेरे पास से गुजर गया था और तब तक बम फटने का टाइम हो गया था।"

"बाकी बातें तो बाद में होंगी।" प्रभास उत्तेजित स्वर में बोला—"पहले हमें अबू सैयादी को देखना होगा। वह बहुत खतरनाक आतंकवादी है। वह केवल ट्रेनिंग देकर निकल जाने वाला नहीं है। उसकी इंडिया में मौजूदगी किसी बड़े आतंकी ऑपरेशन को लेकर हो सकती है। हमें तत्काल पुलिस को खबर करनी होगी। वह इस जंगल से निकल गया तो देश के किसी भी हिस्से में बड़े नरसंहार की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।"

Baba Novels Chat Room

"साहब! पुलिस तो दहलावर के प्रभाव में है।" घायल हैदर बोला–"दहलावर की राजनीतिक पहुंच के चलते पुलिस कार्यवाही करने में या तो दिलचस्पी ही नहीं लेगी और लेगी तो इतना वक्त जरूर दे देगी कि सैयादी फुर्र हो जाएगा।"

"तुम्हें यह तो पता होगा कि वह इस समय कहां होगा?"

"अगर ठिकाना नहीं बदला होगा तो यहां से बारह मील की दूरी पर गोटिया कबीले में होगा।"

प्रभास ने तत्काल सेठी को सारे वाकिये से अवगत कराया।

"क्या कह रहा है?" सेठी हैरान हुए बिना न रह सका–"अबू सैयादी ओसामा-बिन-लादेन से कुछ ही कम कद का वांछित अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी है। वह तेरे रडार पर है? अरे! मैं तो समझता था कि तू किसी खास काम का नहीं मगर तूने तो अट्ठारह घंटे में ऐसे भयानक काम अंजाम दे दिए कि मेरा पसीना छूट रहा है।"

"वह सब बाद में बोलते रहना। अभी कोई ऐसी व्यवस्था कीजिए कि सैयादी को इसी जंगल में जिंदा या मुर्दा गिरफ्तार किया जा सके और खास ध्यान रखिए कि यह पुलिस के द्वारा होने वाला काम नहीं। पुलिस की विश्वसनीयता ऐसे बड़े मामलों में कम होती है, इसलिए बड़े स्तर पर काम करना।"

"घबरा मत। तू कहे तो पी.एम. को भेज दूं।" सेठी ने कुछ इठलाकर कहा–"वरना एन.आई.ए. तो फौरन आ ही रही समझ। तू उसकी लोकेशन बता।"

प्रभास ने लोकेशन बताकर फोन काट दिया, ताकि सेठी आगे बात कर सके।

"इसका क्या करें? यह मामला तो बड़ा पेचीदा बन गया। दहलावर को पता चला कि हम इसके पीछे हैं तो वह हमें बहुत बुरी मौत मारेगा। तुम तो बच भी जाओगे, मगर हम तो गरीब आदमी हैं।" खोजिया ने चिंतित स्वर में कहा।

"इसे हॉस्पिटल पहुंचाकर एन.आई.ए. की सुरक्षा में देना होगा। यह नक्सली जरूर है, पर इसमें मानवता है। इसे मरने के लिए नहीं छोड़ सकते। हो सकता है कि इसकी आंखें ठीक हो जाएं और खुल भी जाएं। वैसे भी यह महत्त्वपूर्ण है। एक बड़े काम में इसकी गवाही जरूरी है। यह सैयादी के वर्तमान हुलिये की शिनाख्त भी कर सकेगा।"

"मुझे मौत का गम नहीं साहब!" हैदर बोला–"पर वह राक्षस सैयादी बचकर नहीं निकलना चाहिए। मैंने सुना है कि वह दहलावर को हथियारों की बड़ी खेप भी दे रहा है। वह यहां तबाही मचाने आया है। काश! मुझे पहले भनक लग जाती।"

"घबराओ मत। उसके जैसे आतंकी भारत की जमीन पर कदम तो रख देते हैं, पर उनकी जिंदा वापसी हुई, यह कम ही सुनने को मिलता है। खोजिया, अब यहां चारों ओर एन.आई.ए. का कब्जा होगा। हम इसे किले के पास छोड़ेंगे।"

Baba Novels Chat Room

"क्यों! इसे हॉस्पिटल नहीं लेकर चलते?"

"नहीं। अब यह बड़ा खेल देश की बड़ी सुरक्षा एजेंसी के सुपुर्द हो गया है। अब इसमें हमारा दखल देना अच्छा नहीं होगा। हमारा मूल मिशन बाधित हो जाएगा। हम नक्सलियों के निशाने पर आ जाएंगे और अश्वत्थामा वाला मिशन कभी पूरा नहीं कर सकेंगे। अब हमें इस फ्रेम से बाहर होना होगा।"

"साहब! सैयादी के बारे में सूचना देने का जो क्रेडिट है, उसका क्या होगा?"

"हम अभी इतने सामर्थ्यवान नहीं, जो इतने बड़े श्रेय को झेल सकें। यह इंटरनेशनल गेम है और कोई बड़ी बात नहीं कि सैयादी तो हाथ न आए और हम दहलावर संगठन की नजरों के शूल बन जाएं, तब हमारी धोबी के कुत्ते जैसी हालत हो जाएगी।"

"यह तो ठीक कह रहे हो। दहलावर बहुत निर्मम आदमी है।"

"चलो! इसे जितनी जल्दी हो सके, किले के पास छोड़ दो। वहां यह सुरक्षित हाथों में पहुंच जाएगा। हैदर, तुम्हारी बहुत मदद कर रहे हैं।" प्रभास हैदर से बोला–"आशा है कि तुम ठीक हो जाओगे। यह रास्ता छोड़ देना और अपने बयान में हरगिज भी अश्वत्थामा का जिक्र न करना। इस पर न तो कोई विश्वास करेगा और न तुम्हारा फायदा होगा। हां, इससे हमारे मिशन में बाधाएं अवश्य खड़ी हो जाएंगी।"

"मैं...मैं ख्याल रखूंगा।" हैदर ने आश्वासन दिया।

इसके बाद तीनों हैदर को लेकर किले के समीप पहुंचे और उसे एक सुरक्षित स्थान पर छोड़कर वहां से वापस चले गए।

"अब जैसा कि तुम बता रहे हो कि यह किला छावनी बन जाएगा तो क्या अश्वत्थामा फिर भी यहां पूजा करने आएगा?" खोजिया ने सवाल खड़ा किया।

"लगता तो नहीं कि वह पौराणिक योद्धा ऐसी बाधाओं से अपनी नियमित पूजा छोड़ देगा, फिर भी ऐसा हुआ तो मानना पड़ेगा कि आसपास कहीं कोई और शिवालय है जिसे वह विकल्प के रूप में इस्तेमाल कर सकता है।"

"ऐसा सुनसान शिवालय आसपास कहीं नहीं है। बस्तियों में तो हैं।" खोजिया ने बताया–"शहर में भगवान शिव का भव्य मंदिर है।"

"वहां तो वह शायद ही जाए। खैर, देखते हैं क्या होगा? फिलहाल सैयादी वाले बखेड़े को सुलझ जाने दो। हम धीरज से काम लेंगे। कुछ दिन बाद फिर शुरू करते हैं। अपनी विशेष पूजा पद्धति के कारण वह छुपा नहीं रहेगा और पता चल जाएगा कि उसने कहां पूजा की है। वह देखो, लगता है हमारी सूचना एन.आई.ए. तक पहुंच गई है।"

आसमान में आधा दर्जन हैलीकॉप्टर जंगल की ओर उड़े जा रहे थे, जबकि

Baba Novels Chat Room

उनकी जीप शहर जाने वाले रास्ते पर आ गई थी। उनके सामने की ओर आर्मी की गाड़ियों का काफिला आ रहा था।

"अब कुछ दिन किले में न हम जा सकते हैं और न मिशन पर काम कर सकते हैं।"

"लगता है, नक्सलियों के भी अब बुरे दिन आ गए।" खोजिया ने धीरे से कहा।

अबू सैयादी का माथा उसी वक्त ठनक गया था, जब रामू अकेला पहुंचा था। "तेरा दूसरा साथी कहां है?" उसने रामू को घूरा।

"पीछे...पीछे रह गया है।" रामू थोड़ा हड़बड़ा गया था।

सैयादी कोई मामूली आतंकी नहीं था। वह इस मुकाम पर ऐसे ही नहीं पहुंच गया था। वह इतना अनुभवी तो हो गया था कि आदमी के हाव-भाव से उसके सच या झूठ बोलने की बात जान लेता था। उसने तत्काल पिस्तौल निकालकर रामू के माथे से सटा दी तो रामू की आंखें मौत के आतंक से जर्द हो गईं।

"सच-सच बता, क्या करके आया है तू और तेरा साथी कहां मर गया?"

"वह...वह मंदिर से बम निकालने गया है।"

सैयादी का चेहरा सुर्ख हो उठा। अपने काम में किसी का दखल उसे कतई बर्दाश्त नहीं था। उसने तत्काल रामू को गोली मार दी। धमाके की आवाज सुनकर कई लोग वहां आ गए और हैरत में पड़ गए।

"यह...यह आपने क्या किया?" एक आदमी ने पूछा।

"तुम्हारे गैंग को किसी दिन ऐसे ही लोग मटियामेट कर देंगे। इनके अंदर कहीं भी वह 'बागी विचार' नहीं, जो अपने हक के लिए जान का सौदा कर सके और दल के प्रति दबाव में भी वफादार रह सके। मेरा तजुर्बा कहता है कि जल्दी ही तुम सब पर संकट आने वाला है। जगह बदल दो और यहां से निकलने की व्यवस्था करो।"

"यहां क्या खतरा होगा? हम यहां वर्षों से सुरक्षित हैं।"

सैयादी का मन नहीं मान रहा था। उसने दहलावर को फोन किया और वस्तुस्थिति समझाई तो उसने मामले की गंभीरता समझी और उस ठिकाने के एरिया कमांडर को आवश्यक निर्देश दिए। तत्काल सैयादी एक जीप में अपने पांच साथियों के साथ वहां से निकल लिया। वह बहुत चिंतित लग रहा था।

"जिन लोगों को देश, समाज और अपने जमीर की चिंता रहती है, वे कभी बगावत का हिस्सा नहीं बने रह सकते। ऐसे लोग कभी भी अपने लोगों को धोखा

Baba Novels Chat Room

देकर मुख्य धारा में आने लगते हैं और क्रांति को बाधित कर देते हैं।" सैयादी ने गंभीरता से कहा।

"रामू अभी नया आया था। हैदर को भी ज्यादा समय नहीं हुआ। पान सिंह पुराना तो था, साथ ही उसे देश से बड़ा प्यार था। वह कहता था कि हमारे शोषण का जिम्मेदार देश नहीं, बल्कि स्थानीय समाज और व्यवस्था का भ्रष्ट सिस्टम है।"

"वह छोटी सोच वाला छोटा आदमी था। वह नहीं जानता था कि शासन-प्रशासन भ्रष्टाचार की चेन से नीचे से ऊपर तक जुड़ा है। अपने देश को प्यार करना ठीक हो सकता है, पर उसके नाम पर अपने लक्ष्य से भटक जाना ठीक नहीं।"

अभी सूर्य अपनी पूरी चमक से नहीं निकला था और सैयादी को शीघ्र ही सुरक्षित स्थान पर पहुंचना था, जहां कि दहलावर ने उसे बुलाया था। वह शहर में ही कहीं था और जैसी परिस्थितियां थीं, उनमें ऐसे ही ठिकाने की जरूरत थी। यदि हैदर ने अपने जमीर की सुनकर कुछ गड़बड़ भी की होगी तो उसकी खोज जंगल में होगी और 'वह' शहर से आसानी से निकल जाएगा। यह उसकी छठी इंद्रिय कह रही थी कि रामू का अकेला लौटना और हैदर का बम निकालने जाना साधारण घटना नहीं थी। कुछ ही देर में जीप एक गोदाम के सामने रुकी और सब जीप से उतरकर बंद फाटक के सामने आ खड़े हुए। एक आदमी ने हल्की सी दस्तक दी तो फाटक में मोखला पैदा हुआ। "लाल सलाम!" उसने कोडवर्ड में कहा तो फाटक का छोटा-सा दरवाजा खुला।

एक आदमी को छोड़कर सब अंदर चले गए। वह शायद जीप को वहां से ले जाने वाला था। भीतर आकर सैयादी के पांचों केडेट्स एक ओर चले गए और सैयादी को एक आदमी अपने साथ लेकर आगे बढ़ा। वहां अब हल्का उजाला था।

सैयादी ने देखा कि वहां चारों ओर बड़े-बड़े कार्टून, ड्रम आदि रखे थे। उनके बीच से गुजरकर वह आदमी उसे एक पुरानी जंग लगी बहुत बड़ी टंकी के पास लाया और उसका ढक्कन उठाकर किनारे किया। अंदर उजाला था। सैयादी उस ढक्कन के खाली स्थान से होता हुआ अंदर टंकी में पहुंचा। दहलावर से उसकी पहली मुलाकात भी वहीं हुई थी। अतः वह वहां के सिस्टम से वाकिफ था। उसने टंकी के अंदर लगे एक लीवर को नीचे दबाया तो फर्श में चार गुणा चार का रिक्त स्थान पैदा हुआ जिसमें से नीचे की ओर जाती सीढ़ियां थीं। सैयादी सीढ़ियों से उतरकर एक राहदारी में आया, जहां दहलावर बड़ी चिंतित मुद्रा में उसका इंतजार कर रहा था।

दहलावर आदमी कम और राक्षस ज्यादा नजर आता था। साढ़े छह फुट का काला भुजंग, मिलिट्री के कपड़े पहने, चेचक के दागों से भरा भारी चेहरे वाला हथियारबंद अधेड़ व्यक्ति था। उसकी मुखाकृति कुछ-कुछ वानरों से मिलती थी।

Baba Novels Chat Room

उसके बारे में कहा जाता था कि उसे पहली बार देखते ही अनजान आदमी दहल जाता था, इसलिए उसका नाम दहलावर पड़ गया था। मां-बाप को उसने पच्चीस साल की उम्र में इसलिए गोली मार दी थी, क्योंकि वे उसका विवाह नहीं कर पा रहे थे और गांव की कोई औरत उसकी शक्ल देखने को राजी न थी। उसने जवानी की खुमारी में दो-तीन बलात्कार कर दिए तो पुलिस पीछे पड़ गई और वह बीहड़ में उतर गया। वहां से उसने अपनी निर्ममता से लंबा सफर तय किया और आज वह राजनीतिक संरक्षण प्राप्त नक्सलाइट सुप्रीमो था।

"यह क्या गड़बड़ हो गई? हैदर फोन नहीं उठा रहा है।" दहलावर व्यग्र हो उठा।

"तुम्हारे आज तक के कामों का कोई बड़ा और सुखद परिणाम इसलिए नहीं निकल पा रहा है, क्योंकि तुम्हारे लोगों में अपने मिशन के प्रति समर्पण नहीं है।" सैयादी बोला—"उन्हें लगता है कि उनकी लड़ाई जमींदारों और पुलिसियों से है। भय का खेल वे नहीं खेलते और इसके बिना उनकी मांगें नहीं मानी जाएंगी। जिन्हें अपने संगठन से अधिक लोगों की फिक्र है, वे बागी नहीं हो सकते।"

"मुझे पूरी बात बताओ। अभी हमें बहुत काम करना है और यहां पंगा पड़ गया लगता है।" सैयादी ने सिलसिलेवार सारी बात बताई।

"सैयादी मियां, बागी होना अलग बात है और नास्तिक होना अलग। यह हमारे देश की एक विचित्र कहानी है। यहां डाकू भी देवी को पूजते हैं। अपराधी होना यह सिद्ध नहीं करता कि आदमी अधार्मिक है।" दहलावर गंभीरता से बोला—"यहां धर्म एक लक्ष्य है, प्राण है।"

"अगर ऐसा है तो इस मुल्क में बगावतें कामयाब नहीं हो सकतीं। राजनीतिज्ञों के लिए धर्म एक ऐसा हथियार है जिसका प्रयोग वे कुर्सी पाने और बचाने में करते हैं। क्या तुम भी ऐसे ही धार्मिक हो?"

"मेरी बात छोड़ो। मैं कमोबेश राजनीतिज्ञ ही हूं। मैं धर्म का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करता हूं। मैं उन लोगों जैसा मूर्ख नहीं हूं।"

"मैंने मंदिर में बम बहुत सोच-समझकर लगाया था।" सैयादी ने कहा—"मैं इंडिया के धार्मिक वातावरण से अनभिज्ञ हूं, ऐसा सोचना भी मत। वास्तव में तुम जिस मिशन पर हो, उसमें सरकार को लगना चाहिए कि तुम किसी भी कीमत पर अपनी मांग मनवा सकते हो और इसके लिए तुम जान दे भी सकते हो और ले भी सकते हो। दहशत वह हथियार है जिससे मनचाहे नतीजे ले सकते हो। कल्पना करो कि उस हैदर की वजह से बम अपनी उसी जगह फटा हो, जहां लगा था तो कुछ ही देर में हालात कितने खतरनाक हो जाएंगे। नक्सलाइट एक खतरनाक रूप में प्रशासन के सामने होगा और दहलावर इस देश का ही नहीं, बल्कि दुनिया-भर का

Baba Novels Chat Room

नामी बागी नेता होगा जिसे करोड़ों-अरबों के कॉन्ट्रेक्ट मिलेंगे। टैरर फंडिंग भी मिलने लगे तो बड़ी बात नहीं। जब पैसा पास हो तो आदमी कुछ भी कर सकता है।"

"बम नहीं फटा। फटा होता तो अब तक हो-हल्ला मच जाता। हैदर जरूर टाइम पर वहां पहुंच गया था। अभी पूरी जानकारी तो नहीं मिली, पर सर्वत्र शांति देखकर तो यही लगता है।"

"कोई और टार्गेट तलाश करो जिससे शहर का अमन घायल हो और दहलावर का नाम गूंजकर विश्व के सामने आए।"

"अभी वहां से कोई रिपोर्ट आने दो और तुम यहां से बाहर मत निकलना।"

"तुम्हारे पास तंबाकू है, जो तुम चिलम में पीते हो।" सैयादी ने कहा-"कसम से, आज तक ऐसा शानदार नशा नहीं देखा। है क्या चीज वह! कहां से लाते हो?"

"वह दुर्लभ प्रजाति के धतूरे के फूल-पत्तों का मिश्रण है, जो यहां दुर्गम गहरी घाटी में खिलता है। वैसे मुझे यह उसी मंदिर से मिलता रहा है, जहां तुम बम लगा आए हो। अब पता नहीं कि मिलेगा या नहीं। नीचे बस्तियों में खोजना होगा, क्योंकि वहां पानी में तैरता हुआ पहुंचता है।"

"इसे जो एक बार नसों में उतार ले, उसे कोकीन से भी ज्यादा आनंद आए। जब मैं जाऊं तो कुछ मात्रा में मेरे साथ रख देना। देख लेना, महंगे दामों के बड़े ऑर्डर भेजूंगा।"

"तस्करी के लिए कहां से इंतजाम करूंगा भई! अपने लिए ही लाले पड़े रहते हैं।"

"तुम बता तो रहे हो कि किसी घाटी में मिलता है।"

"वहां तक इंसान की पहुंच नहीं होती।"

"इंसान चांद, मंगल पर जा पहुंचा मियां, समंदर लांघ गया। हौसला करो तो क्या मुमकिन नहीं है। बड़े मुनाफे का सौदा होगा। चाहो तो मैं वहां रास्ता बनाऊं।"

"देखते हैं। अभी इस बखेड़े से तो निबट लेने दो। देखते हैं, क्या हुआ है?"

तभी दहलावर का मोबाइल बज उठा। उसने कॉल रिसीव की और बात की।

"ब्लास्ट तो हुआ मगर किले के बाहर!" दहलावर ने बताया-"हैदर सफल रहा।"

"कोई बात नहीं।" सैयादी क्रूरता से बोला-"अब यहां हूं तो कुछ करके ही जाऊंगा। लाओ, चिलम बना-सुलगाकर मुझे दो।"

दहलावर ने अपनी जेब से चिलम और एक थैली निकाली। थैली में से पत्तीदार चूर्ण चिलम में भरा और लाइटर से उसे सुलगाकर एक कश खींचा, फिर उसने चिलम सैयादी को पकड़ा दी। सैयादी ने भी एक कश खींचा।

Baba Novels Chat Room

18

एमेले का 'डबल क्रॉस गेम'

प्रभास ने उसका मोबाइल खंगाला। कॉन्टेक्ट में तीन-चार नंबर थे। इनबॉक्स में सर्विस प्रोवाइडर के मैसेज थे। उसने कॉल रिकॉर्डर देखा, वहां जरूर कुछ था क्योंकि वह ऑन था। उसने आखिरी रिकॉर्डिंग सुनी, जो खोजिया को आई कॉल थी। उससे ऊपर लगभग पांच मिनट की कॉल रिकॉर्ड थी। प्रभास ने उसे ओपन किया और सुना तो सन्नाटे में आ गया। एमेले चालाक नहीं, धूर्त था। होशियार नहीं, तिकड़मी भी था। वह यार-मार था और नक्सलियों का मुखबिर भी।

Baba Novels Chat Room

एमेले का दिमाग एक लाभकारी समीकरण में उलझा हुआ था। पिछली सारी रात उसने जो देखा, सुना और समझा था, उसके मुताबिक उसे लग रहा था कि खोजिया के साथ उसका दाना-पानी तो खत्म हो ही गया था। इसके साथ ही जैसे खतरनाक खेल में वह दखल दे रहा था, उसमें उसकी जान भी जा सकती थी। खोजिया अब उसे वैसे भी पार्टनर के लिहाज से नहीं देख रहा था, बल्कि उसे खाना बनाने और सामान ढोने व कपड़े धोने वाला नौकर बना दिया था जिसे दो वक्त की रोटी से ज्यादा कुछ मिलने वाला नहीं था।

खोजिया के साथ रहकर एमेले पैसे की महिमा जान गया था। अतः अपना वह ओहदा उसे निम्न कोटि का लग रहा था। नीरस! अर्थहीन! अब उसे कुएं का मेंढक बना रहकर बुरहानपुर और उसके आस-पास के गांवों में ही नहीं घूमते रहना था। दुनिया बहुत रंगीन और बड़ी थी। वह पैसा कमाकर किसी अन्यत्र शहर, फेवरिट मुंबई में शानदार जिंदगी बिता सकता था। पैसा कहां

कमाना है. इसकी व्यवस्था वह कर भी चुका था। उसने अपने उस्ताद खोजिया, ना साहब प्रभास और हैदर की सारी बातें अपने फोन में रिकॉर्ड कर ली थीं और इस जानकारी की कीमत उसे कहां से मिलती, वह जानता था। अबू सैयादी को सावधान करने की कीमत वह अच्छी तरह जानता था। फिलहाल उसे अपने कुछ समय के जोड़ीदारों से पिंड छुड़ाना था जिसके लिए उसने बड़ा ही सजता-सा बहाना बनाया।

"उस्ताद रोको, वरना जीप गंदी हो जाएगी।" एमेले ने पेट पकड़कर गुहार लगाई।

"वहां घंटों जंगल में था, तब नहीं कर सकता था।" खोजिया ने जीप रोककर उसे घुड़की देते हुए कहा–"अब होटल कौन-सा दूर है!"

"मर जाऊंगा उस्ताद!" वह गाड़ी से कूद गया–"आधा घंटा रुक जाओ।"

"ये ले दस रुपया। ऑटो पकड़कर होटल पहुंच जाना। हमें यहां क्यों छकाता है?"

एमेले ने भागते हुए दस का नोट पकड़ा और सड़क से दूसरी ओर कूदकर बेतरतीब उगी झाड़ियों में चला गया। वहां से उसने प्रभास को हंसते हुए देखा।

"हंस ले बेटा! अब रोने की बारी आएगी। वादा करके मुकरता है। मेरे दस हजार रुपये डकार गया।" एमेले बड़बड़ाया और जीप के चले जाने तक वहीं बैठा रहा, फिर वह एक सुनसान-सी जगह पर आया और अपना मोबाइल निकालकर रिकॉर्डिंग सुनकर तसल्ली की कि उसने ठीक से अपना काम किया या नहीं। काम परफेक्ट था। अब उसने अपनी वह डायरी निकाली जिसमें वह बेतुकी कविताएं और फोन नंबर लिखता था। उसने पन्ने पलटकर एक नंबर तलाशा। यहां फोन में नेटवर्क भी शानदार था। उसने नंबर डायल करके कॉल कनेक्ट की, तो दूसरी ओर घंटी जाने लगी, फिर कॉल रिसीव हुई।

"अबे एमेले! कहां मर गया तू? पांच हजार रुपये डकार गया और एक जानकारी तक नहीं दी। बड़ा होशियार बनता है। भूल गया कि हम कौन हैं?" आवाज आई।

"नहीं-नहीं राजन साहब, मेरी ऐसी मजाल कहां!" एमेले मिमियाकर बोला–"ऐसा करके क्या मुझे अपनी अर्थी उठवानी है!!"

"अब बोल कैसे फोन किया? है कोई जानकारी तेरे पास?"

"विस्फोटक जानकारी है साहब! ऐसी कि आप खुशी से मेरे सिर पर दस-बीस हजार रुपये उबार-फेरकर दे डालेंगे। ज्यादा भी दे दें तो बड़ी बात नहीं।"

"ऐसी क्या जानकारी है तेरे पास?"

"आज बीहड़ में एन.आई.ए. और आर्मी का ऑपरेशन शुरू हो गया है। बीहड़ को छावनी बना दिया गया है। आप और आपके साथी संकट में फंसने वाले हैं।"

"एन.आई.ए.! क्या बक रहा है? जो संस्था बड़े टेररिस्ट के खिलाफ कार्रवाई करती है। वह नक्सलाइट के मामले में होम मिनिस्ट्री के हुक्म से ही दखल करेगी

Baba Novels Chat Room

और हमने तो हाल ही में ऐसा कुछ किया भी नहीं। दूसरे, यह बात तो पहले हमें पता चलती।"

"साहब! इन दिनों विदेशी आतंकी अबू सैयादी आप लोगों के साथ है। आसमानों में उड़ रहे हैलीकॉप्टर नहीं दिख रहे?"

दूसरी तरफ सिसकारी निकल गई।

"तू कहां है और तेरे पास क्या जानकारी है? फौरन बक।"

एमेले ने एक ही सांस में सारी बात बता दी।

"तू अभी फोन रख। मैं तुझे फोन करता हूं।"

एमेले फोन रखकर आगे के बारे में सोचने लगा। क्या उसका यह दांव कुछ 'रिजक' कमाने की हैसियत रखता था। राजन, जिसे छोटा राजन भी कहा जाता था, दहलावर का खास आदमी था। तीन महीने पहले उससे मुलाकात हुई थी और उसने उसे मुखबिरी का ऑफर दिया था, जो उसने स्वीकार कर लिया था। पांच हजार रुपये भी मिले थे और उसने अपने उस्ताद खोजिया को भनक भी न लगने दी। आज जैसी विपदा से उसने दहलावर और उसके गैंग को पूर्व सूचना देकर सावधान किया था, उस लिहाज से उसे आशा थी कि छोटा राजन उसे कोई बड़ी रकम जरूर देगा।

फोन फिर बजा–"तेरा कहना सही था।" उधर से कहा गया–"पर खबर तूने देर से दी, फिर भी तूने बढ़िया काम किया। कुछ नुकसान तो कवर किया ही जा सकता है। तेरी जानकारी से मैं खुश हूं और तूने उन पांच हजार का हक अदा कर दिया। आगे कोई खबर देगा तो तुझे और भी माल मिलेगा।"

एमेले जैसे आसमान से गिरा।

"साहब! यह क्या गजब कर रहे हैं! इतनी बड़ी जानकारी की मामूली-सी फीस।"

"जानकारी बड़ी है मगर लेट है। कार्यवाही शुरू हो गई है। गोरिया कबीले में हमारे कई आदमी मारे जा चुके हैं, फिर भी तू दो चार दिन बाद मेरे से मिलना।"

"मेरे पास उस आदमी की भी जानकारी है जिसने यह बखेड़ा खड़ा किया है।"

"वह हमसे छुपा नहीं रहेगा। उसकी लाश तो तू चौराहे पर उल्टी टंगी देखेगा।"

"मेरे पास उन लोगों की बातचीत की रिकॉर्डिंग है।"

"संभाल के रख। अभी मैं बिजी हूं। बहुत डैमेज होनेवाला है और उसे कम-से-कम करने के लिए मुझे ढेर सारा काम करना है। तुझे मैं फुरसत में फोन करता हूं।"

फोन कट गया तो एमेले ने पथराई आंखों से फोन को देखा। यार-मारी करके भी उसे कुछ हासिल न हुआ था। अब वह क्या करे!

Baba Novels Chat Room

पिछले चौबीस घंटे का थका-हारा प्रभास जब होटल में अपने बिस्तर पर लेटा तो न चाहते हुए भी उसे नींद आ गई। खोजिया भी उससे पीछे न रहा था, खाना खाकर वह भी होटल की पार्किंग में खड़ी अपनी जीप में सो गया था। प्रभास घोड़े बेचकर सो रहा था और जब उसकी नींद खुली तो हड़बड़ाकर जागा। उसका मोबाइल बज रहा था। फोन उसके एंप्लॉयर का था और इस वक्त दोपहर के दो बज रहे थे। लगभग तीन घंटे वह सो लिया था। उसने कॉल रिसीव की।

"प्रभास, कहां मर गया था?" सेठी भन्नाकर बोला था-"यह क्या बखेड़ा खड़ा कर दिया तूने मेरी जान के लिए! मुझे फटकार लग रही है।"

"क्या...क्या हुआ?"

"तेरी खबर पर मैंने दिल्ली फोन किया और अबू सैयादी के बारे में बताया। वहां से फौरन एक्शन लिया गया और बीहड़ में बड़ा सर्च ऑपरेशन चलाया गया। सैयादी तो कहीं नहीं मिला। अब मुझे फटकार लग रही है।"

"वह मामूली टेररिस्ट नहीं है। बहुरूपिया है। क्या पता वहीं भेष बदलकर बाजू में खड़ा रहा हो। यह तो जरूर कन्फर्म हुआ होगा कि वह यहां है?"

"इसी से मेरी जान बची है। खबर पूरी तरह बोगस होती तो मेरी आफत आ जाने वाली थी। इंटेलीजेंस को पहले ही इनसाइड इंफोर्मेशन थी कि सैयादी इंडिया में कहीं है, मगर नक्सलाइट एरिया में है, इसकी उम्मीद नहीं थी। सोचा जा रहा था कि वह कश्मीर में कहीं है या दिल्ली, मुंबई जैसे महानगर में होगा। उसकी तलाश पिछले चार दिन से हो रही थी। यहां सर्च ऑपरेशन में कुछ नक्सलियों ने कुबूल किया है कि अबू सैयादी नक्सलाइट एरिया में दहलावर का मेहमान था।"

"हैदर ने भी तो कुछ बताया होगा?"

"मुर्दा क्या बताता। वह मरा पड़ा मिला। उसने आत्महत्या कर ली थी। शायद ज्यादा ही तकलीफ में छोड़ा तूने उसे। डर भी गया होगा। यह तेरी लापरवाही का नतीजा है। जो इस मामले का खास गवाह था, उसे ऐसे ही छोड़ आया।"

"ओह माई गॉड! मैंने सोचा भी नहीं था कि वह ऐसा कर लेगा, वरना मैं ऐसी कोताही न करता। मुझे सूझना चाहिए था।"

मैं शाम की फ्लाइट के दो टिकट बुक करा रहा हूं। आठ बजे की फ्लाइट है। पहुंचना।"

"मैं...मैं क्यों? आप जाइए, मेरे पास काम है।"

"उसमें अभी कुछ नहीं हो सकता। सैयादी की वहां उपस्थिति 'कन्फर्म' होने के बाद बीहड़ में हफ्तों सर्च ऑपरेशन चलेगा। किले में अस्थायी कैंप बना दिया गया है, इसलिए तेरा अश्वत्थामा उधर आए, कहना मुश्किल है। वह आ भी जाए

Baba Novels Chat Room

तो तेरा वहां फटकना भी असंभव है। अगर उधर गया भी तो नक्सली जानकर मार गिराया जाएगा।"

"बड़ी भयानक बातें बता रहे हो। काम शुरू होने से पहले ही छोड़ने की सलाह दे रहे हो?"

"हालात ही ऐसे हैं। सुरक्षा एजेंसियों को यह पता चल ही गया है कि सैयादी अब नक्सलियों के साथ आ मिला है तो जाहिर है, उसकी तलाश में कोने-खुदरे भी खंगाले जाएंगे। बड़ी कार्यवाही होगी। दहलावर को भी बख्शा नहीं जाएगा। नक्सलाइट पर यह अब तक का सबसे बड़ा ऑपरेशन होगा। इसमें वक्त लगेगा। तू वहां क्या करेगा? किसी बखेड़े में ही फंसेगा। कैसे भी दहलावर को मालूम हुआ कि उसके खिलाफ बड़े एक्शन में तेरा भी हाथ है तो वह तेरे खून का प्यासा हो जाएगा, इसलिए फिलहाल यहां से निकल। जब शांति हो जाए तो आ जाना। अश्वत्थामा अगर वाकई है तो फिर चांस मिलेगा।"

"यह भी बड़ी कवरेज है। मीडिया इसमें जुट भी गया होगा। हमें फिर कंपोजिंग न्यूज ही दिखानी पड़ेंगी, इसलिए क्यों न मैं लाइव टेलीकास्ट के लिए यहां रुकूं।"

"अबे, तुझे कोई ठोक देगा। सारा रायता तेरी वजह से फैला है। मेरे से भी पूछा गया कि मुझे यह खबर कहां से मिली। मैंने तेरा नाम नहीं लिया। बोल दिया कि कारोबारी सोर्सेज हैं, ओपन नहीं कर सकता। ज्यादा प्रेशर पड़ा तो मैं कब तक चुप रहूंगा।"

"बता देना था बॉस। मैं खुद बताऊंगा। कुछ तो क्रेडिट मिलेगा। सैयादी पकड़ा ही गया तो सेठी-24 का नाम हो जाएगा।"

"ऐसे नाम का क्या फायदा कि मुझे अपने एक एंप्लॉई को श्रद्धांजलि देनी पड़े, तेरे घरवालों को क्लेम देना पड़े। अरे अहमक, तेरी बाबत सुरक्षा एजेंसी जान जाएं तो कोई बात नहीं, मगर नक्सली भी जान गए तो बुरा होगा।"

"इतना रिस्क तो लेना होगा। मैं दुम दबाकर नहीं भागूंगा। पहली बार दो बड़े मिशन एक साथ संयोग से हाथ लगे हैं। एक भी सक्सेस हुआ तो पौ बारह हो जाएगी। जर्नलिस्ट को ऐसे मौके कम मिलते हैं, वह भी एक अनजान से चैनल का जर्नलिस्ट।"

"तू बड़ा रिस्क ले रहा है।" सेठी गंभीर हुआ—"दहलावर बहुत पॉवरफुल है। उसे राजनीतिक संरक्षण प्राप्त है। वह बड़े नेटवर्क को हैंडिल करता है और सालों से कभी सामने नहीं आया। पूरा नक्सलाइट एरिया उससे भय खाता है। तूने देखा कि पुलिस को इस ऑपरेशन में शहरी व्यवस्था संभालने की जिम्मेदारी-भर मिली है।"

Baba Novels Chat Room

"जो भी है, मैं वापस नहीं जा रहा हूं। आप जाइए।"

"तेरी मर्जी। अपनी एक सेल्फी भेज दे। आखिरी सेल्फी की 'हार्ड कॉपी' निकलवा लूंगा और अपने ऑफिस में लगाऊंगा, ताकि गर्व से कह सकूं कि मेरे चैनल में ऐसे दु:साहसी और अक्ल के अंधे, जर्नलिस्ट ने भी काम किया था।"

"और मैंने दोनों मिशन पूरे कर दिखाए तो क्या करोगे?"

"बताया तो था। अपनी छोटी बेटी की शादी...।"

प्रभास ने फोन काट दिया और सोच में पड़ गया। उसका बॉस किसी हद तक तो ठीक ही कह रहा था। खतरा तो उसे था! वह नक्सलाइट के निशाने पर आ सकता था। दहलावर के बारे में खोजिया ने जो बताया था, वह दिल हिला देने वाला था। वह आदमी आसुरी प्रवृत्ति का था। दुश्मन को तड़पा-तड़पाकर मारता था! पर क्या एक जर्नलिस्ट जिसे कुछ करके दिखाना था, मौत के डर से अपना काम छोड़ देता! छुपकर बैठ जाता!!

प्रभास ने उसी वक्त मैदान में उतरने का निर्णय लिया और होटल से बाहर आया। उसे मालूम था कि खोजिया की जीप कहां है। खोजिया भी विचित्र प्राणी था। उसे होटल के नर्म बिस्तर पर नींद नहीं आती थी और वह जीप में ही सोता था। प्रभास जब वहां पहुंचा तो वह जोर से खर्राटे भर रहा था। एमेले वहां नहीं था। प्रभास ने उसे जगाया। थोड़ी देर कुनमुनाने के बाद वह उठ बैठा और पल-भर में सावधान भी हो गया।

"कितने बजे हैं! क्या...क्या हुआ? एमेले कहां है?" उसने कई सवाल एक साथ किए।

"ढाई बजा है। जो हुआ, मजेदार नहीं हुआ और एमेले के बारे में तुम्हें पूछना नहीं, बल्कि बताना चाहिए था। आया तो वह तुम्हारे पास ही होगा।"

"मैं तो तभी सो गया था। आया भी होगा तो यहीं-कहीं पार्क में सो रहा होगा। तीन बजे से पहले जागेगा नहीं। अपने आप आ जाएगा और मजेदार क्या नहीं हुआ?"

प्रभास ने सविस्तार बताया तो खोजिया भी चिंतित हो गया।

"यह सब तो होना ही था। इतने बड़े आतंकी की यहां मौजूदगी पर इतना बड़ा सर्च ऑपरेशन तो होना ही था। मुझे पहले ही आंदेशा था। बड़ी खतरनाक बात यह हुई कि सैयादी अभी तक पकड़ा नहीं गया। वैसे इसमें अचंभे की कोई बात नहीं। मीलों फैले विंध्याचल के इस विस्तार में ऐसी-ऐसी खाइयां और दर्रे हैं कि किसी खास आदमी को खोजना आसान नहीं है, इसीलिए तो नक्सलवाद यहां इतना फूला-फला है। बड़े सर्च ऑपरेशन तो यहां होते ही रहते हैं। बैतूल, रायगढ़

Baba Novels Chat Room

और जितने भी नक्सलाइट एरिया हैं, कहीं-न-कहीं ऑपरेशन चलते ही रहते हैं। इससे नक्सली चूहे बिलों में जा छुपते हैं। कोई एकाध पकड़ा और मारा जाता है। बीहड़ उनके लिए अभेद पनाहगाह जैसा है।"

"फिर तो यह सर्च ऑपरेशन लंबा चलेगा। किले में अस्थायी कैंप बन गया है और हमारी वहां तक पहुंच नहीं हो सकती। कैसे पता चले कि अश्वत्थामा कल सुबह वहां पहुंचेगा कि नहीं? सुनते हैं कि ऐसे ऑपरेशन के दौरान सिविलियन को जंगल की ओर जाने भी नहीं दिया जाता।"

"सिविलियन तो वैसे भी बीहड़ में नहीं जाते। कोई हमारे-तुम्हारे जैसे खानाबदोश और जुनूनी लोग ही किले तक अश्वत्थामा की तस्वीर लेने की कोशिश में पहुंचते हैं।"

"एमेले को फोन लगाओ। उसका इस तरह अकेला और अलग रहना ठीक नहीं है।"

"यहीं सामने पार्क में होगा। चलते हैं। झकझोरने से जागेगा। मोबाइल की घंटी से तो उसके कान पर जूं भी नहीं रेंगेगी।"

दोनों पार्क में पहुंचे। एमेले वाकई एक बेंच पर पड़ा गहरी नींद में सो रहा था और बहुत धीमे स्वर में उसके मोबाइल की घंटी बज रही थी। दोनों की नजरें मिलीं। खोजिया ने आगे बढ़कर उसका मोबाइल जेब से निकाला तो वह तनिक कसमसाकर फिर सो गया।

"इसे कौन फोन कर सकता है।" खोजिया ने हैरानी से कॉल रिसीव की।

"एमेले, माल कमाना है तो फौरन मेरे पास पहुंच।" उधर से इतना ही कहा गया।

फोन कट गया था तो खोजिया हैरान रह गया। माल कमाना था! कहां से! किस फिराक में था एमेले! उसने प्रभास की ओर देखा।

"वह नंबर मुझे दो! मैं पता लगाने की कोशिश करता हूं। इसे यहीं सोने दो और इस पर नजर रखो। जरूर यह कुछ गड़बड़ कर रहा है।" प्रभास ने उसका मोबाइल हाथ में लिया।

"यह किस फिराक में हो सकता है? न तो यह इतना चालाक है और न होशियार! हो सकता है कि कहीं किसी और धंधे में घुस पड़ा हो। यह कई बार दस-बीस रुपये कमाने के लिए कुली भी बन जाता है। अखबार भी बेच आता है।"

प्रभास ने उसका मोबाइल खंगाला। कॉन्टेक्ट में तीन-चार नंबर थे। इनबॉक्स में सर्विस प्रोवाइडर के मैसेज थे। उसने कॉल रिकॉर्डर देखा, वहां जरूर कुछ था क्योंकि वह ऑन था। उसने आखिरी रिकॉर्डिंग सुनी, जो खोजिया को आई कॉल थी। उससे ऊपर लगभग पांच मिनट की कॉल रिकॉर्ड थी। प्रभास ने उसे ओपन

Baba Novels Chat Room

किया और सुना तो सन्नाटे में आ गया। एमेले चालाक नहीं, धूर्त था। होशियार नहीं, तिकड़मी भी था। वह यार-मार था और नक्सलियों का मुखबिर भी।

"इसका फोन इसकी जेब में रखो और यहां से हिलो।" प्रभास ने कहा-"यह बहुत ही धूर्त आदमी है। यह हमारे साथ 'डबल क्रॉस गेम' खेलते हुए हमारी जान का सौदा कर रहा है। किसी नक्सली राजन को जानते हो?"

"जानता हूं। वह छोटा राजन के नाम से जाना जाता है। दहलावर का खास आदमी है और भूतपूर्व विधायक का सिपहसालार भी रहा था।"

"उसी से बात की है इसने। पैसा कमाने के लिए हमारा सिर कटा देना चाहता है।"

"इसकी तो...।" खोजिया की आंखें क्रोध से लाल हो गईं।

"गुस्से से काम नहीं चलेगा। इसका फोन वापस इसकी जेब में रखो और इसे जगाओ। जाहिर मत होने देना कि हमें कुछ मालूम है। इसे मेरे कमरे तक जरूर एक बार ले चलो, फिर खुला छोड़ देंगे। यह जितना दौड़ेगा, उतना हमें आगे बढ़ाएगा।"

"मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। यह पिद्दी-सा आदमी इतना...।"

"होता है, कई बार कमजोर और बुद्धू दिखने वाले लोग ज्यादा स्मार्ट होते हैं। ये अपनी शक्ल को शेखचिल्ली और अक्ल को तेज बनाकर रखते हैं।"

खोजिया ने सहमति में सिर हिलाकर उसे झकझोरा तो वह बड़ी मुश्किल से जागकर हड़बड़ाते हुए उठ बैठा और आंखें मूर्खों की तरह मिचमिचाने लगा।

"अब चल, कुछ नाश्ता-पानी कर ले।" प्रभास ने हंसकर कहा-"पेट तो तेरा खाली ही होगा। तमाम दिन गुजर गया-कुछ खाया-पिया भी नहीं होगा।"

"भूख तो मुझे लग रही है। शाम हो गई। कुछ खाया ही नहीं।" वह उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी जेब चेक की और आश्वस्त हुआ कि फोन सुरक्षित था।

तीनों वहां से होटल के कमरे में पहुंचे, जहां से प्रभास ने रूम सर्विस को ऑर्डर किया और सोफे पर बैठ गया। एमेले पलकें झपका रहा था।

"सैयादी घिर गया है।" प्रभास ने कहा-"जल्दी मारा जाएगा।"

"अच्छा होगा।" एमेले ने कहा-"साला, मंदिर में मांस खाता है, मंदिर को बम से उड़ाता है।"

"तू नहा-धो ले। फ्रेश हो जा, तब तक नाश्ता आ जाएगा।"

"ठीक कहते हो। दो दिन से नहाया भी नहीं हूं, पर कपड़े!"

"मेरे पास हैं। नहा ले।" प्रभास ने कहा तो एमेले नहाने चला गया। मोबाइल को वह साथ ही लेकर गया था।

Baba Novels Chat Room

19

सांग-सी को सत्य-दर्शन

सांग-सी जैसे सम्मोहित था। वह महात्मा के चरणों में गिर पड़ा, तो उन्होंने उसे उठाकर हृदय से लगाया। सांग-सी की आंखों से आंसू निकल पड़े।

"देव! क्या यही सत्य है? क्या इस सत्य से पीड़ितों के कष्ट दूर हो जाएंगे? क्या यह सत्य उन पाषाण हृदय शासकों को द्रवित कर सकेगा?"

"सत्य की सामर्थ्य पर संदेह क्यों वत्स?"

"अब नहीं भगवन्! मेरा जीवन धन्य हो गया। मैं कृतार्थ हुआ। आज मेरी सब उद्विग्नता शांत हो गई। अब मैं धैर्य से सत्य के उद्घाटित होने की प्रतीक्षा करूंगा...।"

Baba Novels Chat Room

सांग-सी बौद्ध भिक्षु के वेश में दक्षिण कोरिया के रास्ते उत्तर कोरिया में प्रवेश कर गया था। ऐसे ही उसके साथी भी विभिन्न रास्तों से होते हुए राजधानी प्योंगयांग के आसपास के मठों में पहुंच गए थे।

यद्यपि सांग-सी और उनके साथियों की सघन तलाशी ली गई थी, जो तानाशाह का बनाया हुआ नियम था। दोनों देशों के बीच भिक्षुओं के आने-जाने पर पांबदी तो नहीं थी, पर उत्तर कोरिया में उन्हें पूरी सावधानी के साथ ही आने दिया जाता था।

आम धारणा थी कि बौद्ध भिक्षु हिंसा, छल-प्रपंच और राजनीति आदि से दूर रहते थे तथा अपनी कठोर दिनचर्या का पालन करते थे, मगर सजग

तानाशाह का मत था कि विद्रोही इस बहुरूप से भी शासन के विरुद्ध कुछ करने से कदापि पीछे नहीं हटने वाले। अत: उसने मठों पर भी अप्रत्यक्ष निगरानी बिठा दी थी।

सांग-सी इन सभी संभावनाओं को भली-भांति जानता था और यहां तक मानता भी था कि तानाशाह के खुफिया आदमी भी भिक्षु बने हुए हो सकते हैं। अत: उसके साथियों को बहुत सावधान रहना होगा।

सांग-सी जिस मठ में जा पहुंचा था, वह प्योंगयांग का सबसे प्रसिद्ध और बड़ा मठ था। उस मठ में हजारों बौद्ध अनुयायी साधनारत रहते थे। कई हजार एकड़ में फैला यह मठ कोरियाई द्वीप का सबसे मनमोहक एवं शांतिस्थल माना जाता था।

जब संयुक्त कोरिया पर सम्राट किम-इल-सुंग का शासन था, तब उसने इस मठ का जीर्णोद्धार और विस्तार कराया था।

यद्यपि सम्राट ने इस मठ को शासन-पोषित करते हुए वित्तीय अनुदान और शासकीय संरक्षण प्रदान किया था, तथापि मठ के क्रियाकलापों में शासन का कोई प्रत्यक्ष हस्तक्षेप कभी नहीं रहा था।

तानाशाह ने ऐसा करने का प्रस्ताव रखा तो था, पर उसके विश्वस्त सलाहकारों ने उसे ऐसा न करने की सलाह दी थी। इसका कारण चीन से व्यापारिक व कूटनीतिक संबंधों का प्रभावित होना बताया गया। इसमें कोई शक भी नहीं था। पिछले दशक से उत्तर कोरिया का विदेश व्यापार बड़े पैमाने पर चीन से ही चल रहा था और बीते कुछ माह में तो केवल चीन से ही रह गया था जिस पर बाधित होने का खतरा मंडरा रहा था।

प्रसिद्ध बौद्ध मठ में चीन से बड़ी संख्या में बौद्ध भिक्षु आते थे और इन पर किसी प्रकार की रोक लगाने से चीन से संबंध प्रभावित हो सकते थे।

सांग-सी ने भी इसी बात का लाभ उठाते हुए खुद को चीन से आया बौद्ध अनुयायी सिद्ध कर दिया था। उसके थैले में बौद्ध धर्म का चीनी साहित्य था। वह स्वयं बहुभाषी था। अत: उसे अधिक कठिनाई नहीं हुई, मगर जानता था कि आगे कठिनाइयां आने वाली हैं।

भिक्षु के रूप में सांग-सी किसी प्रकार की शासन-विरोधी गतिविधि नहीं कर सकता था और भिक्षु रूप त्यागकर तानाशाह के गुप्तचरों की नजर से बच पाना कठिन था। वह कई दिन बड़ी निष्ठा से ध्यान, उपदेश और समाधि में बिता चुका था। उसे कई बार उपदेश सुनकर ऐसा लगता था, जैसे सब गतिविधियां छोड़कर उसी में रम जाना चाहिए, पर अपने पिता का बलिदान और देश की स्थिति उसे

Baba Novels Chat Room

सचेत करती रहती थी। उसे मोक्ष नहीं चाहिए था, अपितु देशवासियों को तानाशाह से मुक्ति दिलाने की इच्छा थी।

सांग-सी अन्य भिक्षुओं से बात करते समय बड़ा सौम्य और सरल व्यवहार करता था जिससे किसी को उसके आंतरिक विचारों का पता न चल जाए। दिन-रात वह उधेड़बुन में लगा रहता था और सक्रिय होने की योजनाएं बनाता रहता था।

उस तपोस्थली में जो आध्यात्मिक वातावरण था, वहां रहकर प्रत्येक भिक्षुक को अपार शांति का अनुभव होता था। वहां के उपदेशों में विरक्ति और साधना के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता था, फिर भी सांग-सी की उद्विग्नता अपने लक्ष्य को लेकर बढ़ती जा रही थी।

सांग-सी को बार-बार अहिंसा और असत्य न बोलने के उपदेश विचलित करते थे। अतः उस दिन वह तपोस्थली में किसी एकांत स्थान पर जाकर कुछ सोचना चाहता था। इसके लिए वह उस साधना-क्षेत्र की ओर बढ़ गया, जहां उसने सुना था कि कुछ भिक्षु तो निरंतर कई वर्षों से निराहार साधनारत थे।

कैसे लोग जीवन के राग को भूलकर इस प्रकार संसार से विमुख हो जाते हैं, स्वमुक्ति को जीवन का एकमात्र लक्ष्य मान लेते हैं! क्या वे बुद्ध के सच्चे अनुयायी हैं? बुद्ध तो समस्त मानवों के कष्टों को दूर करने को ही जीवन की सार्थकता मानते थे! उन दीन-दुखी लोगों का उद्धार कौन करेगा, जो सत्तालोलुपों के शोषण में पिस रहे हैं?

सांग-सी इन विचारों में उलझा हुआ अचानक ठिठक गया। एक अत्यंत तेजस्वी बौद्ध महात्मा अपलक उसे देखकर मंद-मंद मुस्करा रहा था।

सांग-सी का चित्त आशंका से भर उठा। क्या वह कोई साथी विद्रोही था, जो उसे पहचान गया था, ऐसा मुमकिन नहीं था क्योंकि उसने अपनी सूरत में बहुत बदलाव किया था।

क्या वह कोई गुप्तचर था, जो उसे पहचान गया था? मगर कैसे? वह दृढ़ कदमों से उसकी ओर बढ़ा। उसी अनुपात में उस युवा महात्मा की मुस्कान स्निग्ध होती जा रही थी।

"भंते!" सांग-सी ने आदर से झुककर प्रणाम किया-"प्रणाम स्वीकार कीजिए और कृपा करके मुझे इस मुस्कान का रहस्य समझाइए।"

"भंते, मुस्कान आनंद का प्रतीक है और आनंद बुद्ध का सहचर।" महात्मा ने मृदुल-मधुर स्वर में कहा-"इस जीवन में जो लक्ष्य निर्धारित होते हैं, कर्मों से उनकी पूर्ति की जाती है, परंतु क्या व्याकुल मन और शंकित हृदय उद्देश्य

Baba Novels Chat Room

को पूरा कर पाते हैं? आनंद इन्हीं शंकाओं का समाधान करता है और मुस्कान इन्हें पराजित करती है। अत: मुस्कान को रहस्यमय नहीं कहा जा सकता। यह तो मुक्त आनंद है।"

"भंते!" सांग-सी ने विनम्र स्वर में कहा—"आनंद का अर्थ अपनी ही मुस्कराहट में होता है या दीन-दुखियों की? जब तक सर्वसुखी समाज न हो, कैसे मुस्कान केवल कुछ होंठों का शृंगार बन सकती है! क्या भगवान बुद्ध ऐसा चाहते थे?"

"भंते! भगवान बुद्ध की शिक्षाएं तो मानव को उत्कृष्ट और श्रेष्ठ बनाने में सक्षम हैं, परंतु तुम्हारा प्रश्न भी अनुचित नहीं है। सच्चे साधक को अपनी भूमिका से न्याय करते हुए निरंतर लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए। क्या तुम नहीं जानते कि चंडकौशिक जैसे विषधर को भगवान बुद्ध ने शस्त्र से पराजित किया था? अहिंसा और प्रेम से ही तो उसका अहंकार चूर किया था। अंगुलिमाल जैसे क्रूरतम दस्यु को अपनी शरण में लाने के लिए उन्होंने प्रेम का कोड़ा ही तो प्रयोग किया था।"

"भंते! क्षमा चाहूंगा। न तो आज का दस्यु अंगुलिमाल जैसा रह गया है और न हम भगवान बुद्ध जितने ज्ञानी और प्रभावशाली हैं। आज मानवता ऐसे दस्युओं से पीड़ित है, जो विज्ञान और तकनीक का प्रयोग करके स्वयं को सर्वशक्तिमान बना बैठे हैं।"

"संसार में ऐसा सर्वशक्तिमान कोई नहीं होता, जो प्रेम के समक्ष नतमस्तक न हो। अपने प्रयासों में शिथिलता न आने दो। मन में नकारात्मक विचारों को स्थान मत दो। इससे लक्ष्य बाधित होता है। स्वयं से संघर्ष न करो, संघर्ष विचारों से करो।"

"महात्मन्!" सांग-सी श्रद्धा से सिर झुकाकर गंभीरता से बोला—"क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूं? मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप मुझे पहचान गए हैं।"

"भंते! तुम्हें मेरे पहचान लेने से न लाभ है और न हानि।" महात्मा निर्विकार भाव से बोले—"तुम स्वयं को पहचानो। नियति ने तुम्हारी नियुक्ति किसी परिवर्तन हेतु की है।"

"हे देव! आपकी वाणी से सिद्धत्व का स्पष्ट आभास हो रहा है। मैं आपकी शरण में हूं। कृपया मेरा मार्गदर्शन कीजिए। मैं सांग-सी-चिन अपने देश के उन लाखों पीड़ितों की पीड़ा को अपने अंतर में अनुभव करके जीवन का लक्ष्य इस व्यवस्था में परिवर्तन को चुन चुका हूं, परंतु सीमित साधन होने के कारण

Baba Novels Chat Room

सामर्थ्यवान शत्रु के समक्ष अपने देश और देशवासियों के लिए कुछ भी कर पाने में असमर्थ हूं।"

"कर्ता न बनो वत्स! वह तो कोई और है। तुम तो मात्र सहायक हो और इसी भूमिका का निर्वाह करो। इसी योग्य बनो। कर्ता को केवल अपने हृदय में स्थान दो।"

"भगवन्, मैं साधारण मतिमूढ़ हूं।" सांग-सी ने करबद्ध होकर कहा—"इतनी गूढ़ बातें समझ नहीं पाता।"

"कभी गीता पढ़ी है। आर्यावर्त का महान शिक्षा ग्रंथ! उसमें कर्ता ने प्रेम भरे समर्पण को प्राथमिकता दी है और शेष सारा भार स्वयं वहन करने का आश्वासन दिया है, फिर तुम क्यों उद्विग्न हो। प्रेमपूर्वक उसके प्रति समर्पित हो जाओ। वह स्वयं तुम्हारा मार्ग प्रशस्त करेगा।"

"देव! आप साधारण महात्मा नहीं हैं। आपके वचनों में आशा और उत्साह का जो समावेश है, वह मुझे प्रफुल्लित तो करता है, परंतु मस्तिष्क उनका भावार्थ समझने में असमर्थ है।"

महात्मा ने अपनी तर्जनी उठाकर उसका अग्रभाग सांग-सी के मस्तक से स्पर्श किया तो सांग-सी को अपने शरीर में विद्युत तरंगें प्रवाहित होती प्रतीत हुईं और नेत्रों के समक्ष एक चलचित्र-सा चल उठा।

सांग-सी ने स्पष्ट रूप से देखा कि एक बलिष्ठ धनुर्धर योद्धा क्रोध से प्रकंपित होता हुआ लक्ष्य संधान कर रहा है और लक्ष्य के रूप में भयभीत तानाशाह नेत्र बंद किए प्राणदान मांग रहा है। धनुर्धर योद्धा के धनुष से तीर निकलकर तानाशाह को भेदने निकल पड़ा और लक्ष्य पर पहुंचने से पूर्व कोई और बीच में आ गया।

"अरे, यह तो मैं स्वयं सांग-सी-चिन हूं।" अनायास ही सांग-सी के मुख से निकला—"एक भिक्षु रूप में!" तीर फिर आया, फिर एक भिक्षु ने बलिदान दिया... फिर...फिर और फिर!

अचानक चलचित्र भंग होकर सब कुछ सामान्य हो गया था।

सांग-सी जैसे सम्मोहित हो गया था। वह महात्मा के चरणों में गिर पड़ा, तो उन्होंने उसे उठाकर हृदय से लगाया।

सांग-सी की आंखों से आंसू निकल रहे थे।

"देव! क्या यही सत्य है? क्या इस सत्य से पीड़ितों के कष्ट दूर हो जाएंगे? क्या यह सत्य उन पाषाण हृदय शासकों को द्रवित कर सकेगा?"

"सत्य की सामर्थ्य पर संदेह क्यों वत्स?"

Baba Novels Chat Room

"अब नहीं भगवन्! मेरा जीवन धन्य हो गया। मैं कृतार्थ हुआ। आज मेरी सब उद्विग्नता शांत हो गई। अब मैं धैर्य से सत्य के उद्घाटित होने की प्रतीक्षा करूंगा। अपने लोगों को बताऊंगा कि सत्य का प्रहार असत्य पर होने वाला है। धर्म अधर्म को अवश्य पराजित करेगा।"

महात्मन् ने नेत्र बंद कर लिए थे।

सांग-सी को मार्गदर्शन मिल गया था। अब बुद्ध ही रक्षक थे और बुद्धत्व ही मानवता का उद्धारक था।

Baba Novels Chat Room

20

अश्वत्थामा की कलिमानव से भेंट

अश्वत्थामा मुस्कराए तो जैसे उस युवक को कोई अमूल्य निधि मिल गई। वह भूमि पर दंडवत् हो गया।
द्रोणपुत्र ने हाथ उठाकर उसे आशीर्वाद दिया और आगे बढ़ गए। जब वे उसके समीप से गुजर रहे थे तो उसने सिर उठाया और फुर्ती से उठ खड़ा हुआ।
"हे महान धनुर्धर, हे पौराणिक महापुरुष! आज मैं इस संसार का सबसे सौभाग्यशाली व्यक्ति हूं, जो आप जैसे दिव्य महाबली के साक्षात् दर्शन पा सका।"
अश्वत्थामा पुनः मुस्कराए। युवक की वाणी में श्रद्धा और कृतज्ञता थी।

Baba Novels Chat Room

द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ने पुष्प और पत्र लेकर नियत समय पर अपने निवास से प्रस्थान किया और गुप्त द्वार से बाहर आकर नदी में पैर रखे। यह रात्रि का तीसरा प्रहर था जिसमें अभी कुछ ही घड़ियां शेष थीं। वे अपनी निर्धारित समय सारणी से निकल पड़े थे। नदी के तट की ओर तैरकर वे उस स्थान पर जा पहुंचे, जहां जल उनके कटिप्रदेश तक आता था। यहां से वे जल में ही पदयात्रा करके अपने गंतव्य तक पहुंचते थे। इससे एक तो अकस्मात् किसी मनुष्य से भेंट होने की संभावना नहीं होती थी। दूसरे, अकारण किसी वन्य जीव से सामना नहीं होता था। उतावली का जल आश्चर्यजनक रूप से सामान्य था और वैसे भी अश्वत्थामा जैसे महान योद्धा को ऐसे विकारों पर विजय प्राप्त थी। उन्हें न सर्दी, न गर्मी और न

वर्षा ऋतु व्यथित करती थी। अपने आपको समय के अनुकूल ढालकर अश्वत्थामा ऋतुजयी हो गए थे।

यद्यपि अश्वत्थामा के मन में यह प्रश्न अभी भी था कि क्या आज भी किले में किसी अनपेक्षित घटना से सामना करना पड़ेगा! आज के मानव के विषय में वे जानते थे कि वह किस हद तक हठी, दंभी और प्रतिशोधी था, इसलिए इस संभावना को निरस्त नहीं किया जा सकता था कि कल रात्रि वाली घटना की पुनरावृत्ति नहीं हो सकती थी। वहां एक से अधिक लोगों से सामना हो सकता था। यह विचार आते ही अश्वत्थामा ठिठककर रुक गए। ऐसी स्थिति में उन्हें क्या करना चाहिए? क्या स्वयं पर होते आक्रमण का प्रतिरोध करना चाहिए? इससे तो संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी और यह उचित नहीं होगा। अत: अश्वत्थामा ने उस समय मार्गदर्शन की आवश्यकता का अनुभव किया और महर्षि वेदव्यास से मानसिक संपर्क स्थापित किया।

"महर्षि को मेरा प्रणाम!" अश्वत्थामा ने मानसिक संदेश प्रेषित किया।

"आयुष्मान भव द्रोणपुत्र! पूजा के लिए प्रस्थान कर रहे हो?" संदेश प्राप्त हुआ।

"हां भगवन्! परंतु एक दुविधा से घिरा हूं।"

"हम जानते हैं वत्स! अब नियति तुमसे कुछ विशेष कार्य कराना चाहती है। तुम्हें अब नई भूमिका में आना होगा। परिस्थितियां ऐसे ही संकेत कर रही हैं।"

"भगवन्, आप मेरी दुविधा का समाधान करें। कल प्रात:काल पूजा के समय और उसके पश्चात् जो दृश्य उत्पन्न हुआ, उससे देवस्थल में मनुष्यों के आवागमन के बढ़ने का संकेत मिल रहा है। इससे मेरी निर्विघ्न पूजा होने में संदेह है।"

"आज का मनुष्य बहुत जिज्ञासु है वत्स! उसे तीनों कालों के विषय में जानने की जिज्ञासा रहती है और वह इसके लिए जोखिम भी उठाने को तत्पर रहता है। जिज्ञासु मानव को यह बहुत पहले ज्ञात हो गया था कि आप सप्त चिरंजीवियों में से एक हैं, फिर इस क्षेत्र में आपकी उपस्थिति के संकेत मिले। स्पष्ट है कि जिज्ञासा मनुष्य को आपकी ओर आकर्षित करेगी ही और उनसे आपका बार-बार सामना होगा।"

"भगवन्, यह तो बड़ी विकट स्थिति होगी। बार-बार सामना होने से संघर्ष की स्थिति बन सकती है, क्योंकि दु:साहसी मनुष्य असंभव को संभव बनाने का प्रयत्न करते हैं। पुरातन को अपने वर्तमान में प्रदर्शनी की वस्तु समझते हैं।"

"हम आपका अभिप्राय समझ रहे हैं द्रोणपुत्र! परंतु वास्तविकता भी यही है। मनुष्य आपको बलपूर्वक, युक्तिपूर्वक अपने वश में करने का दु:साहस कर सकते हैं।"

Baba Novels Chat Room

"और ऐसा मैं सरलता से हो जाने दूं, यह असंभव है। यही संघर्ष का प्रारंभ है। मैं ऐसा नहीं चाहता महर्षि! मैं अकारण ही अपने क्रोध को जाग्रत नहीं करना चाहता।"

"महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आप क्या चाहते हैं, महत्त्वपूर्ण यह है कि नियति क्या चाहती है। आपके पास समाधानों की कमी नहीं है और समस्या भी कोई समाधानरहित नहीं है।"

"कृपा करें महर्षि! मुझे उन समाधानों से अवगत कराएं।"

"द्रोणपुत्र! प्रथम समाधान यह है कि आपके पूजास्थल पर कितने भी मनुष्य उपस्थित हों, आप सम्मोहिनी मंत्र का जाप करके उन्हें निद्रामग्न कर सकते हैं और निर्विघ्न पूजा कर सकते हैं। ऐसा आप पूर्व में भी करते रहे हैं।"

"भगवन्! यह परिस्थिति विशेष का विकल्प है। प्रतिदिन तो मैं ऐसा करके अपने संचित तप का क्षरण नहीं करना चाहूंगा। दूसरे, मैं ऐसा करता हूं तो मनुष्य की जिज्ञासा बढ़ती है और वह गुणात्मक वृद्धि से मेरे मार्ग की अड़चन बनता है।"

"यह तो है द्रोणपुत्र! कलिमानव ऐसा ही जिज्ञासु है। अतः अब द्वितीय समाधान यह है कि आप पूजास्थल में परिवर्तन करें। उतावली की इसी दिशा में कुछ दूरी पर भगवान शिव का एक अन्य भव्य मंदिर है। संघर्ष टालना चाहते हो तो इस विकल्प का प्रयोग करके देखो।"

"परिस्थितियां बड़ी विचित्र हैं महर्षि! आज कलिमानव ने हमें विकल्प चुनने को बाध्य कर दिया है।"

"समय बलवान होता है और विकल्प इसीलिए होते हैं।"

"भगवन्! आपका मार्गदर्शन सदैव उपयोगी रहता है और आज भी रहा है। मुझे समय पर अपने गंतव्य तक पहुंचना है। अतः इस समय क्षमा चाहूंगा।"

"अवश्य महाबली! हम हर समय आपको उपलब्ध होंगे।"

महर्षि व्यास से मानसिक संपर्क समाप्त हो गया तो अश्वत्थामा वहां से चल पड़े। उन्होंने अपनी गति बढ़ा ली थी जिससे उस समय की पूर्ति की जा सके, जो महर्षि से वार्तालाप में व्यतीत हो गया था। महर्षि का प्रत्येक कथन सत्य ही था। कलिमानव जिस कालखंड से गुजर रहा था, उसमें विज्ञान अभूतपूर्व प्रगति कर रहा था। जिस सिंह को भय का कारण माना जाना चाहिए, वह आज मनुष्य के संकेत पर उछलता-कूदता है। वायुमार्ग मानव के लिए सुगम है।

आज मनुष्य शारीरिक बल में अवश्य गौण है, पर अन्य विज्ञानी साधनों से बलशाली हो गया है। यद्यपि यह भी शत-प्रतिशत सत्य है कि यदि अश्वत्थामा से कलिमानव का संघर्ष हुआ भी तो अधिक क्षति कलिमानव की ही होगी, तथापि संघर्ष कदापि उचित नहीं था। अश्वत्थामा संघर्ष नहीं चाहते थे।

Baba Novels Chat Room

जब अश्वत्थामा अपने निश्चित स्थान पर पहुंच गए तो उन्हें ठिठकना पड़ा। वहां तट से किले के मुख्य द्वार तक शिविर लगे थे। इसका अर्थ यही था कि वहां कल रात की अपेक्षा अधिक संख्या में मानव उपस्थित थे और निश्चय ही वे लोग उनकी पूजा में व्यवधान डालने के उद्देश्य से ही वहां एकत्रित थे। तभी एक तेज प्रकाश की विशाल किरण घूमकर चारों ओर फिसलती चली गई। अश्वत्थामा समझ गए कि यह मानव निर्मित प्रकाश यंत्र था, जो अंधकार को चीरकर स्थिति निरीक्षण का कार्य करता था। एक नियमित अंतराल से पुनः प्रकाश अपने उसी पथ से आकर चला गया था। यह कठिन स्थिति थी। संघर्ष की स्थिति थी और अश्वत्थामा इससे बचना चाहते थे। ब्रह्ममुहूर्त होने में अधिक समय नहीं था, अतः पूजा निर्विघ्न समाप्त करने की युक्ति करनी थी।

जैसी परिस्थिति थी, उसमें निर्विघ्न पूजा संपन्न करने का एकमात्र उपाय सम्मोहिनी मंत्र ही था। द्रोणपुत्र जानते थे कि इसमें उनके संचित तप की ऊर्जा का क्षरण होगा, परंतु विकल्प यही था। उन्होंने अपने धनुष को कंधे से उतारकर तरकश से एक तीर निकालकर धनुष पर चढ़ा लिया, फिर नेत्र बंद कर सम्मोहिनी मंत्र का जाप करके किले की दिशा में वक्राकार पथ पर तीर छोड़ दिया। वे उसका प्रभाव जानते थे। उस तीर के लक्ष्य केंद्र के तीन कोस की परिधि तक कोई भी प्राणी सचेत नहीं रहने वाला था। अब वे निश्चिंत थे और अपना कार्य कर सकते थे। उन्होंने स्नान किया और मंत्रोच्चारण करके भोर का स्वागत किया, फिर वे अंजली में जल भरकर नदी से बाहर आए।

कुछ ही क्षण पश्चात् उन्हें जलाभिषेक करना था, अतः किले की ओर बढ़ चले। उनके मुख से निरंतर मंत्रजाप हो रहा था। उन्होंने अपने पथ पर दृष्टि टिका ली थी और अपने आसपास पड़े अचेत सैनिकों को लांघते हुए मुख्य द्वार में प्रवेश कर गए। वहां से मंदिर की ओर बढ़े। आज वहां अधिक स्वच्छता थी। मंदिर के समीप के क्षेत्र में एक भी तृण नहीं दिखाई दे रहा था। यद्यपि वहां बहुत से लोग बेसुध पड़े थे, तथापि कोई भी मंदिर की सीमा में नहीं था और तो और आज मंदिर के अंदर प्रकाश जगमग कर रहा था। वहां मंदिर में संभवतः सायंकाल भी पूजा हुई थी। इसका अर्थ यह था कि वहां उपस्थित लोग धार्मिक थे।

उसके बाद अश्वत्थामा ने विधिवत् पूजा की। कहीं कोई विघ्न न हुआ था। वे पूजा संपन्न करके वापस चल पड़े तो एकाएक ठिठक जाना पड़ा। एक नौजवान उनसे कुछ दूरी पर श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़कर खड़ा था। आश्चर्य! वह सम्मोहन के प्रभाव से कैसे बच गया था, जो कि कलिमानव के लिए असंभव ही था? सम्मोहिनी से बचने की कला में उनके युग में कुछ लोग अवश्य पारंगत

Bapa Novels Chat Room

थे, जिनमें पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, आचार्य कृप और धनुर्धर अर्जुन सहित भगवान श्रीकृष्ण स्वयं थे। कलिमानव कैसे सम्मोहिनी के प्रभाव में नहीं आ पाया, यह अश्वत्थामा के लिए आश्चर्य का विषय था। यद्यपि अपने इस प्रश्न का उत्तर उन्हें अपने अंतर्मन से शीघ्र ही मिल गया। जो मानव ईश्वर में आस्थावान हो, परहित को धर्म समझता हो, कर्तव्य के प्रति समर्पित हो, भय जिसके शब्दकोश में न हो और विशेष भद्रा नक्षत्र के मूल में जन्मा, जो कोई बिरला ही जीवित रहता है, ऐसे मानव पर सम्मोहिनी मंत्र का प्रभाव नहीं होता। यह ज्योतिष का कथन था और अश्वत्थामा इस पर दृढ़ विश्वास करते थे। संभवतः वह उन्हीं विलक्षण गुणों से युक्त मानव था।

अश्वत्थामा यह तो समझ गए कि वह किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न करने वाला नहीं था, वरन् वह तो बड़ी आस्था और श्रद्धा से नत था। उसके नेत्रों में ऐसी निर्मल कृतज्ञता थी, जैसे भक्त अपने भगवान को पा गया हो।

अश्वत्थामा मुस्कराए तो जैसे उस युवक को कोई अमूल्य निधि मिल गई। वह भूमि पर दंडवत् हो गया।

द्रोणपुत्र ने हाथ उठाकर उसे आशीर्वाद दिया और आगे बढ़ गए। जब वे उसके समीप से गुजर रहे थे तो उसने सिर उठाया और फुर्ती से उठ खड़ा हुआ।

"हे महान धनुर्धर, हे पौराणिक महापुरुष! आज मैं इस संसार का सबसे सौभाग्यशाली व्यक्ति हूं, जो आप जैसे दिव्य महाबली के साक्षात् दर्शन पा सका।"

अश्वत्थामा पुनः मुस्कराए। युवक की वाणी में श्रद्धा और कृतज्ञता थी।

"हे महान योद्धा! अवश्य मैंने अपने पूर्वजन्म में बड़े ही पुण्य कर्म किए हैं जिनके कारण मैं आपके दर्शन पा सका। उस परमवीर योद्धा के, जो भगवान कृष्ण के समय में रहे, जिन्होंने उनकी परम पावन छवि के साक्षात् दर्शन किए। मुझे अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं हो रहा है कि मैं उस महान योद्धा के समक्ष हूं, जो सर्वकालिक महान आचार्य द्रोण के पुत्र हैं, जो एक ऐसे युग के साक्षी हैं, जो भारत के घर-घर में वंदनीय है।"

"युवक! हमें विलंब हो रहा है। हमें समय से अपने स्थान पर पहुंचना है।" अश्वत्थामा ने गंभीर स्वर में कहा–"इस स्थान पर हम अधिक समय तक नहीं रुक सकते।"

"मैं आपके विलंब का कारण नहीं बनना चाहता महान वीर! न मेरी ऐसी सामर्थ्य है और न मेरा ऐसा दुःसाहस! मैं तो अपने मन में घुमड़ते कुछ प्रश्नों का उत्तर चाहता हूं, जो यदि आप कृपा कर दे सकें तो मैं आपका आजीवन आभारी रहूंगा।"

Baba Novels Chat Room

"युवक, प्रश्न हमारे पास भी हैं जिनका उत्तर कोई तुम्हारे जैसा योग्य, सभ्य व सुलझा हुआ मानव ही भली प्रकार दे सकता है, परंतु इस समय संभव नहीं है। हम भी आज के मानव, उसके समाज, व्यवहार और जीवन पद्धति को समझना चाहते हैं। कलियुग ने मानव समाज पर कैसा प्रभाव डाला होगा, इसका अनुमान तो हमें हैं, परंतु कुछ व्यवहार हमें आश्चर्य में डाल देते हैं।"

"आप प्रश्न करें, मैं उत्तर देने का प्रयास करूंगा महावीर!"

"अभी संभव नहीं। हमने जिस कारण से यहां उपस्थित लोगों को मूर्च्छित किया है, वह विलंब के कारण पुनः उत्पन्न हो सकता है। इस समय ये सभी सम्मोहिनी के प्रभाव में हैं और यह प्रभाव सूर्योदय होते ही समाप्त हो जाएगा। हम इनके समक्ष नहीं आना चाहते और निर्धारित समय पर अपने निवास पर पहुंचना चाहते हैं।"

"हे महान योद्धा! क्या आप मुझ तुच्छ मानव को पुनः मिलने का अवसर देंगे?"

"यदि नियति ऐसा संयोग बनाती है तो अवश्य!"

"आप अपने निवास के विषय में बताने की कृपा करें, मैं वचन देता हूं कि अन्य किसी को कभी इस विषय में न बताऊंगा और अकेला आपके दर्शन हेतु आऊंगा।"

"यह संभव नहीं है वत्स! अपने कर्म और भाग्य पर विश्वास करो। यदि हमसे भेंट होना तुम्हारे भाग्य में लिखा है तो वैसे ही भेंट अवश्य होगी, जैसे आज हुई।"

"यदि आप चाहें तो यह बहुत शीघ्र, बल्कि आज अथवा कल भी हो सकती है।"

"हमारी इच्छा या अनिच्छा से कोई लाभ नहीं, क्योंकि हम कर्म से मुक्त हैं और तुम कर्म के अधीन हो। अतः यह प्रयास तो तुम्हें ही करना होगा।"

"मैं अवश्य प्रयास करूंगा।" युवक दृढ़ता से बोला—"मैं आपके पुनः दर्शन पाने के यथासंभव प्रयास करूंगा वीर योद्धा! आप अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करें, लेकिन जाने से पूर्व मुझे आशीर्वाद दें कि मैं आपके पुनः दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर सकूं।"

अश्वत्थामा ने अपने तुणीर में हाथ डाला और एक पुष्प निकालकर उसे दिया। युवक ने उस पुष्प को आशीर्वाद समझकर श्रद्धापूर्वक मस्तक से लगाया।

अश्वत्थामा उसके सिर पर हाथ फेरकर वहां से प्रस्थान कर गए।

Baba Novels Chat Room

21

सैयादी का 'लिटमस टेस्ट'

"जहां धार्मिक आस्था होती है, वहां हिंसा नहीं होती और जिसमें हिंसा ही नहीं, वह कैसे खुद को क्रांतिकारी कह सकता है?" सैयादी ने कहा—"धर्म से धन तभी बनता है, जब आदमी वास्तव में धार्मिक न हो, पर दिखावा करे।"

"अ...आप इतना करने पर हमें दस-दस लाख दे देंगे?" एक ने आशंकित स्वर में पूछा।

"यह तुम्हारा 'लिटमस टेस्ट' है। दस-दस लाख वाला काम और है। पहले टेस्ट पास करो।"

Baba Novels Chat Room

अबू सैयादी उस पूरा दिन खुफिया स्थान पर छुपा रहा। दिन-भर वह सोया और शाम होने पर उसने टी.वी. देखा। उसकी तलाश संबंधी खबरें उसे विचलित कर रही थीं। जरा-सी बात ने कितना बड़ा हंगामा कर दिया था। न वह पान सिंह को गोली मारता और न हैदर इतना बखेड़ा फैलाता। उसे सबसे ज्यादा यह बात साल रही थी कि वहां उसकी उपस्थिति जगजाहिर हो गई थी और उसकी खोज में भारतीय सुरक्षा तंत्र सक्रिय हो गया था। वह यह भी जानता था कि बहुत दिन तक वह छुपा नहीं रह सकेगा, इसलिए उसने दहलावर से अपने 'सेफ' निकल जाने की व्यवस्था करने की बात कही।

"अभी दो-चार दिन तो मुश्किल है। चप्पे-चप्पे पर तुम्हारी तलाश हो रही है। यहां 'सेफ' हो। आराम से रहो। मौका मिलते ही निकाल देंगे।" दहलावर ने कहा।

"यहां मैं बोर हो जाऊंगा। वैसे भी मैं ज्यादा दिन इंडिया में नहीं रुक सकता। मेरे पास इससे भी बड़ा एक काम है। मुझे कोरिया जाना है, जहां मुझे एक बड़ी डील करनी है।" सैयादी ने कहा–"तुम्हारे हथियार आते ही निकलना है।"

"हथियार नेपाल आ गए हैं। वहां से कुछ दिनों में यहां पहुंच जाएंगे। मैं तुम्हारी बोरियत दूर करने की व्यवस्था करता हूं। कहो तो उसी लड़की को भेज दूं?"

"नहीं, अब नहीं। ऐसी गफलत अब नहीं। मैं इस ऐब को नहीं पाल सकता, पर कोई ऐसा आदमी जरूर मेरे पास रहना चाहिए, जो मेरा मन लगाता रहे। मैं यहां बंद नहीं रह सकता। शहर घूमने भी जाऊंगा।"

"क्या कह रहे हो? बाहर तुम्हें बहुत खतरा है।"

"दिन में हो सकता है, रात में नहीं, फिर मैं कोई सारी रात बाहर नहीं रहने वाला। वैसे भी मैं बहुरूप भरने में एक्सपर्ट हूं। तुम थोड़े सामान की व्यवस्था कर दो।"

"बोल दो। लिखकर दे दो। भेज दूंगा। बाहर जाने की जिद न करो तो अच्छा है। मैं यहीं तुम्हारे मनोरंजन की व्यवस्था कर दूंगा।"

"इससे मेरा भला नहीं होगा। मैं घुमक्कड़ आदमी हूं। मुझे बातूनी लोग पसंद हैं। घूमना ही मेरा मनोरंजन है। तुम बेफिक्र रहो, मैं अपना ख्याल रख सकता हूं। बस एक आदमी गाइड के तौर पर भेज दो, जो सतर्क, सजग और वफादार हो।"

"भेजता हूं। खाने में कुछ स्पेशल चाहिए तो वह भी बोल दो।"

"स्पेशल कुछ नहीं। इंडिया और पाकिस्तान में खाना तो ऐसा लजीज है कि किसी भी एक चीज को स्पेशल नहीं कहा जा सकता। जो खाओ, वही स्पेशल है।"

"अच्छा तो अब मैं चलता हूं। बाहर मैं भी बहुत देर नहीं रहूंगा। जल्दी लौटूंगा।"

दहलावर चला गया और सैयादी ने काफी देर टी.वी. देखा, फिर वहां दो-तीन आदमी आए और उसके सामने हाथ बांधकर खड़े हो गए। अभी शाम के छह बजे थे और मेकअप का सामान नहीं आया था। खाना तो वह कभी भी दस बजे से पहले खाता ही नहीं था। उसने उन तीनों आदमियों को बैठने का इशारा किया। तीनों झिझकते हुए बैठ गए। सैयादी ने नई चिलम सुलगाई।

"दहलावर तुम्हें क्या देता है?" उसने सवाल किया।

"जी...जी! हम...हम क्रांतिकारी हैं।" एक आदमी झिझककर बोला–"हम क्रांति के लिए समर्पित हैं और इसी के लिए अपना जीवन अर्पण कर देंगे।"

"हा-हा-हा...इतने कठिन शब्द मत बोलो भाई! मेरी समझ में खास कुछ नहीं आया। मैं यह जानना चाहता हूं कि तुम्हारे खर्चे-पानी के लिए तुम्हें क्या मिलता है?"

"उसकी कोई समस्या नहीं है। सब उपलब्ध है। अच्छा खाना-पीना मिलता है।"

"पाकिस्तान में तुम्हारे जैसे लोगों को लाखों रुपये मिलते हैं। इजरायल,

Baba Novels Chat Room

फिलिस्तीन और सीरिया में और भी ज्यादा मिलते हैं। जान लेने और देने के तो पूछो ही मत। तुम लोग रोटी-कपड़े में ही मस्त रहते हो। परिवार का पेट कैसे पालते हो?"

"मेरा तो परिवार ही नहीं है। सब एक हमले में मारे गए। इसके परिवार वाले इसकी शक्ल नहीं देखना चाहते।" एक आदमी ने कहा और तीसरे के बारे में बताया-"यह अपने परिवार की फिक्र ही नहीं करता। कहता है, परिवार में जरूरत की चीज बीवी होती है और यह कहीं भी मिल जाती है।"

"तुम्हारे ज्यादातर साथियों की यही कहानी होगी। वास्तव में तुम्हारे जीवन में कोई रंगीनी नहीं है। मरने के लिए जी रहे हो तुम सब। तरक्की नाम की चीज से तुम्हारा परिचय नहीं है। नहीं जानते कि हिंसा के रास्ते पर चलकर लोग इतना माल बटोरते हैं कि राजनेता बन जाते हैं। तुमने हाफिज सईद का नाम सुना है। वह भी कभी तुम्हारी तरह मामूली प्यादा था, पर आज बादशाह है। दुनिया-भर में उसका नाम है। करोड़ों लोग उसके इशारे पर सिर कटाने को तैयार रहते हैं। इस धंधे में आदमी प्यादा बनकर ही मर जाए तो हद है काहिली की।"

तीनों आदमी समझ नहीं पा रहे थे कि वह कहना क्या चाहता था।

"मुझे ही देखो। मैं दस साल की उम्र से इस रास्ते पर चल पड़ा था। सिर्फ रोटी के लिए नहीं। आज मैं दुनिया के किसी भी देश में जा सकता हूं। लाखों खर्च कर सकता हूं।"

"साहब! सब किस्मत की बात है। सभी तो बादशाह नहीं बनते।"

"तुममें से ऐसा कोई है, जो दस लाख रुपये में कोई भी काम कर सकता हो?"

"क्या...क्या काम करना होगा?" तीनों हकला गए।

"यह तो मैं बाद में बताऊंगा। पहले बताओ कि कौन कर सकता है?"

"तीनों कर सकते हैं। इतने पैसे के लिए तो हम कुछ भी कर सकते हैं।"

सैयादी बेड से उठा। उसने दीवार पर लगी भगवान शिव की शीशे में जड़ी मूर्ति जमीन पर रखी, फिर बेड पर बैठकर तकिये के नीचे रखे अपने पिस्तौल पर पकड़ मजबूत की जिससे विपरीत परिस्थिति होने पर संभाल सके, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उनमें से कोई एक या सब शिवभक्त हों और भड़ककर उस पर ही हमला कर दें। इंडिया में ऐसा होना आम बात थी।

"तुम तीनों में से जो भी दस लाख कमाना चाहता है, वह आगे बढ़े और इस तस्वीर को अपने जूतों से कुचल डाले।" सैयादी उन पर नजर जमाए हुए बोला-"चाहो तो तीनों यह काम कर सकते हो और तीनों को दस-दस लाख मिलेंगे।"

तीनों के चेहरे विचित्र से भाव से भर गए थे। कभी वे नीचे पड़ी तस्वीर को देखते और कभी एक-दूसरे का चेहरा देखते। सैयादी बड़ा सतर्क था।

Baba Novels Chat Room

"जहां धार्मिक आस्था होती है, वहां हिंसा नहीं होती और जिसमें हिंसा ही नहीं, वह कैसे खुद को क्रांतिकारी कह सकता है?" सैयादी ने कहा–"धर्म से धन तभी बनता है, जब आदमी वास्तव में धार्मिक न हो, पर दिखावा करे।"

"आप इतना करने पर हमें दस-दस लाख दे देंगे?" एक ने आशंकित स्वर में पूछा।

"यह तुम्हारा 'लिटमस टेस्ट' है। दस-दस लाख वाला काम और है। पहले टेस्ट पास करो।"

एक हिचकिचाकर आगे बढ़ा और अपने साथियों को देखकर थूक गटकता हुआ अपना पैर उठाया तो उसका पैर कांप गया।

"रहने दे रमेश! भगवान का अनादर मत कर, वरना नरक में जाएगा।" दो में से एक ने कहा–"अपना जमीर मारकर कैसे जिंदा रहेगा?"

"शिवली ठीक कह रहा है।" तीसरा भी बोला–"ऐसे पैसे का क्या करेगा, जो भगवान का अपमान करके मिलेगा? भगवान कभी माफ नहीं करेंगे।"

रमेश नाम के उस आदमी ने अपना पैर हटा लिया। सैयादी मन-ही-मन मुस्करा उठा। पहला आदमी रमेश जरूर उसके काम का था। अपने साथियों के कारण वह ऐसा नहीं कर सका था, वरना मन से तैयार था।

"साहब!" शिवली नाम का आदमी बोला–"हम विद्रोही जरूर हैं, पर नास्तिक नहीं। हमें ऐसा पैसा नहीं चाहिए, जो हमारी आत्मा ही मार दे। क्यों रमेश?"

"हां...हां...। हम ऐसे पापी नहीं बनना चाहते। हमें ऐसा लालच फिर न दें।"

"यही बात मैं तुम लोगों को समझाना चाहता था।" सैयादी ने खड़े होकर बड़ी श्रद्धा से तस्वीर उठाई और बोला–"माफ करना भगवान, मैं तो इनकी परीक्षा ले रहा था कि कहीं इनका पूरा पतन तो नहीं हो गया। धर्म जिंदा है तो इंसान जिंदा है। भाई लोगो! कभी अपना धर्म मत छोड़ना। यही तुम्हारा रक्षक है।"

तीनों ने एक दूसरे की ओर देखा और सैयादी को भी, जो तस्वीर को बड़े श्रद्धा भाव से यथास्थान लगा रहा था। तीनों ने राहत की सांस ली, पर रमेश अपने साथियों से नजर चुरा रहा था। उसे शायद अपराधबोध था या शर्मिंदगी थी, तभी इंटरकॉम बज उठा और सैयादी ने फोन रिसीव किया। उधर से कुछ कहा गया।

"खाना आ गया। जाकर खा लो और आराम से सोना। रमेश भाई, तुम मेरा खाना और कुछ सामान है, उसे मेरे पास पहुंचा जाना।" सैयादी ने कहा–"इस बात को अपने दिल से निकाल दो और जाओ।"

तीनों जने खामोशी से चले गए।

Baba Novels Chat Room

22

सांग-सी का शांति-उपदेश

"...तथागत ने कभी किसी वृत्तबंधन को स्वीकार नहीं किया था। उनके लिए समस्त संसार उपदेश-क्षेत्र था और प्रत्येक उपदेश का भाव प्रत्येक मानव के लिए था। वे पंच महाव्रत को मोक्ष का मार्ग मानते थे और लोगों को भी प्रेरित करते थे कि उसे अपनाएं और अन्य लोगों को प्रेरित करें।" सांग-सी स्वयं आश्चर्य में था कि उसे ऐसे विचार कहां से मिल रहे हैं—"परंतु हम पंच महाव्रत केवल अपनी मुक्ति के लिए अपनाते हैं। हम किसी अन्य को प्रेरित करने का वह कार्य नहीं कर रहे हैं, जो भगवान बुद्ध का उद्‌देश्य था।"

Baba Novels Chat Room

सांग-सी अपने मन में बहुत शांति का अनुभव कर रहा था। उसे लग रहा था कि आज तक उसने भगवान बुद्ध के उपदेश अहिंसा का उल्लंघन करते हुए हिंसात्मक विद्रोह को आगे बढ़ाया था। वह इसीलिए किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा, क्योंकि वह गलत मार्ग था।

जब प्रेम ने चंडकौशिक और अंगुलिमाल को सद्‌बुद्धि प्रदान कर दी तो तानाशाह या उसके लोग क्या थे? उसे इसी दिशा में प्रयास करने होंगे। प्रेम और अहिंसा की शक्ति को प्रखर करना होगा। अधिक-से-अधिक लोगों को इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना होगा।

जब शांति चाहने वाले अधिक और अशांति फैलाने वाले कम हों तो पीड़ा भी अधिक नहीं होती। यद्यपि इससे अशांति फैलाने वाले अधिक अभिमानी हो जाते हैं और अधिक पीड़ित करते हैं, तब स्वयं 'कर्ता' रक्षक

बनकर उनके दंभ को खंडित करता है। रक्षक आएगा! महात्माजी ने सत्य का भान करा दिया है!

सांग-सी उसी आशा, विश्वास और शांति के साथ मठ में प्रसन्न था। अब वह वहां भिक्षुओं से ऐसी ही बातें करता था जिनमें बुद्ध के उपदेशों की झलक होती थी।

"तथागत ने प्रेम, अहिंसा और सत्य से संसार को एक सुगंधित उपवन के रूप में देखने की बात कही जिसमें द्वेष, शोषण और पीड़ा न हो। उन्होंने अपने जीवनकाल में ही सत्य के सभी रूपों का अनुभव किया था और निर्वाण तक उससे समाज का कल्याण ही करते रहे। उन्होंने ऐसा करके भी दिखाया। उनके आसपास दुख का चिह्न तक न था। यदि आज भगवान बुद्ध हमारे बीच होते तो संभवतः इस दृश्य पर द्रवित हो उठते।" सांग-सी ने एक भिक्षु से कहा।

"भंते! आप किस दृश्य की बात कर रहे हैं! यहां सर्वत्र शांति है। दुख का तो यहां भी कोई चिह्न नहीं है, क्योंकि हम तथागत के अनुयायी उनकी शिक्षाओं का अनुसरण कर रहे हैं। हम पंच महाव्रतों का निष्ठा से पालन कर रहे हैं।" एक भिक्षु ने कहा।

"अवश्य कर रहे हैं, पर सीमित रूप में कर रहे हैं। तथागत ने कभी किसी वृत्तबंधन को स्वीकार नहीं किया था। उनके लिए समस्त संसार उपदेश-क्षेत्र था और प्रत्येक उपदेश का भाव प्रत्येक मानव के लिए था। वे पंच महाव्रत को मोक्ष का मार्ग मानते थे और लोगों को भी प्रेरित करते थे कि उसे अपनाएं और अन्य लोगों को प्रेरित करें।" सांग-सी स्वयं आश्चर्य में था कि उसे ऐसे विचार कहां से मिल रहे हैं—"परंतु हम पंच महाव्रत केवल अपनी मुक्ति के लिए अपनाते हैं। हम किसी अन्य को प्रेरित करने का वह कार्य नहीं कर रहे हैं, जो भगवान बुद्ध का उद्देश्य था।"

"ऐसा नहीं है भंते! यहां हजारों भिक्षु नवागत हैं। सिद्ध भिक्षुओं से प्रेरणा लेकर ही तो वे भिक्षु बने हैं। तुम्हें भी किसी ने प्रेरित ही किया होगा।"

"परंतु इससे तो भगवान बुद्ध का सुगंधित उपवन का स्वप्न पूर्ण नहीं होता।"

"आपका तात्पर्य क्या है भंते?"

"देव! समाज कितनी पीड़ाओं और विकारों से त्रस्त है! शक्तिशाली लोग शक्ति के मद में चूर होकर निर्बलों को सता रहे हैं। हिंसा अहिंसा पर भारी हो रही है। द्वेष, सत्ता-लोलुपता और स्वार्थ ने प्रेम को गौण कर दिया है। क्या बुद्ध इस स्थिति को स्वीकार करते? इसका विरोध न करते? इसे परिवर्तित करने का प्रयास न करते?"

Baba Novels Chat Room

"अवश्य करते। उनका अवतार इसी उद्देश्य से हुआ था। हिंसा का दमन करने के लिए अहिंसा का प्रचार-प्रसार, द्वेष को जीतने के लिए प्रेम का संदेश और असाधु को साधु बनाने के लिए उसे सत्य से परिचित कराने का महाव्रत। वे इनसे ही शांति स्थापित करते।"

"तो हम क्यों नहीं कर सकते भंते, हम क्यों नहीं कर सकते? आज निर्बल को सबल शोषित कर रहा है और हम मठों में बैठकर स्वमुक्ति को भगवान बुद्ध का उपदेश मानने लगे हैं। संसार में शांति के लिए क्या हम निर्बलों, पीड़ितों और शोषितों को प्रेम का संदेश नहीं दे सकते? क्या हम उन सबल शोषकों को हिंसा का मार्ग त्यागने के लिए प्रेरित नहीं कर सकते? यदि हम बुद्ध के सच्चे अनुयायी हैं तो अवश्य कर सकते हैं।"

"हम बुद्ध के सच्चे अनुयायी हैं।" भिक्षु बड़बड़ाया।

"सच्चे अनुयायी हो तो चलो मेरे साथ। प्रेम और द्वेष, शोषक और शोषित से असंतुलित हो चले समाज को संतुलित करने का प्रयास करते हैं, अंतिम श्वास तक प्रयास करते हैं, तभी हम सच्चे अर्थों में भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण कर सकेंगे।"

"कहां जाना होगा? हम कहां जाएंगे?"

"असंतुलित होती सामाजिक तुला के उस नुकीले संकेतक के समीप जिसे प्रेम से पकड़कर संतुलन की स्थिति में लाना है। तुला के दोनों पलड़ों में प्रेम और अहिंसा को रखकर इस संतुलन को सकारात्मक दिशा में लाना है। भय को समाप्त करके लोगों को भयमुक्त करना है। चंडकौशिकों को अहिंसा से जीतना है। अंगुलिमालों को निर्भयता से सद्बुद्धि देनी है। क्या यही भगवान बुद्ध की शिक्षाएं नहीं थीं?"

"यही थीं। उन्होंने सत्य की प्राप्ति के लिए कठोर साधनाएं की थीं, परंतु हमें तो वह ज्ञान वे अपने उपदेशों में ही दे गए थे। हम उसे स्वमुक्ति के लिए प्रयोग करके वास्तविक उद्देश्य को भूल गए हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था। हमें उनके उपवन को सुगंधित बनाने के लिए उपवन के बीच जाकर कंटकों और निरौषधि पातों को उखाड़ना चाहिए था। हमने उनके उपवन का अर्थ इस उपवन से लिया, जबकि वे समस्त भूमि को उपवन कहते थे। तुमने मेरे चक्षु खोल दिए भंते!"

"तथागत की कृपादृष्टि हुई है भंते! अवसर का लाभ उठाओ। जहां शांति है, वहां शांति के प्रचार-प्रसार से क्या लाभ? शांति की आवश्यकता शोषितों-पीड़ितों को है। अहिंसा का मार्ग उन्हें दिखाओ, जो हिंसा के मार्ग पर चल रहे हैं। इस

Baba Novels Chat Room

मठ में कौन हिंसक है? यहां हमारे उपदेश किस प्रयोजन से हैं! मात्र स्वमुक्ति के लिए परस्पर ज्ञान का प्रदर्शन करने के लिए! या साधक प्रतिस्पर्द्धा में श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए!"

"यही भगवान बुद्ध के उपदेशों का सार है!" भिक्षु नतमस्तक हो गया।

"हमें तथागत ने पंच महाव्रतों का ज्ञान इसीलिए तो दिया था कि हम उसे उन लोगों तक पहुंचाएं जिन्हें इनकी वास्तव में आवश्यकता है। हम भगवान बुद्ध के ऐसे अनुयायी नहीं बनना चाहते, जो दीन-दुखियों के कष्टों से विरक्त हों!"

"हां, नहीं बनना चाहते। यह बुद्धत्व नहीं है। हमें बुद्धत्व प्राप्त करना है। कृपया मार्गदर्शन करें।"

सांग-सी बड़े ही विनीत स्वर में अपना विचार व्यक्त करने लगा।

Baba Novels Chat Room

23

दुर्लभ पूजा-पुष्प

प्रभास ने अपनी जेब से पुष्प निकालकर दिखाया तो आश्चर्य से खोजिया के नेत्र फैल गए।

"यह...यह फूल! दुर्लभ फूल! आपके पास...! इसका मतलब आप मंदिर तक गए थे।"

"मैं खुद नहीं समझ पा रहा हूं! मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा है।"

"असिस्टेंट से भी क्या छुपाना साहब!" खोजिया आहत भाव से बोला।

"मैं सच कह रहा हूं!" प्रभास गंभीर स्वर में बोला—"मैं खुद नहीं समझ पा रहा हूं कि मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है। यह आभास तो मुझे है कि मैं किले में मंदिर तक गया हूं, क्योंकि यह ताजा फूल वहां के सिवा कहीं नहीं मिल पाता।

Baba Novels Chat Room

प्रभास सुबह नौ बजे जागा तो उसे अपना सिर भारी-सा लग रहा था। उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि कुछ अजीब-सा वाकिया उसके जेहन में दर्ज है और बाहर आना चाहता है। क्या हुआ उसे पिछली रात? उसे कुछ याद क्यों नहीं आ रहा था? वह जितना दिमाग पर जोर डाल रहा था, उतना ही बोझ-सा बढ़ता जा रहा था। उसने दोनों हाथों से माथा पकड़ लिया। हुआ तो कुछ जरूर था! अजीब, अविश्वसनीय और अकल्पनीय जैसा कुछ! उसका अंतर्मन कह रहा था कि उसके भन्नाए सिर का कारण आम सिरदर्द नहीं था, बल्कि कुछ ऐसा था, जो घटित हुआ था, पर विस्मृत हो रहा था। उसे कुछ याद नहीं आ रहा था!

वह अपने बिस्तर से खड़ा हुआ और बाथरूम में जाकर मुंह पर पानी के छींटे मारे और कुल्ला किया, तब उसकी नजर अपनी शर्ट की जेब से झांकते हल्के गुलाबी रंग के फूल पर गई। उसने हैरानी से उसे हाथ में लिया तो चौंक गया। यह तो वही दुर्लभ पूजा-पुष्प था, जो अश्वत्थामा द्वारा शिव को अर्पण किया जाने वाला माना जाता था। यह उसकी जेब में कहां से आया? इससे भी हैरानी की बात यह थी कि वह पुष्प ताजा था। ताजा पुष्प या तो घाटी में मिलता था या...या मंदिर में! मगर वह तो मंदिर गया ही नहीं था, तो क्या वह घाटी में गया था! हरगिज नहीं! तो क्या अश्वत्थामा उसके कमरे में आया था? यह भी असंभव और अविश्वसनीय बात थी! तो वह फूल वहां कैसे?

प्रभास सोचते-सोचते थक गया। उसका सिर और भी भन्ना गया था। हाथ-मुंह धोकर वह अपने कमरे से बाहर आकर रिसेप्शन हॉल में आया तो एक वर्दीधारी सिपाही उसे देखकर इस प्रकार खड़ा हुआ, जैसे वह उसी का इंतजार कर रहा हो।

"प्रभास टिचकुले! टी.वी. रिपोर्टर! दिल्ली से!" सिपाही ने घूरकर पूछा।

"जी हां, कहिए।" प्रभास ने पूछा।

"साहब ने बुलाया है। पुलिस स्टेशन चलना होगा।"

"चलो, मैं आता हूं। सिर फटा जा रहा है। आराम मिला तो जल्दी आऊंगा।"

"विधायक जी के होटल में हो, इसलिए सख्ती नहीं की जा रही है। जल्दी आना, वरना साहब को यहां आना पड़ा तो ठीक नहीं होगा।"

"क्या मतलब? मैं कोई नक्सली हूं! टैरेरिस्ट हूं या जेल से भागा हूं!"

"साहब बताएंगे। मैं चलता हूं?"

सिपाही चला गया तो प्रभास रिसेप्शन की ओर बढ़ा।

"बाहर पार्किंग में खोजिया अपनी जीप में सो रहा होगा।" वह रिसेप्शनिस्ट से बोला–"उसे बुलवा दीजिए। प्लीज! और दो कड़क कॉफी मंगाइए।"

"ओके सर! आप बैठिए। वैसे सर, रिपोर्टर जर्नलिस्ट तो यहां बहुत आते हैं, पर आप जैसा एक भी नहीं देखा। आधी रात को होटल से जाना। दिन निकलने के बाद आना। आज सुबह जब आप आए तो ऐसा लगा जैसे कोई तगड़ा नशा करके आए हैं।"

"क्या कह रहे हो! मैं तो रात अपने कमरे से कहीं गया ही नहीं।"

"गए थे साहब! ठीक ग्यारह बजे गए थे। सामने रेंटल एजेंसी से आपने बाइक रेंट पर ली थी। सुबह छह बजे लौटकर आए हैं आप! अभी यह सिपाही भी बता रहा था कि आप जंगल की ओर जा रहे थे तो पुलिस ने आपको जाने नहीं दिया, मगर सुबह आप जंगल से लौट रहे थे। उसी विषय में पूछताछ होगी।"

Baba Novels Chat Room

प्रभास अपना सिर पकड़कर बैंच पर बैठ गया। क्या माजरा था? अगर ऐसा हुआ था और जेब में रखा फूल इसकी गवाही दे रहा था, तो उसे सब कुछ याद क्यों नहीं आ रहा है? कुछ-न-कुछ तो ऐसा हुआ था, जो उसके दिमाग में तो घुमड़ रहा था, पर स्मृतिपटल पर नहीं आ रहा था, तब तक आंखें मलता हुआ खोजिया भी आ गया।

"यह क्या साहब!" खोजिया उसके समीप बैठकर अप्रसन्नता से बोला—"मुझे तो काम से भेज दिया और खुद अकेले मोटरसाइकिल से चले गए। मैं रात बारह बजे लौटा तो पता चला कि आप चले गए। कहां गए थे! किले पर! पर वहां तो जंगल के रास्ते पर पुलिस का सख्त पहरा था। कैसे बहलाया उन्हें?"

तभी भाप उगलती कॉफी के दो मग उनके सामने आ गए। प्रभास ने मग उठाकर गर्म-गर्म कॉफी का लंबा-सा घूंट भरा और आंखें बंद कर लीं।

"मैं आपसे कुछ पूछ रहा हूं। आपने इतना खतरा क्यों उठाया? जानते थे कि पुलिस रोकेगी! पुलिस तो चलो बहल भी जाती, पर किले पर तो सी.आर.पी.एफ. का टेम्परैरी कैंप है। वहां तो करीब भी नहीं फटक सकते थे। जानकर भी क्यों भागदौड़ की और की भी तो अकेले क्या जरूरत थी? असिस्टेंट को दस हजार रुपया महीना क्यों दे रहे हैं?"

"दस हजार रुपया महीना!" प्रभास ने झटके से आंखें खोलीं—"पैसे की बात कब हुई?"

"जब सब बातें हुईं, तभी आखिर में हुई। मैंने कहा था कि आप जाने से पहले खुशी से जो भी देंगे, रखूंगा और बॉस तो काम से खुश होता है न! मैं साथ रहने तक इतने अच्छे काम करूंगा, इतना हार्ड वर्क करूंगा कि आप खुश हो जाएंगे, तो इससे कम देते तो आपसे भी नहीं बनेगा।"

"अभी क्या अच्छा करके आए हो?" प्रभास ने घूरा।

"अपने भेदिये और उसके नए बॉस का ठिकाना देखकर आया हूं। इसी काम से तो भेजा था।"

"वह कहां है? लौटा नहीं?"

"उसे पैसे का चस्का लग गया है और यहां उसे लगता था कि रोटी-रोटी में ढेर सारा काम करना पड़ता है तो वहीं जम गया लगता है। बातचीत सुनाऊं?"

"अभी नहीं। अभी एक और लफड़ा गले पड़ गया है। थानेदार ने बुलाया है।"

"रात उनसे फिल्मी मारपीट करके गए थे क्या?"

"नहीं, उनका कहना है कि मैं उड़कर, मोटरसाइकिल उड़ाकर जंगल में गया था और लौटा मैं रास्ते से हूं। मैं कहता हूं कि मैं कमरे से ही कहीं नहीं गया था, जबकि तुम और पुलिस यह कहती है कि मैं गया था।"

Baba Novels Chat Room

"ज्यादा लोग कहें तो मान लेना चाहिए।" खोजिया ने कॉफी उठाई। प्रभास खत्म भी कर चुका था। खोजिया उतनी भभकती कॉफी नहीं पीता था।

"आप कई मायनों में आम आदमी से हटकर हैं।" खोजिया ने हंसकर कहा।

प्रभास ने अपनी जेब से पुष्प निकालकर दिखाया तो आश्चर्य से खोजिया के नेत्र फैल गए।

"यह...यह फूल! दुर्लभ फूल! आपके पास...! इसका मतलब आप मंदिर तक गए थे।"

"मैं खुद नहीं समझ पा रहा हूं! मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा है।"

"असिस्टेंट से भी क्या छुपाना साहब!" खोजिया आहत भाव से बोला।

"मैं सच कह रहा हूं।" प्रभास गंभीर स्वर में बोला—"मैं खुद नहीं समझ पा रहा हूं कि मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है। यह आभास तो मुझे है कि मैं किले में मंदिर तक गया हूं, क्योंकि यह ताजा फूल वहां के सिवा कहीं नहीं मिल पाता, मगर हैरानी यह है कि मैं वहां पहुंचा कैसे, फिर मंदिर तक कैसे जा सका? वहां फोर्स थी तो मुझे रोका क्यों नहीं गया? कुछ वाकिया मुझसे मिस हो रहा है।"

"कहीं...कहीं अश्वत्थामा से भेंट तो नहीं हो गई। उससे मिलकर आदमी अंधे हो जाते हैं। पागल भी हो गए बताए जाते हैं। आपकी तो थोड़ी-सी मेमोरी हिली है।"

प्रभास ने आंखें तरेरकर उसे देखा तो वह परे देखने लगा। कॉफी उसने भी खत्म कर दी थी। खोजिया ने होंठ फैलाकर मुस्कराहट फेंकी।

"अब पुलिस स्टेशन चलते हैं। देखते हैं, क्या कहता है दरोगा।" प्रभास उठ खड़ा हुआ।

खोजिया ने उसका अनुसरण किया। दोनों जीप में बैठकर थाने पहुंचे और इंस्पेक्टर के सामने हाजिर हुए, जो उसे ही घूर रहा था।

"मार्निंग सर! मैं प्रभास टिचकुले फ्रॉम सेठी-24, दिल्ली।"

"जानता हूं। रात जान गया था। बहुत पहुंची हुई चीज हो। पहली बार जंगल में दाखिले के वक्त बहस कर रहे थे। मैंने नहीं जाने दिया, मगर तुम...तुम फिर भी किसी और रास्ते से अंदर गए और जब वापस आए तो इतने गहरे नशे में थे, फिर भी बाइक चला रहे थे। न कुछ सुन रहे थे और न कुछ बोल रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे किसी प्रेतात्मा का साया तुम्हारे ऊपर था।"

"कमाल है! और...और मुझे कुछ याद नहीं। सुबह से सोच-सोचकर परेशान हूं।"

"इससे भी बड़ा कमाल किया तुमने। किले पर फोर्स है। पूरी बटालियन है, पर किसी ने तुम्हें वहां आते या जाते नहीं देखा, दावे के साथ। तुम्हारी हालत

Baba Novels Chat Room

देखकर मैंने तुम्हारे एम्प्लॉयर को दिल्ली फोन लगाया और सारी बात बताई। उसने सुनकर फोन काट दिया और पांच मिनट बाद विधायक जी का फोन आ गया कि तुझे सुरक्षित होटल पहुंचाया जाए। हालांकि तुम खुद चले गए।"

"कमाल पर कमाल! साहब, फैंटम भी क्या करता होगा!" खोजिया हैरानी से बोला।

"तुमसे कुछ कहने-सुनने की मेरी मजाल नहीं।" इंस्पेक्टर बोला—"पर मेरे मन में कई प्रश्न घुमड़ रहे हैं जिनका जवाब सिर्फ तुम दे सकते हो। बैठ जाओ। चाय मंगाता हूं। चाय पीओ और मेरी जिज्ञासा शांत करो।"

प्रभास एक कुर्सी पर बैठ गया और खोजिया भी! तब प्रभास ने इंस्पेक्टर की नेम प्लेट पढ़ी—मुनेश्वर राठी!

"गाजियाबाद से हूं।" इंस्पेक्टर राठी ने बताया—"मामूली कोताही हुई थी तो यहां भेज दिया, इसलिए भी भाईबंदी बनती है।"

"थैंक्यू! पूछिए और कृपया कुछ बताइएगा भी।" प्रभास ने विनम्रता से कहा।

"पहले गोपीचंद जासूस से पूछता हूं।" राठी खोजिया की ओर मुड़ा—"तुम यहां के बारे में सब जानते हो, फिर भी इन्हें ऐसे हालात में अकेला क्यों जाने दिया?"

"ये मेरी गैर-मौजूदगी में गए थे, वरना मैं भी साथ होता।" खोजिया ने कहा।

"चूना नहीं लगाया इनको अभी तक?"

"लगाया था, पर चार घंटे में ही पोल खुल गई, फिर माफी मांगकर काम मांग लिया।"

"वह तुम्हारा पीर, बावर्ची, भिश्ती और जोड़ीदार कहां है, साथ नहीं है?"

"अब उसकी खास जरूरत नहीं थी। खाना होटल में, कपड़े लांड्री में! कमजोर दिल का प्राणी है। परसों रात साथ रहकर ही घबरा गया और बिना बताए कहीं चला गया।"

"तो ये भी अश्वत्थामा वाली स्टोरी को सच साबित करने आए हैं?"

"साबित क्या करना है।" प्रभास बोला—"कुछ प्रमाण तो हैं, जो झुठलाए नहीं जा सकते। मसलन, वहां मंदिर में हर रोज चार बजे पूजा तो कोई करता है। वे दुर्लभ फूल-पत्ते जो आम आदमी की पहुंच में नहीं, वहां रोज नए मिलते हैं। यह बात मेरे जैसे जर्नलिस्ट पहले ही सिद्ध कर चुके हैं। बस, अश्वत्थामा को किसी ने नहीं देखा और यह काम मैं करके दिखाऊंगा।"

"इन मिथकों पर मैं यकीन नहीं करता। भूत-प्रेतों पर करता हूं। यह भी किसी भूत-प्रेत का ही काम है। वे भोले के संगी-साथी भी हो सकते हैं और बिना दिखे ऐसे करतब कर सकते हैं। तुम्हारी जानकारी के लिए वह पूजा आज भी

Baba Novels Chat Room

वहां हुई थी। यह तब हुई थी, जब वहां सैकड़ों जवान मुस्तैदी से, इतना उजाला लेकर कि चिड़िया भी न छुपे, पहरा दे रहे थे। गिनती में एक सौ चवालीस लोग थे। दो-चार, दस-बीस लापरवाह भी हों तो सब तो नहीं हो सकते। बोलो, पूजा भूत करके गया न?"

"तो यह फूल भी मुझे भूत ही देकर गया होगा?" प्रभास ने फूल दिखाया तो राठी भी भौंचक्का-सा उसका मुंह देखता रह गया।

"बटालियन कहती है, मैं वहां नहीं गया और यह फूल कहता है कि मैं गया। मैं कहता हूं, नहीं गया, आप कहते हैं, गया। बड़ी उलझन है।"

"गए तो तुम हो! जब आए हो तो गए भी हो! मगर कहां से होकर? बाइक का कोई और रास्ता तो वहां है नहीं। यह भी सिद्ध हुआ कि वह न दिखने वाला पुजारी कोई आत्मा ही है, जो पूजा करने के बाद रास्ते में तुमसे टकराई और तुम्हें चेतावनी देते हुए मदहोश कर दिया और प्रमाण के लिए फूल जेब में रख दिया।"

"अब सब कह रहे हैं कि साहब गए थे तो गए थे।" खोजिया धीरे से बोला—"रास्ता एक और है। कठिन है, ऊबड़-खाबड़ है, आम आदमी मुश्किल से पैदल जा सकता है, बाइक का जाना मुश्किल है, पर साहब आम आदमी है कहां! ये तो सुपरमैन हैं। कल दिन में उस रास्ते का जिक्र-भर किया था, रात को इस्तेमाल भी कर लिया।"

राठी ने प्रभास को देखा तो उसने अनभिज्ञता में कंधे उचकाए।

"बहुत जर्नलिस्ट आए हैं यहां, इसी सिलसिले में। कई तो हमने बेहोश मंदिर से ही उठाए हैं। हम आठ बजे वहां जरूर जाते हैं। यह सोचकर कि जाने कौन दु:साहसी पहुंचा हो और अंटागाफिल पड़ा हो। तुम कुछ स्पेशल हो! भूत ने तुम्हें ऐसे ही छोड़ दिया। अब दोबारा उसके करीब भी मत फटकना। चाय पियो।"

प्रभास और खोजिया ने मेज पर रखे चाय के कुल्हड़ उठा लिये।

Baba Novels Chat Room

24

यार-मार राक्षस

"कंधे पर डाल इसे और बाहर चल। मैंने देखा है कि पिछला रास्ता डंपिंग ग्राउंड में खुलता है। कहीं भी कूड़े के ढेर में दबा देना। पता भी नहीं चलेगा।"

"मगर-मगर वह तो जिंदा है?" रमेश कंपकपाया।

"बेहोश है, मुर्दा बनाने में ज्यादा मेहनत न लगेगी। कर दे इसे मुक्त।"

लालच के मारे रमेश का अंग-अंग कांप रहा था, पर भविष्य के सुनहरे सपनों ने उसकी मति हर ली थी और उसके अंदर यार-मार राक्षस पैदा हो गया था। उसने बेहोश शिवली की गरदन दोनों हाथों से दबा ली।

Baba Novels Chat Room

सैयादी ने खाना टेबल पर रखा और मेकअप का सामान बैड पर।

"मैं जाऊं साहब?" रमेश ने पूछा।

"मैं जानता हूं कि तुम अपने साथियों जितने बेवकूफ नहीं हो।" सैयादी ने कहा–"तुम ढेर सारा पैसा कमाना चाहते हो। तुम्हें अपने परिवार की फिक्र है। जेब में कड़की है तो फिक्र क्या करेगी? कमाना चाहते हो दस लाख?"

रमेश ने शिव की तस्वीर उतारकर उसे अपने जूतों से चूर-चूर कर दिया।

"गुड! यह तुम पहले ही कर चुके थे। तुम्हारा उठा हुआ पैर मुझे साफ बता गया था। तुम्हें मैं यह मौका देना चाहता हूं। काम आज शुरू होगा। कल पांच लाख तुम्हें मिल जाएंगे। दो दिन में काम खत्म करना है। बाकी रकम तुम्हें मिल जाएगी। अभी आधा घंटा बाद आना। पिछले खुफिया रास्ते से निकलना है। दो घंटे बाहर घूमकर आना है। सारी बात समझा दूंगा।"

"ठीक है साहब! मेरे साथियों को शक होगा तो गड़बड़ हो जाएगी।"

"संभाल लेंगे। तुम्हारा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।"

रमेश खुश होता हुआ वहां से बाहर आया, जहां सामने खड़ा शिवली उसे घूर रहा था—"क्या कहा उस आतंकवादी ने! डोरे डालकर जमीर का कत्ल कर दिया?"

"क्या...क्या कह रहा है तू शिवली! तेरे सामने ही तो मामला खत्म हो गया था।"

"तब बस विराम लगा था। दो वोट एक तरफ थे तो तूने पाला बदला और उसने सुर बदला था, पर उसने तुझे, हममें से किसी को नहीं, सिर्फ तुझे दोबारा बुलाया और डील फाइनल हो गई। सोच...जो भगवान की तस्वीर जूते से कुचलने की शर्त रखता है, वह दस लाख में कोई खतरनाक काम ही कराएगा।"

"अरे, मेरी इस बारे में अब कोई बात नहीं हुई।" रमेश झुंझलाया—"अपना जासूसी दिमाग मत भिड़ा। इतना गया-गुजरा नहीं हूं मैं।"

"देख रमेश बरुआ! हम विद्रोही हैं और वह आतंकवादी है। हम इस मुल्क के अपने हैं और वह पराया है। उसे यहां कुछ खराब करने में मजा आएगा। हम ऐसा सोच भी नहीं सकते। हम केवल हक की लड़ाई लड़ रहे हैं, दहशत की नहीं।"

"शिवली! मेरे भाई! मेरा यकीन कर। मैं उस वक्त यह सोचकर लालच में आ गया था कि तूने उसे कहा था कि इतने पैसे के लिए तीनों कुछ भी कर सकते हैं। मैंने सोचा कि वह लालच तुम्हें भी था। मेरी गलती इतनी थी कि पैर मैंने पहले उठाया। हमीद उठा सकता था, मगर मैं जोश में आ गया। जब गलती समझ में आई तो लज्जित होकर पीछे हटा न! अब तू दिमाग रखता है तो इतना समझ सकता है कि जो बात खुलने का डर हो, उसे मैं कैसे मान सकता हूं?"

"अच्छी बात है। देख, उसने जो बाद में कहा, भले ही खुद को बड़ा धर्म निरपेक्ष सिद्ध करने के लिए, मगर सच कहा। धर्म से धन तब बनता है, जब जमीर मर जाता है। हम लोग वैसे भी कम पापी नहीं हैं, इस तरह के लालच हमारा और अधिक पतन कर देते हैं।"

"यार! मैं क्या इतनी बात भी नहीं जानता हूं? तू मेरा भरोसा कर।"

"अब अकेला उसके पास मत जाना। हम तेरे साथ चलेंगे।"

"ठी...ठीक...ठीक है।" रमेश अंदर-ही-अंदर हिल गया—"चल खाना खाते हैं।"

दोनों खाने के लिए चल पड़े। वहां उन सहित बारह आदमी और थे। खाना लेकर रमेश एक ओर बैठ गया, मगर कौर बड़ी मुश्किल से उसके हलक में जा रहा था। उसे कल मिलने वाला पांच लाख रुपया हाथ से फिसलता नजर आ रहा था जिसका कि भविष्य में इस्तेमाल भी उसने सोच लिया था। दोनों बहनों की शादी के लिए घर पैसा भेज देना था। मां की आंखों का ऑपरेशन करा देना था! मुखिया के पास बंधक

Baba Novels Chat Room

पड़ी ढाई बीघे जमीन वापस लेनी थी। काम कई थे और रुकावट एक थी। उसने जैसे तैसे खाना खाया, तभी फोन पिक-पिक करके बोल उठा। उसके समीप ही शिवली बैठा खाना खा रहा था। उसने उसे रिसीव किया। दूसरी ओर सैयादी ही था।

"रमेश को भेजो।" उसने इतना ही कहा था और फोन काट दिया।

शिवली ने खाना खाकर रमेश को चलने का इशारा किया। रमेश व्याकुल भाव से उसके साथ चल दिया। दोनों गुप्त रास्ते से नीचे तहखाने में पहुंचे और उस कमरे मे पहुंचे तो चौंक उठे। वहां सैयादी के कमरे में कोई और ही बैठा था। क्लीनशेव्ड, गोरे-चिट्टे रंग का वह आदमी पहले तो मुस्कराया था, फिर शिवली को घूरने लगा था। शिवली की नजर कमरे की दीवार पर वहां टिकी, जहां शिव की तस्वीर लगी थी। अब तस्वीर वहां नहीं थी। सब माजरा साफ हो गया। रमेश थूक गटक रहा था।

"मैंने केवल रमेश को बुलाया था। तुम क्यों आए?" बहुरूपिया गुर्राया।

"क्या कहना चाहते हो तुम? एक रमेश ही काम का नहीं है।" शिवली बोला—"पैसे मुझे भी बुरे नहीं लगते।"

सैयादी ने अचकचाकर रमेश को देखा जिसने आंखों से संकेत कर दिया कि अब मामला बिगड़ गया था। सैयादी खतरनाक खिलाड़ी था। इतनी जल्दी झांसे में आने वाला नहीं था। वह बिल्ली की तरह शिवली पर झपटा और उसे दबोचकर उसकी कनपटी की कोई नस दबा दी तो वह कटे वृक्ष की तरह गिर पड़ा।

"यह...यह क्या किया? म...मर गया?" रमेश के नेत्र फैल गए।

"अभी बेहोश है।" सैयादी सहज भाव से बोला—"अब सारी बात बता। वैसे तो मैं समझ गया कि इसे तेरे पर शक हो गया है। क्या कह रहा था?"

रमेश ने सारी बात बता दी, सुनकर सैयादी गंभीर हो गया।

"इसीलिए तो ऐसे लोग प्यादे ही बने रहते हैं और दहलावर को कभी कोई बड़ी कामयाबी नहीं मिली। ऐसे लोग क्या खाक डर फैलाएंगे, जो खुद से ही डरते हैं।"

"अब क्या करें, यह तो होश में आते ही शोर मचाएगा?"

"तू सोच। खतरा तेरे लिए है। इसे होश में आने देगा?"

"साथी इसके बारे में पूछेंगे और हमीद तो जानता भी है।" रमेश कांपा।

"अभी हम बाहर जा रहे हैं। यहां मेरे बुलाए बिना तो कोई नीचे नहीं आ सकता। मैं फोन कर देता हूं कि हम बाहर जा रहे हैं। वापस आने पर बोल देना कि शिवली को किसी काम से दहलावर ने कहीं भेजा है। दहलावर को मैं समझा दूंगा।"

"अब...अब इसका क्या करें?" रमेश कंपकंपाया।

"कंधे पर डाल इसे और बाहर चल। मैंने देखा है कि पिछला रास्ता डंपिंग ग्राउंड में खुलता है। कहीं भी कूड़े के ढेर में दबा देना। पता भी नहीं चलेगा।"

Babe Novels Chat Room

"मगर-मगर यह तो जिंदा है?"

"बेहोश है, मुर्दा बनाने में ज्यादा मेहनत न लगेगी। कर दे इसे मुक्त।"

रमेश कांप रहा था, पर भविष्य के सुनहरे सपनों ने उसके अंदर यार-मार राक्षस पैदा कर दिया था। उसने बेहोश शिवली की गरदन दोनों हाथों से दबा ली।

सैयादी उस दृश्य का इस प्रकार आनंद ले रहा था, जैसे यह उसके लिए मामूली खेल था। शिवली बेहोशी में हाथ-पैर मारकर ठंडा हो गया था।

"गुड! असल में इस फील्ड में तुम्हारे जैसे ही लोगों की जरूरत है। अगर चाहो तो तुम मेरे साथ उत्तर कोरिया चलना। कुछ ही दिनों में पैसा और नाम दोनों तुम्हारे आगे बिछे होंगे। जब जमीर मरा है तो पीछे मुड़कर क्या देखना। प्यादे क्यों, बादशाह बनो। दहलावर के बाद इस संगठन के सुप्रीमो बनो।" सैयादी ने इंटरकॉम उठाकर ऊपर फोन किया–"हम लोग बाहर जा रहे हैं। दो घंटे में लौट आएंगे।"

फोन रखकर सैयादी ने रमेश को इशारा किया। रमेश ने लाश को कंधे पर डाला। तहखाने में एक दीवार में ऊपर की ओर जाती सीढ़ियां थीं। दोनों उन पर चढ़ गए। सीढ़ियों के अंतिम छोर पर एक लीवर था जिसे सैयादी ने घुमाया तो तीन बाई तीन का झरोखा पैदा हुआ। दोनों उससे बाहर होते हुए आए तो खुद को कूड़े के पहाड़ के पीछे पाया। लाश को उन्होंने मुनासिब जगह ठिकाने लगाया। अभी आठ ही बजे थे और यह वक्त ऐसे शहर में जीवंतता का होता है।

"ह...हमें कहां जाना है?" रमेश ने पूछा।

"पहले यह बता कि तू पुलिस में वांटेड तो नहीं? कोई तुझे देखते ही पुलिस तो न बुला लेगा?"

"यहां मुझे कोई नहीं जानता। राजसमंद में जरूर मेरा पुलिस रिकॉर्ड है। यहां तो मैं इस गोदाम का सिक्योरिटी गार्ड-भर हूं।" रमेश ने बताया।

"गुड! यहां नदी के किनारे कोई देखने लायक, मन को शांति देने वाला, भव्य मंदिर है। मैं वहां दर्शन करने जाना चाहता हूं। अपने पाप की क्षमा मांगनी है।"

"शि..शिव मंदिर।" रमेश मन-ही-मन कांप गया। तस्वीर तक तो ठीक था मगर कहीं वह विदेशी आतंकी उस मंदिर को तो निशाना नहीं बना रहा है और उसे भागीदार बना रहा हो–"अ...आप मंदिर...?"

"मजबूत बन। बस तूने शिवली के हिस्से के दस लाख भी कमा लिये हैं।"

रमेश बरुआ की आंखों में लालच की चमक दुगनी हो गई थी। कुछ भी करे वह आतंकी। बीस लाख में तो वह कुछ भी करने को तैयार था। दस लाख और कमाने की कुटिल योजना के साथ हमीद का चेहरा भी उसकी आंखों में तैर गया।

Baba Novels Chat Room

25

इंटरनेशनल डेस्ट्रॉय स्क्वायड

छोटा राजन ने जब पहली बार उसे देखा तो वह इतना काइयां नहीं लगा था, पर अब वह दिखा रहा था, जो दिखता है, वह कई बार सच नहीं हो सकता। वह फिर भी बुद्धू था जरूर, क्योंकि वह गटर में खुले मैनहोल के कहीं करीब ही था, बस भटक गया था, वरना उसके मोबाइल का नेटवर्क न मिल रहा होता।
उसने अपने आदमियों को फोन करके वस्तुस्थिति समझाई और होटल के आसपास के चार-छह मैनहोल खोल देने को कहा। एमेले वहीं-कहीं था, क्योंकि पार्क में ही शहर के गटर का तीसरा बड़ा जंक्शन था।

Baba Novels Chat Room

हाफिज सईद केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं, बिजनेसमैन भी था। उसने इंडिया के बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट को नेस्त-ओ-नाबूद करने के लिए अबू सैयादी के माध्यम से दो सौ करोड़ में एक इंटरनेशनल डेस्ट्रॉय स्क्वायड को हायर किया था और चंदे के माध्यम से तीन सौ करोड़ तो आतंकी संगठनों से ही हासिल कर लिये थे। इसके अलावा भी उसने पाकिस्तान सेना प्रमुख को इंडिया को नीचा दिखाने का सब्जबाग दिखाकर दो सौ करोड़ की टैरर फंडिग हड़प ली थी। इसके साथ ही उसने भारतविरोधी अपने धनाढ्य समर्थकों से भी काफी माल पीट लिया था।

सईद ने अपने समर्थकों से कहा था—"अल्लाह मेहरबान हुआ तो इंडिया की बुलेट ट्रेन कभी जमीन पर नहीं उतरेगी और एक ही धमाके से उसकी

कील-कील बिखर जाएगी। देखना इंडिया-जापान फिर कभी ऐसा प्रोजेक्ट मिलकर नहीं बनाएंगे, जो हमारा कलेजा फूंके। बस, दरकार है तो इस मिशन पर खर्च होने वाले पैसे की। बड़ा मिशन है तो बड़ा खर्च तो चाहिए ही। हमारी पाई-पाई भी इस मिशन में चुक जाए तो उज्र नहीं, पर अफसोस कि हमारा पैसा इस मिशन के लिए पूरा नहीं पड़ेगा। आप जैसे जायदादमंदों से उम्मीद है कि इस मिशन के लिए कुछ-न-कुछ, पांच या दस करोड़ तो जुटाएंगे ही।"

इस धूर्तता से भी उसने सवा सौ करोड़ रुपये जमा कर लिये थे और कुल मिलाकर चार सौ करोड़ से भी ज्यादा अपनी जेब में रख लिए थे। हालांकि वह इस मिशन पर, जरूरत पड़ती तो, उनमें से आधे खर्च करने को तैयार था।

हाफिज सईद वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए डेस्ट्रॉय स्क्वायड के हैड से बात कर चुका था। वह कोई अफ्रीकन मूल का हब्शी गियागो नेशम था जिसने इस तरह का एक संगठन बनाया था, जो मुंहमांगी कीमत लेकर किसी भी देश के लिए किसी भी देश में बड़े प्रोजेक्ट्स ब्लास्ट करता था।

इस संगठन में लगभग दो सौ लोग थे और इनमें लगभग सभी देशों के लोग शामिल थे। गियागो इस स्क्वायड का सुप्रीमो था और तकनीक, प्लानिंग आदि से सुसज्जित था। उसने सईद से दावा किया था कि वह मुंहमांगी कीमत पर इस कठिन काम को अंजाम दे सकता है, क्योंकि उसके पास ऐसी टीम है, जो इन कामों की स्पेशलिस्ट है।

सैयादी ने भी दावा किया और यहां तक कहा कि मिशन अपेक्षित तरीके से पूरा न होने पर या आधा-अधूरा होने पर उसका पैसा वापस किया जाएगा। सईद ने गियागो को वह कॉन्ट्रैक्ट दे दिया था।

अब सईद की जानकारी के मुताबिक डेस्ट्रॉय स्क्वायड की टीम उस मिशन की तैयारी कर रही थी। पूरे सिस्टम की रैकी की जा रही थी। गोटें फिट की जा रही थीं। सईद को लगातार रिपोर्ट मिलती रहती थी और वह संतुष्ट था। उसी समय अंतर्राष्ट्रीय दबाव में आकर सईद को उसकी सरकार ने आतंकी स्वीकार करके गिरफ्तार कर लिया।

यद्यपि सईद जानता था कि उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा और यह अमेरिका जैसे आका को संतुष्ट करने का ढोंग-भर था। उसे कोर्ट ने नजरबंद करने का हुक्म सुनाया। वह पाकिस्तान से, अपने घर से बाहर नहीं जा सकता था, पर उसने कभी इस अदालती आदेश का पालन नहीं किया।

गियागो नेशम! अफ्रीकन नीग्रो! इंटरनेशनल डेस्ट्रॉय स्क्वायड का कर्ता-धर्ता। वह शक्ल से ही खूंखार और क्रूर नजर आता था। तवे के रंग जैसे काले मुंह

Baba Novels Chat Room

पर उसकी हरी आंखें खौफनाक लगती थीं। शरीर से बेहद बलिष्ठ गियागो हमेशा फाइव सूट में लकदक रहता था।

इस वक्त गियागो समुद्र की छाती पर तैर रहे अपने विशाल और भव्य याट के एक विलासितापूर्ण केबिन में बैठा था। उसके सामने दो आदमी बैठे थे। एक उसका राइटहैंड और सगा भाई डियागो था, जो काफी हद तक शक्ल-सूरत और कद-काठी में उसके जैसा ही था। बस आंखों के रंग में फर्क था। डियागो की आंखें गहरी काली और उसकी त्वचा से मैच करती हुई थीं।

दूसरा आदमी मिंजो कोक्को था। मिंजो एक स्पेशलिस्ट इंजीनियर था, जो चार साल पहले तक जापान के इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स का चीफ इंजीनियर था, मगर उसे अपनी नौकरी से तब हाथ धोना पड़ा, जब वह कोकीन का शौकीन बन गया। मजे की बात यह थी कि वह आज तक नहीं जान पाया था कि जिसने उसे कोकीन की लत लगाई थी, वह आदमी उसके सामने बैठा था। गियागो दि ग्रेट! उसने दुनिया-भर से ऐसे कई स्पेशलिस्टों को इसी तरह के हथकंडों से काबू में किया हुआ था।

मिंजो को कोकीन के बाद जो बड़ा चस्का लगा, वे अफ्रीकन बालाएं थीं... कामुकता की पराकाष्ठा प्राप्त दक्ष ब्लैक ब्यूटी!

दोनों ही चीजें आसानी से गियागो उपलब्ध करा देता था, इसलिए मिंजो उसका गुलाम था।

"इंडो-पाक!" गियागो ने उसे समझाना शुरू किया—"हमारे बिजनेस के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कंट्री है। इंडिया से हमें कभी कोई ऐसा डेस्ट्रॉय कॉन्ट्रैक्ट नहीं मिला, मगर इंडिया में डेस्ट्रॉय करने के कई कॉन्ट्रैक्ट हम हैंडिल कर चुके हैं, कामयाबी से अंजाम दे चुके हैं। पाकिस्तान हमें अपने पड़ोसी मुल्कों में विध्वंस करने के लिए कॉन्ट्रैक्ट देता ही रहता है। हम अभी तक अपने एक भी टार्गेट को हिट करने से नहीं चूके। हमारा सक्सेस रेट हंड्रेड पर्सेंट है, इसलिए इस बार हमें बड़ा कॉन्ट्रैक्ट मिला है और यह हमें हिट करना है।"

मिंजो कोक्को सचेत होकर बैठ गया।

"तुम पॉप स्टार नाजोमी के दीवाने हो!" गियागो ने उसकी नस थामी—"जानते भी हो कि वह 'वर्जिन गर्ल' बस स्क्रीन और तस्वीरों में ही चूमने को मिलती है, मगर तुम्हारे लिए...तुम्हारे लिए उसे हम उपलब्ध करा सकते हैं। ऐसे ही एक प्राइवेट याट में, जिसमें सिर्फ तुम दोनों होंगे और वह अटलांटिक महासागर तक तैरता जाएगा।"

मिंजो कोक्को का जिस्म तनकर उस रंगीन सपने को महसूस कर उठा।

Baba Novels Chat Room

"मगर इस दुनिया में ऐसे असंभव ख्वाब आसानी से पूरे नहीं होते। खुद को सिद्ध करना पड़ता है। इनके बीच कोई जरा-सी भी दीवार नहीं आनी चाहिए।"

"क्या...क्या करना है?" मिंजो प्रत्याशा से थरथराया।

"इन दिनों इंडो-जापान के रिलेशन ज्यादा ही प्रगाढ़ हो रहे हैं। पहले भी थे, अब ज्यादा हैं। एशिया में यह गठजोड़ हमारे लिए भी परेशानी का कारण बनेगा, वह बाद की बात है। अभी पाकिस्तान को सबसे ज्यादा प्रॉब्लम हो रही है, क्योंकि हाइटेक जापानी टेक्नोलॉजी उसके घोर शत्रु इंडिया को निरंतर उन्नत करे तो उसका कलेजा फुंकता है।"

"फुंकता भी रहना चाहिए, वरना हमारे बिजनेस को कहां से खाद-पानी मिलेगा। हम तो टिके ही ऐसे ईर्ष्यालु देशों के ऊपर हैं।" मिंजो कुटिलता से बोला—"काम क्या है?"

"जापान ने अपनी टेक्नोलॉजी से इंडिया को बहुत से ऐसे प्रोजेक्ट दिए हैं जिनसे इंडिया का डेवलप रैपो ऊपर आता जा रहा है। मेट्रो प्रोजेक्ट ऐसा ही एक प्रोजेक्ट था, जिसने इंडिया के महानगरों में ट्रांसपोर्टेशन को फीलगुड बना दिया है।" गियागो ने बताया—"जहां तक हमारी जानकारी है, उस प्रोजेक्ट को धरातल पर उतारने में तुम्हारी बड़ी भूमिका रही है, फिर कमबख्त कोकीन ने तुम्हें नाकारा कर दिया और तुम अपनी सरकार के किसी काम के न रहे। इलाज से पहले ही तुम फ्रांस भाग आए और वहां हमारे लोगों को मिले। मैंने तुम्हारी विलक्षण प्रतिभा को पहचाना। कोकीन तुम्हारे इंजीनियरिंग माइंड को और भी शार्प कर रही थी, यह बात तुम्हारे अपने लोग न समझ सके। मैंने समझा और आज उसे सच साबित करने का वक्त भी आ गया है। कर सकोगे?"

"मेट्रो प्रोजेक्ट को डेस्ट्रॉय करना है।" मिंजो ने सोचने के अंदाज में कहा—"बहुत कठिन काम है, पर इतना भी नहीं कि असंभव हो। तरीके से, प्लानिंग से और टीमवर्क से काम किया जाए तो इतना कठिन भी नहीं है।"

"मेट्रो अब पुरानी बात हो गई है। बहुत फैल भी गई है। ज्यादा जांमारी करनी पड़ेगी। अब नया प्रोजेक्ट बुलेट ट्रेन है। फर्स्ट स्टेज में है। दो शहरों में अभी प्वाइंटेड भी है। तुम दोनों ही जगह काम कर चुके हो और वहां के सिक्योरिटी सिस्टम की जानकारी रखते हो। बहुत बारीकी से उसे प्वाइंट-टू-प्वाइंट लिखकर दो। लूपहोल को मार्क करना और जो भी बात हमारे काम की हो, उसे अलग से नोट करना। तुम यह काम करके हटोगे तो डियागो तुम्हें नाजोमी के इतने करीब छोड़कर आएगा कि उसकी गर्म सांसें तुम्हारी नाक पर पसीने की बूंदें ला देंगी। मजे की बात यह होगी कि वह तुम्हें फुल सपोर्ट करेगी।"

"मैं...मैं करता हूं।" मिंजो हड़बड़ाया—"पर ग्रेट गियागो! इतना अभी बता देता हूं कि दोनों टार्गेट हाइटेक सिक्योरिटी से मिशन को इंपोसिबल बनाते हैं। वजह जापान भी है जिसने हाइटेक सिक्योरिटी टेक्नोलॉजी इंडिया को दी है।"

"मिंजो! इंपोसिबल तो नाजोमी भी है। ग्रेट गियागो ने उसे पोसिबल बना दिया है—अपने मिंजो की सबसे बड़ी ख्वाहिश को पूरा करने के लिए। अब मिंजो का क्या फर्ज बनता है? इस सेवा के बदले बस दिमाग को शार्प करना है, कागज पर उतारना है। जो इतना भी नहीं कर सकता, वह नाजोमी के साथ क्या कर सकता है!"

"करूंगा न ग्रेट गियागो!" मिंजो जोश से बोला—"अपनी उस इंसल्ट का रिवेंज भी तो लेना है, जो जापान ने की है। मामूली गलती पर मेरे को जॉब से ही नहीं निकाला, बल्कि ड्रग एडिक्ट भी घोषित कर दिया। मुझे प्रोजेक्ट से निकाल दिया।"

"गुड! तुम मेरी इस चेयर पर बैठकर अपना दिमाग दौड़ाओ, कोई प्वाइंट छूटना नहीं चाहिए। यह भी सोचना कि हम किस तरीके से टार्गेट हिट कर सकते हैं।" गियागो चेयर से उठकर खड़ा हो गया।

"आपकी चेयर पर ग्रेट गियागो! इतना सम्मान...मैं विश्वास नहीं कर पा रहा हूं।"

"तुम इस सम्मान के योग्य हो। कोई भी चेयर तुम्हारे टेलेंट के आगे बौनी है।" गियागो ने उस सनकी हो चुके ड्रग एडिक्ट, वुमैन ईटर को शीशे में उतार दिया था।

Baba Novels Chat Room

छोटा राजन अपने आपको सचमुच का 'छोटा राजन' ही समझता था। जब से मुंबई गैंगस्टर छोटा राजन फ्रेम से दूर हुआ था, तब से राजन ओराव ने खुद को छोटा राजन कहना शुरू कर दिया था।

दहलावर ने उसे बुरहानपुर में प्रॉपर्टी के बिजनेस की ओट देकर वास्तव में उगाही का काम सौंप रखा था।

नक्सलाइट फील्ड में छोटा राजन का कोई काम नहीं था, फिर भी वह समझता था कि दहलावर के गैंग को आर्थिक सुदृढ़ता उसके ही कारण मिलती थी। वह पहले, पूर्व विधायक का खासमखास था तो शहर के बारे में अच्छी जानकारी रखता था।

अब जबकि किस इंडस्ट्रियलिस्ट से कितना माल निकालना है, वह अच्छी तरह जानता था। जब बीहड़ में बड़ी कार्रवाई हुई तो वह चिंतित हो उठा। ऐसी

बड़ी कार्रवाई जब भी होती थी, तब नक्सलवाद की कमर तोड़ देती थी जिसे फिर से खड़ा करने में बड़ा पैसा और वक्त लगता था। इस बार तो किसी कमीने ने बहुत बड़ी विपदा का रुख उनकी ओर मोड़ा था।

दहलावर बहुत क्रोध में था, क्योंकि इस मामले में एप्रोच भी किसी काम नहीं आ रही थी। पूर्व विधायक ने तो स्पष्ट ही कह दिया था कि यह कार्रवाई सीधे दिल्ली से हुई है।

"दहलावर!" विधायक दांत पीसकर बोला था—"किसने कहा था तुझे इतने बड़े आतंकी को यहां बुलाने को? तूने कोई कश्मीर जैसा आतंकवाद उठाना था। तुम्हारा धंधा बड़ा अच्छा चल रहा था। कमाई भी हो रही थी और दहशत भी कायम थी। तू अब देश को समझ क्या रहा है! अब पहले जैसा गैंग कल्चर नहीं रह गया। देश का एंटी-टैरर सिस्टम मजबूत हो गया है। अब तो आम आदमी भी छोटे-मोटे गुंडे-बदमाश से नहीं डरता। जितना बना रखा था, उससे ही सब्र कर लेता। तू क्या समझता है कि नक्सलवाद से हम सरकार को झुकाकर गांव-गांव सुविधाओं का जाल बिछाने की मुहिम छेड़े हुए हैं। अरे, यह राजनीति है। वोट बैंक को बनाए रखने की राजनीति।"

"नेताजी!" दहलावर सख्त स्वर में बोला—"सैयादी से हमने अत्याधुनिक हथियार लिये हैं और हमारे आदमियों को उन्हें चलाना सीखने के लिए किसी ट्रेनर की जरूरत थी। इत्तेफाक से सैयादी ने इंडिया आना कुबूल किया तो मुझे कोई हर्ज नहीं दिखा। प्रॉब्लम संयोग से बनी है। आप इसमें थोड़ी मदद करते तो अच्छा रहता।"

"मैं क्या कर सकता हूं...मामला स्थानीय होता तो मैं आंच न आने देता, पर अब बात दिल्ली से चली है। होम मिनिस्ट्री का मिशन है और वह सैयादी की गिरफ्तारी या मौत के बाद ही खत्म होगा। इसमें तेरी गलती की वजह से नक्सलाइट को जो नुकसान होगा, उसका खामियाजा तू ही भुगतेगा और नुकसान तू जानता है कि कितना होगा।"

दहलावर ने फोन रख दिया था। कुछ और दो चार-नेताओं को फोन किया तो किसी ने तो फोन ही न उठाया और किसी ने कोई उम्मीद न जताई। लिहाजा वह उस आदमी को कोसने लगा जिसने उसके सामने ऐसा संकट खड़ा किया था। उसने छोटा राजन को सख्त हिदायत दी कि उस कमीने को ढूंढकर तड़पा-तड़पाकर मार दिया जाए और उसका सिर काटकर चौराहे पर लटका दिया जाए।

छोटा राजन इस दिशा में कोई कदम उठाता, उससे पहले ही एमेले का फोन आ गया, जिसने उस बारे में जानकारी देने की बात कही तो उसने उसे अपने

Baba Novels Chat Room

ऑफिस पर बुला लिया था, जिसका वह बहुत देर तक इंतजार करते-करते भन्ना गया था। उसने फिर दो आदमी भेजे और खास तौर से कहा कि एमेले जहां भी मिले, उसे दो हाथ जमाकर लाया जाए। वे आदमी अभी तक नहीं लौटे थे। तब उसने फिर एमेले को फोन मिलाया और कई बार मिलाने पर भी फोन 'आउट ऑफ रीच' ही रहा।

"कहां मर गया साला! बस बता देता कि वह आदमी कौन है जिसने हमारा काम बिगाड़ा!"

कुछ देर बाद एमेले का ही फोन आया, जो बहुत घबरा रहा था।

"कहां मर गया था तू? फोन क्यों नहीं लग रहा?"

"राजन साहब, मेरे पीछे गुंडे पड़े हैं। लगता है, उस आदमी ने ही लगा दिए हैं। उसे शक हो गया लगता है। मेरी जान खतरे में है।" एमेले ने बताया–"मेरे बारे में पूछताछ करते फिर रहे हैं। मुझे बहुत डर लग रहा है।"

"अबे, हमारे होते किसकी मजाल है, जो तेरा बाल भी बांका कर सके। तू उनके सामने जा और बोल कि तू छोटा राजन के लिए काम करता है, फिर तेरी तरफ कोई तिरछी निगाह से देख भी नहीं सकता। अच्छा! तू मुझे उस आदमी का नाम बता जिसने हमारे खिलाफ ऐसी बड़ी कार्यवाही करने में सरकार की मदद की है।"

"राजन साहब! मैं भारी मुसीबत में फंस गया हूं। गटर में छुपा बैठा हूं। सुबह से पहले यहां से निकलूंगा नहीं। अपनी जान मुझे बहुत प्यारी है। अब आप ही मुझे बचा सकते हैं और मैं वह नाम तब तक आपको नहीं बता सकता, जब तक आपकी शरण में नहीं पहुंच जाता।"

छोटा राजन ने असहाय भाव से गरदन हिलाई।

"तू कहां और किस शहर में है। मैं अपने आदमी वहां भेजता हूं।"

"यह मुझे क्या पता! गटर में घुसा तो होटल लवली पैलेस के सामने वाले पार्क में खुले पड़े मैनहोल से था, मगर नीचे तो इतने रास्ते थे कि मैं बौखला गया। बचने के लिए इधर-उधर भाग गया और अब कहीं निकलने का रास्ता नहीं दिख रहा है। यहां की बदबू मेरी जान ले लेगी। मुझे बचाओ साहब! मुझे किसी तरह यहां से निकालो। घुटनों तक गंदगी में दौड़ते-दौड़ते हालत खराब हो गई है।"

"तेरा यही हाल होना चाहिए। अब तूने वहां से निकलना है तो केवल मैं ही तुझे निकाल सकता हूं, पर अब शर्त यह है कि तू उस आदमी का नाम बताएगा, तब मैं अपने आदमी भेजकर यहां-वहां मैनहोल के ढक्कन हटवाऊंगा और शायद तू बाहर निकल पाए।"

Baba Novels Chat Room

"नहीं, पहले ढक्कन हटवाओ। मैंने नाम बता दिया तो फिर मैं आपके किस काम का! अब इतनी समझ तो मुझे आ गई है साहब! बड़े लोगों की मेहरबानी तब तक रहती है, जब तक आदमी काम का होता है। काम निकला तो खल्लास।"

छोटा राजन ने जब पहली बार उसे देखा तो वह इतना काइयां नहीं लगा था, पर अब वह दिखा रहा था, जो दिखता है, वह कई बार सच नहीं हो सकता। वह फिर भी बुद्धू था जरूर, क्योंकि वह गटर में खुले मैनहोल के कहीं करीब ही था, बस भटक गया था, वरना उसके मोबाइल का नेटवर्क न मिल रहा होता।

उसने अपने आदमियों को फोन करके वस्तुस्थिति समझाई और होटल के आसपास के चार-छह मैनहोल खोल देने को कहा। एमेले वहीं-कहीं था, क्योंकि पार्क में ही शहर के गटर का तीसरा बड़ा जंक्शन था। इधर से उधर जाती सुरंगें! उसने वक्त देखा, रात के नौ बज रहे थे। जल्दी ही एमेले काबू में आ जाने वाला था।

Baba Novels Chat Room

26

प्रेम और अहिंसा का संदेश

"भगवन्! भगवान बुद्ध ने कहा है कि शांति की स्थापना और प्रेम का प्रसार करने के लिए समय प्रतिकूल नहीं होता। यह तो इनके विपरीत विकारों की प्रबलता है, जो यह दर्शाती है कि परिस्थितियां अनुकूल नहीं हैं। इनसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती। इसका प्रमाण भगवान बुद्ध ने दस्युं अंगुलिमाल के प्रकरण में दिया है। वह दस्यु भी तो शांति, अहिंसा और हस्तक्षेप नहीं चाहता था, परंतु निर्भय भगवान ने उसके प्रतिबंधों को अस्वीकार कर दिया और उसके भय से आच्छादित सीमा रेखाओं को पार किया।"

Baba Novels Chat Room

सांग-सी का बौद्ध दर्शन प्रभावी रहा था। वह अपने विचारों से लगभग एक दर्जन बौद्ध भिक्षुओं को अपने मत में ला चुका था। सबने एकमत होकर स्वीकार किया था कि बुद्ध की शिक्षा किसी सीमित एकांत स्थान में साधना करने और स्वमुक्ति के लिए नहीं थी, बल्कि प्रेम और अहिंसा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाकर शांति की स्थापना के लिए थी। यह जन-जन मंदिरों, मठों में नहीं रहता। यह कभी-कभी अपने कामों से वक्त निकालकर आता है। अतः बुद्ध के अनुयायी ही मठों से निकलकर जन-जन तक जाकर शिक्षा का प्रसार करें। यही विचारकर सांग-सी के साथ छोटा-सा भिक्षु समूह मठाधीश की आज्ञा लेने पहुंचा।

सांग-सी सहित सभी ने आदर से नतमस्तक होकर मठाधीश को प्रणाम किया। मठाधीश ने बुद्धमुद्रा में आशीर्वाद दिया।

"भगवन्! हम सब शिष्यों ने बुद्ध की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का विचार-प्रस्ताव स्वीकार किया है।" सांग-सी ने हाथ जोड़कर कहा—"जो साधारण गृहस्थ अपने गृह-दायित्वों के कारण अति व्यस्त रहते हैं, हम उनके पास जाकर उन्हें प्रेम और अहिंसा का पाठ पढ़ाने का सफल प्रयास करना चाहते हैं।"

"बुद्धं शरणम् गच्छामि! बहुत सुंदर प्रस्ताव है। भगवान बुद्ध के सच्चे अनुयायी उनकी शिक्षा और उपदेशों को हृदय में धारण कर उनसे समस्त समाज को लाभान्वित करने का प्रयास करते आए हैं।" मठाधीश ने कहा—"हमें प्रसन्नता हुई, परंतु एक प्रश्न का उत्तर हम अवश्य जानना चाहते हैं भंते!"

"अवश्य भगवन्! हम अपने ज्ञान की सामर्थ्य के अनुसार आपको संतुष्ट करने का प्रयास करेंगे।" सांग-सी ने विनीत स्वर में कहा।

"आप सब लोग किस देश में यह कार्य करना चाहते हैं?"

"भगवन्! हम किसी देश विशेष के बंधन में नहीं पड़ना चाहते। हमारा कर्मक्षेत्र तो समस्त संसार है। हमें भगवान बुद्ध ने किसी भेद-भाव या पक्षपात से दूर रहने का संदेश दिया है। हमें अपनी यात्रा वहीं से प्रारंभ कर देनी चाहिए, जहां से सद्विचार उठते हों।" सांग-सी ने कहा तो उसके साथ के अन्य भिक्षुओं ने प्रशंसात्मक दृष्टि से देखा, जबकि मठाधीश की मुख-मुद्रा गंभीर हो गई।

"भंते! समय प्रतिकूल है। परिस्थितियां विपरीत हैं। दुर्भाग्य से सत्ता-लोलुपता ने इस द्वीप में अशांति उत्पन्न कर दी है। शासक मतिभ्रष्ट हो रहे हैं। उनकी हठधर्मिता ने शांति प्रयासों को अवांछित घोषित कर रखा है। संभवतः हमारे प्रयास को राजनीतिक हस्तक्षेप कहकर अस्वीकार कर दिया जाए और बलपूर्वक हमें सीमित कर दिया जाए।"

"भगवन्! भगवान बुद्ध ने कहा है कि शांति की स्थापना और प्रेम का प्रसार करने के लिए समय प्रतिकूल नहीं होता। यह तो इनके विपरीत विकारों की प्रबलता है, जो यह दर्शाती है कि परिस्थितियां अनुकूल नहीं हैं। इनसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती। इसका प्रमाण भगवान बुद्ध ने दस्यु अंगुलिमाल के प्रकरण में दिया है। वह दस्यु भी तो शांति, अहिंसा और हस्तक्षेप नहीं चाहता था, परंतु निर्भय भगवान ने उसके प्रतिबंधों को अस्वीकार कर दिया और उसके भय से आच्छादित सीमा रेखाओं को पार किया।"

मठाधीश आश्चर्य से उस युवा मुमक्षु को देखते रह गए, जिसकी वाणी पर जैसे स्वयं बुद्ध विराज रहे थे। जिसकी वाणी में प्रबल आकर्षण था।

"भगवन्! हमें भगवान बुद्ध की भांति ज्ञान-प्राप्ति के लिए कठोर तप की आवश्यकता नहीं है। यह उपकार तो तथागत हम पर कर गए हैं। ज्ञान और सत्य का अनुभव उन्होंने अपनी परंपरा में वितरित कर दिया। हमें किसी दूसरे बुद्ध की

Baba Novels Chat Room

आवश्यकता नहीं, क्योंकि बुद्ध तो एक ही हैं। हमारी आवश्यकता बुद्धत्व को ग्रहण करके उसे प्रकीर्णित करने की है।"

"भंते! तुम्हारी वाणी में बुद्धत्व का सार परिलक्षित हो रहा है। अहा, कितना आनंद है तुम्हारे विचारों में! क्या हम तुम्हारा परिचय जान सकते हैं।"

"भगवान बुद्ध के अनेकानेक अनुयायियों में से मैं भी एक हूं भगवन्! इसके अतिरिक्त किसी परिचय की आवश्यकता मुझे कभी नहीं हुई। इससे अधिक परिचय देने की मेरी क्षमता भी नहीं है। यदि परिचय ही आवश्यक है तो मैं कैसे दूं! अनेक नामों से संसार में मेरा अस्तित्व रहा है।"

मठाधीश ने सहज भाव से उसे देखा।

"भगवन्! हमारा मार्गदर्शन करें।" सांग-सी ने पुनः कहा।

"वत्स! आप मानव-कल्याण के मार्ग पर जा रहे हैं। अतः किसी प्रकार का संदेह उत्पन्न करना उचित नहीं जान पड़ता। भगवान बुद्ध आप पर कृपा बनाए रखें।"

अनुमति मिल गई थी। सांग-सी ने श्रद्धापूर्वक शीश झुकाया और अपने साथियों सहित धम्मघोष करते हुए मठ से बाहर आ गए। वह भिक्षु दल बड़े प्रेम और शांति से सड़क के किनारे चल रहा था। सांग-सी सबसे आगे था और वह बड़ी ही लय से एक लोकगीत गा रहा था, जो प्रेम, शांति और भाईचारे की भावना पर रचा गया था। कोरियाई प्रायद्वीप में यह लोकगीत प्रायः सभी त्योहारों पर गाया जाता था, पर पिछले कुछ समय से जैसे यह लुप्तप्राय हो गया था। दक्षिण कोरिया में अवश्य इसे आज भी सुना जा सकता था, मगर उत्तर कोरिया में जैसे इस पर प्रतिबंध ही लग गया था। इस लोकगीत का भावार्थ यह था—

'प्रेम ही संसार का सत्य है, संसार की शक्ति है। इसे जिसने अस्वीकार किया, वह पतित हुआ। हिंसा शक्तिशाली होने का प्रतिबिंब है, पर वास्तविक शक्ति नहीं। अहिंसा अंगुलिमाल को परास्त करती है। मानव धर्म ही सच्चा धर्म है और इसके पालन में ही जीवन का सार है। संसार में जीवन अवधि सीमित है, इसमें यश और अपयश का चुनाव करना है, इसलिए यश का संग्रह करो।'

बहुत समय बाद यह प्रसिद्ध लोकगीत सुनाई पड़ा था, तो लोग उनके पीछे चल पड़े। देखते-ही-देखते कारवां बन गया। सैकड़ों कंठों से वह गीत गूंजने लगा था। अभी यह शांतिदल एक चौराहे पर ही पहुंचा था कि उनसे भी अधिक संख्या में सेना के जवान उनका रास्ता रोकने आ खड़े हुए। कमांडर हाथ जोड़कर सांग-सी के सामने आ खड़ा हुआ—"महात्मन्, क्षमा करें! शासन इस प्रकार के जुलूस-प्रदर्शन की आज्ञा नहीं देता। इससे यातायात अवरुद्ध होता है और अव्यवस्था बढ़ जाती है। महामहिम ने इस प्रकार के प्रदर्शनों को उचित नहीं ठहराया। भीड़ होने पर हालात

Baba Novels Chat Room

बिगड़ जाने की संभावना बनती है। शासन विरोधी तत्त्व सक्रिय हो जाते हैं। कोई अप्रिय घटना घट सकती है। आप तो विद्वान हैं। आपको शासन के नियमों का ज्ञान होना चाहिए और यदि है तो आपका यह प्रदर्शन नियम भंग कर रहा है।"

"प्रेम सदैव नियम की परिधि निश्चित करता है और उसे मान्यता भी देता है। प्रेम नियम भंग नहीं करता, नियम प्रेम को भंग करते हैं। सर्वत्र शांति स्थापित हो, उसके सार्वकालिक नियम तो प्रेम के ही प्रतिरूप हैं। यह संसार स्वयं में कष्टों का प्राकृत रूप है, इन्हें स्वघोषित नियमों में बांधकर और वृद्धि करना उचित नहीं है। सत्य को स्वीकार करो वत्स!" सांग-सी ने सप्रेम विनीत स्वर में कहा।

"महात्मन्! हम अज्ञानी लोग हैं और ऐसे गूढ़ उपदेश हमारी समझ में नहीं आते। हम केवल दायित्व की भाषा समझते हैं।" कमांडर ने कहा-"हमारा दायित्व है कि हम राजधानी में अमन-चैन बनाए रखें और हम यही करते हैं।"

"प्रयास सराहनीय है वत्स! परंतु इसमें एकरसता का भाव नहीं। शांति का अर्थ भयमुक्त जीवन शैली है। शांति का परिदृश्य वहां उत्तम होता है, जहां सैनिक-असैनिक, प्रजा-राजा परस्पर भयमुक्त जीते हों। स्वतंत्रता का जहां दमन न होता हो। साधुपाद को इस प्रकार बाधित न किया जाए। आपके दायित्व में यह तो नहीं होगा।"

"भगवन्! आप श्रद्धेय हैं, साधु हैं, बुद्ध हैं। सैनिक-असैनिक, राजा-प्रजा के भेद राजनीतिक हैं। यह आपका विषय है ही नहीं। यहां सब स्वतंत्र हैं, जो जहां चाहे जा सकता है, रह सकता है, बस भीड़ की शक्ल में नहीं। यह सुरक्षा-नियमों के विरुद्ध है।"

"जिस समूह में एकता और प्रेम का भाव हो, उसे भीड़ नहीं कहा जा सकता वत्स! हम तो शांति के साथ अपने पथ पर बढ़े जा रहे हैं। हमारा मार्ग रोकने का कोई औचित्य नहीं बनता। यदि अनौचित्य बाधा उत्पन्न की जाए तो समझना चाहिए कि बाधा डालने वाले किसी भय से, आशंका से ग्रस्त हैं। क्या ऐसा कुछ है आपके साथ?"

"महात्मन्!" पहली बार कमांडर के स्वर में कठोरता उभरी-"हमें किसी प्रकार का भय नहीं है। हम प्रत्येक भय को नष्ट करने में सक्षम हैं। आप यदि यह समझते हैं कि आपकी यह पदयात्रा हमें भयभीत कर रही है तो आप गलत समझ रहे हैं। हमें आपकी इस पदयात्रा पर एतराज नहीं, अपितु इसमें शामिल होते जा रहे लोगों से एतराज है। इनमें कोई टैररिस्ट हो सकता है। शासन-विरोधी हो सकता है। ऐसी भीड़ का लाभ उठाकर कोई वारदात कर सकता है। आपको क्षति पहुंचा सकता है।"

"वत्स! ये सभी भाव से भरे श्रद्धालु हैं, जो भगवान बुद्ध में आस्था रखते हैं।"

"यह आपका दृष्टिकोण है, क्योंकि आप ज्ञानी हैं। हम सैनिक हैं तो हमारा दृष्टिकोण रक्षा संबंधी है। आप दयावान हैं, किसी में दोष नहीं देखते। हमें दोषियों को देखना होता है। अतः आपसे प्रार्थना है कि भीड़ संग्रह न करें।"

Baba Novels Chat Room

"प्रेम का आकर्षण स्वत: इन्हें खींचता है वत्स! प्रेमी जन को कौन ठुकराए? उसे तो हृदय से लगाना चाहिए। लगाकर देखो और आनंद की अनुभूति करो।"

"महात्मन्! आप हमें विवश न करें कि हम कोई सख्ती करें।"

"मानव-प्रदत्त दायित्व के ऐसे दास न बनो कि मानव धर्म ही विस्मृत कर दो। यदि दायित्व का ही निर्वहन करना है तो मानव दायित्वों का करो। हमें मार्ग दो।"

कमांडर पशोपेश में पड़ गया। ऐसी स्थिति पहली बार ही आई थी। साधारण जुलूस को तो वह अपने डंडे से तितर-बितर कर देता, पर भिक्षुओं के मामले में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं था। अत: पहले निर्देश लेना जरूरी था।

प्रभास ने एमेले की रिकॉर्ड बातचीत सुनी। खोजिया उसके सामने बैठा था। "यह अच्छा हुआ। ऐसे यार-मार को गटर की गंदगी में डूब मरना था। भगवान करे कि उसे कोई खुला मैनहोल न दिखाई दे।" खोजिया भुनभुनाता हुआ बोला।

"विचित्र प्राणी है। अक्ल भी है और मूर्ख भी है। जिन गुंडों को वह हमारे बता रहा है, असल में वे छोटा राजन के ही आदमी थे। उसे लेने आए थे। इधर-उधर पूछ रहे थे कि कहीं एमेले को देखा है क्या! वह समझा कि उसकी जान खतरे में हैं और गटर में कूद गया।"

"चालाक भी तो है। जब तक अपनी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं करेगा, तब तक किसी को कुछ नहीं बताएगा, मगर अंतत: जरूर बताएगा। साहब, हम फिर खतरे में फंस जाएंगे। छोटा राजन के आदमी हमारे पीछे पड़ जाएंगे। वे निर्दयी नक्सली हैं।"

"इतना रिस्क तो लेना ही पड़ेगा। मैं चाहता हूं कि उसकी किसी मूवमेंट से सैयादी या दहलावर की लोकेशन मालूम हो जाए, इसीलिए मैंने उसके साथ वह डिवाइस चिपकाया है।"

"मुझे अपने साथ दिल्ली ले चलोगे?" खोजिया ने असंभावित प्रश्न किया।

"दिल्ली! क्यों?" प्रभास ने आश्चर्य से पूछा।

"नक्सलाइट से दुश्मनी लेकर इस शहर में तो रहा नहीं जा सकता। अगर जिंदा रहा तो आपके साथ दिल्ली चलना पसंद करूंगा। डिग्री नहीं है तो क्या हुआ? जर्नलिज्म की बारीकियां तो मुझे आती हैं। आप कहीं नौकरी लगवा दोगे ही।"

"ऐसे डरने से काम नहीं चलेगा। हम तब तक सुरक्षित हैं, जब तक एमेले के बदन पर मेरा पेंट है। वे क्या सोच रहे हैं और क्या करने वाले हैं, हमें एडवांस में खबर होगी और हम अपनी सुरक्षा कर सकते हैं। बाकी अगर जिंदगी ही रूठी है तो फिर कोई भी सुरक्षा बचा नहीं सकती।"

Baba Novels Chat Room

"आप विचित्र हैं। जिंदगी-मौत के इस फलसफे पर यकीन करके आप खुद को इतने बड़े खतरे में कैसे डाल सकते हैं? जिंदगी होगी तो मौत क्या करेगी, सोचकर आदमी पहाड़ से छलांग तो नहीं लगा सकता।

"पहाड़ से छलांग!" प्रभास के माथे पर सिलवटें उभरीं—"सेफ्टी के इंतजाम किए जाएं तो पहाड़ से छलांग भी लगाई जा सकती है। बंजी जंपिग इसका उदाहरण है। लोग साधनों से एवरेस्ट पर चढ़ जाते हैं। गुड, यह अच्छा सुझाया तुमने।"

"क्या सुझाया?" खोजिया असमंजस में पड़ गया।

"तुम उस घाटी को जानते हो, जहां दुर्लभ फूल पाया जाता है?"

"जानता हूं, लेकिन क्या करोगे?"

"यह फूल मेरी जेब में अकारण नहीं आया। यह मुझे संकेत दे रहा है कि मैं जिसे खोज रहा हूं, वह उस दुर्गम घाटी में ही कहीं रहता है। मुझे उस घाटी में उतरकर खोजना होगा। मेरा विश्वास है कि वह मुझे अवश्य मिलेगा।"

"क्या कह रहे हो? उस घाटी के बारे में आप जानते ही क्या हो। पहाड़ से नीचे सौ फीट की दूरी पर वह चारों ओर सपाट पहाड़ी से घिरे कुएं जैसी है। झरने के सामने की सपाट दीवार में एक दर्रा है जिससे घाटी का पानी बाहर जाता है, फिर भी मेरा अंदाजा है कि घाटी में बीस फुट पानी जरूर ही भरा रहता है। विशाल झील की तरह घाटी में जगह-जगह छोटे-छोटे द्वीप बने हैं और उन पर यह वनस्पति उगी हुई है। ये द्वीप भी इतने बेतरतीब से हैं कि एक से दूसरे तक पहुंचना भी कठिन है।"

"यही बात मेरी इस धारणा को और मजबूत करती है कि वह पौराणिक योद्धा उसी स्थान पर रहता है, जहां मनुष्य के जाने की न्यूनतम संभावना है।"

"साहब! आप वहां जाने का असंभव और आत्मघाती विचार कर रहे हैं?"

"जब तक किसी असंभव को संभव करने का प्रयास और हौसला न किया जाए, वह अपनी यथास्थिति में बना रहता है। एक बार उसे किसी के दुःसाहस के सामने टिकना पड़ जाए तो फिर वह सबकी पहुंच में आ जाता है।"

"आपने वहां की लोकेशन अच्छी तरह नहीं देखी है। आप सोचते हैं कि ऐसा विचार पहले कभी किसी के दिमाग में नहीं आया। आज भी ऐसे दुःसाहसी लोगों की कमी नहीं है, जो दहकते ज्वालामुखी में भी छलांग लगा देते हैं, मगर इस घाटी की दुर्गम बनावट ने सबको सोचने पर विवश कर दिया है। वैसे भी नीचे उतरने के लिए कोई लक्ष्य किसी के पास नहीं है। वहां उन पत्तों और फूलों के अलावा कुछ नहीं है और ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहां 'अश्वत्थामा' छुपा रह सके।"

"ऐसा नहीं हो सकता।" प्रभास दृढ़ता से बोला—"सारी कड़ियां मिलने पर स्पष्ट हो रहा है कि वह वहीं-कहीं है। घाटी दुर्गम है तो रहस्यमयी भी होगी।

Baba Novels Chat Room

कहीं-न-कहीं ऐसा कोई गुप्त स्थान जरूर होगा, जहां 'वह' किसी की नजरों में आए बिना रह सकता हो।"

"साहब! एक बात अब मेरी समझ में आ रही है। मैदानी इलाके में एक बहुत अनुभवी पुराना वैद्य था, जो दुर्लभ ऑपरेशन भी किया करता था और मरीज को बेहोश करने के लिए इसी फूल के अर्क का प्रयोग करता था। यह फूल आपकी जेब में था तो अब स्पष्ट है कि इसकी महक ने ही आपको मदहोश किया होगा।"

प्रभास की आंखें सिकुड़ गईं। खोजिया की बात में वजन था। ताजे फूल में महक तो रहती ही है और फूल भी दुर्लभ धतूरे का था।

"कह तो तुम ठीक रहे हो। ऐसा हो सकता है।"

"तो सोचिए कि घाटी में तो लाखों फूल महकते रहते हैं। उनकी खुशबू तो बहुत खतरनाक स्तर तक पहुंच गई होगी। वहां उतरकर इंसान जिंदा नहीं रह सकता।"

प्रभास सोच में पड़ गया था। इस प्राकृतिक और बड़े खतरे को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। उस घाटी में अगर पहले कभी कोई उतरा भी होगा तो जिंदा वापस नहीं आया होगा और शायद यही कारण उसे दुर्गम बनाता था।

"तुमने यह अच्छा प्वाइंट खोजा। अब हमें इसका भी कोई तोड़ निकालना होगा।"

"मगर घाटी में उतरना जरूरी है!" खोजिया आहत भाव से बोला।

"अगर लक्ष्य तक पहुंचना है तो जरूरी है और मेरा यही मानना है कि इंसान को कभी लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली विषम बाधाओं से भी घबराना नहीं चाहिए। याद रखना चाहिए कि स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा ने यही सोचा होता तो चांद पर जाने का असंभव काम नहीं होता। शेरपा ने सोचा होता तो एवरेस्ट अजेय होता। उन्होंने रास्ते खोले, तभी तो आज अरुणिमा सिन्हा ने भी अदम्य साहस से करिश्मा कर दिखाया।"

"एक बात बताइए!" खोजिया ने पूछा—"नाम बनते हैं रिस्क से, इस स्लोगन ने आज नौजवानों को इतना दु:साहसी क्यों बना दिया है कि कोई आती हुई ट्रेन के सामने सेल्फी लेता हुआ जान गंवा रहा है तो कोई ऊंची इमारत से गिरकर? खुद तो मर जाते हैं, पर पीछे परिवारों को ऐसा दर्द दे जाते हैं, जो उन्हें उम्र-भर सालता रहता है। आप इतना बड़ा रिस्क क्यों लेते हैं?"

"खोजिया, मैं जब पैदा हुआ था तो सतमासा हुआ था, मृत पैदा हुआ था। मुझे दफनाने के लिए ले जाया जा रहा था, तब मेरी सांस लौटी और मैं जिंदा रहा। मेरी मां ने एक ज्योतिषी से मेरे बारे में पूछा तो उसने बताया कि मैं कठिन कालयोग के भद्रा नक्षत्र के मूल में पैदा हुआ था जिसमें जन्मे बच्चे का जीवित रहना असंभव होता है और यदि वह जीवित रहता है तो दीर्घायु होता है। मैंने तब से बड़े रिस्क लिए और खेल-खेल में कई बार इतना गंभीर घायल भी हुआ कि

Baba Novels Chat Room

डॉक्टर भी जवाब दे देते थे, फिर भी मैं जिंदा बच जाता था। बस इसी बात ने मेरे दु:साहस को ऊंचाइयों पर पहुंचाया है।"

"चलो मान लिया कि जान नहीं निकली, मगर हाथ-पैर से बेकार हो गए तो वह जिंदगी भी क्या जिंदगी रहेगी! अभी आपकी उम्र भी क्या है। दीर्घायु भी हो तो बड़ा कष्ट सहना होगा।"

"यह नकारात्मक सोच है। सकारात्मक भी सोचकर देखो। सोचो कि हम जिस मिशन पर निकले हैं, उसमें हमें कठिन रिस्क के बाद सफलता मिल जाती है, तो फिर उस दीर्घायु का कैसा आनंद आएगा! इसलिए भय और आशंकाएं मत पालो।"

"तो फिर कल हम घाटी को देखने चल रहे हैं?"

"हां, वहां की सिचुएशन देखते हैं और अंदाजा भी लगाते हैं कि हम उसमें कैसे उतरें, साथ ही उस महान योद्धा की गुप्त रिहाइश का भी कोई क्लू ढूंढने की कोशिश करें। सपाट दीवारों से उतरने में कठिनाई हो तो देखते हैं कि दर्रे में से रास्ता बने।"

"उधर सोचो भी मत। मैंने सोचा था, घुस भी गया था। सौ मीटर अंदर जाकर पता चला कि वहां तो साक्षात् मृत्यु-व्यवस्था है। दर्रे में घाटी से आ रहा पानी छोटे और संकरे रास्ते की वजह से बहुत वेग से बहता है और एक स्थान पर दर्रा एक ऊंची चट्टान से बाधित है। पानी उसके ऊपर से जिस वेग से गिरता है, उसे देखकर ही कंपकपी छूट जाती है। उस चट्टान के करीब भी पहुंचना मुश्किल है।"

"यहां से कुछ मेरी समझ में नहीं आ रहा है। ऐसे मामलों में कोई राय तब बनती है, जब सब परिस्थितियों का निरीक्षण करके आकलन किया जाता है और अभी तो हमें आज रात फिर किले की ओर जाना है। रात जो हुआ, वह भी कम रहस्यमय नहीं है। मुझे यह जानना है कि वह फूल मेरी जेब में कहां से आया। मुझे क्यों याद नहीं कि मैं किसी दूसरे रास्ते से बीहड़ में गया था?" प्रभास गंभीर स्वर में बोला।

"यह बेतुका ख्याल है। हम किले तक नहीं पहुंच सकते। मुझे तो राठी वाली थ्योरी ही ठीक लग रही है कि किसी भूत-प्रेत ने आपकी जेब में वह फूल रास्ते में कहीं रखा, क्योंकि किले तक तो आप पहुंचे ही नहीं। यह दावा वहां की बटालियन का है।"

"फिर भी मुझे जाना है। मोटरसाइकिल से ही जाना है।"

"आज उस रास्ते पर भी पुलिस होगी।"

"मैं संभाल लूंगा। राठी मेरे एरिए का है। मैं उसे मना लूंगा।"

"मैं भी चलूंगा।" खोजिया ने हथियार डाल दिए।

Baba Novels Chat Room

27

सांप्रदायिक दंगा भड़काने की साजिश

"सैयादी! यहां हर कोई दहलावर नहीं है।" वह बोला-"यहां बुरे-से-बुरे आदमी में भी कोई-न-कोई अच्छाई होती है, खासकर धर्म के मामले में। नक्सलवाद इन लोगों के लिए एक मिशन है, जबकि हमारे लिए बिजनेस। हम धर्म से पहले फायदा देखते हैं।"

"यह बात जब तक तुम्हारा एक-एक आदमी न समझेगा, तब तक नतीजे बढ़िया नहीं होंगे। वक्त ने उल्टी करवट बदल ली है, वरना मैं ज्यादातर को यह बात सिखाकर जाता।"

Baba Novels Chat Room

सैयादी रमेश के साथ घूम-फिरकर आ गया था और उसकी क्रूर आंखों में एक चमक-सी नजर आ रही थी। जब से उसने नदी किनारे बने भव्य शिव मंदिर को देखा था, तभी से उसका कुटिल दिमाग सक्रिय हो गया था। उसकी अपनी विकृत मानसिकता ने उसे इस विचार से ओत-प्रोत किया था। जब से किले के मंदिर को टाइमबम से उड़ाने से बचाया गया था, तभी से वह खुंदक में आ गया था।

सैयादी ने कसम खा ली थी कि वह ऐसा कोई काम तो भारत में जरूर करके जाएगा जिससे बुरहानपुर लंबे समय तक उसे याद रखे। जिद के तौर पर वह किले के मंदिर को ही ध्वस्त करना चाहता था, पर वहां अब हालात उसके काबू से बाहर थे। वहां फटकना भी कठिन था, अतः

उसने दूसरा टार्गेट चुना। टार्गेट भी पहले से अधिक उपद्रव वाला और ऐन शहर में भीषण कत्लेआम की वजह बनने वाला था। इस बारे में उसने दहलावर से भी स्पष्ट रूप से इस बारे में बात न की थी और अपने ही जेहन में उस खतरनाक खिचड़ी को पका रहा था।

जब वह लौटा तो दहलावर उसे वहीं बैठा मिला।

"कहां घूम रहे हो मियां?" दहलावर गंभीर स्वर में बोला—"जानते हो कि सारा सरकारी अमला तुम्हें कुत्तों की तरह सूंघता फिर रहा है और तुम निर्विघ्न घूम रहे हो?"

"यहां घुटन-सी महसूस हो रही थी।" सैयादी ने लापरवाही से कहा—"मैं पूरी सावधानी से गया था। मेकअप नहीं देख रहे हो! किसी ने देखना तक जरूरी न समझा।"

"अब तुम ज्यादा दिन यहां नहीं रह सकते। खतरा बढ़ रहा है। खुफिया विभाग पूरी तरह सक्रिय हो गया है। शुक्र यह है कि अभी तुम्हारा जंगल में होना माना जा रहा है। कहीं किसी को भनक लग गई तो बच निकलना भी मुश्किल हो जाएगा।"

"मैं खुद यहां नहीं रुकना चाहता। अब यहां मेरे रहने लायक माहौल ही नहीं रहा है। मैं तो तुम्हारे हथियारों का इंतजार कर रहा था। मेरे पास कई बड़े कॉन्ट्रैक्ट हैं, जो पूरे करने हैं। तुम मेरे जाने की व्यवस्था करो तो मैं चला जाऊंगा।"

"अभी दो दिन और इंतजार करना होगा। विधायक यहां नहीं है। तुम्हारा सेफ एग्जिट उसी के जरिए सम्भव होगा, वरना खतरा मंडराता रहेगा।"

"एक ही जगह पर टिके रहना भी तो ठीक नहीं है।"

"मेरा बैग अभी तक नहीं आया।"

"आ गया। बड़ी मुश्किल से ला सका हूं, मगर ले आया।"

"अच्छा किया। उसके बिना मैं अधूरा था। तुम मुझे किसी तरह पाकिस्तान बॉर्डर तक पहुंचा दो, फिर मैं आसानी से निकल जाऊंगा।"

"बड़ी कठिनाई बुरहानपुर से निकलने-भर की है, फिर तो तुम्हें इराक-ईरान भी पहुंचा दूंगा। अब यह बताओ कि यहां क्या खेल खेल रहे थे? हमीद बता रहा था कि तुमने उन्हें धर्म विमुख होने के लिए उकसाया, लालच दिया था?"

"मैं देख रहा था कि इन लोगों में अभी अंतरात्मा बची है या नहीं।"

"और वह तस्वीर कहां गई?"

"मुझे कम्फर्ट नहीं लग रहा था, इसलिए उसे असली ठिकाने पर छोड़ आया। उसे लेकर ही घूमने गया था। शिव मंदिर में छोड़ आया। रमेश से पूछ लो।"

दहलावर को वह साफ-साफ झूठ बोलता लगा।

Baba Novels Chat Room

"सैयादी! यहां हर कोई दहलावर नहीं है।" वह बोला—"यहां बुरे-से-बुरे आदमी में भी कोई-न-कोई अच्छाई होती है, खासकर धर्म के मामले में। नक्सलवाद इन लोगों के लिए एक मिशन है, जबकि हमारे लिए बिजनेस। हम धर्म से पहले फायदा देखते हैं।"

"यह बात जब तक तुम्हारा एक-एक आदमी न समझेगा, तब तक नतीजे बढ़िया नहीं होंगे। वक्त ने उल्टी करवट बदल ली है, वरना मैं ज्यादातर को यह बात सिखाकर जाता।"

"उससे मुझे नुकसान होता। इन्हें फायदे की पट्टी पढ़ा दी जाए तो फिर इन लोगों को कई विकार लग जाएंगे। ये फिर अपने को एंप्लॉई मानकर कभी तनख्वाह बढ़ाने की बात करेंगे और कभी अमानत में ख्यानत का ख्याल करेंगे।"

"अपना-अपना नजरिया है। बिजनेस में आदमी को यह भी देखना चाहिए कि उसका धंधा जिन लोगों के सहारे आगे बढ़ रहा है, उनकी सभी जरूरतें पूरी की जाएं। इससे उनमें काम के लिए उत्साह पैदा होता है।"

"अपनी यह फिलॉस्फी अपने तक ही सीमित रखो मियां! यहां इंडिया में 'फीलिंग्स' का भी व्यापार होता है। यहां लोगों की भावनाओं को भी कैश किया जाता है। अब एक सवाल का जवाब और दो। शिवली कहां है?"

"वह भी वहीं है, जहां उसे होना चाहिए था।" सैयादी क्रूरता से बोला—"वह रोड़ा बन रहा था और रोड़े हटाए ही जाते हैं।"

"तुम दोनों वहां की रैकी कर आए हो?"

"हां, आसान और बड़ा टार्गेट है। देख लेना, दहलावर का नाम हो जाएगा।"

"मेरा नाम नहीं आना चाहिए। ऐसा हुआ तो मेरे ही लोग मेरे खिलाफ हो जाएंगे। मैं पहले ही कह चुका हूं कि मेरा नाम सांप्रदायिक दंगों के मामले में न घसीटो।"

"जब मेरा नाम आएगा तो तुम्हारा भी आएगा।"

"नहीं, उसका इंतजाम मैंने कर दिया है। हमारा किसी का भी नाम नहीं आएगा। अभी कुछ दिन पहले एक पाकिस्तानी रिपोर्टर हमारे आदमियों ने पकड़ा था। वह अभी भी हमारे ही कब्जे में है। अभी तक हम उसे किसी काम का न समझ रहे थे और पुलिस के हवाले करने की सोच रहे थे, मगर अब उसका बढ़िया इस्तेमाल हो जाएगा। उसे ऐन मौके पर पुलिस के हवाले कर देंगे और ब्लास्ट के बाद जो अफरा-तफरी होगी, उसमें तुम्हारे निकलने का रास्ता बन जाएगा।"

"गुड! यानी जो हुआ, अच्छा ही हुआ, मगर हमीद प्रॉब्लम बन सकता है।"

Baba Novels Chat Room

"वह शिवली का बड़ा गहरा दोस्त था। उसके बिना एक पल भी नहीं रहता था। उसे पता चला कि शिवली तुम्हारे हाथों मारा गया है तो वाकई प्रॉब्लम होगी। तुम्हारे लिए नहीं भी हो तो इस रमेश के लिए जरूर होगी। क्यों भाई, क्या करेगा?"

"उसे भी शिवली के पास पहुंचा दूंगा।" रमेश क्रूरता से बोला।"

"शाबाश! वह अगले कमरे में बंधा पड़ा है। मुंह में कपड़ा ठुंसा हुआ है। मैं उसके तेवर देखकर ही समझ गया था कि वह प्रॉब्लम खड़ी करेगा। इंतजाम कर उसका और विधायकजी के बंगले पर सुबह पहुंच जाना। अभी हम यहां से जा रहे हैं।"

रमेश बरुआ ने सहमति से सिर हिलाया। वह समझ गया कि उसका मुखिया भी उसके पक्ष में था।

Baba Novels Chat Room

28

सांग-सी का शांति-संदेश

"शांत हो जाओ वत्स! क्रोध मत करो। इस विकार को अपने हृदय में स्थान न दो।" सांग-सी ने कहा-"यह सदैव रहने वाली स्थिति नहीं है। इसमें व्यापक परिवर्तन होगा। विश्वास करो, असत्य और अत्याचार अधिक दिन तक स्थायी नहीं रहते। प्रेम और एकता की शक्ति इन्हें या तो झुका देगी या मिटा देगी।"

"भगवन्, अब असहनीय हो रहा है। आक्रोश बढ़ता जा रहा है।"

"यही परिवर्तन के संकेत हैं वत्स! परंतु इसके लिए आक्रोश भरी हिंसा का प्रश्रय लेने की आवश्यकता नहीं है। हमें अहिंसा से इसमें परिवर्तन करने के प्रयास करने होंगे। हमें प्रेम से परिस्थितियों को अनुकूल बनाना होगा।"

Baba Novels Chat Room

कमांडर ने अपने शीर्ष अधिकारी को वस्तुस्थिति समझाई और निर्देश मांगे। उसे काफी देर तक समझाया जाता रहा और वह 'यस सर-यस सर' करता रहा। निर्देश मिल जाने पर उसने अपनी मुस्कराहट वापस होंठों पर सजाई और सांग-सी के पास आया।

"महात्मन्, मैंने इस विषय पर अपने वरिष्ठ अधिकारियों से विचार-विमर्श किया है।" वह विनम्र भाव से बोला-"मुझे जो निर्देश प्राप्त हुए हैं, उनके अनुसार आपकी धर्म-यात्रा पर शासन में किसी प्रकार की पाबंदियों का प्रावधान नहीं है। आप अपना प्रचार-प्रसार करते रह सकते हैं। लोगों को शांति से रहने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।"

"अर्थात् हमें आगे जाने की अनुमति है?"

"आप प्रतिदिन आएं-जाएं भगवन्! लोगों में धर्म के प्रति जागरूकता रहनी चाहिए। यह कार्य आप जैसे साधुजन ही करते हैं। शासन आपके इस पवित्र कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर सकता और न करना चाहेगा। महामहिम तो चाहते हैं कि देश में धर्म और शांति का प्रचार-प्रसार होता रहे और यह कार्य धर्म-संस्थाएं करती रहें। इसके लिए यदि किसी भी प्रकार की शासकीय सहायता की आवश्यकता भी पड़े तो शासन तैयार है।"

सांग-सी बड़े धैर्य से उसकी बात सुन भी रहा था और समझ भी रहा था। वह जानता था कि वह पुलिस अधिकारी जितना मीठा बोल रहा था, उसे वैसे ही कड़वे निर्देश भी मिले होंगे जिन्हें वह चाशनी में लपेट रहा था।

"महात्मन्, धर्म किसी भी राष्ट्र की शक्ति होता है। जहां धार्मिक सुदृढ़ता होती है, वहां प्रगति के अवसर भी अधिक रहते हैं। धार्मिक सुदृढ़ता का दायित्व धर्म-संस्थाएं और धर्म-मर्मज्ञ ही संभालते हैं और आर्थिक सुदृढ़ता शासन और प्रजा का सामूहिक दायित्व है। अत: सबको अपने-अपने दायित्वों का पालन करते रहना चाहिए। क्या मैंने सही कहा महात्मन्?" कमांडर ने मीठे स्वर में पूछा।

"आप सत्य कह रहे हैं श्रीमान! राष्ट्रीय प्रगति का यही आधार है।"

"आप प्रबुद्धगण हैं। जानते हैं कि वर्तमान समय में हमारा देश प्रगति के जिस पथ पर आगे बढ़ रहा है, उससे बड़े और विकसित देशों को ईर्ष्या हो रही है और वे हमारी प्रगति को बाधित करना चाहते हैं। हमें यह नहीं होने देना है। हमें आगे बढ़ते रहना है और यह तभी संभव है, जब प्रत्येक नागरिक अपने दायित्व का भली-भांति निर्वहन करे। आप धर्मज्ञ हैं तो धर्म-सुधार, प्रचार और प्रसार करें। इनमें...।" कमांडर ने नागरिकों की ओर संकेत किया—"बहुत से लोग विभिन्न उद्योगों में लगे हैं, तो इन्हें उद्योग में ही लगना चाहिए। धर्म को हृदय में धारण कर राष्ट्रीय दायित्वों का निर्वहन करते रहना चाहिए। आपकी यह धर्म प्रसार पदयात्रा आपके द्वारा संपन्न हो तो उचित है। इसमें इन कामकाजी लोगों का समय व्यर्थ करना राष्ट्रीय क्षति है। अत: आप अपनी यात्रा संपन्न करें और इन लोगों को अपने काम पर जाने का आदेश करें।"

तो यह निर्देश था वरिष्ठ अधिकारियों का! सांग-सी ने मन-ही-मन आह भरी।

"वत्स! यह तो धर्म के विरुद्ध होगा।" उसने नम्रता से कहा—"इस धर्म-प्रसार यात्रा में इन लोगों का मन रम रहा है। धर्म के प्रति प्रेम ने इन्हें इस ओर आकर्षित किया है। यदि इन्हें कहा जाए कि आप लौट जाएं तो यह इनकी भावना को आहत करना होगा। भगवान बुद्ध का संदेश है कि मनुष्य अपने मन, वचन और कर्म से

Baba Novels Chat Room

किसी भी प्राणी को कष्ट न दे। यह इनकी इच्छा और स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने जैसा होगा।"

"धार्मिक दृष्टिकोण से आपकी दुविधा हम समझ रहे हैं भगवन्! अब आप हमारे दायित्व और शासकीय निर्देशों को ध्यान में रखकर हमारी दुविधा को दूर करने का उपाय करें।"

सांग-सी को साफ लग रहा था कि अपनी मीठी जुबान से कमांडर ने उसी को दुविधा में डालने की कोशिश की है! उसे अपने बड़े लक्ष्य को पूरा करना था और इसके लिए बड़ी सावधानी और धैर्य की जरूरत थी। जरा-सी हठ या भूल गड़बड़ कर सकती थी। अत: उसने मुस्कराकर कमांडर की ओर देखा।

"आपकी दुविधा हम समझ रहे हैं और इससे होने वाले कष्ट को भी। हम आपको कष्ट नहीं देना चाहते। हम आपके कार्य में विघ्न नहीं डाल सकते। हम आपका तात्पर्य भी समझ गए हैं और उद्देश्य भी। जिसका जो काम है, उसे वही करना चाहिए।"

"आप ज्ञानीजन हैं। आपसे ऐसी ही आशा की जाती है।"

सांग-सी ने पुन: लोकगीत गाना शुरू किया और पीछे की ओर मुड़ गया। उसके पीछे भिक्षुगण भी यंत्रचालित हो लिए थे। भीड़ भी मुड़ गई थी। अब वह समूह उसी दिशा में जा रहा था जिस दिशा से आया था।

"यह तानाशाही है।" भीड़ में से कोई बोला—"यह स्पष्ट रूप से नागरिक अधिकारों का हनन है। हमारी स्वतंत्रता को कुतर्क और हथियारों के बल पर छीना जा रहा है।"

सांग-सी ने देखा, वह युवक बिलकुल उसके समीप था।

"शांत हो जाओ वत्स! क्रोध मत करो। इस विकार को अपने हृदय में स्थान न दो।" सांग-सी ने कहा—"यह सदैव रहने वाली स्थिति नहीं है। इसमें व्यापक परिवर्तन होगा। विश्वास करो, असत्य और अत्याचार अधिक दिन तक स्थायी नहीं रहते। प्रेम और एकता की शक्ति इन्हें या तो झुका देगी या मिटा देगी।"

"भगवन्, अब असहनीय हो रहा है। आक्रोश बढ़ता जा रहा है।"

"यही परिवर्तन के संकेत हैं वत्स! परंतु इसके लिए आक्रोश भरी हिंसा का प्रश्रय लेने की आवश्यकता नहीं है। हमें अहिंसा से इसमें परिवर्तन करने के प्रयास करने होंगे। हमें प्रेम से परिस्थितियों को अनुकूल बनाना होगा।"

"आप साधुजन हैं महात्मन! ध्यान, साधना आदि से शांति प्राप्त कर सकते हैं। हम परिवार और समाज से जुड़े हैं। हमारी शांति तो इसमें है कि हमारा परिवार सुरक्षित, स्वस्थ और भयहीन रहे, हमारा समाज शांतिपूर्वक परस्पर सहयोग पर आधारित रहे।"

Babo Novels Chat Room

"वत्स! इस आक्रोश में यह क्यों भूल रहे हो कि परिवार और समाज में शांति बनाए रखने हेतु ही साधु होते हैं। वे सद्‌विचारों से लोगों को जीवन का महत्त्व समझाते हैं।"

"यह तो मानता हूं भगवन्! पर इस अत्याचारी शासन से तो हमें ही जूझना होगा।"

"हम सबको कहो वत्स! किसी भी शक्ति से लड़ने के लिए हमें यह जानना आवश्यक होता है कि उस शक्ति की कमजोरियां क्या हैं। उसमें भी भय का भाव होता है और हमें उसका स्रोत जानना होता है। भय के अभाव में कोई भी शक्ति प्रेम और अहिंसा का अर्थ नहीं समझती। हमें वह भय खोजना था और वह हमने खोज लिया है।"

"मैं समझा नहीं भगवन्! आपकी बातें बड़ी रहस्यमयी हैं।"

"वत्स, यह समय और स्थान इन बातों के लिए उचित नहीं है।"

"मैं आपके दर्शन करने अवश्य आऊंगा भगवन्!" युवक ने प्रभावित होकर कहा।

Baba Novels Chat Room

29

नरक की सैर

पहली बार एमेले को एक सुरंग में प्रकाश का आभास हुआ। वह अपनी बुद्धि को कोसने लगा। वह टॉर्च के प्रकाश से 'प्रकाश' खोज रहा था। आशा के साथ वह उस ओर बढ़ा तो प्रकाश ज्यादा दिखने लगा, फिर वह गोल छेद भी! उसकी आंखें चमक उठीं और वह दौड़कर वहां पहुंच गया। अब तो उसे आसमान भी दिखने लगा था। उसने लोहे की सीढ़ी पकड़ी और बंदर की तरह ऊपर चढ़ गया। वह नरक से पृथ्वी पर आ गया था। उसकी निश्चित रूप से जाती हुई जान बच गई थी। वह बाहर आकर लंबी-लंबी सांसें लेता हुआ आंखें बंद करके लेट गया।

Baba Novels Chat Room

एमेले आज जिस झमेले में पड़ा था, उसने उसे नानी याद दिला दी थी। नरक से भी बुरी दुर्गंध में उसे कई घंटे हो गए थे और बाहर निकलने का उसे कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। उसने मोबाइल की टॉर्च जला रखी थी और घुप्प अंधेरे में वह प्रकाश ही उसकी बची-खुची हिम्मत को संजोए हुए था। उसे पाइपों पर बड़े-बड़े चूहे दिखते तो वह आतंक से चीखने लगता। किसी मैनहोल की खोज में, जो खुला हो, वह सुरंगनुमा गलियों में इधर से उधर न जाने कितना सफर तय कर चुका था।

एमेले को लग रहा था कि आज वह उस जगह से जिंदा वापस नहीं जाने वाला था। उसे अब यह पश्चाताप भी हो रहा था कि उसने अपने शरणदाता खोजिया के साथ विश्वासघात किया था। वह लालच में आकर एक ऐसे

नौजवान की मौत का सौदा कर रहा था जिसने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था। दिखने में सभ्य, शिक्षित और साहसी नौजवान, जिसने उसे नए कपड़े दिए। जिसके मन में देशप्रेम की भावना इतनी प्रबल थी कि उसने नक्सलियों से दुश्मनी मोल ले ली थी। वह ऐसे होनहार नौजवान को जल्लादों के हाथों सौंपने जा रहा था।

शायद इसी कारण भगवान ने उसे गटर में धकेला था, जहां उसकी जो गत हो रही थी, वही जानता था। छोटा राजन ने तो उसे मरने के लिए छोड़ दिया था। अब उसे वही उसका उस्ताद और प्रभास ही इस निश्चित मौत से बचा सकते थे। वह उनसे माफी मांगेगा और अपनी जान बचाने की फरियाद करेगा। यह आशाजनक विचार आते ही उसने अपने मोबाइल से खोजिया का नंबर मिलाया। फोन तत्काल रिसीव हुआ।

"उस्ताद...उस्ताद...मुझे बचा लो।" वह आर्तनाद कर उठा।

"अबे, तू कहां है? तुझे खोजते-खोजते सारा पेट्रोल खत्म हो गया। साहब तेरे लिए बहुत परेशान है। तू बिना बताए कहां मर गया था?" खोजिया की आवाज आई।

"उस्ताद! मैं बहुत बुरा आदमी हूं। मैंने आपके साथ धोखा करना चाहा। मैं लालच में आकर उन लोगों को धोखा देने चला था, जिनमें एक मेरा गुरु था और एक काबिल रिपोर्टर! मुझ पापी को भगवान ने तत्काल ऐसा दंड दिया कि मैंने साक्षात् नरक के दर्शन कर लिये।"

"सारी बात एक बार में बता। कहीं बैटरी डिस्चार्ज हो गई तो और रोएगा।"

एमेले ने रो-रोकर अपनी पापी सोच बताई और वर्तमान स्थिति भी। खोजिया अट्टहास करके हंसा तो एमेले की घबराहट और बढ़ गई।

"एमेले, तू औकात से बढ़कर सोचने लगा था! तू समझता था कि एक इंटेलीजेंट जर्नलिस्ट और अनुभवी गुरु को गच्चा दे देगा। अब कर नरक की सैर! भगवान ने ठीक सजा दी है तुझे। अब तेरा वह छोटा राजन तुझे बचाने नहीं आ रहा है—दहलावर नहीं आ रहा है।"

"मुझे माफ कर दो उस्ताद! अब कभी सपने में भी नहीं सोचूंगा ऐसा। मैं आज मान गया कि भगवान बड़ी जल्दी हम जैसे पतितों को कुकर्म का दंड देता है। आज मुझे बचा लो गुरु! साहब से कहो कि मुझ मूर्ख को बचा लें।"

"साहब तेरे से बात करना चाहते हैं।" खोजिया ने फोन प्रभास को दे दिया।

"मान गए भई एमेले! कहीं सचमुच, जनता की गलती से तू अगर एम.एल.ए. बन जाता तो इस शहर को बेचकर खा जाता।" प्रभास हंसकर बोला था।

"मेरे से बड़ी गलती हुई साहब! मैं मूर्ख और पापी हूं। आज मेरी समझ में आया है कि आदमी को औकात से बड़े खेल में इस तरह नहीं फंसना चाहिए।"

Baba Novels Chat Room

"समझ में आने से कुछ नहीं होता, उस पर अमल करना पड़ता है। जब आदमी बुरे और गलत काम करने लग जाता है तो उसकी बुद्धि वैसा साथ नहीं देती, जैसी होती है। उस समय उसे बस अपने दिमाग पर भरोसा होता है और वह किसी पर भी विश्वास नहीं करता। तुझे पता है कि जो आदमी तुझे ढूंढ रहे थे, वे छोटा राजन के आदमी थे और तुझे लेने आए थे। तेरे मन में चोर था, तो तूने इन्हें हमारे शार्प शूटर समझ लिया। अबे, तुझे तो हम ही थप्पड़ों से हरा-भरा कर देते। तू अपने भय का मारा गटर में कूद गया।"

"मैंने कहा न, मैं मूर्ख हूं। मुझे माफ कर दो साहब! मुझे इस नरक से निकाल लो।"

"निकलना भी कोई मुश्किल नहीं है। तेरे आसपास ही कहीं कोई मैनहोल का ढक्कन खुला पड़ा है, उसे तलाश कर। बहुत दूर नहीं होगा। बस तू बौखलाकर वहां नहीं जा पा रहा है। सुरंग के जाल में फंस गया है। हिम्मत बांध और एक-एक सुरंग में जाकर देख, रास्ता मिल जाएगा।"

"साहब! मैं बहुत तलाश कर चुका हूं, नहीं मिलता। लगता है, है ही नहीं।"

"न होता तो तेरा फोन नेटवर्क कवरेज से बाहर होता। होश काबू में कर और घबरा मत। घबराएगा तो भटक जाएगा। बाहर निकलकर आ। हम तेरे पास पहुंच रहे हैं।"

"आप...आप कैसे जानेंगे कि मैं कहां हूं? मैं फोन करूंगा।"

"कर देना, वरना हम खोज लेंगे।" प्रभास ने कहा–"काम से लग। रास्ता ढूंढ।"

उधर से फोन कट गया था। ऐन इसी समय जाने कहां से एक चूहा उसके पैर पर चढ़ा तो वह चौंक गया और मोबाइल उसके हाथ से छूटकर पानी में गिर गया। थोड़ी देर तो उसकी टॉर्च जलती रही, फिर बंद हो गई। एमेले हक्का-बक्का रह गया। उसके सिर पर पहले ही भय सवार था और बाकी भय घुप्प अंधेरे से भर गया। भगवान अभी उसे माफ नहीं कर रहा था। वह पाइप से उतरा और अपने घंटों के अनुभव के आधार पर जंक्शन के पास पहुंचा और इधर-उधर देखने लगा।

पहली बार एमेले को एक सुरंग में प्रकाश का आभास हुआ। वह अपनी बुद्धि को कोसने लगा। वह टॉर्च के प्रकाश से 'प्रकाश' खोज रहा था। आशा के साथ वह उस ओर बढ़ा तो प्रकाश ज्यादा दिखने लगा, फिर वह गोल छेद भी! उसकी आंखें चमक उठीं और वह दौड़कर वहां पहुंच गया। अब तो उसे आसमान भी दिखने लगा था। उसने लोहे की सीढ़ी पकड़ी और बंदर की तरह ऊपर चढ़ गया। वह नरक से पृथ्वी पर आ गया था। उसकी निश्चित रूप से जाती हुई जान बच गई थी। वह बाहर आकर लंबी-लंबी सांसें लेता हुआ आंखें बंद करके लेट गया।

Baba Novels Chat Room

बहुत देर बाद उसे अच्छा-अच्छा अनुभव हुआ तो उसने आंखें खोलीं और अपने आसपास देखा तो भन्ना गया। वह शहर में कहीं नहीं था। वह तो शहर से बाहर उस गंदे नाले के पास था जिसमें सीवर का पानी गिरता था। बड़ी हद नाला उससे सौ मीटर दूर था और पानी गिरने की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। वह वहां पहले भी कई बार आया था। शहर वहां से तीन या चार कि.मी. दूर था।

अब एमेले एक बात और सोचकर घबरा रहा था कि उसका उस्ताद और साहब उस बियाबान में उसे कैसे खोजेंगे! अब उसे पैदल ही जाना चाहिए। वह शहर की ओर चल दिया, तभी उसे शहर की ओर से आती किसी गाड़ी की हैडलाइट चमकी। जरूर उसकी खोज करते हुए वे लोग आ गए थे, मगर कैसे?

मानना पड़ेगा कि प्रभास एक इंटेलीजेंट जर्नलिस्ट था।

Baba Novels Chat Room

30

किम-जोंग-उन...जिंदाबाद!

"...हम इस राष्ट्र को उन चौधरियों से निर्भय कर देना चाहते हैं, जो अपनी शर्तों पर सारी दुनिया को चलाना चाहते हैं। इसके लिए हम कैसा भी कठोर निर्णय ले सकते हैं। भले ही हमें इसके लिए कितनी भी आलोचना सहनी पड़े, कितना भी विरोध झेलना पड़े। हम अपनी शर्तों पर अपने देश का भविष्य लिखेंगे। हमारी आने वाली पीढ़ियों को संसार-भर में गौरव प्राप्त होगा। जिन अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर कुछ गिने-चुने देश ही निर्णय लेते हैं, उनमें हमारी राय भी ली जाएगी। यही हमारा विजन है।"

वहां उपस्थित अधिकारियों ने अपने तानाशाह की प्रशंसा में मुक्तकंठ से नारे लगाए–"महान सम्राट किम-जोंग-उन...जिंदाबाद!"

Baba Novels Chat Room

तानाशाह किम-जोंग-उन आकार में असाधारण रूप से विशाल था, फिर भी उसकी फुर्ती देखने लायक होती थी। अपने कंट्रोलरूम में वह जिस फुर्ती से सैकड़ों स्क्रीन्स पर बारी-बारी से नजरें जमाए रहता था, उसे देखकर आश्चर्य होता था। दुनिया-भर के टी.वी. चैनल्स से कनेक्ट उन स्क्रीन्स पर विभिन्न भाषाओं में न्यूज टेलीकास्ट होती थी, पर तानाशाह को सभी न्यूज अपनी ही भाषा में सुनाई देती थीं। उसके सॉफ्टवेयर इंजीनियरों ने ऐसा सॉफ्टवेयर बनाया था, जो किसी भी भाषा को कोरियन भाषा में ट्रांसलेट कर देता था। जब से उत्तर कोरिया ने परमाणु परीक्षण किए थे, तब से दुनिया-भर में उससे संबंधित विचार-विमर्श हो रहे थे। इनमें भी अमेरिकन

लॉबी से उस पर खास चिंता जताई जाती थी। परमाणु अप्रसार संधि पर अमेरिका, रूस, फ्रांस आदि बड़े देशों की बातों को वह चुटकले समझता था।

"हा-हा-हा...देखो इन विश्व-शांति के समर्थकों को! कितनी गंभीर मुद्रा में कहते हैं कि अब किसी को परमाणु हथियार नहीं बनाने चाहिए! इससे विश्व-शांति खतरे में पड़ती है। यह ठीक वैसा ही है, जैसे अपने लिए अनाज का भंडारण करके कोई जमींदार खेती करने पर प्रतिबंध लगा देता है। खुद खाना खाकर डिनर स्थगित कर देता है।" तानाशाह व्यंग्य भरे लहजे में बोला—"दुनिया को तबाह करने वाले परमाणु हथियार सबसे पहले इन्होंने बनाए और इन्होंने ही इस्तेमाल भी किए। लाखों जिंदगियां लील गए और पीढ़ियों को श्रापित कर दिया। परमाणु हथियारों के विशाल भंडार इनके पास हैं और अब इनकी तानाशाही देखो, अब कोई ऐसे विध्वंसक हथियार नहीं बनाएगा। सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करने होंगे। हाथ जोड़कर माफी मांगनी होगी कि हे विश्व-शांति के दूतो! हमने अपनी सुरक्षा सुदृढ़ करने का अपराध किया है। इन चौधरियों को अपना भाग्य-विधाता मानना होगा।"

"महामहिम!" विदेश मंत्री ने अपना विचार जोड़ा—"अमेरिका के ऐसे बेतुके प्रतिबंध छोटे देशों के लिए ही हैं, वरना इंडिया जैसे ताकतवर और पाकिस्तान जैसे विप्लवी देश पर इनकी पेश कभी नहीं चली। वहां क्या परमाणु हथियारों के भंडार नहीं हैं!"

"यही तो...यही तो। अमेरिका ऐसा सांप है, जो मुंह की तरफ से डसता है और पूंछ की तरफ से मित्रता का दावा करता है। हम छोटे देश वाले हैं, मगर...।" तानाशाह तनकर रौबदार स्वर में बोला—"मगर बड़े हौसले वाले हैं। हम किसी की धमकी में नहीं आएंगे। हमारी तरफ तिरछी नजर से देखने वालों को सौ बार सोचना पड़ेगा। कोई हमें बंदूक दिखाएगा तो हम तोप चलाएंगे। हम दिखा देंगे कि हमारे पास न हौसले की कमी है और न शस्त्रास्त्रों की। हम न मरने से डरते हैं और न मारने से।"

"महामहिम!" गुप्तचर विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने गंभीर स्वर में कहा—"अमेरिका सहित सभी दुश्मन देश हमारे परमाणु कार्यक्रम से भयभीत हैं। हम बाहरी दुश्मनों को सभी मोर्चों पर परास्त करने में सक्षम हैं, परंतु हमारे आंतरिक विद्रोही हमें लगातार नुकसान पहुंचा रहे हैं। एन.के.एफ.एम. (North Korea Freedom Movement) के विद्रोही पिछले कुछ दिनों से गोरिल्ला युद्ध छेड़ चुके हैं। इससे जाहिर होता है कि सांग-सी-चिन वापस आ गया है और विद्रोहियों को निर्देशित कर रहा है।"

"तो तुम क्या कर रहे हो?" तानाशाह गुर्राया—"इन चींटियों को भी मसलने में

Baba Novels Chat Room

असमर्थता जाहिर करते हो तो जरूर अब समय आ गया है कि तुम्हें और तुम्हारे जैसे लोगों को ऐसी जिम्मेदारी से पूर्ण...पूर्ण मुक्त कर दिया जाए।"

"म...महामहिम!" अधिकारी कंपकंपा गया–"हम अपनी पूरी क्षमता से विद्रोहियों का दमन कर रहे हैं। उनकी उपस्थिति ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है, जहां हमारे सुरक्षा बलों को उनके आकस्मिक हमलों का सामना करना पड़ रहा है। हमारे जासूस सांग-सी की तलाश में जुटे हैं और जल्दी ही उसे पकड़कर सबक सिखाया जाएगा। हमें इनपुट मिले हैं कि विद्रोहियों को शत्रु देशों के अलावा हमारे कुछ भ्रष्ट मंत्रियों का भी साथ मिल रहा है। हमारे सिक्योरिटी मैनेजमेंट में कोई कमी नहीं है और वह उच्च कोटि की है। हमने सभी बॉर्डर्स पर व्यापक सुरक्षा प्रबंध किए हैं और बाहर से एक गोली भी अंदर नहीं आ पा रही है, फिर भी विद्रोही हथियारबंद हैं तो इसका कारण भितरघाती हैं।"

"बहुत सुंदर है, बहुत उल्लासित करने वाली खबर सुनाई है तुमने।" तानाशाह की आंखों से अंगारे बरसने लगे थे–"हमारे साम्राज्य के बेसिक फार्मूला को ही धता बता दी। मार्शल, इसे हमारा बेसिक फार्मूला याद दिलाया जाए।"

"जो आज्ञा महामहिम!" सेना के वरिष्ठ अधिकारी ने अदब से कहा–"किसी भी विकासशील सिस्टम में प्रगति को रोकने के लिए कुछ ताकतें संलग्न रहती हैं। विकास के उत्साह में बाधाएं बढ़ाती हैं। सत्ता का आनंद विपक्ष होने में है। अगर चोर नहीं होंगे तो पुलिस क्यों होगी? विरोध नहीं होगा तो शक्ति का प्रयोग कहां होगा? विद्रोही शत्रु न हों तो सेनाओं की क्या जरूरत है? अब बात शासन-प्रशासन की आती है। तमाम विरोध, अंतर्विरोध होने दो, विरोध, विद्रोह चलने दो, वरना सत्ता का आनंद कहां रह जाएगा? तुम अपना काम करो, उन्हें अपना काम करने दो। तुम्हारा दायित्व उनके लक्ष्य से कहीं बड़ा है। उनके करने से जो डैमेज होगा, उसकी जिम्मेदारी तुम लोगों पर होगी। शासन ने प्रशासन को अधिकार, शक्ति और साधन दिए हैं और इतने पर भी यदि प्रशासन विफल रहता है तो विरोधियों की मुक्तकंठ से प्रशंसा करनी चाहिए।"

तानाशाह ने आंखें तरेरकर उस अधिकारी की ओर देखा।

"क्या समझे! क्या अपीलों से विद्रोह समाप्त होगा? नहीं, बादशाहत दहशत से कायम रहती है। जब तक शासन की दहशत नहीं होगी तो विद्रोह बढ़ता जाएगा।"

"महामहिम!" गुप्तचर अधिकारी ने कहा–"अपना दायित्व हम निभा रहे हैं। हमारे रडार पर विद्रोही और उनके मददगार हैं। हम शीघ्र ही आपके सामने गद्दारों को बेनकाब कर देंगे और सांग-सी-चिन को महामहिम के कदमों में डाल देंगे।"

"हमें खुशफहमी भरी रिपोर्ट नहीं चाहिए ऑफिसर! नतीजा चाहिए। हम सत्ता

Baba Novels Chat Room

के शीर्ष पर भले ही बैठे हैं, पर जरूरत पड़ी तो हम अपने दुश्मनों का दमन करने के लिए कोई भी भूमिका निभाने के लिए तैयार रहेंगे। हम अपने देश को दुनिया के शक्तिशाली देशों में से एक बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। हम इस राष्ट्र को उन चौधरियों से निर्भय कर देना चाहते हैं, जो अपनी शर्तों पर सारी दुनिया को चलाना चाहते हैं। इसके लिए हम कैसा भी कठोर निर्णय ले सकते हैं। भले ही हमें इसके लिए कितनी भी आलोचना सहनी पड़े, कितना भी विरोध झेलना पड़े। हम अपनी शर्तों पर अपने देश का भविष्य लिखेंगे। हमारी आने वाली पीढ़ियों को संसार-भर में गौरव प्राप्त होगा। जिन अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर कुछ गिने-चुने देश ही निर्णय लेते हैं, उनमें हमारी राय भी ली जाएगी। यही हमारा विजन है।"

वहां उपस्थित अधिकारियों ने अपने तानाशाह की प्रशंसा में मुक्तकंठ से नारे लगाए–"महान सम्राट किग-जोंग-उन...जिंदाबाद!"

Baba Novels Chat Room

31

नक्सलाइट के विरुद्ध अभियान

"हां, आज शाम एक माइन्स फटने से दो जवान घायल हो गए हैं। खोजबीन में चालीस माइन्स मिली हैं और ऐसा मानना है कि डीप एरिया में इनकी तादाद ज्यादा हो सकती है। अभी तक तुम अनजान थे, जोश में थे मगर ऐसे खतरों को जानकर भी कदम उठाना आत्मघाती हो सकता है। दूसरे अब सी.आर.पी.एफ. चप्पे-चप्पे पर तैनात है। जंगल में सिक्योरिटी और गश्त बढ़ गई है। तुम जानते हो कि ऐसे में वहां जाना मौत को दावत देना है। कोई नहीं पूछेगा कि तुम कौन हो और गोली मार दी जाएगी।"

Baba Novels Chat Room

एमेले पूर्णतया भीग चुका था और उसकी कंपकंपी छूट रही थी। जब खोजिया और प्रभास उसके पास पहुंचे तो वह बुरी तरह डकराकर उनके पैरों में गिर पड़ा और दहाड़े मारकर रोने लगा।

"नौटंकी मत कर।" खोजिया आंखें निकालकर गुर्राया—"टाइम खराब हो रहा है। तेरी वजह से जरूरी काम छोड़कर आए हैं आस्तीन के सांप! तूने तो अपनी करनी में कसर नहीं छोड़ी, मगर हम तेरी तरह कमजर्फ नहीं हैं, वरना आज तेरी गटर-समाधि निश्चित रूप से बन जाती।"

"उस्ताद! मैं बहुत शर्मिंदा हूं। सौ बार माफी भी मांग चुका हूं। आप दोनों का गुस्सा फिर भी ठंडा नहीं हुआ तो मेरा सिर हाजिर है, अपने जूते उतारिए और दनादन बजाइए।"

"वह सब छोड़ो।" प्रभास ने उकताकर कहा—"गुरु-चेले की इस नौटंकी

ने बारह बजा दिए हैं। अभी हमें बहुत काम करना है।"

"साहब! आप बहुत महान हैं। मैं आपको धोखा देना चाहता था और सबसे बड़ी मूर्खता यह थी कि मुझे इससे कुछ हासिल होता या नहीं—इसकी कोई गारंटी नहीं थी।"

"एमेले! चारों ओर कांबिंग चल रही है। अगर दबोचे गए तो सवालों के जवाब देने मुश्किल हो जाएंगे। हमें फौरन यहां से निकलना होगा।"

एमेले फौरन जीप के पिछले हिस्से में बैठ गया। वे दोनों आगे बैठे। खोजिया ने जीप मोड़ी और शहर की ओर दौड़ा दी।

"साहब! अब मैं आपका गुलाम हूं।" एमेले ने कहा—"आप जो भी कहेंगे, अब मैं वही करूंगा। उन लोगों को आपके बारे में कभी पता नहीं चल पाएगा।"

"अब तू क्या करेगा! तू उन्हें कुछ नहीं बताएगा तो वे तेरी जान ले लेंगे।"

"मैं उन्हें किसी और का नाम बता दूंगा। आदमी मेरी निगाह में है।" एमेले कुटिलता से बोला—"वह पहले भी उनके खिलाफ ऐसी हरकतें कर चुका है।"

"तूने इतना दिमाग कहां से पाया है कि ऊंट की तरह करवट बदल लेता है।"

"उस्ताद की संगत का असर है।"

"चुप कर।" खोजिया ने गुर्राकर कहा—"मेरी संगत को बदनाम मत कर। मैंने तुझे यार-मारी नहीं सिखाई। अब बता, किसका नाम लेगा?"

"सिपाही रामदयाल का। वह पहले से ही नक्सलाइट के खिलाफ है।"

"किसी निर्दोष को ऐसे फंदे में फंसाने की जरूरत नहीं।" प्रभास ने चेतावनी दी—"मैं बताता हूं कि क्या करना है। अभी तू थका हुआ है, तेरी हालत ठीक नहीं है। तुझे आराम की जरूरत है। कल सुबह मैं तुझे बताऊंगा कि तुझे क्या करना है।"

"ठीक है साहब! अब तो जो भी आप कहेंगे, मैं वही करूंगा।"

"खोजिया, टाइम कम रह गया है। हमें जिस रास्ते से जाना है, वह बहुत ऊबड़-खाबड़ है। उस पर दो सवारी बाइक पर नहीं जा सकतीं। तुम एमेले का ध्यान रखना। इसकी तलाश में अभी भी छोटा राजन के आदमी घूम रहे हो सकते हैं।"

"बॉस, मुझे एक सवाल का जवाब तो दीजिए। मेरे यहां होने का आइडिया आपको कहां से आया, जबकि मैंने आपको फोन भी नहीं किया, फोन तो मेरा पानी में गिर गया?"

"यह सब तू छोड़, कल ही बताऊंगा। खोजिया! मुझे यहीं उतार दे। मैं पैदल निकलने की कोशिश करता हूं। मेरा अदांजा है, यहां से किला पांच कि.मी. अंदर है।"

Baba Novels Chat Room

"इतना ही है, मगर पैदल जाना खतरनाक होगा।" खोजिया चिंतित स्वर में बोला–"बहुत खतरनाक रास्ता है। आप कल रात वहां से जाने किस जुनून में गुजर गए थे, मुझे यह सोचकर ही हैरानी होती है। इस दिशा में बीहड़ की सघनता अधिक है और इसी कारण जंगली जीवों की शरणस्थली भी इसी ओर ज्यादा है।"

"डराने की कोशिश मत कर खोजिया! वह सब मैं देख लूंगा।"

"मैं अकेले नहीं जाने दूंगा साहब!" खोजिया निर्णायक स्वर में बोला–"एमेले इतना घायल या बीमार नहीं है, अपनी देखभाल कर लेगा। हम मोटरसाइकिल लेकर आएंगे।"

प्रभास ने कुछ सोचकर जिद नहीं की। वह भी चाहता था कि खोजिया साथ रहे जिससे उस रहस्यमयी घटना का कुछ पर्दाफाश हो, जो उसके साथ हुई थी। ऐसे मामलों में हमेशा एक से दो भले होते हैं। अभी शहर के करीब ही पहुंचे थे कि पुलिस जीप सामने आकर रुक गई और इंस्पेक्टर राठी उसमें से उतरा।

"जर्नलिस्ट महोदय! ऐसे हालात में भी तुम आधी रात को घूम रहे हो।" राठी ने कहा–"मैं शाम से ही तुम्हारी खोज में हूं। होटल गया तो पता चला कि तुम शहर में कहीं घूम रहे हो। अब पता चला कि खोजिया की जीप इधर जाती देखी गई थी तो इधर आया।"

"ऐसी क्या जरूरत पड़ गई हमारी?" प्रभास ने पूछा।

"तुम आज रात भी किले की ओर जाने का विचार कर रहे हो सकते हो?"

"सोच तो रहा हूं। क्या कोई पंगा पड़ गया है?"

"हां, आज शाम एक माइन्स फटने से दो जवान घायल हो गए हैं। खोजबीन में चालीस माइन्स मिली हैं और ऐसा मानना है कि डीप एरिया में इनकी तादाद ज्यादा हो सकती है। अभी तक तुम अनजान थे, जोश में थे मगर ऐसे खतरों को जानकर भी कदम उठाना आत्मघाती हो सकता है। दूसरे, अब सी.आर.पी.एफ. चप्पे-चप्पे पर तैनात है। जंगल में सिक्योरिटी और गश्त बढ़ गई है। तुम जानते हो कि ऐसे में वहां जाना मौत को दावत देना है। कोई नहीं पूछेगा कि तुम कौन हो और गोली मार दी जाएगी।"

प्रभास सोच में पड़ गया। राठी ठीक कह रहा था। सी.आर.पी.एफ. उस ऑपरेशन में बहुत सजगता से काम करने वाली थी। रात के वक्त प्रतिबंधित क्षेत्र में किसी को देखते ही गोली मार देने का उन्हें अधिकार था।

"तुम्हारा मिशन कल्पित कहानी पर आधारित हो सकता है, मगर अब वहां नक्सलाइट के खिलाफ वास्तविक अभियान चल रहा है। तुम अभी विराम ले सकते हो और शांति बहाल होने पर अपना काम फिर शुरू कर सकते हो। सब बातें मैं

Baba Novels Chat Room

तुम्हें क्यों समझा रहा हूं–यह तुम समझ रहे हो।" राठी ने कहा।

"ओ.के.। तुम्हारी सलाह मैं नजरअंदाज नहीं कर सकता। अभी मैं दूसरी लाइन पर काम करता हूं।"

"लाइन कोई भी हो, पर सिक्योरिटी को क्रॉस न करे, ध्यान रखना। रात के वक्त कुछ दिन चैन से रहो, फिर चाहो तो मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।"

"धन्यवाद! उम्मीद नहीं थी कि इतनी दूर आकर कोई अपना-सा मिलेगा। आप निश्चिंत रहें, मेरी वजह से आपको किसी तरह की परेशानी नहीं होगी।" प्रभास ने कहा।

राठी ने उससे हाथ मिलाया और अपनी जीप स्टार्ट करके सामने से हटाकर वहां से चल पड़ा।

प्रभास ने भी खोजिया को चलने को कहा।

Baba Novels Chat Room

32

अश्वत्थामा को महर्षि का संदेश

"महर्षि! यदि इस प्रकार मुझे नित्य प्रति सम्मोहिनी मंत्र का प्रयोग करना पड़ा तो कुछ ही दिनों में मेरी शक्ति क्षीण हो जाएगी और मुझे पुनः लंबी तपस्या करनी होगी।"

"द्रोणपुत्र! यही हम तुम्हें बताना चाहते थे कि नियति तुम्हारे सामने जो नए-नए दृश्य उपस्थित कर रही है, उससे संकेत मिल रहे हैं कि तुम्हें किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु समर्पित होना होगा। इसके लिए तुम्हारे पास शक्ति का संचय रहना आवश्यक है। इसे केवल देवपूजा हेतु प्रयोग करते रहना उचित नहीं जान पड़ता।"

"मेरा मार्गदर्शन करें महर्षि! मेरी कुछ जिज्ञासाओं का समाधान करें। मुझे उस युवक के विषय में कुछ बताने की कृपा करें। वह किस प्रयोजन से वहां था! क्या वह कोई सैनिक था?"

अश्वत्थामा अपने नियत समय पर चल पड़े थे। उन्होंने अभी कुछ ही दूरी तय की थी कि उनके मस्तिष्क में स्पंदन हुआ। कोई उनसे मानसिक संपर्क स्थापित करना चाहता था। वे ठहर गए और नेत्र बंद करके संपर्क स्थापित किया।

"चिरंजीवी द्रोणपुत्र!" अश्वत्थामा को मानसिक संदेश प्राप्त हुआ तो उन्हें सहज ही ज्ञात हो गया कि महर्षि वेदव्यास उनसे संपर्क स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

"महर्षि को मेरा प्रणाम!" अश्वत्थामा ने प्रति-संदेश प्रेषित किया।

Baba Novels Chat Room

"आयुष्मान भव!" महर्षि वेदव्यास ने आशीर्वाद देते हुए कहा—"पूजा करने जा रहे हो?"

"हां महर्षि! अपने इष्ट की पूजा-अर्चना करने का नियम-पालन तो करना ही होगा।"

"कल की पूजा में जो आकस्मिक घटना घटित हुई थी, क्या उस पर विचार किया?"

"किया महर्षि! वह युवक असाधारण जातक था। सम्मोहिनी के प्रभाव से अछूते रहकर उसने मुझसे क्षणिक वार्तालाप भी किया। उसकी श्रद्धा और आत्मविश्वास देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि कलियुग में भी विशिष्ट मानवों ने जन्म लिया है।"

"प्रत्येक युग में विशिष्ट आत्माओं ने जन्म लिया है द्रोणपुत्र! कलियुग का प्रभाव कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, पर सत्य, धर्म और सदाचरण के प्रभाव को कम नहीं कर सकता। जो आत्मा इन पर आश्रित होती है, वह विकारग्रस्त नहीं होती।"

"महर्षि! कल प्रातःकाल की पूजा में कुछ अधिक ही व्यवधान रहा। वहां मंदिर के प्रांगण में राज्य के सैनिकों के शिविर लगे हुए थे। अतः मुझे सम्मोहिनी मंत्र का प्रयोग करना पड़ा।"

"द्रोणपुत्र! वह व्यवधान आज भी है और अगले कुछ दिवसों तक बना रहेगा। वहां राज्य में हो रहे विद्रोहों का दमन करने के लिए सैनिक शिविर स्थापित हुए हैं। उस अरण्य में विद्रोहियों की शरणस्थली है! इसलिए तुम्हें आज भी वहां शिविर दिखेंगे।"

"महर्षि! यदि इस प्रकार मुझे नित्य प्रति सम्मोहिनी मंत्र का प्रयोग करना पड़ा तो कुछ ही दिनों में मेरी शक्ति क्षीण हो जाएगी और मुझे पुनः लंबी तपस्या करनी होगी।"

"द्रोणपुत्र! यही हम तुम्हें बताना चाहते थे कि नियति तुम्हारे सामने जो नए-नए दृश्य उपस्थित कर रही है, उससे संकेत मिल रहे हैं कि तुम्हें किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु समर्पित होना होगा। इसके लिए तुम्हारे पास शक्ति का संचय रहना आवश्यक है। इसे केवल देवपूजा हेतु प्रयोग करते रहना उचित नहीं जान पड़ता।"

"मेरा मार्गदर्शन करें महर्षि! मेरी कुछ जिज्ञासाओं का समाधान करें। मुझे उस युवक के विषय में कुछ बताने की कृपा करें। वह किस प्रयोजन से वहां था! क्या वह कोई सैनिक था?"

Baba Novels Chat Room

"द्रोणपुत्र! वह एक खोजी प्रवृत्ति का युवक है, जो तुम्हारे अस्तित्व को संसार के सामने लाने के उद्देश्य से प्रयासरत है। कदाचित् इसी कारण वह तुम्हारी पूजा के समय वहां आता है। भविष्य में भी तुमसे उसकी भेंट के संयोग कई बार बनते दिखाई पड़ रहे हैं।"

"क्या वह अपने उद्देश्य में सफल होगा महर्षि?"

"यह तो समय बताएगा वत्स! वैसे उस युवक का आत्मविश्वास, उसकी दृढ़ आस्था एवं श्रद्धा तथा लक्ष्य के प्रति समर्पण तो उसकी सफलता के ही द्योतक हैं।"

"मुझे अपने आराध्य की पूजा हेतु क्या करना चाहिए?"

"समुचित विकल्प का प्रयोग करो। शेष सब नियति पर छोड़ दो और आराधना हेतु प्रस्थान करो।"

अश्वत्थामा ने श्रद्धा से शीश नवाया और संपर्क विच्छेद हो गया।

Baba Novels Chat Room

प्रभास उस रात सो नहीं सका। उसे अजीब-अजीब सपने आते रहे, जो उसकी नींद में खलल डालते रहे। वह बार-बार चौंककर उठ बैठता। क्या हो रहा था उसे! कैसे सपने आ रहे थे जिनमें वह अनजान लोगों के बीच खतरनाक-सी स्थिति में फंसा होता था। उन्हीं के बीच धवल वस्त्र पहने एक परिचित-सा योद्धा उसके रक्षक के रूप में दिखाई देता था।

प्रभास की यह स्थिति सुबह होने तक रही।

जब वह करवट बदलकर आंखें बंद करता तो सपना शुरू हो जाता। सपने में खुद को घिरा देखता तो हड़बड़ाकर उठ बैठता। अंततः किसी मंदिर में आरती शुरू हो गई जिससे सुबह होने का पता चला तो उसने बिस्तर छोड़ दिया। पहले वह फ्रेश हुआ और फिर स्नान किया। तैयार होते-होते साढ़े पांच बज गए थे। यद्यपि अभी उसने खिड़की खोलकर देखी थी तो वातावरण में सुबह की लालिमा छा गई थी।

अभी वह रिसेप्शन पर जाकर कॉफी पीने का विचार कर ही रहा था कि उसके मोबाइल की रिंगटोन बज उठी। इतनी सुबह फोन किसने किया! उसने मोबाइल निकाला तो देखा—खोजिया कॉल कर रहा था।

"क्या बात है, बड़ी जल्दी जाग गए?" प्रभास ने कहा।

"खबर ही ऐसी है साहब! सारे शहर में फैल गई है। भगवान जो भी करता है, वह प्रभास दि ग्रेट की परेशानियां कम करने के लिए करता है। रात हम किले

की ओर नहीं जा सके, यह अच्छा ही रहा। कुछ भी हाथ नहीं आने वाला था। खतरा तो था ही, पहुंच भी जाते किसी करिश्मे से, तो ऐसे ही इंतजार में सूख जाते।" खोजिया उत्तेजित लहजे में बोला।

"यार! तुमने तो रबड़ की तरह खबर को खींचकर लंबा कर दिया।" प्रभास उकताकर बोला।

"आज शाम हम घूमने गए थे। महाकालेश्वर का मंदिर देखा था। उसकी भव्य आरती में भी शामिल हुए थे। याद है?" खोजिया ने कहा।

"एक बार में बोलो खोजिया! वरना मुझे मानना पड़ेगा कि किसी बात को किस्तों में कहने की बुरी आदत वास्तव में उसे तुम्हीं से मिली है।"

"ठीक-ठीक! आज जब पुजारियों ने प्रात: पूजा के लिए मंदिर के पट खोले तो वहां पहले से ही कोई पूजा करके जा चुका था...उन्हीं दुर्लभ पुष्पों और पत्रों से।"

प्रभास चौंक पड़ा—उन *दुर्लभ पुष्प-पत्रों से शिव पूजा! अश्वत्थामा!!*

"क्या कह रहे हो?" वह उत्तेजना से बोला—"ऐसा...ऐसा कैसे हो सकता है?"

"क्यों नहीं हो सकता? वह पौराणिक पुजारी क्या परिस्थिति का आकलन नहीं कर सकता। उसने किले के मंदिर में इतनी भीड़-भाड़ देखी होगी तो उससे आमना-सामना न हो, इसलिए इस मंदिर में चला आया होगा। सारा शहर वहीं उमड़ा पड़ा है। चलो देखते हैं।"

"मैं...मैं अभी आया। बस, कन्फर्म कर लेता हूं।" प्रभास ने फोन डिस्कनेक्ट किया और इंस्पेक्टर राठी का नंबर मिलाया। फोन तुरंत रिसीव हुआ।

"मैं प्रभास...कहां हो राठी साहब!" प्रभास ने व्यग्रता से पूछा।

"यहीं मंदिर पर हूं। भारी भीड़ जमा हो रही है। संभाल रहा हूं।"

"यानी खबर सही है। 'वह' आज यहां पूजा करके गया है?"

"सच्ची है। मैंने किले में मौजूद सी.आर.पी.एफ. कमांडर से बात की है। उसने बताया कि आज वहां के मंदिर में न जल चढ़ा, न फूल-पत्ते। इसका मतलब उस भूत-प्रेत या तुम्हारे कथित अश्वत्थामा ने पूजा-स्थल बदल दिया।"

"ओह-ओह!" प्रभास ने कहा—"जरूर वहां पुलिस कैंप देखकर उसने ऐसा किया होगा।"

"कल रात तो उसने वैसा किया, जैसा करता आया था। कैंप तो कल रात भी वहीं था। पूजा हुई थी। सब हैरान थे कि किसने की, कब की, फिर आज उसे ऐसी क्या जरूरत पड़ी?"

"कोई-न-कोई कारण तो रहा होगा। खैर मैं आता हूं।"

Baba Novels Chat Room

"अभी आकर भीड़ ही बढ़ाओगे। यहां आदमी के सिर पर आदमी चढ़ा जा रहा है। संभालना मुश्किल हो रहा है। फूल-पत्ते देखने हों तो अलग बात है। भीड़ हटने दो, मैं खबर कर दूंगा।"

"ओ.के.। मैं इंतजार करूंगा।" प्रभास ने फोन रखा और कमरे से निकलकर गैलरी में आ गया। वहां से वह नीचे हॉल में रिसेप्शन पर पहुंचा, जहां खोजिया मौजूद था। काउंटर पर गरमा-गरम कॉफी का मग रखा था जिसमें से भाप निकल रही थी।

"मैंने आते ही अपने और तुम्हारे लिए कॉफी मंगवा ली थी।" खोजिया ने कहा-"पियो और चलो।"

"चलेंगे, मेरी राठी से बात हुई है। अभी वहां भीड़ लगी है। जाने से कोई फायदा नहीं होगा। कन्फर्म हो गया है कि आज किले के मंदिर में पूजा नहीं हुई है। कारण समझ में नहीं आ रहा है कि आज 'उसे' क्या समस्या आ गई।"

"कहीं प्रभास दि ग्रेट को झांसा तो नहीं दिया?"

"नहीं, बात कोई और है। वह पौराणिक योद्धा है। कुछ शक्तियां तो उसके पास अवश्य होंगी ही जिनसे वह बिना किसी की नजर में आए, पूजा करके चुपचाप चला जाता था। कल रात ही करके गया है तो आज क्यों उसे स्थान-परिवर्तन करना पड़ा?"

"अब इन सवालों के जवाब तो वही दे सकता है।"

"एमेले कैसा है? बीमार तो नहीं हो गया?"

"बुखार-सा लगा था। अदरक, लौंग का काढ़ा पिला दिया था। अभी तो सो रहा है।"

"उसे भी काम पर लगाना है। कुछ जान सके तो अच्छा है।"

"एन.आई.ए. के ऑपरेशन में क्या हुआ, पता नहीं चला?"

"सैयादी अभी हाथ नहीं आया होगा। उस भयानक बीहड़ में यह बेहद कठिन काम है।"

"वह बचकर निकल सकता है?"

"टहलता हुआ तो नहीं निकल सकता। अगर जंगल में ही कहीं है, तो पहाड़ में कहीं किसी बिल में पड़ा होगा। कितने दिन छुपेगा!"

"और नक्सली नहीं पकड़े गए होंगे, किसी ने तो कुछ बताया होगा?"

"यह हमें कौन बताएगा? शीर्ष स्तर के ऐसे ऑपरेशन बड़े गुप्त तरीके से होते हैं। कोई खबर लीक नहीं होती वक्त से पहले।"

"यहां का मीडिया भी तो सक्रिय है। किसी को कुछ पता हो सकता है।"

Baba Novels Chat Room

"कैसे! बीहड़ में कोई जा नहीं सकता और वहां से कोई खबर मिल नहीं रही है।"

"लगता है, हमें ही कुछ करना होगा।"

"हम दो नावों पर सवारी तो नहीं कर सकते। या तो अश्वत्थामा के बारे में जानने के लिए जांमारी करो या सैयादी के। सैयादी के पीछे सरकारी अमला पड़ा ही है तो हमें क्या जरूरत है? हम अपने मिशन की ओर देखते हैं।"

"ठीक कहते हो, आज घाटी की ओर चलेंगे।"

खोजिया ने कॉफी खत्म करके सहमति में सिर हिलाया।

Baba Novels Chat Room

33

दहलावर का छद्म वेश

दहलावर कुर्सी से उठकर शीशे के सामने पहुंचा तो भौंचक्का रह गया। आईने से एक नितांत अजनबी सूरत झांक रही थी। उसकी भयानकता अब कहीं नजर न आ रही थी। अगर वह डीसेंट ड्रेस और पहन लेगा तो दहलावर के तौर पर उसे कोई नहीं पहचान सकेगा।

"तुमने तो कमाल कर दिया।" दहलावर खुशी से बोला–"यह हुनर तुमने कहां से सीखा? इससे तुम्हें कहीं कोई पकड़ ही नहीं पाएगा। तुम्हारी असली सूरत किसे पता चलेगी?"

"जुर्म की दुनिया में लंबे वक्त तक जीना है तो ऐसे प्रयोग करने पड़ते हैं दहलावर! छद्म वेश से ही आदमी कानून से बचा रह पाता है। मैं तो जैसा देश, वैसा भेष बना लेता हूं, वरना अब तक तो कई बार पकड़ा जाता...।"

Baba Novels Chat Room

"तुम्हारी सनक ने बड़ी मुश्किलें खड़ी कर दी हैं।" दहलावर चिंतित स्वर में बोला–"बीहड़ में हमारे आदमी चूहों की तरह फंसे पड़े हैं। वह तो भला हो प्रकृति का कि पहाड़ के अंदर ऐसे स्थान हैं, जहां छुपा जा सकता है, मगर आखिर कब तक? दो दिन में ही कई लोगों ने सरेंडर कर दिया। रसद-पानी खत्म हुआ तो चारा भी क्या रह जाता है? यह तो शुक्र है कि किसी को हमारे बारे में कुछ भी पता नहीं, वरना हालात और भी खराब होते, लेकिन लगता है, शीघ्र ही हो जाएंगे।"

"तुम मुझे यहां से निकालो। मैं पाकिस्तान पहुंचकर स्टेटमेंट देता हूं कि इंडियन पुलिस मुझे बीहड़ में खोज रही है और मैं वहां से निकल भी आया, फिर हो सकता है कि बीहड़ से ऑपरेशन खत्म कर दिया जाए, क्योंकि वह है तो मेरे लिए ही।" सैयादी ने चालाकी से कहा।

"आखिर मैं किसका फूफा लगता हूं।" दहलावर बिगड़कर बोला–"वे मेरे पीछे पड़ जाएंगे। आखिर तो तुम मेरे ही बुलाए इंडिया आए थे, फिर पूरा प्रशासन मेरे पीछे होगा।"

"तो तुम भी मेरे ही साथ चलो। जब तक शांति नहीं हो जाती, चैन से कराची में रहना। मैं तो कहता हूं कि यहां लौटकर ही मत आना। दाऊद की तरह वहीं से धंधा ऑपरेट करो। जो भी जमा-पूंजी है, बटोरो और चलते बनो। मैं सब सैटल करा दूंगा।"

"जमा-पूंजी भी क्या जेब या बैंक में है। इधर-उधर बिखरी पड़ी है। नोटबंदी ने सब ऐसी-तैसी कर दी थी तो सोना खरीदा था। वह भी बीहड़ में ही दबा पड़ा है। कैश तो थोड़ा बहुत ही है। जो था, वह तुम्हें दे दिया और इतने बड़े गैंग को छोड़कर भागना भी तो ठीक नहीं। अच्छा खासा मामला जमा हुआ है। तुम निकल जाओ तो महीने-दस दिन में सब पहले जैसा हो जाएगा। इतने दिन मैं भी बचा रह सकता हूं।"

"ठीक है, मेरे जाने का इंतजाम करो, लेकिन यह अफरा-तफरी क्यों हो रही है इतनी सुबह?"

"समझ में नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है। अफवाह उड़ रही है कि अश्वत्थामा आज शहर के मंदिर में पूजा करके गया है। लोग शायद उसी ओर उमड़े चले जा रहे हैं।"

"बकवास है यह सब! इस देश में ऐसी मान्यताएं इतनी मजबूत कैसे हो जाती हैं जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता? उस किले के मंदिर में भी ऐसा ही बताते हैं।"

"कुछ तो सच्चाई है इसमें।" दहलावर गंभीरता से बोला–"मैं खुद किले में कई-कई दिन रहा हूं। पूजा तो वहां होती थी। पूजा करने वाला बेशक कभी नहीं दिखा, पर पूजा होती जरूर थी। मैं उन फूल-पत्तों को बटोर लाता था, क्योंकि उनसे तंबाकू बनाने का शौक मुझे सालों पहले लग गया था। ताजे फूल तो हथेली पर मसलकर उनका रस सूंघने से ही इंद्रलोक का-सा मजा आता है, मगर उससे बुद्धि काम नहीं करती, तब से मैं उन्हें सुखाकर उनका तंबाकू ही बनाने लगा था।"

"तुम लोग तो बीहड़ में घूमते ही रहते थे।" सैयादी कुछ विचार करते हुए बोला–"क्या किसी ने भी उसे नहीं देखा?"

"कई बार कुछ लोग कहते तो थे, पर कोई विश्वास नहीं करता था। सब जनश्रुति ही तो थी। खुद मैंने महीने-भर कड़ा पहरा लगवाया था, पर फूल-पत्तों के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं आया, इसीलिए तो किले में स्थायी रूप से नहीं रहते हम। भूत-प्रेत का भय बन गया है। भई, जो दिखता नहीं, वह भूत-प्रेत ही तो हुआ।"

"बकवास! हथियार उठाकर बीहड़ में उतरे और ऐसे भय पाले तो खाक काम करोगे!"

"उस किले के मामले में कुछ ऐसा ही है। हालांकि मुझे वहां कभी डर नहीं लगा।"

"अजीब कहानी बना रखी है लोगों ने। खैर, वह भूत-प्रेत या अश्वत्थामा, जो भी है, आज शहर के मंदिर में पूजा करके गया है और इस वजह से वहां बहुत भीड़ जुट गई है।"

"अभी तो यह ज्यादा भीड़ नहीं कही जा सकती। दिन चढ़ने दो, गांवों से लोग आने शुरू हो जाएंगे। मेला-सा लग जाएगा। उसी अनुपात में सिक्योरिटी भी बढ़ जाएगी।"

"भीड़ रहेगी तो...।" सैयादी कुत्सित भाव से बोला।

"सोचना भी मत।" दहलावर ने चेतावनी देते हुए कहा–"जो तुम सोच रहे हो, उस पर अमल करने की कोशिश भी मत करना। इससे हमारा नामोनिशान मिट जाएगा। हम ऐसे किसी टैरर अटैक के सख्त खिलाफ हैं जिसमें बेगुनाहों की जान जाती हो।"

"कैसे बिजनेसमैन हो भई तुम! दहशत के बिना दुनिया में कहीं बादशाहत होती है?"

"जिन पर दहशत कायम करनी हो, उनका जिंदा रहना जरूरी है। मुर्दे किसी की दहशत नहीं मानते। हमारा साम्राज्य ऐसे ही चलता है। जिंदा लोग चार पैसे देते हैं, मुर्दे नहीं।"

"मगर हमारा तो यही प्लान निश्चित हुआ था। मेरे निकलने का रास्ता ही इसी से बनना था।"

"तब भीड़ का कोई रोल नहीं था। मुझे ईंट-पत्थरों के गिरने से कोई दिक्कत नहीं थी, मगर अब यह प्रोग्राम कैंसिल करो। मैं तुम्हें आज रात ही निकाल दूंगा। अब मैं रिस्क नहीं ले सकता। कानून अब मेरे पीछे पड़ जाएगा। मैं भुगत भी लूंगा, मगर तुमने ऐसा कुछ कर दिया तो मुश्किल हो जाएगी।"

Baba Novels Chat Room

"मैं तुम्हारी मुश्किल नहीं बढ़ाना चाहता।" सैयादी ने सहज भाव से कहा—"अगर तुम्हें मेरे इस कदम से दिक्कत होती है तो मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगा। तुम मेरे जाने की तैयारी करो।"

"ठीक है। देखो, अभी हालात पर गौर करो। हमारे खिलाफ एक बड़ा ऑपरेशन जारी है। तुम्हारे यहां आने की वजह मैं हूं और जाहिर है कि कानून मेरे खिलाफ होगा। तुम चले जाओगे तो मेरी तलाश जारी रहेगी। प्रशासन बुरी तरह से मेरे पीछे पड़ जाएगा।"

"सब गुड़ गोबर कर दिया उस पान सिंह के बच्चे ने।"

"उसने नहीं, तुमने गुड़ गोबर किया। तुम्हें अपने काम पर फोकस करना चाहिए था, जबकि तुम लाइन से भटक गए। मैंने तुम्हें किसी और मकसद से बुलाया था और तुमने कुछ और ही कर डाला। मेरे चार आदमी तो तुम्हारे हाथों मरे हैं और न जाने कितने तुम्हारे कारण मारे जाएंगे। मुझे अफसोस हो रहा है कि मैंने जल्दबाजी में रफ्तार नहीं बढ़ानी चाहिए थी। जैसे चल रहा था, ठीक ही चल रहा था।"

सैयादी समझ गया कि बिगड़ी परिस्थितियों में दहलावर भी दहल गया था। वह कानूनी दबाव सहने में खुद को असमर्थ पा रहा था और इसी वजह से उसे वहां से भगाने की फिराक में था, मगर वह यह नहीं जानता था कि ऐसा सांप्रदायिक दंगा फैलाना उसके उस कॉन्ट्रैक का हिस्सा था, जो उसे पाकिस्तानी आतंकी हाफिज सईद ने चलते-चलते दिया था। वह तो उसे पूरा करना ही था। दहलावर नहीं चाहता था तो भी करना था।

"भई, तुम इंटरनेशनल लेबल के क्रिमिनल से मिलोगे तो कुछ प्रॉब्लम तो खड़ी होंगी ही। खैर, अब मैं कुछ नहीं कर रहा हूं। बस मेरे यहां से निकलने की व्यवस्था कर दो।"

"ठीक है, मैं चलता हूं। शाम को फिर आऊंगा, व्यवस्था के साथ।" दहलावर ने कहा—"अभी मुझे भी हुलिया बदलना होगा। अब मेरा बाहर घूमना खतरनाक होगा।"

"तो कहीं जाने की क्या जरूरत है! यह काम मेरे से बेहतर कौन कर सकता है!! एक घंटा लगेगा, फिर चाहे डी.एम. की बगल में जा बैठना।"

"यह तो अच्छी बात है।" दहलावर खुश हो गया—"कोई सामान मंगाना होगा।"

"सब है मेरे पास। बस, कपड़े बदल लेना।"

"ठीक है। तुम काम शुरू करो।" दहलावर ने कहा।

Baba Novels Chat Room

सैयादी ने अपना वह बैग खोला जिसमें मेकअप का सामान था। उसने दहलावर को कुर्सी पर बिठा लिया और जुट गया। सबसे पहले उसने उसकी दाढ़ी को खुरचा और क्लीन शेव्ड कर दिया, फिर बैग से एक दाढ़ी निकाली। धीरे-धीरे वह अपने काम को अंजाम देता रहा और दहलावर का हुलिया बदलता रहा। लगभग एक घंटे की मेहनत के बाद उसने अपना काम खत्म किया और दहलावर को शीशा देखने को कहा।

दहलावर कुर्सी से उठकर शीशे के सामने पहुंचा तो भौंचक्का रह गया। आईने से एक नितांत अजनबी सूरत झांक रही थी। उसकी भयानकता अब कहीं नजर न आ रही थी। अगर वह डीसेंट ड्रेस और पहन लेगा तो दहलावर के तौर पर उसे कोई नहीं पहचान सकेगा।

"तुमने तो कमाल कर दिया।" दहलावर खुशी से बोला–"यह हुनर तुमने कहां से सीखा? इससे तुम्हें कहीं कोई पकड़ ही नहीं पाएगा। तुम्हारी असली सूरत किसे पता चलेगी?"

"जुर्म की दुनिया में लंबे वक्त तक जीना है तो ऐसे प्रयोग करने पड़ते हैं दहलावर! छद्म वेश से ही आदमी कानून से बचा रह पाता है। मैं तो जैसा देश, वैसा भेष बना लेता हूं, वरना अब तक तो कई बार पकड़ा जाता। भेष बदलने में एक प्रॉब्लम है, जो तुम्हारे सामने आ सकती है। तुम्हें अपने ही आदमियों को समझाने में थोड़ी दिक्कत होगी।"

"उसके लिए मेरी आवाज ही काफी है। वैसे भी अब कुछ दिन तक तो मैं अपने आदमियों से भी नहीं मिलने वाला। मुझे कुछ दिन का अज्ञातवास काटना था, तो तुम्हारे इस हुनर ने मेरा काम आसान कर दिया। अब मैं अपने लिए कोई अच्छी-सी ड्रेस मंगाता हूं।"

"ड्रेस भी कॉमन ही लेना जिसे अधिकांश लोग पहनते हैं। कुछ अलग-सा पहनोगे, तो फिर नजर में आ जाओगे। कहीं पूछताछ हो गई तो गड़बड़ा जाओगे।"

"जब तुमने नया रूप दिया है तो तुम ही ड्रेस भी सुझाओ।"

मुस्लिम शेरवानी और टोपी पहन लो। कोई सपने में भी नहीं सोच सकता कि इस वेशभूषा के पीछे दहलावर है। एक फर्जी मुस्लिम आई.डी. बनवा लेना। बाहर आने-जाने में दिक्कत नहीं रहेगी। दाढ़ी को तीसरे-चौथे दिन फिटकरी के पानी से गीली करके हटा लेना और 'शेव करना। उसके बाद इस...।' उसने एक शीशी दी–"ग्लू से चिपकाना।"

"मेरी आंखों का रंग भी बदल गया और नाक भी कुछ अजीब हो गई, कैसे?"

Baba Novels Chat Room

"आंखों में कांटेक्ट लैंस हैं। किसी भी 'कलर' के मिलते हैं। नाक में स्प्रिंग फंसी है। जब भी चाहोगे, आसानी से दोनों चीजें निकल जाएंगी। थोड़ी प्रैक्टिस करोगे तो खुद ही लगा सकते हो। दो-चार बार कोशिश करोगे तो एक्सपर्ट हो जाओगे।"

"मान गया सैयादी! यह एक नया काम तुमने मुझे सिखा दिया। अब मैं मानता हूं कि तुम्हारा यहां आना हमारे लिए बेकार नहीं गया। कुछ तो जरूर नया सिखाया तुमने।"

सैयादी उस तारीफ पर भी सहज रहा, क्योंकि उसका फितरती दिमाग कुछ और ही सोच रहा था।

Baba Novels Chat Room

34

बुद्धं शरणम् गच्छामि

"भगवन्! क्षण-भर ठहरिए! मुझे कुछ जिज्ञासा हो रही है।" वह बोला।
भिक्षु ठहर गए तो अन्य सब भी ठहर गए।
"बुद्धं शरणम् गच्छामि! धम्मं शरणम् गच्छामि! संघं शरणम् गच्छामि।"
वातावरण में बुद्ध मंत्र गूंज उठा।
"भगवन्, कल जो लोग व्यवसायों में लगे थे, आज अचानक भिक्षु कैसे बन गए?"
"भगवान बुद्ध की प्रेरणा और कृपा से जिन्हें सत्दर्शन हो जाता है, वह उनका अनुकरण करता है वत्स! शांति की खोज में व्यक्ति को जब मार्ग मिल जाता है, तो वह उस पर चलने लगता है। इसमें आश्चर्य कैसा!"

कमांडर चियांग चेई उस दृश्य को देखकर हतप्रभ रह गया था। वह भौंचक्का-सा अपने साथी सैनिकों को देख रहा था। सैनिक भी हतप्रभ थे। वह दृश्य ही ऐसा था।

पांच कतारों में सैकड़ों भिक्षु तन्मयता से लोकगीत गाते हुए चले आ रहे थे। जो कल बारह थे, आज दो सौ थे और कल अधिक बढ़ सकते थे, जो एक धार्मिक आंदोलन का संकेत था। कमांडर चियांग इससे भी ज्यादा तब बौखलाया, जब उसने कुछ लोगों को पहचाना। ये लोग आम नागरिक थे, जो आज भिक्षु बन गए थे। क्या हो रहा था यह! शासनादेश के अनुसार, भिक्षुओं की सामूहिक पदयात्रा पर कोई प्रतिबंध नहीं था, पर जो संकेत मिल रहे थे,

Baba Novels Chat Room

उससे बौखला जाना स्वाभाविक था। यह कोई योजनाबद्ध आंदोलन था। कोई आम नागरिकों को इस तरीके से लामबंद कर रहा था।

कमांडर चियांग ने तत्काल अपने वरिष्ठ अधिकारी को खबर दी।

"क्या कह रहे हो?" वरिष्ठ अधिकारी भी बौखलाया—"एक साथ सैकड़ों भिक्षु और उनमें भी आम नागरिक! यह तो कोई षड्यंत्र है।"

"ऐसा ही लगता है सर! क्योंकि शासन ने भिक्षुओं पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है तो इसका कोई फायदा उठा रहा है। आप मुझे आदेश करें।"

"इस विषय पर महामहिम से मार्गदर्शन लेना होगा। यदि हमने भिक्षुओं को रोकने का प्रयास किया तो यह बड़ा मुद्दा बन सकता है। आंदोलन खड़ा हो सकता है।"

"इसका मतलब हम उन्हें जाने दें?"

"फिलहाल रोकने से गड़बड़ हो जाएगी। मैं आगे बात करता हूं। तुम अपने नाके से उन्हें गुजरने दो। अगले चेकपोस्ट पर आदेश के अनुसार काम होगा।"

कमांडर चियांग ने अपने साथियों को रास्ता छोड़ने का संकेत करते हुए कहा—"ओ.के. सर! हम यहां से उन्हें आगे जाने दे रहे हैं।"

भिक्षु दल तब तक उसके पास आ पहुंचा था। उसने खुद को नियंत्रित किया और बड़े आदर से नेतृत्वकर्ता को प्रणाम किया जिसकी आंखों में स्निग्ध, सहज प्रेम टपक रहा था। बिलकुल शांत! कमांडर ने एक षड्यंत्रकारी के रूप में उसकी कल्पना की तो उसके मन ने ही उसे धिक्कार दिया, जो तेज उस मुखमंडल पर था, उसमें उसके लिए ऐसा विचार पापपूर्ण लगा, परंतु वह एक सैनिक भी था।

"भगवन्! क्षण-भर ठहरिए! मुझे कुछ जिज्ञासा हो रही है।" वह बोला।

भिक्षु ठहर गए तो अन्य सब भी ठहर गए।

"बुद्धं शरणम् गच्छामि! धम्मं शरणम् गच्छामि! संघं शरणम् गच्छामि।"

वातावरण में बुद्ध मंत्र गूंज उठा।

"भगवन्, कल जो लोग व्यवसायों में लगे थे, आज अचानक भिक्षु कैसे बन गए?"

"भगवान बुद्ध की प्रेरणा और कृपा से जिन्हें सत्दर्शन हो जाता है, वह उनका अनुकरण करता है वत्स! शांति की खोज में व्यक्ति को जब मार्ग मिल जाता है, तो वह उस पर चलने लगता है। इसमें आश्चर्य कैसा!"

"परंतु इनके व्यवसायों का क्या होगा? इनके आश्रितों का क्या होगा?"

"धर्म कभी कर्म को बाधित नहीं करता।"

"एक साथ इतने लोग अपना काम छोड़कर भिक्षु बन गए?"

Baba Novels Chat Room

"भगवान बुद्ध की प्रेरणा में ऐसा ही प्रभाव है।"

"इस प्रकार तो इनसे प्रेरित होकर अन्य व्यवसायी भी इस जुलूस-प्रदर्शन में शामिल होते जाएंगे और धीरे-धीरे सारा शहर ही भिक्षु बन जाएगा?"

"जैसी भगवान की इच्छा होगी, वैसा ही होगा वत्स! धर्म में दृढ़ होकर कर्मरत रहना व्यक्ति की मुक्ति का मार्ग है। भगवान आपको भी प्रेरित करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।"

"धर्म पालन के लिए साधु वेश धारण करना आवश्यक नहीं होता महात्मन्! धर्म तो हृदय में आस्था का होना है। यह समूह एक योजना का संकेत करता है।"

"निरुद्देश्य साधुत्व भी किस काम का वत्स! जन-कल्याण ही साधु का उद्देश्य होता है। इससे ही आत्म-कल्याण का मार्ग खुलता है। यही शांति का साधन है।"

"परंतु इससे राष्ट्रीय उद्देश्य प्रभावित होने की संभावना भी तो बनती है। यदि प्रत्येक नागरिक साधुवेशी हो जाएगा तो राष्ट्रीय स्वरूप कैसा होगा?"

"अद्भुत, आनंदमय और अद्वितीय, क्योंकि तब शांति का पूर्ण लक्ष्य प्राप्त हो जाएगा। भगवान बुद्ध के पंचमहाव्रत का प्रकाश देदीप्यमान होगा। दुखों का अंत होगा।"

"शासन की राजनीतिक दृष्टि में यह दिवास्वप्न है।"

"आस्था से दिवास्वप्न भी वास्तविक हो जाते हैं वत्स!"

"भगवन्! शीघ्र ही आपको कुछ प्रश्नों का उत्तर देना होगा, क्योंकि आप इस समूह का नेतृत्व कर रहे हैं।" कमांडर ने कुछ सख्ती से कहा—"ऐसे प्रश्न, जो आपको विचलित कर सकते हैं।"

"उनके उत्तर भी प्रश्नकर्ता को विचलित करने वाले होंगे, क्योंकि यही प्रकृति का नियम है वत्स! हमने स्वयं को शांति और सहजता की उस अवस्था में पहुंचा दिया है, जहां कोई प्रश्न हमें विचलित नहीं करता। आप हमारा समय नष्ट कर रहे हैं। जिस विचार ने आपको विचलित किया है, वह आपके अंतर्मन में पल्लवित होता जाएगा और विचलन बढ़ता जाएगा।"

"भगवन्! शासन आपके प्रति सम्मान रखता है, उसका अनुचित लाभ न उठाएं।"

"हम स्वयं शासन का सम्मान करते हैं, परंतु आपकी शंकापूर्ण बातें उसमें संदेह उत्पन्न कर रही हैं। शासन सदैव नागरिक शांति और उन्नति का पक्षधर होता है। हम वही कार्य कर रहे हैं। इससे शासन को कोई आपत्ति नहीं है तो आपको क्यों है?"

Baba Novels Chat Room

"यह परिस्थिति नई है और इसके अधिकाधिक जटिल होते जाने की संभावना है। कल आप कुछ ही लोग थे, आज ज्यादा हैं, कल और भी ज्यादा हो सकते हैं। भले ही बौद्ध भिक्षु शांति, अहिंसा और प्रेम के लिए जाने जाते हैं, पर इस बात की संभावना भी तो है कि शासनविरोधी भी दिखावे के लिए इस वेशभूषा को अपना सकते हैं।"

"इसमें दिखावा नहीं होता वत्स! यह स्वैच्छिक समर्पण है। हिंसा का इसमें स्थान ही नहीं है। जिसने स्वयं को इस गेरुए वस्त्र में लपेट दिया, वह शांत हो गया।"

"भगवन्! आप सहृदय हैं, सत्यभाषी हैं, स्नेही हैं। अतः आप ऐसा सोच रहे हैं। वास्तव में तो सब शांत नहीं हो सकते। जिनका उद्देश्य ही शासन का विरोध करना है, वे किसी प्रकार शांत नहीं हो सकते। उन्हें अवसर चाहिए जिससे अशांति फैला सकें और वह अवसर कहीं आपके द्वारा उन्हें प्राप्त न हो जाए। आप जा सकते हैं। हम आपका मार्ग नहीं रोक रहे हैं।"

"धन्यवाद! हमें आपसे यही आशा थी।"

बौद्ध भिक्षुओं का समूह सहज और शांत भाव से अपने पथ पर बढ़ता चला गया।

Baba Novels Chat Room

35

प्रभास की योजना

"इस शर्ट का ऊपर वाला बटन, बटन नहीं है, बल्कि उच्च क्षमता का ट्रांसमीटर है जिसकी रेंज पांच किलोमीटर है।" प्रभास ने अपनी योजना बताई—"इससे तू जिससे भी बात करेगा, वह हमें सुनाई देगी। इसके साथ ही इससे हमें तेरी लोकेशन भी पता चलती रहेगी। तुझे कल रात हमने ऐसे ही ट्रांसमीटर की वजह से खोज लिया था, जो मैंने तेरी टी शर्ट में सैट किया था।" इसके बाद प्रभास ने उसे एक मोबाइल देते हुए कहा—"यह तेरे लिए नया मोबाइल है। इसमें मैंने खोजिया का और अपना नंबर फीड कर दिया है। एक दबाएगा तो मेरा, दो दबाएगा तो खोजिया का फोन मिलेगा। वैसे तो तू ट्रांसमीटर के जरिए भी हमसे बात कर सकता है, पर यह ठीक नहीं रहेगा। ऐसा मौका पड़ने पर ही करेगा।"

"ठीक है बॉस! अब समझा कि तुम मेरे पर पहले भी नजर रखे हुए थे।"

Baba Novels Chat Room

एमेले की आंखें खुलीं तो धूप निकल आई थी और तीखी चौंध उसकी आंखों पर पड़ रही थी। अब वह खुद को स्वस्थ महसूस कर रहा था। पिछली रात की याद उसे अब भी सिहरा रही थी। उसकी जान जाते-जाते बची थी।

अगर प्रभास ने उस कृतघ्न के साथ नेकी न की होती तो शायद वह उस दुर्गंध भरी मौत का शिकार बन गया होता।

एमेले ने दृढ़ निश्चय किया कि अब वह कभी भूलकर भी अपने जीवन रक्षकों के साथ धोखा नहीं करेगा। वह जीप से उतरा ही था कि घबरा गया। उसके सामने जो दो आदमी खड़े थे, उन्हें वह पहचानता था। वे छोटा राजन के आदमी थे।

"एमेले!" एक आदमी गुर्राकर बोला–"तुझे भाई कल से बुला रहे हैं और तू नहीं पहुंचा। हम इधर-उधर तुझे खोजते फिर रहे हैं।"

"अबे कम्बख्तो! वे तुम थे जिनके डर से मुझे गटर में कूदना पड़ा और मैं ऐसे बुरे हाल को पहुंचा कि जान ही न निकली, यही करिश्मा था। अगर तुम लोग मुझे सीधे मिल लेते तो क्या घिस जाता तुम्हारा?" एमेले ने गुस्से से कहा–"मैं समझा कि...।"

"हमने यहां आसपास के सभी मैनहोल खोल दिए थे, पर तू जाने कहां जा पहुंचा!"

"उतरकर खोज सकते थे। अगर मैं मर जाता तो?"

"तू हमारे लिए इतना जरूरी भी नहीं था कि हम गटर में उतरते। अब चुपचाप चल।"

"अभी कैसे चलूं! कुछ खाया-पिया नहीं। फ्रेश नहीं हुआ। तुम लोग आधा घंटा बैठो, मैं अभी आता हूं। तुम्हारे साथ ही चलता हूं।"

"भाई इतना इंतजार नहीं कर सकता।"

"वह कर तो रहा है और इंतजार तो मैं भी नहीं कर सकता। पेट में गुड़गुड़ हो रही है।"

"अबे! कहीं जगह तो देख। यहां कहां करेगा?"

"होटल में। अंदर मेरा उस्ताद है।"

"उस्ताद के साथ कौन है?"

"वह उसका दोस्त है। दिल्ली से आया है। पैसे वाला है तो दोनों मजे करते हैं और मुझे भी कराते हैं, वरना मेरी औकात कहां, जो मैं इस होटल के सामने भी खड़ा होता।"

"फिर भी तू यहां जीप में सोता है?" दूसरा हंसा।

"मुझे इसी में नींद आती है। होटल के मखमली नर्म बिस्तर पर नहीं सो सकता।"

"अब जल्दी जा और जल्दी आ। हम यहीं बैठे हैं। देर की तो हम अंदर आ जाएंगे। फायर एस्केप से भागने की कोशिश मत करना। हममें से एक वहीं बैठा मिलेगा।"

Baba Novels Chat Room

एमेले ठीक यही सोच रहा था, पर अब प्रभास ही कुछ सुझाएगा।

"मेरा भागने का कोई इरादा नहीं है। मेरे पास जानकारी है और उसकी कीमत मुझे अच्छी मिलने की उम्मीद है तो मैं क्यों भागूंगा?" एमेले ने गोली दी–"तुम थोड़ी देर इंतजार करो।"

एमेले लपककर होटल में घुस गया। वहां रिसेप्शन पर ही उसे खोजिया और प्रभास कॉफी पीते नजर आ गए थे। एमेले दौड़कर उनके पास पहुंचा–"उस्ताद! बचाओ। छोटा राजन के आदमी बाहर खड़े हैं। मुझे लेने आए हैं। मैं उन्हें किसी तरह लॉलीपॉप देकर आया हूं, मगर वे अंदर आ सकते हैं।"

"इतना घबरा क्यों रहा है? कॉफी पी।" प्रभास ने सहज भाव से कहा–"अगर हैं तो आने दे। पोपट बना उनका। जानता है पोपट बनाना, जैसे हमें बनाना चाहता था। ऐसे ही अब उन्हें पोपट बना। समझ कि तेरी सब खताएं माफ। मेरे मुताबिक चलेगा और काम करके दिखाएगा तो बीस हजार मैं तुझे दूंगा।"

"साहब! मैं आपका कोई भी काम बिना फीस के करना चाहता हूं, मगर आपने इनाम ही इतना बोल दिया कि मना करते नहीं बन रहा है।" एमेले प्रसन्न होकर बोला–"आप मुझे काम बताइए।"

"बहुत कमीना है तू!" खोजिया ने हंसते हुए कहा–"जब से तू पैसा-पैसा करने लगा है, तब से तेरी कुटिलता निखरती जा रही है। एक दिन टॉप का कॉनमैन बनेगा तू।"

"उस्ताद! पैसा आदमी को पालता-पोसता है और अन्न जिंदा-भर रखता है। अब तमाम उम्र बस अन्न ही खाता रहूं तो यह मेरी आत्मा को बिलकुल भी गंवारा नहीं। दो दिन साहब के कपड़े पहने थे तो लगा था कि मैं आदमी हूं। बड़ा मजा आया।"

"अब काम की बात सुन। गंभीर बात है।" प्रभास बोला–"चल, उधर कोने में बैठते हैं जिससे हमारी बात कोई न सुन सके। बहुत सावधानी से मेरा काम करना है।"

तीनों उठकर एक कोने वाली मेज के इर्द-गिर्द बैठ गए।

"खोजिया, इसके लिए कॉफी मंगाओ। देख भाई एमेले! आदमी अपने लिए जिया तो क्या जिया। कुछ तो जिंदगी का उद्देश्य होना चाहिए।" प्रभास गंभीरता से बोला–"हम इस देश के नागरिक हैं और इसकी भलाई के बारे में सोचना हमारा प्रथम कर्तव्य है। यह मत सोचो कि देश ने हमारे लिए क्या किया, यह सोचो कि हमने देश के लिए क्या किया। क्या हम अपनी सामर्थ्य के अनुसार देशहित में कुछ नहीं कर सकते? उन जवानों को देखो, जो सरहद पर शून्य

Baba Novels Chat Room

डिग्री तापमान में केवल इसलिए इस लक्ष्य को लेकर पहरेदारी करते हैं कि देश सुरक्षित रहे।"

"साहब, आज से पहले मैं इन सब बातों को सोचता भी नहीं था, मगर अब मैं पूरी तरह सुधर चुका हूं। आप मेरा मार्गदर्शन करें।" एमेले ने करबद्ध होकर गंभीर स्वर में कहा।

"तूने हैदर की बातें सुनी थीं, रिकॉर्ड भी की थीं। उसने बताया था कि अबू सैयादी ने किले के मंदिर में बम लगाया था और उसका मकसद सांप्रदायिक दंगा भड़काने का था। हैदर नक्सली था, मुस्लिम भी था, पर पहले वह इंसान था, उसने अपनी जान पर खेलकर उस संभावित सांप्रदायिक दंगे को रोका, जो शहर को सुलगा सकता था, मगर खतरा अभी टला नहीं है। सैयादी अभी भी कानून की पकड़ में नहीं आ सका है। कहने को भले ही उसने आवेश में आकर शिव मंदिर में बम लगाया था, मगर वास्तव में यह उसका मकसद है। वह किसी भी तरीके से इस क्षेत्र में बड़ी आतंकी कार्यवाही कर सकता है।"

"साहब! ये तो बड़ी भयानक बातें बता रहे हो।"

"सैयादी का गिरफ्तार होना या मारा जाना बहुत जरूरी है, जिससे कोई और आतंकी इंडिया आने से पहले सौ बार सोचे। वह कहां है, यह बात दहलावर या उसके आदमी ही जानते होंगे। हमें कैसे भी करके यह जानकारी निकालनी होगी कि वह कहां है। उन लोगों के बीच हमारा कोई काबिल आदमी हो तो यह काम आसान भी हो सकता है। एमेले! तू वह आदमी है, जो उनके बीच रहकर उनका पोपट बना सकता है। तेरी चतुराई के सामने उनकी दाल गलेगी भी नहीं! अगर तू ईमानदारी और निष्ठा से देशहित में इतना रिस्क ले सके...तो गोद में बैठकर दाढ़ी तू ही मूंढ सकता है।"

"साहब! उन्हें भनक लग गई तो मेरे पुर्जे-पुर्जे कर देंगे।" एमेले यह कहते हुए कंपकंपाया।

"तेरी अक्ल कहीं घास चरने गई है। दिमाग से काम करेगा तो कामयाब होगा। इतना नौटंकीबाज तो तू है कि उन्हें फंसा लेगा।"

एमेले का सीना गर्व से फूल गया। इतनी तारीफ उसने किसी से पहली बार सुनी थी।

"करूंगा साहब! ऐसा घुमाऊंगा उन्हें कि मुझे अपना सगा भाई कहने लगेंगे और सगे भाई से कुछ भी छुपाना तो पाप होता है। यह बात मैं उन लोगों को समझाऊंगा।"

"ज्यादा ओवरस्मार्ट भी मत बन जाना कि तेरे जिस्म का मलीदा ही बन

Baba Novels Chat Room

जाए। ऐसे लोग भी कम होशियार नहीं होते। तजुर्बा होता है इन्हें।" खोजिया ने समझाते हुए कहा।

"उस्ताद! इतना मूर्ख नहीं हूं मैं। आपकी सोहबत में कुछ तो सीखा है और फिर साहब ने तो चार दिन में ही मुझे चतुर बना दिया है।"

"ऐसे ही नहीं भेज रहा हूं मैं तुझे। चल कमरे में चलते हैं। पूरी तैयारी के साथ जाना। मैं तुझे ऐसा सिपाही बनाकर भेजूंगा जिसे विपरीत परिस्थितियों में भी सब संभालना आता हो।"

प्रभास कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ तो वे दोनों भी उसके साथ ही उठकर खड़े हो गए।

तीनों प्रभास के कमरे में आए। पहले एमेले को नहाने भेज दिया गया और प्रभास अपना बैग खोलकर बैठ गया। उसने बैग में से बटन के साइज का एक यंत्र निकाला, फिर एक पैक्ड डिब्बा निकाला, जो मोबाइल का था। उसमें से मोबाइल निकालकर उसमें सिमकार्ड लगाया। इसके बाद उसने एक शर्ट निकाली जिसमें उस नन्हें यंत्र जैसे ही बटन टंके हुए थे। गरदन के पास बटन नहीं था, जहां प्रभास ने उस यंत्र को फिट कर दिया।

खोजिया बड़े ध्यान से प्रभास की कारीगरी देख रहा था और प्रभावित हो रहा था।

"यह तो वैसा ही रिसीवर लगता है, जैसा इसने खो दिया। बहुत महंगा होता होगा।"

"काम की चीज और तकनीक महंगी होती ही है।" प्रभास ने कहा।

अब तक एमेले भी नहा-धोकर बाहर निकल आया था। उसने अपनी मैली-सी बनियान पहनी थी और अंडरवियर भी बहुत पुराना लगता था। प्रभास ने उसे नए बनियान व अंडरवियर दिए तो वह खुश होता हुआ वापस बाथरूम में घुस गया और थोड़ी देर बाद निकल आया। इसके बाद प्रभास ने उसे नए पैंट व शर्ट भी दिए।

"साहब! आज तो आपने मुझे पूरा अपटूडेट बना दिया।" वह खुश होते हुए चहक उठा।

"इस शर्ट का ऊपर वाला बटन, बटन नहीं है, बल्कि उच्च क्षमता का ट्रांसमीटर है जिसकी रेंज पांच किलोमीटर है।" प्रभास ने अपनी योजना बताई–"इससे तू जिससे भी बात करेगा, वह हमें सुनाई देगी। इसके साथ ही इससे हमें तेरी लोकेशन भी पता चलती रहेगी। तुझे कल रात हमने ऐसे ही ट्रांसमीटर की वजह से खोज लिया था, जो मैंने तेरी टी शर्ट में सैट किया था।" इसके बाद प्रभास

Baba Novels Chat Room

ने उसे एक मोबाइल देते हुए कहा–"यह तेरे लिए नया मोबाइल है। इसमें मैंने खोजिया का और अपना नंबर फीड कर दिया है। एक दबाएगा तो मेरा, दो दबाएगा तो खोजिया का फोन मिलेगा। वैसे तो तू ट्रांसमीटर के जरिए भी हमसे बात कर सकता है, पर यह ठीक नहीं रहेगा। ऐसा मौका पड़ने पर ही करेगा।"

"ठीक है बॉस! अब समझा कि तुम मेरे पर पहले भी नजर रखे हुए थे।"

"जरूरी था। तू ऐसे फेर में पड़ गया था कि हमारा पुलिंदा बंध जाता और इसी से तेरी जान भी बच गई, वरना मारा जाता। अब समझ गया कि तुझे क्या करना है?"

"एमेले! इस बार हमसे हरामीपंती की तो तुझे जीप के पीछे बांधकर किले तक घसीटता हुआ ले जाऊंगा।" खोजिया ने कठोर लहजे में कहा।

एमेले ने कान पकड़े और इनकार में सिर हिलाया।

Baba Novels Chat Room

36

किम-जोंग-उन के दिशा-निर्देश

Baba Novels Chat Room

"मार्शल! आज सारी दुनिया हमारे नाम से कांप रही है। हमने प्रत्येक उत्तर कोरियन को गर्व से जीने की शानदार स्थिति में ला दिया है, फिर भी कुछ लोग हमारा विरोध करते हैं। विद्रोह करते हैं। आम नागरिक हमारी नीतियों और योजनाओं से अच्छा जीवन बिता रहे हैं, फिर भी हमारे बारे में दुष्प्रचार किया जाता है–क्यों?"

"महामहिम, संसार को रोशनी देने वाला सूर्य, जल देने वाली नदियां, वर्षा करने वाले मेघ भी इन दुष्प्रचार के निशाने पर रहते हैं। अच्छे में भी बुरा देखने वाले कुछ लोग अपनी आदत से बाज नहीं आते। आपने इस देश को विश्वपटल पर अग्रणी बनाया है। यह बात उन सत्ता-स्वार्थियों को हजम नहीं हो रही है, क्योंकि वे जनता के पैसे पर ऐश करने वाले लोग थे और अब वह अवसर उन्हें नहीं मिल रहा है।"

तानाशाह किम-जोंग-उन अपनी आयुधशाला में था, जहां उसके वैज्ञानिक विध्वंसकारी प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण करते थे। यह आयुधशाला समुद्र तट पर निर्मित थी।

उत्तर कोरिया ने तकनीक के क्षेत्र में उच्च स्तरीय प्रगति की थी। वहां रासायनिक हथियारों का जखीरा था। छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े रासायनिक हथियार वहां बनाए जाते थे और ऊंची कीमत पर दुनिया-भर के आतंकी समूहों को बेचे भी जाते थे।

तानाशाह खुद ऐसे सौदों का निर्णय करता था। अभी तक तानाशाह ने दुनिया को स्तब्ध कर देने वाले कई बड़े परीक्षण किए थे, जिनमें अति विध्वंसकारी हाइड्रोजन बम भी था।

अब तानाशाह के आदेश पर उसके वैज्ञानिक एक अंतर्द्वीपीय बैलेस्टिक मिसाइल का निर्माण कर रहे थे, जो आखिरी चरण में था और कुछ ही दिनों में यह मिसाइल परीक्षण के लिए तैयार हो जाने वाली थी।

इस मिसाइल से उत्तर कोरिया का परमाणु शक्ति कार्यक्रम अपने चरम पर पहुंच जाने वाला था। धुर विरोधी अमेरिका धमकी चाहे कितनी भी जारी करे, मगर तानाशाह अब कोई भय मानने को तैयार नहीं था। जिस युद्ध की अमेरिका धमकी दे रहा था, यदि वह होता है तो तानाशाह बिना झिझके अमेरिका पर मिसाइल अटैक कर देता।

एटॉमिक पावर पर अहंकार से भरा तानाशाह अपने उच्च सुरक्षा घेरे में आयुधशाला का निरीक्षण कर रहा था। वह जहां से भी गुजर रहा था, वहीं काम पर लगे वैज्ञानिक आदर से उसे सिर झुका रहे थे जिनका जवाब भी देना वह जरूरी न समझता था। उसके साथ उसका विश्वस्त मार्शल था, जो चापलूसी की सारी हदें पार करने में प्रवीण था।

"मार्शल!" तानाशाह चलते-चलते बोला-"हमारी शक्ति को देख रहे हो। जल, थल और नभ में हमारी शक्ति अतुलनीय है, फिर भी अमेरिका हमें हल्के में ले रहा है। हम चाहें तो थोड़ी ही देर में उसे उसकी औकात बता दें। हमारी उंगलियों पर न्यूयॉर्क, कैलिफोर्निया जैसे शहरों का अस्तित्व निर्भर करता है। जरा-सी जुंबिश दी नहीं कि खंडहर बन जाएंगे।"

"महामहिम!" मार्शल चापलूसी से बोला-"गीदड़ भभकी देना अमेरिका का पुराना रिवाज है, जो उससे डर गए, वे उसके आर्थिक दास बन गए, मगर हम उसकी गीदड़ भभकी पर कान भी नहीं हिलाते। क्यों करें हम ऐसा? हमारे पास उससे कमतर कुछ नहीं है। वह संख्यात्मक रूप से हमसे अधिक हो सकता है, पर हौसले और साधनों में हमारे सामने नहीं टिकेगा। हमारे महामहिम जैसी कुशल नीतियां वह कभी नहीं बना सकता।"

"अब हम इस विश्व में सबसे शक्तिशाली सम्राट हैं।" तानाशाह ने गर्वीले स्वर में कहा-"हम किसी को भी नेस्तनाबूद करने की सामर्थ्य रखते हैं। आज विश्व के उन चौधरी देशों की आंखों में हमारी अपार शक्ति-संपन्नता से चिंता की लकीरें उभर आई हैं। हमारी मजबूत होती जा रही अर्थव्यवस्था ने दुनिया को चकित कर दिया है। कैसे हुआ यह सब?"

Baba Novels Chat Room

"आपके नेतृत्व में महामहिम! आपकी नई दृष्टि के सौजन्य से।" मार्शल सिर झुकाकर तानाशाह का गुणगान-सा करते हुए बोला—"अन्यथा हमारा अस्तित्व भी खतरे में था। दुनिया हमारे देश का नाम भी नहीं जानती थी और आज बच्चे-बच्चे की जुबान पर हमारे सुयोग्य सम्राट का नाम है और आंखों में आपका भय। आज अमेरिकी, फ्रांसीसी सहमकर सोते हैं कि कहीं उत्तर कोरिया के महामहिम की उंगली कोई बटन न दबा दे।"

"एक बार हम अपने सबसे शक्तिशाली परीक्षण को सफलता से कर लें, फिर देखना मार्शल! एशिया तक धरती में कंपन होगा और उनके कलेजे भी कंपित हो जाएंगे।"

मार्शल कुछ कहता, उससे पहले ही उसके हाथ में थमा ट्रांसमीटर पिक-पिक करने लगा। उसने ट्रांसमीटर को ऑपरेट किया और हैंड फ्री मोड़ पर रखकर उसे महामहिम के मुख के पास किया।

"लिव लोंग ग्रेट महामहिम!" ट्रांसमीटर से लरजता हुआ स्वर उभरा—"चार्ली स्पीकिंग।"

"कहो चार्ली।" तानाशाह ने कहा—"क्या न्यूज है?"

"महामहिम! पोस्ट नंबर फोर पर अजीब-सा वाकिया पेश आया है। इसकी शुरुआत कल से हुई थी। कमांडर चियांग ने आज मुझे इस बारे में अवगत कराया तो मैं भी गहन असमंजस में पड़ गया। कृपया अब महामहिम ही इस विषय में कोई निर्णय लें।"

"क्या हुआ?" महामहिम का लहजा कठोर हो गया।

"महामहिम! कमांडर के मुताबिक, कल कुछ—गिनती में दस, बौद्ध भिक्षु प्रार्थना गान करते हुए पदयात्रा कर रहे थे जिनके साथ सैकड़ों आम नागरिक भी सम्मिलित होते गए। जब यह जुलूस पोस्ट के पास पहुंचा तो कमांडर ने विनय करके आम भीड़ को वहां से आगे जाने से रोका। यद्यपि बौद्ध भिक्षुओं को आगे जाने से नहीं रोका गया।"

"यह अच्छा है। हम साधु-संतों को प्रतिबंधित नहीं करते। उनसे हमें कोई आपत्ति नहीं है।"

"महामहिम के आदेश का पालन किया गया, परंतु आज फिर से बौद्ध भिक्षुओं की पदयात्रा आई जिसमें दो सौ के करीब बौद्ध भिक्षु थे। चिंता का विषय यह है कि उनमें वे आम नागरिक भी थे, जो कल तक बौद्ध भिक्षु नहीं थे और आज बन गए।"

तानाशाह की छोटी-छोटी आंखें सिकुड़कर और भी छोटी हो गईं।

Baba Novels Chat Room

"कमांडर ने इस विषय पर मुझसे निर्देश मांगे तो मैंने आपको सूचित करना ठीक समझा।"

"वास्तव में यह चिंता का विषय है। हमने आम नागरिकों के किसी भी जुलूस-प्रदर्शन को प्रतिबंधित किया है और यही कारण है कि हम विद्रोहियों को शक्तिशाली होने से रोक पाए हैं। विद्रोह में जनता की भागीदारी होने से वह व्यापक और शक्तिशाली हो जाता है। बौद्ध संत शांतिप्रिय, अहिंसक और प्रेम के संदेशवाहक होते हैं। इसी कारण हम उन्हें प्रतिबंधित नहीं कर सकते। अवश्य किसी ने इस दयालुता का लाभ उठाया है। उसे खोजा जाए और हमारे सम्मुख पेश किया जाए।"

"महामहिम! इस समय पदयात्रा पोस्ट से आगे बढ़ गई है। क्या उसे बाधित किया जाए?"

"नो। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसके दूरगामी परिणाम होने की संभावना है। हमारा ऐसा करना एक बड़े धार्मिक आंदोलन की शुरुआत का सबब बन जाएगा। हम राजनीतिक शत्रुओं को बड़ी आसानी से कुचल सकते हैं, पर धार्मिक विरोध हमें तबाह कर देगा। इस एकता की पूरी जांच-पड़ताल होने के बाद ही कोई निर्णय लिया जाएगा। इसका उद्देश्य, लक्ष्य और नेतृत्व अति शीघ्र हमारे सामने होना चाहिए।"

"ऐसा ही होगा महामहिम! हमारे गुप्तचर बहुत जल्दी इस बात की तह तक पहुंच जाएंगे।"

तानाशाह ने संपर्क विच्छेद करने का संकेत किया तो मार्शल ने तुरंत ऐसा ही किया।

"मार्शल! कोई बहुत शांत तरीके से योजना बनाकर हमारे विरुद्ध धार्मिक विद्रोह की स्थिति पैदा कर रहा है। जिन बौद्ध संतों का राजनीति से कोई लेना-देना ही नहीं, वे इस प्रकार की लामबंदी नहीं कर सकते, न करते हैं और न करेंगे। इसके पीछे कोई राजनीतिक दिमाग काम कर रहा है। आम नागरिकों को रातो-रात बौद्ध भिक्षु बनाने का काम ऐसे ही नहीं हो जाता। किसी को वेश और मानसिकता बदलने के लिए तब तक तैयार नहीं किया जा सकता, जब तक कोई लक्ष्य और लाभ उसे दिखाया न जाए।"

"महामहिम! शासन द्वारा वित्तपोषित धार्मिक संस्थान प्रायः राजनीतिक विषयों में हस्तक्षेप नहीं करते। प्रमुख राष्ट्रीय मठ में अभी तक किसी भी गतिविधि का मामला सामने नहीं आया। मठाधीश किसी को भी सार्वजनिक जीवन में हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देते। इस विषय में विशेष रूप से मठाधीश का विचार जानने

Bala Novels Chat Room

की भी आवश्यकता है। उन्होंने अनुमति दी होगी, तभी तो नित्य पदयात्रा का शुभारंभ हुआ होगा।"

"मठाधीश से सम्मान सहित पूछताछ करने की व्यवस्था करो।"

मार्शल ने सहमति में सिर हिलाया, तभी ट्रांसमीटर पुन: पिक-पिक करने लगा।

"लिव लोंग महामहिम! ग्रेट गियागो आपसे मिलना चाहते हैं।" स्वर उभरा।

"उसे हमारे विशिष्ट अतिथि कक्ष में पहुंचाया जाए। हम आ रहे हैं।"

"जो आज्ञा महामहिम!"

"मार्शल! गियागो आया है। वह हमसे प्रतिमाह बड़ी खरीदारी करता है। इस बार भी वह सौ करोड़ की डील करने आया है। उसकी डेस्ट्रॉय स्क्वायड ने कोई बड़ा कॉन्ट्रैक्ट लिया है।"

"महामहिम!" मार्शल ने कहा—"टैरर मार्केट में हमारे फायर आर्म्स की बड़ी डिमांड है। हमारे फायर आर्म्स टार्गेट को हिट करने में सबसे आगे हैं। हमारी तकनीक पर सभी को बड़ा भरोसा है। गियागो जैसे हमारे कस्टमर जानते हैं कि उनके मिशन हमारे हथियारों से कितने आसान हो जाते हैं।"

तानाशाह का सीना गर्व से तन गया था। आज उसके नेतृत्व में उत्तर कोरिया प्रगति के नए पायदान चढ़ रहा था। इसमें उसकी भूमिका सर्वोपरि थी। वह शासन संबंधी हर छोटे-बड़े निर्णय खुद ही करता था। कहने को सभी विभाग थे और उनके प्रमुख थे, पर सब केवल डमी जैसे काम करते थे। अंतिम निर्णय के रूप में राष्ट्राध्यक्ष ही सर्वोपरि था। हथियारों की खरीद-फरोख्त हो तो भी वही तय करता था। सौदा तय करना और पेमेंट लेना! पैसे के मामले में, वह किसी पर भी विश्वास नहीं करता था।

तानाशाह की पर्सनल छोटी सी 'डैथ स्क्वायड' उसके संकेत पर पैसा गबन करने वालों का बड़ी निर्ममता से कत्ल करती थी। अभी पिछले माह वित्त विभाग के एक बड़े अधिकारी को गबन के आरोप में पकड़ा गया, तो खुद तानाशाह ने उसे सरेआम मौत की सजा सुनाई थी। इससे अन्य अधिकारियों में दहशत पैदा हो गई थी।

अब एक और बड़े अधिकारी पर घूस लेने का संदेह था, जिसकी जांच चल रही थी। दोषी पाए जाने पर तानाशाह उसे भी मौत की सजा सुना सकता है।

"मार्शल! आज सारी दुनिया हमारे नाम से कांप रही है। हमने प्रत्येक उत्तर कोरियन को गर्व से जीने की शानदार स्थिति में ला दिया है, फिर भी कुछ लोग हमारा विरोध करते हैं—हमसे विद्रोह करते हैं। आम नागरिक हमारी नीतियों और

Baba Novels Chat Room

योजनाओं से अच्छा जीवन बिता रहे हैं, फिर भी हमारे बारे में दुष्प्रचार किया जाता है—क्यों?"

"महामहिम, संसार को रोशनी देने वाला सूर्य, जल देने वाली नदियां, वर्षा करने वाले मेघ भी इन दुष्प्रचार के निशाने पर रहते हैं। अच्छे में भी बुरा देखने वाले कुछ लोग अपनी आदत से बाज नहीं आते। आपने इस देश को विश्वपटल पर अग्रणी बनाया है। यह बात उन सत्ता-स्वार्थियों को हजम नहीं हो रही है, क्योंकि वे जनता के पैसे पर ऐश करने वाले लोग थे और अब वह अवसर उन्हें नहीं मिल रहा है।"

"हम ऐसे लोगों से इस देश को मुक्त कर देंगे। अब सत्ता परिवर्तन नहीं होगा। हम अपने जीते-जी देश को वैसा ही योग्य उत्तराधिकारी तैयार करके देंगे, जो हमारे बाद भी हमारी ही तरह काम करेगा।"

मार्शल बलिहारी हो जाने वाली नजरों से उसे देख रहा था।

Baba Novels Chat Room

37

साधु वेश में असाधु

पूरी तरह संतुष्ट होकर साधु वेश में वह असाधु अब वहां से निकलने को तैयार था। वह किसी पूर्व विधायक का आवास था, जहां पर वह पिछले दो दिन से रह रहा था। यद्यपि उसने अपनी इच्छा से मैनगेट के समीप बने सर्वेंट क्वार्टर में रहना मंजूर किया था और भीतर कौन था, क्या था, इससे उसे कोई मतलब नहीं था। उसने धीरे से अपने कमरे का दरवाजा खोला और बाहर झांका। हमेशा की तरह दो मुस्तैद गार्ड वहां तैनात थे। उसने अपनी हथेली में दबी छोटी-सी कंचेनुमा बॉल को उनकी ओर उछाल दिया। हल्की-सी आवाज हुई और उसने अपेक्षित परिणाम देखा। दोनों गार्ड जमीन पर गिर पड़े थे।

Baba Novels Chat Room

सैयादी ने खिड़की खोलकर देखा तो शाम हो चुकी थी। कुछ ही देर में अंधेरा हो जाने वाला था। वह अपने विचार पर अमल करने जा रहा था। अब वह दहलावर के भरोसे न रहेगा और उसे बिना बताए निकल जाएगा, क्योंकि सैयादी ने उसका मिजाज भांप लिया था।

दहलावर अब उससे उकता रहा था और पछता रहा था, इसलिए उससे छुटकारा पाना चाहता था। उनके बीच पैसे का कोई हिसाब-किताब नहीं रह गया था, तो उससे मिलकर जाना न तो वह जरूरी समझता था और न उसके प्लान के हिसाब से यह ठीक था। उसने सबसे पहले तो अपने पाकिस्तानी कॉन्ट्रैक्ट से बात की और अपने निकलने के लिए स्थानीय मदद मांगी, जिसकी व्यवस्था करने का उसे ठोस आश्वासन मिला। इसके बाद उसने

अपने बैग में से एक डिवाइस निकालकर उसमें कई इंस्ट्रूमेंट जोड़े और शीघ्र ही एक शक्तिशाली टाइमबम असेंबल किया। अब उसमें बैटरी डालकर समय सैट करने की देर थी कि वह एक्टिव हो जाता। इस काम से निबटकर उसने रमेश को कॉल की। कॉल रिसीव हुई।

"कहां हो पार्टनर! मैं तुम्हारा पैसा लेकर बैठा हूं और तुम सुबह से नहीं आए।"

"मैं बैतूल में हूं। कमांडर ने भेजा है। तीन-चार दिन बाद आऊंगा।" रमेश ने कहा।

"क्या बक रहा है। अरे, काम तो हमें आज ही करना है, क्योंकि आज रात किसी भी वक्त मैं चला जाऊंगा। तूने सब गुड़ गोबर कर दिया।"

"मैंने कुछ नहीं किया, सब दहलावर ने किया है। उसने मुझे स्पष्ट कहा था कि मैं अब तुमसे कोई बात न करूं, इसलिए मुझे वहां से भगा दिया।"

सैयादी ने दांत पीसे। दहलावर ने सारा मामला खराब कर दिया था। बड़ी मुश्किल से तो एक आदमी झांसे में आया था, वह भी उसने अलग कर दिया।

"इससे तेरा कितना नुकसान हुआ है, तू समझ रहा है न! मैं तुझे तीस लाख से भी ज्यादा देने वाला था। इतना पैसा तू कैसे भी नहीं कमा सकता। लाइफ बन जाती तेरी, फिर तुझे नक्सली या गार्ड की नौकरी नहीं करनी पड़ती।"

"भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता साहब! मेरे भाग्य में यह रकम थी ही नहीं।"

"कर्म पर भी विश्वास कर। बैतूल यहां से तीन घंटे के रास्ते पर है। अभी चलेगा तो नौ बजे तक यहां पहुंच जाएगा। पैसा लेना और काम करना। एक घंटे में फ्री हो जाएगा और वापस बैतूल जाएगा तो लाखों का आसामी होगा। दहलावर को भनक भी नहीं लगेगी और तू मिलेनियर बन जाएगा।"

रमेश जैसे सोच में पड़ गया था। झांसा था भी तो लुभावना।

"सोच ले। मुझे दस-बीस हजार रुपया खर्च करके भी मेरे काम का आदमी मिल जाएगा, लेकिन तुझे ऐसा मौका कभी नहीं मिलेगा। मैं तुझे ही क्यों चाहता हूं, यह तू समझ नहीं रहा है। भई, मेरे साथ तेरी डील हुई थी। तूने दो कत्ल भी इसके लिए कर दिए। अब उनका कोई इनाम तुझे ही मिलना चाहिए। काम तो मैं ही कर लूंगा, किसी की जरूरत भी नहीं है। जगह मैंने देखी है और तरीके भी मैं जानता हूं, पर तू मुझे जिंदगी भर कोसेगा। मैं यहां से गरीब की बद्दुआ लेकर नहीं जाना चाहता। फैसला जल्दी कर।"

"दहलावर को पता चल गया तो वह मेरे छोटे-छोटे टुकड़े कर देगा।" यह कहते हुए वह कांप उठा।

Baba Novels Chat Room

"वह तेरे सिर पर थोड़े ही बैठा है। उसे कैसे पता चलेगा? इतना डरेगा तो तू किसी काम का नहीं। दहलावर कोई ज्योतिषी है, जो जान जाएगा। हिम्मत जुटा।"

"इतना कैश मैं कैसे संभाल पाऊंगा। पकड़ा ही जाऊंगा।"

"अबे, इतना कैश मैं भी कहां अपने पास रखता हूं। मेरे पास तो डायमंड हैं। गिनती में पांच भी तेरे लिए चालीस लाख के होंगे। मुट्ठी में दबा ले जाएगा, फिर आराम से किसी ज्वैलर्स को बेचकर कैश करा लेना...तो फिर आ रहा है न?"

"कहां मिलेंगे आप?" रमेश आखिरकार फंस ही गया था।

"वहीं मंदिर के पास नदी किनारे! वहां बहुत से साधु-संत भी पड़े रहते हैं। मैं भी उसी भेष में वहीं मिलूंगा। तू वहां पहुंचेगा तो मैं तुझे मिल लूंगा।"

"ठीक है, मैं निकलता हूं। देखता हूं, कोई ट्रेन मिल जाए तो!"

"पागल हुआ है। कोई टैक्सी किराए पर ले। बड़ी हद तीन हजार रुपया लेगा। कोई झंझट नहीं रहेगा। जल्दी पहुंच जाएगा, जल्दी लौट भी जाएगा।"

"यह तो ठीक कह रहे हो। ऐसा ही करता हूं।"

"शाबाश! आ जा। इंतजार कर रहा हूं तेरा।"

फोन डिस्कनेक्ट हुआ तो सैयादी कुटिलता से मुस्कराया। ऐसे बलि के बकरे उसने पहले भी कई बार हलाल किए थे। ऐसे लोगों को वह काठ का उल्लू समझता था। अब उसे अपना काम करना था। सबसे पहले तो अपना हुलिया बदलना था जिससे वह साधु दिखे। उस कमरे में बिस्तर पर संयोग से पीले रंग की चादर बिछी थी जिसे देखकर उसे यह आइडिया आया था। नंगे बदन पर उसे लपेट लेने-भर से उसकी ड्रेस बन जाने वाली थीं। बस उसे साधुओं की तरह दाढ़ी और बाल सैट करने थे।

दाढ़ियां तो उसके पास कई थीं। बालों के लिए उसने सोच लिया था कि उसी चादर में से कपड़ा निकालकर सिर के इर्द-गिर्द लपेट लेगा जैसे कि उसने कई साधु देखे थे। उसने अपने बैग में से छाती तक लटकने वाली एक सफेद दाढ़ी निकाली और बड़ी नफासत से अपने चेहरे पर सैट की। फिर एक तकिये का कवर निकालकर बैग में से जरूरी सामान उसमें डाला और चादर में से कपड़ा फाड़कर उसे साधु की झोली जैसा बना लिया। एक कपड़ा लेकर सिर के चारों ओर लपेटा। बदन ढकने के लिए भी कपड़ा बच गया था। उसने शीशे में खुद को देखा और संतुष्ट हुआ। पिस्तौल को उसने झोली में ही डाला और उसमें ऊपर से अपने कपड़े अखबार में लपेटकर रख लिये।

पूरी तरह संतुष्ट होकर साधु वेश में वह असाधु अब वहां से निकलने को तैयार था। वह किसी पूर्व विधायक का आवास था, जहां पर वह पिछले दो दिन

Baba Novels Chat Room

से रह रहा था। यद्यपि उसने अपनी इच्छा से मैनगेट के समीप बने सर्वेंट क्वार्टर में रहना मंजूर किया था और भीतर कौन था, क्या था, इससे उसे कोई मतलब नहीं था। उसने धीरे से अपने कमरे का दरवाजा खोला और बाहर झांका। हमेशा की तरह दो मुस्तैद गार्ड वहां तैनात थे। उसने अपनी हथेली में दबी छोटी-सी कंचेनुमा बॉल को उनकी ओर उछाल दिया। हल्की-सी आवाज हुई और उसने अपेक्षित परिणाम देखा। दोनों गार्ड जमीन पर गिर पड़े थे। वह सावधानी से कमरे से निकला और मैनगेट पर आया। उसने धीरे से छोटा गेट खोला और बाहर सड़क पर आ गया। अब वह आजाद था, कहीं भी जाने के लिए, पर उसे रास्ता नहीं पता था। उसने एक राहगीर को रोका।

"बच्चा! शिव मंदिर जाना है। कितनी दूर है और किस रास्ते पर है?" उसने पूछा।

"बाबा! यहां से तो बहुत दूर है। रिक्शा लेना होगा। तीन कि.मी. होगा। यहां से सीधे जाकर आगे चौराहे से रिक्शा ले लेना। घाट पर जाने को बोलना।"

"भगवान तुम्हारा भला करे बच्चा!" सैयादी कहकर आगे बढ़ा।

वह उस इलाके से जल्दी ही दूर हो जाना चाहता था, ताकि कोई संकट न आ जाए।

Baba Novels Chat Room

38

छोटा राजन के ऑफिस में

छोटा राजन ने आंखें तरेरीं, मगर मुस्कराहट नहीं छुपा सका।
"सरकार, फील्ड वर्क में आदमी पैदल कितना काम कर लेगा।"
छोटा राजन के कहने पर उसे मोटरसाइकिल की चाबी मिल गई तो वह हर्ष से उछल पड़ा।
"अब निकल। अपना मोबाइल नंबर देता जा, ताकि जरूरत पड़ने पर काम आए।"
"अपना नंबर बोलिए, अभी कॉल करता हूं।"
छोटा राजन ने नंबर बोला तो उसने अपने फोन से उसे कॉल की।
"तेरा उस्ताद खोजिया आजकल क्या कर रहा है?" छोटा राजन ने उसका नंबर सेव करते हुए पूछा।

Baba Novels Chat Room

"एमेले! पर निकल आए लगते हैं तेरे? दो दिन से जुलाब दे रहा है।" छोटा राजन सख्त लहजे में बोला–"हमें मामूली-सा प्रॉपर्टी डीलर ही समझता है क्या?"

"ऐसा नहीं है साहब! आपने कभी गटर में रात बिताई होती तो जानते कि मेरे पर क्या बीती है और आपने मेरी मदद भी नहीं की।" एमेले गिड़गिड़ाकर बोला।

"कौन कहता है मदद नहीं की? रात-भर मेरे दो आदमी तेरे चक्कर में मैनहोल खोलते रहे थे। अब यह मत कहना कि उन्हें उतरकर देखना चाहिए था।"

"नहीं कहूंगा, क्योंकि जवाब मैं जानता हूं। जो हुआ, उसे भूल जाइए। आगे की बात करते हैं। बॉस! अब मेरे को जॉब करना है। अपने ऑफिस की साफ-सफाई का ही काम दे दो।"

"पहले उस आदमी का नाम बता जिसने इतना बखेड़ा खड़ा कर दिया। हमारा पूरा सिस्टम ही हिला दिया। उस साले को तो तल-भूनकर खाऊंगा।" छोटा राजन ने दांत पीसे।

"माल! मेरा मतलब इनाम क्या होगा?"

जवाब में छोटा राजन ने गन निकालकर मेज पर रख दी।

"यह तो गरीबमार है बॉस! ऐसे तो आइंदा कोई आपको रास्ता भी न बताएगा, जानकारी की बात तो अलग है।" वह घबराकर बोला-"गन ही दिखानी थी तो अपने आदमियों को ही बोल दिया होता। मैं यहां आता ही नहीं। वहीं बता देता।"

"तू उसका नाम बक, जल्दी! इधर-उधर की मत कर।"

"उसका नाम हैदर है। मैं उस दिन घूमता-फिरता किले की ओर गया था तो वह मुझे घायल मिला था। मैं स्वभाव से ही दयालु हूं तो उसकी मदद करनी चाही। उसने मेरे से मोबाइल मांगा तो मैंने दे दिया। उसने न जाने किसको कॉल की और बताया कि कोई अबू सैयादी था, जो किले के मंदिर में बम लगाकर ब्लास्ट करके सांप्रदायिक दंगा फैलाना चाहता था। उसने यह भी कहा कि वह बहुत बड़ा और वांटेड आतंकवादी था, जो अब बुरहानपुर और आसपास के क्षेत्र में बड़ी वारदात कर सकता था। उसने दहलावर का भी नाम लिया। संयोग से मेरा फोन मेरे से भी ज्यादा चालू है और इसका कॉल रिकॉर्डर चालू रहता है, तो वे सारी बातें इसमें ऑटोमैटिक रिकॉर्ड हो गईं। कहो तो सुनाऊं।"

"सुना।" छोटा राजन ने कहा।

एमेले ने नया नकोर फोन निकाला और उसमें से रिकॉर्डिंग सुनाने लगा। यह वास्तव में प्रभास और खोजिया का कमाल था। प्रभास घायल हैदर की तरह बोल रहा था और खोजिया सुनने वाले की भूमिका में था। झांसा एकदम फिट था।

"हैदर तो मर गया। यह दूसरा आदमी कौन है जिसने बात आगे बढ़ाई?"

"यह तो पता लगाना पड़ेगा और मैं लगा सकता हूं, पर इस गन की नाल मेरी ओर ही रही तो मुश्किल है। मैं डरपोक भी तो बहुत हूं।" एमेले ने कहा।

"तू कैसे पता लगा सकता है? वह तरीका बता।"

"बॉस, ऐसे कामों के कुछ खास तरीके होते हैं और वे ऐसे ही नहीं बताए जाते। आप मुझे जॉब पर रख लो। बता दूंगा, क्योंकि तब आप मेरे अन्नदाता होंगे।"

"गन से जरा भी डर नहीं लग रहा है?"

Baba Novels Chat Room

"काम के आदमी को कोई जरा-सी बात पर गोली नहीं मारता बॉस? अच्छे बिजनेसमैन पैसे के लिए आदमी पालते हैं, गोली से मुर्दे बनाते हैं। आप अच्छे बिजनेसमैन हैं, यह बात मैं जानता हूं, इसलिए गन से वैसा डर नहीं लग रहा है, जैसा लगता है।"

"बहुत बातूनी आदमी है तू!" छोटा राजन मुस्कराया—"काम का भी है। चल तुझे जॉब दे देता हूं। हमारे लिए ऐसी ही जानकारी जुटाता रह। तेरे को बीस हजार रुपये महीना दूंगा।"

"यह हुई बात! अब मैं आपके दफ्तर का मुलाजिम हुआ। कुछ एडवांस मिल जाए तो मजा आ जाए। बॉस, मेरे रहने की क्या व्यवस्था होगी?"

"किराए पर कमरा लेना। अब यह पता लगाकर दिखा कि हैदर ने किसे फोन किया था।"

"चौबीस घंटे में पता लगा दूंगा।" एमेले जोश में बोला—"कुछ पैसे मिल जाते तो...।"

छोटा राजन ने उसे दो हजार रुपये दिए तो उसका मुंह लटक गया।

"सात हजार पहुंच गए तेरे पास। पांच पहले ले गया था। जानकारी अभी अधूरी है। मुंह मत बना। काम ठीक से करेगा तो पैसे की चिंता मत कर। इतना भिखारी भी नहीं लग रहा है तू। कैसे शानदार कपड़े पहन रखे हैं!"

"यह तो दोस्त की माया है बॉस! अंतिम उपहार समझो।"

"ठीक है! अब काम पर लग। जाकर पता लगा।"

"कोई ऐसा साधन मिले जिससे भागदौड़ में आसानी हो जाए। साइकिल भी चलेगी।"

छोटा राजन ने आंखें तरेरीं, मगर मुस्कराहट नहीं छुपा सका।

"सरकार, फील्ड वर्क में आदमी पैदल कितना काम कर लेगा!"

छोटा राजन के कहने पर उसे मोटरसाइकिल की चाबी मिल गई तो वह हर्ष से उछल पड़ा।

"अब निकल। अपना मोबाइल नंबर देता जा, ताकि जरूरत पड़ने पर काम आए।"

"अपना नंबर बोलिए, अभी कॉल करता हूं।"

छोटा राजन ने नंबर बोला तो उसने अपने फोन से उसे कॉल की।

"तेरा उस्ताद खोजिया आजकल क्या कर रहा है?" छोटा राजन ने उसका नंबर सेव करते हुए पूछा।

"उसने पहले कभी कुछ किया था, जो अब करता! घूमना ही उसका बड़ा

Baba Novels Chat Room

काम है। नौकर की तरह मेरा इस्तेमाल करता था। अब मैं मुड़कर भी उसके पास नहीं जाऊंगा।"

तभी एक बार फिर छोटा राजन का फोन बजा। उसने स्क्रीन पर नजर डाली तो एमेले को जाने के लिए कहा। एमेले बाहर निकल आया और छोटी-सी पार्किंग में खड़ी चार मोटरसाइकिल के पास आकर उन्हें इधर-उधर से देखने लगा।

"उस्ताद!" वह बड़बड़ाया–"सुन रहे हो!"

"मैं सुन रहा हूं।" प्रभास की आवाज आई–"बोल।"

"बॉस, ये जो आला तुमने मेरे गले में लटकाया है, इसका एक बेहतर इस्तेमाल सूझ रहा है। क्यों न मैं इसे छोटा राजन के दफ्तर में कहीं सैट कर दूं? इससे काम की बातें पता चलेंगी।"

"गुड! दिमाग तो है तेरे पास। अगर ऐसा कर सकता है तो कर।" प्रभास ने प्रशंसा भरे लहजे में कहा–"पर सावधानी से। ज्यादा छेड़छाड़ मत करना। सैटिंग डिस्टर्ब न हो जाए।"

"मैं कर लूंगा। वैसे अभी तक मेरा काम कैसा लगा?"

"बढ़िया! मैंने पहले ही कहा था कि लालच न करे तो तू बढ़िया आदमी है, काम का है।"

"मैंने सबक सीख लिया, फिर बात करता हूं। गैंग बाहर आ रहा है।"

"सुन बे एमेले!" छोटा राजन बाहर आकर बोला–"अब उसकी तलाश में दिमाग और टाइम मत खपा। वह कोई भी हो सकता है, इतने बड़े शहर में। उससे हमें कोई फायदा नहीं होगा, बुलेट ही बरबाद होगी।"

"तो फिर मैं अब क्या करूं बॉस! खाली बैठे तो नहीं रहा जाएगा। कोई काम तो दीजिए मुझे जिससे मुझे लगे कि ऑन ड्यूटी बंदा हूं।"

"बातें बढ़िया करता है तू।" छोटा राजन हंसकर बोला–"काम तो कोई ऐसा नहीं दिख रहा है, जो तू कर सके, पर तेरे को ऑन ड्यूटी फील कराना भी जरूरी है। एक काम कर, ऑफिस में झाड़ू-पोंछा कर दे। फिलहाल तो यही एक काम है।"

वहां खड़े सभी आदमी हंस पड़े, जबकि एमेले ने सहमति में सिर हिलाया।

"बॉस, काम कोई भी छोटा नहीं होता और नौकरी के पहले दिन आदमी को जो भी काम मिले, कर लेना चाहिए। इससे मालिक का भरोसा बढ़ता है कि कोई तो है, जो काम के बदले तनख्वाह ले रहा है। दिन-भर गप्पे लड़ाने के पैसे देते मालिक का दिल दुखता है।" एमेले ने कहा।

सभी सकपका गए, जबकि छोटा राजन ठहाका मारकर हंस पड़ा।

Baba Novels Chat Room

"अबे, हम तेरे से कहीं ज्यादा और बड़ा काम करते हैं।" एक आदमी बोला–"बॉस से पूछ कि जब हम काम करते हैं तो पैसा गाड़ियों में भरकर आता है।"

"करते होंगे भाई! मुझे तो सुबह से खड़े ही दिखाई दे रहे हो।"

"चलकर झाड़ू-पोंछा कर।"

एमेले ऑफिस की ओर बढ़ा तो छोटा राजन ने रोक दिया।

"रहने दे एमेले! तू अपनी बातों से ही मन बहला लेता है। झाड़ू-पोंछा तेरा काम नहीं। तू एक काम कर। बाजार जा और अपनी तनख्वाह में से चार पैसे खर्च करके सबके लिए जैन की दुकान से समोसे और जलेबी ले आ। मिल-बैठकर खाएंगे, बातें करेंगे।"

"जो हुक्म बॉस! अब इनमें से कोई आदमी मुझे यह बताएगा कि मेरे हाथ में जो चाबी है, वह इनमें से किस मोटरसाइकिल की है। मैं कुछ कन्फ्यूजिया गया हूं।"

"बताओ भई!" छोटा राजन भी मस्ती के मूड में आ गया था।

"पल्सर की है। संभालकर चलाना। भारी गाड़ी है। दब गया तो चूरन बन जाएगा।"

एमेले ने चाबी पल्सर में लगाई और बड़े स्टाइल से सवार हुआ। गाड़ी गर्जना के साथ स्टार्ट हो गई और एमेले ने उसे वृत्ताकार घुमाकर पार्किंग से बाहर किया, फिर यह जा और वह जा। उसने जैन की मशहूर दुकान देखी थी। एक जगह गाड़ी रोक दी।

"साहब! कुछ समझ में नहीं आ रहा है।" वह बोला।

"लगा रह। कुछ जरूर सामने आएगा। अभी समोसे, जलेबी खा। मैं अभी व्यस्त हूं। यहां घाटी पर हूं। खोजिया मेरे साथ है। तू अपने काम से लग।" प्रभास की आवाज आई।

एमेले ने मोटरसाइकिल स्टार्ट की और आगे बढ़ा। जलेबी और समोसे लेने के बाद वह मोटरसाइकिल के पास आया तो किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। वह मुड़ा तो खुश हो गया। उसका एक पुराना मित्र, जो उसे उसके कविकाल में परिचित था, सामने था।

"अरे यार गोविंद! बड़े दिन बाद दर्शन दिए।" एमेले चहका–"कहां रहता है आजकल?"

"इसी शहर में रहता हूं।" गोविंद नाम का मित्र बोला–"पूर्व विधायक के यहां गार्ड हूं। रात की ड्यूटी है तो दिन में सोता हूं, इसलिए दिन-रात का घेरा

Baba Novels Chat Room

है। किसी से मिलना नहीं हो पाता। तुम कहां हो आजकल? कविता वगैरह तो अब लिखते नहीं लगते।"

"कवियों की दुर्गति देखकर लाइन बदल ली। अब मोहिनी प्रोपर्टीज में जॉब करता हूं।"

"जॉब क्या, रंगदारी ही वसूलते होंगे। वहां तो यही काम होता है।"

"मैंने तो आज ही ज्वॉइन किया है। ऑफिस की साफ-सफाई करता हूं।"

"इससे ज्यादा कुछ करना भी मत। अपने काम से काम रखना। ये बड़े लोग हैं। बड़े काम करते हैं।"

"खैर, हमें क्या! जो करेगा, वही भुगतेगा। हमें तो अपना पेट पालना है। ढंग की जगह काम भी नहीं मिलता। मैं भी ऐसे ही फंसा पड़ा हूं। विधायक तमाम आड़े-तिरछे काम करता है। आ कहीं बैठकर बात करते हैं।" गोविंद ने कहा तो एमेले मान गया।

Baba Novels Chat Room

39

सिमरन संकट में

मिसेज सेठी बुत बनी खड़ी रह गई थी। उसके पति ने जो बताया था, उससे समझ में आ रहा था कि मामला गंभीर है और उसे...खास उसे अपनी जुबान पर काबू रखना था, वरना सिमरन संकट में तो फंस ही गई थी। उसमें से सही सलामत निकलने में मुश्किल हो सकती थी। इसी बीच उसका मोबाइल बज उठा।

दिल्ली वाली जेठानी ही थी। अब उसे कुछ नहीं बताना।

"हां दीदी! सिमरन का फोन आ गया था लैंडलाइन पर। घर आ रही है। सब ठीक है। आप चिंता मत करना और जेठजी को तकलीफ मत देना। मैं बाद में बात करती हूं। इनको भी खबर कर दूं। परेशान होंगे।"

Baba Novels Chat Room

कपिल सेठी हैवी व्हीकल्स में चीफ इंजीनियर था और कपूरथला में रहता था। उसके बीवी-बच्चे हाई प्रोफाइल लाइफ जीते थे। घर में पैसे का कोई अभाव था ही नहीं। सेठी को आकर्षक सैलरी मिलती थी। दिल्ली की बहुमंजिला कोठी से लाखों रुपया प्रतिमाह किराया आता था। पंजाब में पुश्तैनी जमीन थी जिसमें से अपने हिस्से को उसने करोड़ों में बेच दिया था।

कपिल सेठी का बेटा भी इंजीनियर था और आकर्षक पैकेज पर चंडीगढ़ में जॉब करता था। अभी उसकी शादी नहीं हुई थी। एक बेटी सिमरन थी, जो पोस्ट ग्रेजुएशन कर रही थी। कार से कॉलेज आती-जाती थी, मगर उस दिन देर शाम तक घर नहीं लौटी तो मिसेज सेठी ने उसे फोन किया, जो कि

बंद जा रहा था। दो-एक सहेलियों के नंबर ट्राई किए, मगर संतोषजनक जवाब न मिला, तब मिसेज सेठी ने अपने पति को फोन किया।

"अजी सुनते हो! अभी तक सिमरन कॉलेज से नहीं लौटी। उसका फोन भी बंद जा रहा है। सहेलियां भी कुछ नहीं बता पा रही हैं। कहती हैं कि वह चार बजे ही घर की ओर चली गई थी। मेरा तो दिल घबरा रहा है जी। मेरी बच्ची!" मिसेज सेठी एक ही सांस में बोल गई।

"सब्र धर! वह इतनी छोटी बच्ची नहीं है जितनी ज्यादा तू घबरा रही है।" सेठी ने अप्रसन्नता से कहा–"वह कहीं ऐसी पार्टी-शार्टी में गई होगी, जहां फोन बंद करके रखा जाता है। कोई पहली बार है, जो वह घर नहीं आई इस वक्त तक! उसकी उम्र ही ऐसी है।"

"नहीं जी! फोन तो वह कभी बंद नहीं करती। मेरी बच्ची...।"

"तू जब तक क्राइम पेट्रोल देखना बंद न करेगी, तब तक ऐसे वहम तेरे मन से निकल नहीं सकते। रही-सही कसर वह सावधान इंडिया पूरी करता है। तुझे याद है कि पिछले कितने दिन से तूने चैनल नहीं बदला? तेरे दिमाग पर वही सब सवार है।"

"मैं मां हूं जी! अपनी औलाद के लिए ऐसी चिंता लगी ही रहती है।"

"चिंता ठीक है, वहम ठीक नहीं। इसका कोई इलाज नहीं होता, फिर भी मैं सिमरन से बात करने की कोशिश करता हूं। तुझे फोन करके बताऊंगा।"

"आप घर नहीं आ रहे हैं?"

"आ रहा हूं। एक घंटा लगेगा, तब तक शांति से बैठ।"

मिसेज सेठी ने फोन तो काट दिया, पर शांति से बैठना उसके लिए दुष्कर था। वह तो कॉलोनी की एक-एक बात की ऐसी पड़ताल करती थी कि मामूली मामले को भी सी.बी.आई. जांच का बना देती थी। उसने एक बार और सिमरन को फोन मिलाया, जो बंद ही आया।

अब तो परिवार से बात छुपाना ठीक नहीं था। बेटे को फोन करके सारी बात बताई तो उसने भी बाप की तरह क्राइम सीरियल न देखने की सलाह पहले दी और तसल्ली बाद में। अब तो दिल्ली वाली जेठानी को ही बताना पड़ेगा। वह ठीक उसके जैसी थी। सावधान इंडिया की पागलपन तक मुरीद! दोनों खाली वक्त में फोन पर ही एपीसोड का पोस्टमार्टम कर देती थीं। दोनों की अच्छी बनती थी। फोन मिला दिया।

"दीदी! मेरा दिल घबरा रहा है। सिमरन अभी तक घर नहीं आई। उसका फोन भी बंद जा रहा है। सहेलियां भी कुछ नहीं बता पा रही हैं।" मिसेज सेठी ने कहा।

Baba Novels Chat Room

"हाय रब्बा! यह खबर तो बड़ी बुरी सुनाई। सयानी लड़की इतनी लेट तक घर से बाहर नहीं रहनी चाहिए। अभी परसों ही तो सावधान इंडिया में दिखा रहे थे। लड़की जरा-सी लेट हुई थी कि बदमाशों ने उठा लिया और बड़ी दुर्गति की। मेरे से तो लाश टी.वी. पर भी न देखी जा रही थी, सामने होती तो बेहोश ही हो जाती। कमबख्तों ने बुरा किया। कहीं हमारी बिटिया भी किसी राक्षस के पल्ले न पड़ गई हो। तुम्हारे जेठ को बताती हूं। अपने चैनल पर अभी न्यूज फ्लैश करेंगे। देखना, सिमरन को उठाने वालों के हाथ-पैर फूल जाएंगे।"

अभी उन दोनों की शुरुआत ही हुई थी कि जाने कितनी लंबी चलती, अगर बीच में ही लैंडलाइन वाले फोन की घंटी न बज उठती। मिसेज सेठी ने अपनी कॉल होल्ड की और लपककर लैंडलाइन फोन रिसीव किया।

"अब तू फोन से चिपक गई।" उधर कपिल सेठी था—"किसे बता दिया तूने! यहां बड़ी परेशानी खड़ी हो गई है। गौर से सुन, तूने किसी से कोई बात नहीं करनी है। घर से बाहर बात निकली तो गजब हो जाएगा। आज तेरा सावधान इंडिया सच्चा हो गया लगता है। सिमरन का किडनैप हो गया है।"

"क्या...क्या कहा आपने? मेरी बच्ची का...दिल्ली वाली दीदी सच कह रही थीं।"

"तूने वहां तक बात पहुंचा दी! प्रीतो, तुझे कब अक्ल आएगी!" सेठी ने दांत पीसे—"अपने घर की बात तू ऐसे हवा में उछाल रही है। शरम कर। कुछ उल्टा-सीधा हो गया तो लोग सौ तरह की बात करेंगे। अब मुंह पर टेप लगा ले।"

"मेरी बच्ची...।" मिसेज सेठी रो पड़ी।

"वह ठीक है। किडनैपर्स से मेरी बात हुई है। उन्हें मेरे से कोई काम है जिसके लिए उन्होंने मेरे पर दबाव बनाया है। तू हो-हल्ला मत मचा, वरना सिमरन संकट में पड़ जाएगी, अभी तक तो ठीक है मगर दिक्कत हो जाएगी, अगर बात बाहर निकली। अभी भाभी को बोल कि सिमरन घर लौट आई है। समझी।"

"मगर...मगर...।"

"जितना कहा है, उतना कर। मैं घर पहुंच रहा हूं। जानता हूं कि तुझे संभालना बड़ा कठिन काम है। बात का बतंगड़ बनाने में तेरा कोई जोड़ नहीं। मामले की गंभीरता समझ। हम बहुत बड़े खतरे में फंस रहे हैं। सिमरन के किडनैपर्स मामूली लोग नहीं हैं। मैं अभी दस मिनट में पहुंच रहा हूं। इतनी देर खुद पर काबू रख।"

फोन कट गया था। मिसेज सेठी बुत बनी खड़ी रह गई थी। उसके पति ने जो बताया था, उससे समझ में आ रहा था कि मामला गंभीर है और उसे...खास उसे अपनी जुबान पर काबू रखना था, वरना सिमरन संकट में तो फंस ही गई

Baba Novels Chat Room

थी। उसमें से सही सलामत निकलने में मुश्किल हो सकती थी। इसी बीच उसका मोबाइल बज उठा।

दिल्ली वाली जेठानी ही थी। अब उसे कुछ नहीं बताना।

"हां दीदी! सिमरन का फोन आ गया था लैंडलाइन पर। घर आ रही है। सब ठीक है। आप चिंता मत करना और जेठजी को तकलीफ मत देना। मैं बाद में बात करती हूं। इनको भी खबर कर दूं। परेशान होंगे।"

"आहो! सिमरन घर आ जाए तो मेरी बात कराना। मैं समझाऊंगी उसे।"

"ठीक है दीदी। अच्छा सतश्री अकाल!"

"सतश्री अकाल! रब तैनू चंगा रक्खे।" दिल्ली वाली जेठानी ने कहा।

प्रीतो ने फोन काट दिया और फूट-फूटकर रोने लगी।

Baba Novels Chat Room

40

अश्वत्थामा का संकल्प

"युवक! तुम हमें उस अधर्मी के विषय में बताओ!" अश्वत्थामा आवेश में संकल्प लेते हुए बोले–"हम उस शिवद्रोही को उसके पाप का दंड अवश्य देंगे। इसके लिए हमें अपना अज्ञातवास भी त्यागना पड़े तो भी हम पीछे नहीं हटेंगे। बस उस दुष्ट के विषय में हमें बता दो।"
"उसका नाम अबू सैयादी है, जो किसी पश्चिमी देश का निवासी है। वह इसी प्रकार मानव रक्त बहाता है। किले के शिव मंदिर में भी उसने ऐसा ही प्रयास किया था और आप उस समय वहीं थे। एक युवक ने अपने प्राण देकर उस ध्वंस को रोका था। उस दुष्ट का उद्देश्य सांप्रदायिक दंगे फैलाने के साथ ही आपका भी अहित करना था।"

Baba Novels Chat Room

अश्वत्थामा पूजा करने चल पड़े थे। जलमार्ग से होते हुए वे भव्य मंदिर के सामने नदी के जल में खड़े थे। वे जानते थे कि जैसी आज के मनुष्य की जिज्ञासु प्रवृत्ति है, उसमें आज वहां भी उनके दर्शनार्थी खड़े हो सकते हैं, क्योंकि कल की पूजा के पश्चात् उनके वहां आगमन की पुष्टि हो गई होगी। अत: अश्वत्थामा पहले संतुष्ट हो लेना चाहते थे कि उनकी पूजा में कोई विघ्न तो नहीं आएगा या उन्हें फिर से सम्मोहिनी मंत्र का प्रयोग तो नहीं करना पड़ेगा।

सर्वत्र सन्नाटा व्याप्त था। नदी के तट पर लोग तो थे, पर सब निद्रामग्न थे। वे तनिक आगे बढ़े तो ठिठक जाना पड़ा। उनका संदेह ठीक था। कुछ लोग थे, जो जाग रहे थे और सिर उठाकर बार-बार देख रहे थे। अब सम्मोहिनी का प्रयोग ही निर्विघ्न पूजा का अवसर बन सकता था। उन्होंने नेत्र बंद करके

मंत्र का उच्चारण किया और अंजलि में जल लेकर नदी के किनारे की ओर उछाल दिया। कुछ क्षण पश्चात् अश्वत्थामा विश्वास के साथ तट की ओर बढ़े तो फिर ठिठक जाना पड़ा। उन्हें कृत्रिम प्रकाश की रोशनी में करबद्ध मुद्रा में खड़ा वही युवक दिखाई दिया, जो उन्हें किले में भी मिल चुका था। सम्मोहिनी के प्रभाव से अछूता! परंतु वह उनकी पूजा में कोई विघ्न डालता, ऐसा उन्हें न लगा। वह तो बड़ी श्रद्धा से घुटनों के बल बैठ गया था। अश्वत्थामा ने आगे कदम बढ़ाया ही था कि एक भयानक विस्फोट हुआ और देखते-ही-देखते उनसे दो सौ मीटर की दूरी पर खड़ा मंदिर ढह गया। अश्वत्थामा स्तब्ध रह गए। उनकी आंखों के सामने उनके आराध्य का मंदिर ढह गया था। अश्वत्थामा ने उस युवक को अपनी ओर दौड़ते हुए देखा। यह कैसा उल्कापात था, जैसे किसी दैवीय अस्त्र से मंदिर का विध्वंस कर दिया गया हो? वह कौन शिवद्रोही था जिसने ऐसा अक्षम्य अपराध किया था? अश्वत्थामा के नेत्र क्रोध से जल उठे थे। इस विषय में उस युवक से कोई बात पता चल सकती थी। ऐसा ही विस्फोट उनके सामने किले के बाहर भी हुआ था।

"हे महान योद्धा!" वह युवक समीप आकर अश्वत्थामा के चरणों में गिर गया—"एक...एक राक्षस ने भगवान शिव का मंदिर ध्वस्त कर दिया। आपकी पूजा में विघ्न डाल दिया।"

"कौन है वह दुष्ट! किसने किया है ऐसा घोर अपराध?" अश्वत्थामा गरज उठे।

"वह पापी विदेशी है द्रोणपुत्र! वह मनुष्यों को धर्म के नाम पर परस्पर लड़ा देना चाहता था। वह सफल हो गया। अब यह नगर मानव युद्ध से रक्त-रंजित हो उठेगा। सांप्रदायिक युद्ध शुरू हो जाएगा। कितने ही निर्दोष मृत्यु को प्राप्त होंगे।"

"ऐसा क्यों होगा युवक?" अश्वत्थामा ने प्रश्न किया।

"क्योंकि मनुष्य अब बहुधर्मी हो गए हैं। शैव धर्म के अनुयायी इस विध्वंस का कारण मुस्लिम धर्म के लोगों को मानेंगे और क्रोध में उन पर टूट पड़ेंगे। इसकी प्रतिक्रिया भी होगी देव! परस्पर हत्याएं होंगी।"

"युवक! तुम हमें उस अधर्मी के विषय में बताओ!" अश्वत्थामा आवेश में संकल्प लेते हुए बोले—"हम उस शिवद्रोही को उसके पाप का दंड अवश्य देंगे। इसके लिए हमें अपना अज्ञातवास भी त्यागना पड़े तो भी हम पीछे नहीं हटेंगे। बस, उस दुष्ट के विषय में हमें बता दो।"

"उसका नाम अबू सैयादी है। वह इसी प्रकार मानव रक्त बहाता है। किले के शिव मंदिर में भी उसने ऐसा ही प्रयास किया था और आप उस समय वहीं थे। एक युवक ने अपने प्राण देकर उस ध्वंस को रोका था। उस दुष्ट का उद्देश्य सांप्रदायिक दंगे फैलाने के साथ ही आपका भी अहित करना था।"

Baba Novels Chat Room

"साधारण मनुष्य के पास यह दैवीय अस्त्र कहां से आया?"

"यह दैवीय अस्त्र नहीं महान योद्धा! यह विज्ञान की खोज से प्राप्त विस्फोटक अस्त्र है और यह संसार में बहुत मात्रा में उपलब्ध है। हम इसे बारूद कहते हैं। इससे छोटे-बड़े विस्फोटक अस्त्र-शस्त्र निर्मित होते हैं। हे द्रोणपुत्र! मेरी जिज्ञासा का समाधान करने की कृपा करें। ऐसे विस्फोट होने के बाद हम मनुष्यों में हलचल मच जाती है, पर यहां सब शांत पड़े हैं! क्या यह आपकी किसी शक्ति का प्रभाव है?"

"हां युवक! हमने निर्विघ्न पूजा करने के लिए सम्मोहिनी मंत्र से इस क्षेत्र को संज्ञा शून्य कर दिया है। जितनी परिधि में उसका प्रभाव है, उसमें सभी जीव अर्द्धमूर्च्छा की स्थिति में चले गए हैं। सूर्य की किरणों से इसका प्रभाव समाप्त हो जाएगा। उस दिन किले में हमसे तुम्हारी भेंट हुई, तब भी हमने वहां उपस्थित सैनिकों को सम्मोहिनी के प्रभाव से अर्द्धमूर्च्छित कर दिया था और प्रायः ऐसी बाधा आने पर हम यही करते हैं।"

"हे महावीर! मैं भी तो साधारण मनुष्य ही हूं। मैं उससे प्रभावित क्यों नहीं हुआ?"

"तुम साधारण नहीं हो युवक! तुम असाधारण नक्षत्र में जन्मे हो। निश्चित मृत्यु की घड़ी में जन्म लेकर भी तुम जीवित रहे। किसी विशेष उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए नियति ने तुम्हारा चयन किया और इसी कारण तुम्हें प्राणदान दिया है।"

"देव! आपने कहा कि मेरी आपसे भेंट किले में हो चुकी है, परंतु मुझे स्मरण नहीं है।"

"हमने उसी समय तुम्हारे मस्तिष्क से उस घटना को निकाल दिया था।" अश्वत्थामा ने कहा—"हम नहीं चाहते थे कि हमारे अस्तित्व को प्रचारित किया जाए।"

Baba Novels Chat Room

"हे महाबली! इस समय संसार में मानवता बहुत पीड़ित है और किसी चमत्कार की आशा में है। पापियों के विनाश हेतु, सत्य और धर्म की पुनर्स्थापना हेतु भगवान के अवतरित होने की पुकार कर रही है। आप सामर्थ्यवान है, आज के मानव के लिए तो आप ही भगवान का प्रतिरूप हैं। मानवता का उद्धार करिए महाधनुर्धारी!"

"युवक! भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जब भी मानवता संक्रमण काल में होगी, मैं जन्म लूंगा। उनके वचन असत्य नहीं हो सकते। उन परम उद्धारक का विश्वास करो। उचित समय आने पर महायोगिराज अवश्य पीड़ा हरेंगे। वे अपने भक्तों को कभी विस्मृत नहीं करते। समय-समय पर उनकी प्रेरणा से उद्धारक अवतरित होते आए हैं और होते रहेंगे। सृष्टि का संतुलन बनाए रखने के लिए परमेश्वर की तुला सदैव सक्रिय रहती है। वे कण-कण में विराजमान हैं। वही पीड़ा हैं, वही पीड़ादायक हैं और पीड़ित भी वही हैं। उनकी प्रेरणा में हम जैसे तुच्छ मानव हस्तक्षेप करने की सामर्थ्य नहीं रखते।"

"आप उचित कह रहे हैं महाबली, किंतु यह भी देखिए कि कैसा ध्वंस किया है उस दुष्ट ने! ऐसे प्रतिदिन संसार में कहीं-न-कहीं विध्वंस होते रहते हैं जिनमें अनेक निर्दोषों के प्राण जाते हैं।"

"यह मनुष्य की प्रगति से होने वाली गति है युवक! जीवन-मृत्यु पर सिर्फ परमेश्वर का ही अधिकार है, फिर भी हम उस दुष्ट को तो अवश्य ही दंडित करेंगे जिसने हमारे मर्म पर आघात किया है। यदि वह पाताल में भी जा छुपे तो भी हम उसे खोज लेंगे। यदि तुम उसके विषय में कुछ जानते हो तो बताओ। इस समय वह नराधम कहां है? हम अभी चलकर उसके पापकर्म का कठोर दंड देंगे।"

"महाबली! मैं क्षमाप्रार्थी हूं कि मुझे उसके विषय में कुछ नहीं पता, परंतु मैं उसे खोजकर रहूंगा और आप तक अवश्य ही उसकी सूचना पहुंचाऊंगा। आप यदि अनुमति दें तो मैं आपसे पुनः भेंट करने का इच्छुक हूं। आप जैसे परमवीर योद्धा का सान्निध्य मुझ जैसे तुच्छ मनुष्य के लिए स्वर्ग की अनुभूति है। दया करें हे कृपानिधान!"

"युवक! तुम्हारा उद्देश्य हमें संकोच में डालता है। तुम संसार के समक्ष हमारे अस्तित्व को सिद्ध करके कीर्ति प्राप्त करने की इच्छा रखते हो। इसमें तुम्हारे व्यावसायिक हित भी सम्मिलित हैं। हम किसी प्राप्ति हेतु स्वयं को समर्पित नहीं करना चाहते। हमें स्वयं के अस्तित्व को सिद्ध करने या कराने की अभिलाषा नहीं है। हम अनंतकाल तक जीवन की पीड़ा से श्रापित हैं और आज के मानव से निकटता हमारे लिए उचित नहीं है।"

"हे महाबली! इस पवित्र जल को हाथ में लेकर मैं शपथ लेता हूं कि मैं अपने यश और व्यावसायिक लाभ के उद्देश्य को त्यागकर केवल आपका कृपापात्र रहूंगा।"

युवक की दृढ़ता पर अश्वत्थामा मुस्कराए।

"अभी हमें जाना होगा युवक! सूर्यदेव अपनी रश्मियों को प्रकीर्णित कर रहे हैं। संभवतः पुनः भेंट होगी।"

अश्वत्थामा वापस नदी में चले गए। प्रभास अपने स्थान पर खड़ा रहा। वह बुरी तरह आंदोलित था। वह एक ऐसे महान पौराणिक योद्धा का सान्निध्य प्राप्त कर चुका था, जो दुनिया के लिए मिथक था। उसे पुनः भेंट का आश्वासन भी मिल गया था। यद्यपि अब प्रभास को अपने जर्नलिस्ट मन को काबू में करना था! वह ऐसा कर लेगा और एक महावीर को दिए वचन को नहीं तोड़ सकता था।

उसने पीछे मुड़कर देखा। मंदिर मलबे में बदल गया था। न जाने कितनी जानें गई थीं और कितनी ही जाने के हालात बन गए थे। उसे कुछ करना होगा।

Baba Novels Chat Room

उसने अपना फोन निकाला और इंस्पेक्टर राठी को कॉल की। देर लगी, पर फोन उठा। उसने राठी को सारी बात बताई, पर अश्वत्थामा का जिक्र गोल कर गया।

"हे भगवान्! इतनी बड़ी आतंकी घटना हो गई और शहर सोया पड़ा है। जागेगा तो खून के नाले बह जाएंगे। मैं अभी अपने अधिकारियों को सूचित करता हूं।"

"जल्दी करो। थोड़ा समय मिल रहा है। दंगे को भड़कने से पहले सुरक्षा चाक-चौबंद हो जानी चाहिए जिससे उन्माद को कम किया जा सके।"

"मैं करता हूं। तुम वहां से हिलो। कुछ ही देर में शहर छावनी बन जाएगा।"

प्रभास ने स्थिति की गंभीरता समझी। उसे फिलहाल वहां नहीं रुकना चाहिए था। उसने अपनी मोटरसाइकिल स्टार्ट की और होटल की तरफ चल पड़ा। उसे अपने मस्तिष्क में अनार-से फूटते महसूस हो रहे थे।

मठाधीश बहुत गंभीरता से सांग-सी को देख रहे थे। आज मठ में दो अधिकारी आए थे, जिन्होंने उनसे पूछताछ की और अपनी संभावना को व्यक्त किया।

"भगवन्, आप दिव्य पुरुष हैं। शांति के समर्थक ही नहीं, अग्रदूत भी हैं।" अधिकारी ने विनम्रतापूर्वक कहा था-"राजनीतिक जीवन में आपका न कोई हस्तक्षेप है, न होना चाहिए। यह शासन और नागरिकों का विषय है। आप ठहरे ध्यान और साधना में संलग्न तपस्वी। आप अध्यात्म के विषय में अपार ज्ञान रखते हैं, जबकि शासन संचालन का ज्ञान तो राजनीतिज्ञों को होता है। अतः दोनों ही परस्पर विरोधी नहीं होते, न होने चाहिए। अभी तक यही होता रहा है, परंतु शायद अब यहां राजनीति में दखल करने वाले लोग भी छद्मवेश में आकर रहने लगे हैं।"

"श्रीमान्! आप विषयवस्तु पर प्रकाश डालिए!" मठाधीश ने स्पष्ट कहा।

"हमारे देश में बौद्ध धर्म में आस्था रखने वालों की संख्या अधिक है। इनमें साधारण गृहस्थ स्त्री, पुरुष व बच्चे आदि सभी हैं। उनका जीवन बुद्ध की शिक्षाओं से चलता है। भिक्षु वर्ग धर्म का प्रचार-प्रसार, अध्यात्म-वृद्धि और शांति संदेश फैलाने का मुख्य कार्य करता है और कोई साधारण मनुष्य दीक्षा लेकर ही भिक्षु बनता है।"

"भंते! आपका अभिप्राय हम समझ नहीं पा रहे हैं। ये तो साधारण बातें हैं, जो यहां का बालक भी जानता है। आप मठ के विषय में कुछ कह रहे थे?"

"भगवन्, मैं उसी बात पर आ रहा हूं। आपके मठ से कुछ भिक्षु प्रातःकालीन शांति-यात्राका आयोजन कर रहे हैं जिस पर शासन को कोई आपत्ति नहीं है। यह तो एक पवित्र कार्य है, परंतु इससे शासन के एक नियम का नागरिक उल्लंघन होने लगा है। शासन ने किसी भी प्रकार के नागरिक प्रदर्शन को प्रतिबंधित कर

Baba Novels Chat Room

रखा है। यदि किसी नागरिक को किसी भी तरह की समस्या है तो वह सीधे शासन द्वारा स्थापित हेल्प सेंटर जा सकता है, जहां उसे अपनी बात कहने का अधिकार है। उसके लिए प्रदर्शन, धरना, हड़ताल उचित नहीं है, परंतु शांति-यात्रा में आम नागरिक जुटने लगे हैं और व्यावसायिक गतिविधियों में बाधा होने की संभावना बनने लगी है। इससे सुरक्षाकर्मियों ने शांति-यात्रा में आम नागरिकों के सम्मिलित होने पर प्रतिबंध लगाया तो आज आम नागरिक भिक्षुवेशी बनकर उसमें सम्मिलित हुए। प्रश्न उठता है कि वे भिक्षुवेशी किसी प्रयोजन विशेष के लिए बने या किसी ने भीड़ जुटाने के लिए उनका ब्रेनवाश किया। भविष्य में आम नागरिक उनसे प्रेरित हो सकते हैं या ब्रेनवाश बड़े पैमाने पर निरंतर किया जा सकता है, यही शासन की चिंता का विषय है। आप मार्गदर्शन करें भगवन्!"

"भंते! शासन जब धर्मार्थियों के कारण चिंतित होने लगे तो उसे अपनी नीतियों और शासन शैली का पुनरावलोकन करना चाहिए। बुद्ध के अनुयायी चाहे श्रमण हों या गृहस्थ, सदैव प्रेम, अहिंसा और शांति की मांग करते हैं। शासन को इससे चिंता नहीं होनी चाहिए।"

"भगवन्! आप हमारा तात्पर्य नहीं समझ रहे हैं। हम उन आम नागरिकों के यकायक भिक्षु बन जाने को लेकर चिंतित हैं—जो कल व्यवसायी थे, वे आज विरक्त कैसे हुए? कहीं यह किसी षड्यंत्र के कारण तो नहीं! कहीं किसी प्रकार के धार्मिक आंदोलन का सूत्रपात तो नहीं, जो देश की आर्थिक प्रगति को बाधित कर सकता है?"

"सत्ता-स्वार्थ का भय पवित्रता में संदेह करता ही है भंते! धर्म प्रतिक्षण सुधारवादी होता है। यह प्रतिक्षण विस्तारोन्मुखी भी होता है। जब कृपा होती है तो समूह-के-समूह भोगविरक्त होकर योग की ओर मुड़ जाते हैं।" मठाधीश ने शांत, सहज उत्तर दिया—"साधनापथ पर चलने के कोई विशेष कारण नहीं होते, यह तो सहज प्रेरणा का विषय है।"

"भगवन्! इन गूढ़ बातों को समझना हमारे लिए कठिन है। शासन इस बात का उत्तर जानना चाहता है कि क्या शांति-यात्राआपकी अनुमति से प्रारंभ हुई है?"

"भंते, मठाधीश होने के कारण यह सामान्य नियम तो हमें मानना ही था। यही भिक्षुधर्म भी है कि लोगों में शांति-संदेश फैलाएं। इसके लिए भ्रमण, यात्रा और संगोष्ठियां ही सहायक होती हैं।" मठाधीश ने कहा।

"हमें आज्ञा दीजिए भगवन्! साथ ही कृपा करें कि शासन की प्राथमिकताओं को समझते हुए मठवासी नागरिक नियमों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करें।" अधिकारी उठ खड़ा हुआ और अपने साथी सहित वहां से चला गया।

इसके बाद मठाधीश ने सांग-सी को बुलाया।

Baba Novels Chat Room

"भंते! इस शांति-यात्रा का रहस्य क्या है?" मठाधीश ने प्रश्न किया।

"भगवन्! शांति-यात्रा का तात्पर्य लोगों को शांति की ओर प्रेरित करना है। जब जीवन की कठिनाइयों और शासकों की हठधर्मिता से समाज में अशांति उत्पन्न होती है तो साधु धर्म कहता है कि पीड़ितों, शोषितों को शांति प्रदान करने के हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए। इसे सत्ता-स्वार्थी षड्यंत्र कहते हैं, राजनीति में धर्म का हस्तक्षेप कहते हैं। वास्तव में यह पीड़ितों की पीड़ा को कम करने का बुद्ध संदेश है।"

"भंते! यद्यपि तुम्हारी भावना बुद्धत्व के अनुकूल है, परंतु तुम्हारे शब्दों में साधुत्व से अधिक राजनीतिक तत्त्व प्रदर्शित हो रहे हैं।"

"भगवन्! यदि लक्ष्य पवित्र हो, हिंसाहीन हो, अनिवार्य परिवर्तन को इंगित करता हो, तो उसमें कुछ मानवीय नियमों को भंग किया जा सकता है। मानव निर्मित इन नियमों में प्राय: कुछ ही लोगों के हित छुपे होते हैं और अधिकांशत: समाज पीड़ित ही होता है। विडंबना यह है कि इन नियम बनाने वालों ने नियम भंग किए हैं। क्या राजनीति में धर्म का हस्तक्षेप ही प्रतिबंधित होना चाहिए, जबकि धर्म में राजनीति का हस्तक्षेप चहुंओर हो रहा है। वे अपने सत्ता-स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म में हस्तक्षेप कर सकते हैं और हम मानव-कल्याण के लिए राजनीति में हस्तक्षेप नहीं कर सकते।"

"भंते! तुम्हारा परिचय क्या है? तुम्हारी वाणी में आक्रोश झलकता है, जो बुद्धत्व की सहजता के विपरीत है। अवश्य ही इस द्वैत का कोई रहस्य है।"

"भगवन्!" सांग-सी ने हाथ जोड़कर कहा-"मैं जीवन की कठोर यातनाओं से पीड़ित और सत्ता-स्वार्थों की हठधर्मिता से आक्रोशित रहने के बाद अब शांति की खोज में आपकी शरण में आ गया हूं। यह सत्य है कि मैंने यह गणवेश सुरक्षाकर्मियों की दृष्टि से बचने के लिए किया था, परंतु इस पवित्र स्थान पर आकर मुझे एक दिव्य पुरुष ने प्रेरित किया कि शांति का विस्तार और अहिंसा का प्रचार भी बड़े परिवर्तन के लिए उपयोगी और सफल तत्त्व है। बस, मैंने इस लक्ष्य के प्रति समर्पण कर दिया। मेरा नाम सांग-सी-चिन है और मैं उत्तर कोरिया मुक्ति मोचा (U.C.F.M.) का प्रमुख था, 'था' इसलिए कि मैंने वह हिंसक मार्ग त्याग दिया, लेकिन देश की मुक्ति के लिए मैं अपने लक्ष्य से विलग नहीं हुआ, बल्कि शांति व अहिंसा के द्वारा इस लक्ष्य को प्राप्त करने में जुट गया हूं।"

मठाधीश के नेत्रों में आश्चर्य उभरा। सांग-सी-चिन का नाम देश-भर में प्रसिद्ध था और उसे बड़े विद्रोही नेता के रूप में जाना जाता था।

"तुम वह सांग-सी हो? आश्चर्य है कि तुम यहां हो! एक विप्लवी राजनेता की वाणी में बुद्धत्व की झलक क्या वास्तविक प्रेरणा से प्रेरित है या एक राजनेता योजनाबद्ध तरीके से संन्यासी वेश का दुरुपयोग कर रहा है?" मठाधीश ने कहा।

Baba Novels Chat Room

"यदि उद्देश्य प्राप्त हो रहा है तो मुझे आरोप स्वीकार है भगवन्!"

"लक्ष्य प्राप्त करने के पश्चात् क्या करोगे? सत्ता का केंद्र बन जाओगे! जब सत्ता-परिवर्तन ही तुम्हारा लक्ष्य है तो सत्ता-संचालन का स्वप्न भी होगा?"

"मैं स्वयं को इस योग्य नहीं समझता भगवन्! पहले यदि वह स्वप्न था तो अब नहीं है। मेरा उद्देश्य प्रेम और अहिंसा के द्वारा वर्तमान सत्ता में आवश्यक परिवर्तन करना है। नागरिक अधिकारों का सरलता से निर्वहन हो, नागरिक स्वेच्छा और स्वतंत्रता का अनुभव करें। विश्वपटल पर इस देश को सम्मान से देखा जाए, यदि यह कार्य वर्तमान शासक भी करें तो मुझे स्वीकार है।"

"भंते! तुम्हारे हृदय में पीड़ितों के अधिकार व न्याय का स्वर है। तुम सत्ता, व्यवस्था से आक्रोशित युवा हो और यह प्रसन्नता का विषय है। यदि यह सत्य है कि तुम हिंसा का मार्ग त्याग चुके हो, परंतु प्रथमदृष्ट्या यह छद्मवेश ही है और मठ की स्थापित मान्यता व मूल्यों के विरुद्ध है। हम तुम्हारी सफलता की हृदय से कामना तो करते हैं, परंतु तुम्हारे शांति-अभियान को मठ से संचालित करने की अनुमति नहीं दे सकते। इसे हमारी विवशता समझो या भीरुता।"

"भगवन्, मैं आपका मंतव्य समझ गया हूं और आश्वासन भी देता हूं कि मेरी किसी भी गतिविधि से मठ की प्रतिष्ठा पर आंच नहीं आएगी।"

"यह असंभव है भंते! तुम वह कार्य प्रारंभ कर चुके हो, वह बीज बो चुके हो, जो शीघ्र ही एक बड़े आंदोलनकारी वृक्ष की भांति पल्लवित होगा। तुम एक युद्ध का आरंभ कर चुके हो जिसमें तुम्हारे पास शांति और अंहिसा के अस्त्र होंगे, मगर जिनसे यह युद्ध है, वे निःशस्त्र नहीं होंगे। संभवतः कुछ संकोच उन्हें शस्त्र चलाने से रोके भी, परंतु यह संकोच भी स्थायी नहीं होगा। अपने प्रबल परंतु शांतियुक्त विरोध को दबाने के लिए वे हिंसात्मक प्रतिक्रिया करेंगे और इसमें संहार की संभावना बढ़ जाएगी।"

"भगवन्! हम उस संकोच को ही मर्यादा में बांधने का प्रयास करेंगे। हम मठ की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखने के लिए अपने उद्देश्य से शासन को परिचित कराएंगे। हम आज ही सम्राट के सामने जाकर शांति वार्ता करेंगे।" सांग-सी ने कहा।

"क्या कह रहे हो भंते! तुम जानते हो कि शासन और सम्राट ने तुम्हें बागी घोषित कर दिया है और वे तुम्हारा अहित कर सकते हैं।"

"हम भयमुक्त हो गए हैं भगवन्! इस प्रकार के भय के समक्ष नत नहीं हो सकते। भगवान बुद्ध ने निर्भयता का संदेश दिया है। बुद्धत्व की सदैव विजय होती है।"

"बुद्ध तुम्हारी रक्षा करें और तुम्हारे मनोरथ को पूर्ण करें।"

सांग-सी ने एक नए तेज के साथ अपने संकल्प को दोहराया।

Baba Novels Chat Room

41

किम-जोंग-उन की कुटिल योजना

"मार्शल! कुछ मुखाकृति भिन्न है, अन्यथा सभी भिक्षु एक जैसे लगते हैं।" तानाशाह ने कुटिलता से कहा–"यदि इनकी अग्रपंक्ति को बदल दिया जाए तो क्या इस आंदोलन को उतनी ही शांति से नहीं दबाया जा सकता, जितनी शांति से यह उभरा है?"

"हम...हम आपका अभिप्राय नहीं समझे महामहिम! शायद अब आपने कुछ सोच लिया है।"

"जब आम नागरिक अपने उद्देश्य को लेकर भिक्षु बन रहे हैं तो क्या शासन अपने कुछ बौद्ध भिक्षु इनमें सम्मिलित नहीं कर सकता, शीर्ष नेतृत्व में।" तानाशाह किम-जोंग-उन ने अपनी कुटिल योजना स्पष्ट की।

Baba Novels Chat Room

प्रशासन ने सारे शहर में हाई अलर्ट घोषित कर दिया था और किसी भी तरह की स्थिति से निबटने के लिए सुरक्षाकर्मियों को तैनात कर दिया था। हिंदू संगठनों ने महाकालेश्वर मंदिर को ध्वस्त करने पर बड़ा आंदोलन शुरू करने की चेतावनी दी थी और प्रशासन यदि सतर्क व सजग न होता तो भयंकर सांप्रदायिक दंगा छिड़ सकता था। एकाएक शहर जैसे छावनी में बदल गया था।

टी.वी. पर जनता को संयम बरतने की अपील की जा रही थी। इसके साथ ही यह भी बताया जा रहा था कि उस विस्फोट के पीछे विदेशी आतंकी अबू सैयादी का हाथ था जिसकी जोर-शोर से तलाश की जा रही थी। इस

कायरतापूर्ण विप्लवी घटना के लिए दहलावर को भी बराबर का दोषी ठहराया जा रहा था, जिसने ऐसे खूंखार आतंकी को वहां बुलाया और प्रश्रय दिया था।

इस विस्फोट में एक दर्जन से अधिक जानें गई थीं और लगभग इससे दुगने लोग जख्मी हुए थे।

प्रत्यक्षदर्शियों का कहना था कि कब विस्फोट हुआ, यह कोई नहीं जानता था। किसी ने विस्फोट की आवाज नहीं सुनी थी। यह बड़े आश्चर्य का विषय था कि वहां बहुत से साधु-संत और पुजारी आदि थे, पर विस्फोट की आवाज किसी ने क्यों नहीं सुनी थी? पुलिस और जांच टीम इस प्रश्न को लेकर गहरे असमंजस में थे।

दहलावर इस समय एक पुराने-से मकान में था, जहां एक मध्यम वर्गीय परिवार रहता था। दहलावर उसका पूर्व परिचित था और अक्सर वह वहां शरण ले लेता था।

यह घर बाहर से देखने में जितना दीन-हीन लगता था, दहलावर की कृपा से अंदर से उतना ही फैंसी था और उसमें गृहस्थी का सब सामान मौजूद था। घर में दो पति-पत्नी ही थे, कोई बच्चा नहीं था। अतः दहलावर को वहां कोई परेशानी नहीं होती थी।

दहलावर एक कमरे में बैड पर बैठा टी.वी. देख रहा था। उन खबरों ने उसका दिमाग हिला दिया था। वह हो गया था, जो वह नहीं चाहता था। अब कानून पंजे झाड़कर उसके पीछे पड़ जाने वाला था।

सैयादी तो रात ही उसे बिना बताए बाहर चला गया था। जाहिर था कि वह मंदिर को उड़ाने की अपनी योजना पर दृढ़ था और दहलावर के किसी भी विरोध की संभावना के चलते बिना बताए चला गया था। जाते-जाते वह यह स्यापा कर गया था।

दहलावर उसके दूरगामी परिणामों के बारे में सोच रहा था। उसका नेटवर्क तो लगभग बिखर ही गया था जिसे फिर से खड़ा करने में पानी की तरह पैसा बहाया जाना था और अव्वल दर्जे का रिस्क उठाना था।

पुलिस अब उसकी तलाश में अधिक सक्रिय हो जाने वाली थी और उसका बाहर निकलना कठिन था। निकलते ही वह दबोच लिया जाना था और उस पर देशद्रोह तक का इल्जाम लग सकता था। इस घटनाक्रम से दहलावर दहल गया था। उसे लग रहा था कि उसने गलती कर दी। उसे इतने बड़े आतंकी को वहां बुलाना ही नहीं चाहिए था। कितना अच्छा चल रहा था सब! इलाके-भर में उसके नाम की दहशत थी।

Baba Novels Chat Room

सब समाप्त हो गया लगता था। अब वह क्या करे? क्या अपने साम्राज्य को फिर से खड़ा करने की कोशिश करे जिसमें अब खतरे-ही-खतरे बढ़ गए थे या फिर उसे अपनी जमा-पूंजी समेटकर इस देश से ही बाहर चले जाना चाहिए! यह विचार उसे जंच रहा था।

दहलावर ने बैड पर रखा मोबाइल उठाया और कुछ नंबर पुश किए। टी.वी. का वॉल्यूम उसने धीमा कर दिया था। उधर से फोन रिसीव हुआ।

"छोटा राजन!" दहलावर पस्त लहजे में बोला।

"कमांडर, कहां हो? यहां तो सब गुड़ गोबर हो गया।"

"हमारी एक गलती ने हमें तबाह कर दिया राजन! हम एक भस्मासुर को किराए पर ले आए थे जिसने हमारा नेटवर्क ही तबाह कर दिया। अब सारा प्रशासन हमारे पीछे है। हमारी सारी दहशत खत्म हो गई है।"

"कमांडर! उसे आप रोक सकते थे। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मंदिर-मस्जिद हमारी आस्था के प्रतीक हैं और इन पर हमला हम बर्दाश्त नहीं करते।"

"मैंने उसे रोक दिया था। उसे सब तरह की मदद से अलग कर दिया था, जो उसे इस काम के लिए चाहिए थी, पर वह मेरी आशा से अधिक धूर्त निकला। वह मुझे बिना बताए ही चला गया, जबकि मैंने इसका भी इंतजाम किया था कि वह भागने न पाए। वह भी समझ गया था कि मैं उसके इस कुटिल विचार में बाधक हूं तो उसने मुझे भी अंधेरे में रखा।"

"वह जिंदा नहीं जाना चाहिए था कमांडर! हम नक्सली जरूर हैं, पर इस तरह के पापकर्म का हम समर्थन नहीं करते। एक विदेशी हमारी आस्था को चोट पहुंचाकर निकल गया।"

"अब धोखा हो गया तो हो गया राजन! इस गलती की हमें बहुत बड़ी सजा मिल रही है।"

"अब क्या करने का इरादा है? हाल-फिलहाल तो बाहर निकलना भी खतरे से खाली नहीं है।"

"हाल-फिलहाल नहीं राजन! मेरा तो हमेशा के लिए समझ। एक तो पहले ही मेरे नाम से बारह वारंट जारी थे, अब यह स्यापा हो गया। दिमाग काम नहीं कर रहा है।"

"अगर किसी तरह से हम ही सैयादी को गिरफ्तार करा दें तो शायद कानून और समाज हमारे प्रति कोई उदारता दिखाए।" छोटा राजन गंभीरता से बोला—"शायद कुछ तो फर्क पड़ेगा ही।"

Baba Novels Chat Room

"कह तो तू ठीक रहा है।" दहलावर आशान्वित स्वर में बोला–"फिर भी तू एक काम तो जरूर कर। सारा पैसा कलेक्ट कर और मेरे बाहर जाने का कोई पुख्ता इंतजाम कर। तेरी ख्वाहिश भी पूरी हो जाएगी, इस नेटवर्क का सुप्रीमो बनने की।"

"अब नेटवर्क कहां रखा है कमांडर!" छोटा राजन निराश भाव से बोला–"सब तो ध्वस्त हो गया।"

"नहीं हुआ। डैमेज हुआ है और कुछ दिनों में सब शांत हो जाएगा।" दहलावर ने उसे सांत्वना दी–"तू डैमेज कंट्रोल कर सकता है। यह तेरी स्पेशिएलिटी है। मेरे सामने दिक्कतें हैं।"

"कमांडर, नेटवर्क खड़ा करने के लिए बहुत पैसा चाहिए।"

"उसकी व्यवस्था मैं करके जाऊंगा। तेरी वफादारी का भरपूर इनाम देकर जाऊंगा।"

"जैसा आप उचित समझे कमांडर! मैं तो आपका शिष्य हूं।"

"तू पैसे का कैलकुलेशन करके बता कि हमारे पास क्या है, फिर मैं देखता हूं कि मुझे कितना चाहिए। मैं इतना भी नहीं लूंगा कि तू खाली रह जाए। मुझे तो बस थोड़ा-सा ही पैसा चाहिए जिससे मैं कहीं सैट हो सकूं।"

"पैसा आपका है कमांडर! जैसा आप चाहेंगे, हम तो वैसा ही करेंगे।"

"मुझे फिर फोन करना।"

दहलावर ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया और दूसरा नंबर मिलाया।

"हैलो एस.पी. साहब! कैसे हैं आप?" दहलावर फोन रिसीव होते ही तेजी से बोला।

दूसरी ओर स्तब्धता छा गई थी तो वह शंकित हुआ।

फोन डिस्कनेक्ट हो गया था। इसका मतलब वह समझ गया कि एस.पी. अकेला नहीं था। जरूर थोड़ी देर में वह कॉल बैक करेगा। उसका अंदाजा सही निकला। कॉल आई, उसने रिसीव की।

"दहलावर, कहां हो भाई! यह क्या कर बैठे? तुम्हें इतना अहंकार हो गया कि इंटरनेशनल क्रिमिनल से दोस्ती कर बैठे और देशद्रोह जैसा घिनौना अपराध कर बैठे?"

"मति पर पत्थर पड़ गए थे एस.पी. साहब! सोच बैठा था कि नक्सलाइट से गैंगस्टर बन जाऊं, मगर अब कुछ भी न रहा। यह तो अच्छा है कि अभी तक सेफ हूं, फिर भी साहब, देशद्रोही नहीं हूं मैं। आतंकवादी भी नहीं हूं मैं।"

"तुम्हारे कहने से क्या होता है! कानून ने आज ही तुम्हारा डैथ वारंट जारी कर दिया है।"

Baba Novels Chat Room

"कानून तो अपना काम करता ही साहब! अब तो जो होगा, देखा जाएगा।"

"तुम्हें महाकालेश्वर मंदिर में बम नहीं लगाना चाहिए था। नक्सलाइट ही बने रहते तो इतनी संगीन धाराओं में न लपेटे जाते। हमारे जैसे मददगार भी कुछ काम आ जाते, मगर अब तुम्हारी किसी तरह की मदद नहीं की जा सकती।"

"मेरी रहने दीजिए। अपनी मदद करिए। सैयादी अभी देश से बाहर नहीं निकला होगा। आप अगर कोशिश करें तो उसे दबोच सकते हैं। मुझे अंदाजा है कि वह इस वक्त कहां होगा। हां, वक्त निकल गया तो वह सरहद पार कर जाएगा, फिर उसकी हवा भी नहीं मिलेगी। पाकिस्तान पहुंचने के बाद वह आपकी पकड़ से दूर हो जाएगा।"

"बताओ, अगर यह काम भी हो गया तो तुम्हारा ही भला होगा।"

"साहब! वह रात के किसी वक्त यहां से निकला है। अगर बम उसने खुद लगाया है तो मेरा अंदाजा है कि वह आधी रात के बाद निकला होगा और बड़ी हद तक कोलकाता जाने वाली किसी ट्रेन में होगा। वहां से वह बांग्लादेश होता हुआ पाकिस्तान जाएगा।"

"वह इंटरनेशनल क्रिमिनल है। ऐसे रास्ते से वह नहीं जाएगा, जो किसी को सूझ सके, फिर भी हम इस लाइन पर काम करते हैं।"

"साहब! यही उसका इकलौता रूट हो सकता है। आजकल रोहिंग्या मामला चल रहा है जिसमें इधर से उधर होना आसान है। वह आया भी इसी तरह से था। जाकिर कलोची नाम का एक आदमी उसे मदद करेगा।"

"इस जाकिर कलोची के बारे में बताओ।"

दहलावर ने बड़ी बारीकी से बताया।

"दहलावर! इसके पकड़े जाने तक चुपचाप बिल में छुपे रहना। धूप देखने के लिए भी बाहर मत निकलना। तुमसे पुराना वास्ता रहा है, इसलिए सलाह दी है। प्रशासन बहुत गुस्से में है। यह तो तुम हो, जो अभी तक बचे हुए हो, वरना जैसी घेराबंदी है, उसमें किसी अपराधी का बच पाना मुश्किल है।"

"मैं समझता हूं साहब! इसलिए मैं शहर और बीहड़ से बहुत दूर एक आदिवासी बस्ती में हूं। सालों साल छुपकर रह सकता हूं, पर सैयादी के पकड़े जाते ही सरेंडर कर दूंगा, ताकि कुछ कलंक तो सिर से हटे।"

"अच्छा विचार है। अब मैं कार्यवाही करता हूं।"

दहलावर ने फोन रख दिया। वह सोच में पड़ गया। उसके सामने बड़ा संकट था और यह तब था कि उसने ऐसा कुछ किया भी नहीं था। उसे सैयादी की कुटिलता की सजा मिल रही थी।

Baba Novels Chat Room

अब उसे लग रहा था कि सैयादी के मामले में वह अपने पाकिस्तानी कॉन्ट्रैक्ट के द्वारा उल्लू बनाया गया था।

सैयादी को वह नहीं लाया था, बल्कि उसे भेजा गया था...प्री-प्लान करके! वह पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकी मशीनरी का हिस्सा था और दहलावर अनजाने में उस मशीनरी का पुर्जा बन गया था।

परिकल्पना यदि सही दिशा में और अच्छे उद्देश्य से गति करे तो वह कितनी शीघ्रता से जनमानस द्वारा अपना ली जाती है, यह सांग-सी के विश्वास ने कर दिखाया था।

आज सांग-सी की शांति-यात्रा में जैसे शहर-भर उमड़ आया था और आम नागरिक भी भिक्षु-भिक्षुणी की वेशभूषा में थे—केशविहीन, शांत और सहज!

व्यापक रूप से लोगों ने यह जान लिया था कि जिस व्यवस्था के खिलाफ उनके विरोध को बलपूर्वक दबा दिया जाता रहा है, उसे मुखर करने का एकमात्र रास्ता यही था।

सांग-सी-चिन ने बड़ी कुशलता से आम लोगों को इस धार्मिक आंदोलन से जोड़ दिया था। उसे सही मार्ग की प्रेरणा प्राप्त हो गई थी और उस पर चलने के लिए लोगों को उसने प्रेरित कर दिया था।

तानाशाह की सुरक्षा व्यवस्था पंगु होकर रह गई थी। यदि यह भीड़ आम नागरिकों की होती तो बड़ी निर्ममता से उसे तितर-बितर कर दिया जाता, मगर भिक्षु वर्ग पर ऐसा बल प्रयोग विश्वव्यापी धार्मिक आंदोलन का कारण बन सकता था। विशेषकर चीन उसके विरुद्ध हो जाता, जो उसकी अर्थव्यवस्था में बड़ी भागीदारी करता था।

तानाशाह किम-जोंग-उन ने आपातकालीन मीटिंग बुलाई थी, जिसमें इस विषय पर विचार-विमर्श होना था। उसके माथे पर चिंता की लकीरें थीं। सामने कई स्क्रीन्स लगी हुई थीं जिन पर शहर के मुख्य मार्गों के दृश्य उभर रहे थे और यही दृश्य तानाशाह सहित सभी को चिंतित कर रहे थे।

आम नागरिक अपने घरों से बौद्ध भिक्षु-भिक्षुणी के वेश में निकल रहे थे और शांति-यात्रा में शामिल हो रहे थे। चारों ओर गेरुआ-ही-गेरुआ नजर आ रहा था। अनुशासनबद्ध कतारों में वह भीड़ आश्चर्यजनक रूप से शांत और सहज थी। गलियों से आकर वह भीड़ मुख्य राजपथ पर बड़े जुलूस को और भी बढ़ा रही थी। वातावरण में लयबद्ध बुद्ध मंत्र गूंज रहे थे।

Baba Novels Chat Room

"इस आंदोलन का नेतृत्व कौन कर रहा है?" तानाशाह ने पूछा।

"वह जो सबसे आगे चल रहा है। यह भिक्षु कुछ ही दिन पहले राजधानी में घुसा था। इसने खुद को चीन से आया श्रमण बताया था। सामान्य तलाशी में इसके पास कुछ भी आपत्तिजनक नहीं था। इसे धार्मिक नियमों के आधार पर पर्यटक मान लिया गया था, क्योंकि हमारी धार्मिक नीति सहिष्णुता पर आधारित है। यह व्यक्ति यदि कोई विद्रोही है तो इसने इसी बात का लाभ उठाया है।" गुप्तचर विभाग के प्रमुख ने गंभीर स्वर में बताया।

"साधारणतया देखा जाए तो यह शांति-विरोध ही है।" एक रक्षा सलाहकार ने अपनी राय रखी–"किसी सशस्त्र आंदोलन की संभावना नहीं है, फिर भी इसमें मुख्य चिंता का विषय आम नागरिकों का अपने दैनिक कार्य छोड़ देना है। देहात के क्षेत्रों से भी यही सूचना आ रही है कि लोग शांति-यात्रा से जुड़ रहे हैं और कई समूह शांतिपूर्वक इधर ही चले आ रहे हैं। आकलन किया जाए तो कुछ ही दिनों में देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा कार्यमुक्त होकर इस शांति-आंदोलन का हिस्सा होगा।"

"आम नागरिक क्यों अपनी सामान्य जिंदगी छोड़कर भिक्षु-भिक्षुणी बन रहे हैं? क्या वे किसी दबाव या लालच में आ रहे हैं? क्या कोई उन्हें धन-बल से इस दिशा में प्रेरित कर रहा है! अपने कारोबार, परिवार की क्यों कोई परवाह नहीं कर रहा है? क्या ये केवल कुछ समय विशेष के लिए इस रोल में उतरे हैं।"

"महामहिम! हमारे गुप्तचरों ने ऐसे कुछ लोगों से बात करके कारण जानने की कोशिश की है। इसके पीछे धन की कोई भूमिका नहीं है। किसी को किसी दबाव ने भी इसके लिए प्रेरित नहीं किया। उनका कहना है कि...क्षमा चाहूंगा महामहिम...कि देश में जिस प्रकार शासन ने आम नागरिकों को प्रतिबंधित किया है, उससे उनकी स्वतंत्रता प्रभावित हुई है और उन्हें भिक्षु जीवन में स्वतंत्रता के साथ शांति का अनुभव होने लगा है। उनके अनुसार, पैसा और भौतिक साधन-सुखों का जीवन में तब तक कोई महत्त्व नहीं है, जब तक व्यक्ति स्वतंत्रता के साथ भ्रमण नहीं कर सकता, व्यवसाय नहीं कर सकता। एक रुटीन, जिसमें शासन ही सर्वोपरि है, में व्यक्ति का जीवन कुंठित हो जाता है और उसे शांति की अपेक्षा रहती ही है।"

महामहिम किम-जोंग-उन की आंखों में क्रोध उभर आया।

"हम एक अनुशासनात्मक समृद्ध समाज बनाना चाहते हैं जिसमें झूठ, गबन, भ्रष्टाचार का कोई स्थान न हो।" तानाशाह ने क्रोध से कहा–"हम एक छोटे-से भू-भाग पर सीमित प्राकृतिक संसाधनों से वैश्विक शक्ति के रूप में पहचाने जा

Baba Novels Chat Room

रहे हैं तो यह हमारी नीतियों का ही परिणाम है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अनुशासन में रहकर अनिवार्य सेवाओं को क्रियान्वित करता है तो देश समृद्ध होता है और हमने यही किया है। मानव संसाधन के अभाव को दूर करने के लिए हमने कार्य की समय सीमा को बढ़ाया और प्रत्येक हाथ को कार्य की अनिवार्यता से इसीलिए बांधा है कि देश आर्थिक स्तर पर प्रगति करे, अन्यथा हमें आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, मूलभूत जरूरतों के लिए बड़े देशों से बड़े ऋण लेने पड़ते और हम भी पाकिस्तान, अफगानिस्तान की तरह अमेरिका की ओर देखते रहते। स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि इसके लिए उत्पादन प्रभावित किया जाए। मानव संसाधन का एक बड़ा हिस्सा स्वतंत्रता के नाम पर अकर्मण्य रहता है, यह हम इंडिया, चाइना जैसे देशों में देख रहे हैं। हम यह नहीं कहते कि व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता इन नियमों से प्रभावित हो। रोटी, कपड़ा और मकान सबके लिए अनिवार्य हैं और इसमें शासन ने लक्ष्य प्राप्त कर लिया है, फिर भी कुछ विरोधियों ने यह धारणा प्रबल कर दी है कि हमने लोगों की स्वतंत्रता का हनन किया है।"

"महामहिम! इनमें से कुछ लोगों का यह भी मानना है कि शासन ने हथियारों की होड़ में पड़कर उत्तर कोरिया को बारूद के ढेर पर बिठा दिया है और विश्व से अलग-थलग कर दिया है। इस स्थिति में देश संकट में आ गया है। बड़े देश संयुक्त कार्यवाही की चेतावनी दे चुके हैं और इससे युद्ध की संभावनाएं बढ़ रही हैं जिसमें सबसे अधिक नुकसान नागरिकों को ही सहना पड़ता है। अमेरिका जैसा शक्तिशाली देश इस परमाणु युद्ध में हिरोशिमा जैसी कठोर कार्यवाही कर सकता है और आम नागरिक इसका शिकार हो सकते हैं।"

"अमेरिका ऐसा दु:साहस नहीं कर सकेगा। उसने ऐसा किया तो हम उसका नामोनिशान मिटा देंगे। हमारे पास भी ऐसे परमाणु हथियार हैं। हम नागरिक सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्ध हैं। यह बात जनता को समझनी चाहिए।"

"महामहिम! जिसने भी इस आंदोलन को चलाया है, उसने बड़ी चतुराई से जनता को संभावित परमाणु युद्ध का भय दिखाया है। हिरोशिमा और नागासाकी का हवाला देकर जनता को शांति-आंदोलन के लिए प्रेरित किया है। वह जानता है कि हम इस आंदोलन को दबाने के लिए बल प्रयोग करने की स्थिति में नहीं हैं।"

"अप्रत्यक्ष रूप से मठाधीश की स्वीकृति भी इस शांति-आंदोलन को प्राप्त है। इस विषय पर किसी प्रकार की कड़ाई भी नहीं की जा सकती है। ऐसा करते हैं तो शासन धर्मविरोधी माना जाएगा और शेष लोग भी इस आंदोलन से जुड़ जाएंगे। अजीब स्थिति बन गई है।"

Baba Novels Chat Room

"हमें इस भिक्षुनेता से मिलना होगा। चाहे प्रेम से, तर्क से अथवा अन्य किसी प्रकार से उसे समझाना होगा कि उसके इस आंदोलन से किस प्रकार राष्ट्रीय हित प्रभावित हो सकते हैं।"

"वह नहीं समझेगा।" तानाशाह ने दृढ़ स्वर में कहा—"जब किसी का विचार आंदोलन का रूप ले लेता है तो वह किसी भी तर्क को स्वीकार नहीं करता। उसे अपने पीछे खड़ी जनशक्ति का विश्वास होता है और वह उन सभी शर्तों को लागू कराने के लिए प्रतिबद्ध हो जाता है, जो उसने सोची होती हैं। एक बार उससे अनुनय-विनय करने पर उसमें गर्व पैदा हो जाता है और वह स्वयं को निर्णायक मानने लगता है। उसे सामने वाले की विवशता में यदि भय का भान हो जाए तो हावी हो जाना उसका सिद्धांत बन जाता है। हमें उससे यह सोचकर नहीं निबटना कि वह कोई बौद्ध भिक्षु है, अहिंसावादी है, शांति-आंदोलन का नेता है। उसे शासन की धार्मिक उदारता के परिप्रेक्ष्य में देखा ही नहीं जाना चाहिए, क्योंकि उसने धर्म का मुखौटा लगा रखा है। हमें जनता के सामने उसका वही मुखौटा उतारना है। यह काम कैसे होगा, हम अच्छी तरह जानते हैं।"

"महामहिम!" एक अधिकारी उत्तेजित स्वर में बोला—"यह देखिए, शांति-यात्रा तो इसी ओर आ रही है। यह राजभवन के राजपथ का दृश्य है।"

तानाशाह ने स्क्रीन पर देखा तो उसकी भृकुटि तन गई। वह शांत जुलूस जिसमें लयबद्ध बुद्ध मंत्र ही जीवंतता का अनुभव करा रहे थे, राजभवन आने वाले मार्ग पर आ चुका था।

भिक्षु नेता अब स्पष्ट नजर आ रहा था। युवा, बलिष्ठ, सौम्य और शांत। उसके चेहरे पर जो तेज था, उसने तानाशाह को भी विचलित कर दिया था। ऐसे तेजस्वी साधु पुरुष जिस लक्ष्य को लेकर चलते हैं, उसे प्राप्त कर लेते हैं।

अब तेजस्वी भिक्षुनेता राजभवन के मुख्य पथ पर आ गया था और उसने अपने पीछे आ रही हजारों की भीड़ को वहीं रुकने का संकेत किया था। भीड़ जैसे यंत्रचलित थी। सब अपने-अपने स्थान पर वहीं रुक गए थे। यह उसके प्रभाव को बता रहा था कि वह कोई सिद्ध पुरुष ही था।

"मार्शल! कुछ मुखाकृति भिन्न हैं, अन्यथा सभी भिक्षु एक जैसे लगते हैं।" तानाशाह ने कुटिलता से कहा—"यदि इनकी अग्रपंक्ति को बदल दिया जाए तो क्या इस आंदोलन को उतनी ही शांति से नहीं दबाया जा सकता, जितनी शांति से यह उभरा है?"

"हम...हम आपका अभिप्राय नहीं समझे महामहिम! शायद अब आपने कुछ सोच लिया है।"

Baba Novels Chat Room

"जब आम नागरिक अपने उद्देश्य को लेकर भिक्षु बन रहे हैं तो क्या शासन अपने कुछ बौद्ध भिक्षु इनमें सम्मिलित नहीं कर सकता, शीर्ष नेतृत्व में।" तानाशाह किम-जोंग-उन ने अपनी कुटिल योजना स्पष्ट की।

"आपने तो कमाल का तोड़ निकाला है महामहिम! आप ग्रेटेस्ट हैं।"

"जाकर व्यवस्था की जाए और हम आदर सहित भिक्षु प्रतिनिधिमंडल को शांति-वार्ता के लिए लेकर आते हैं। खेल कोई भी हो, बाजी हम ही जीतेंगे।" तानाशाह ने गर्व से कहा–"हमने अपना साम्राज्य दिमाग के दम पर ही खड़ा किया है और इसकी नींव से कंगूरे तक हमारे बुद्धि-कौशल ने इसे संभाला है। इसे कोई ऐसे ही नहीं छीन सकता।"

Baba Novels Chat Room

42

छोटा राजन की राह का रोड़ा

"मैं दिखने में साधनहीन हूं बॉस! असल में मेरे पास बड़े संपन्न हैं। आप कोई नंबर दीजिए। दो घंटे में उस बंदे का पता लगा दूंगा जिसके पास मोबाइल होगा।"

"लगा, नंबर लिख। जितनी जल्दी हो सके, पता लगा, वरना पंछी उड़ जाएगा।"

"कौन है? सैयादी?" एमेले ने कहा।

"नहीं, कोई और है। अपने रोजगार की राह का रोड़ा समझ।" छोटा राजन संभलकर बोला—"रोड़ा हट गया तो तेरा रोजगार और मेरा कारोबार फल-फूल उठेंगे। तेरी तनख्वाह भी डबल कर दूंगा।"

Baba Novels Chat Room

एमेले सज-धजकर वक्त से पहले ऑफिस जाने की सोच रहा था जिससे ट्रांसमीटर को किसी ऐसी जगह फिट कर सके, जहां वह छोटा राजन की हर बात प्रभास को सुना सके। उसने करीब ही एक कमरा किराए पर ले लिया था। वह नहा-धोकर बाहर निकलने ही वाला था कि तभी खोजिया का फोन आ गया जिसने उसे मंदिर में हुए विस्फोट के बारे में बताया। इसके साथ ही उसने यह भी बताया कि सारे शहर में कर्फ्यू लगा हुआ है और वह बाहर न निकले।

एमेले सन्न रह गया था। मंदिर में विस्फोट से पैदा होने वाली स्थिति का अनुमान उसने लगा लिया था। यह सांप्रदायिक दंगे की ठोस वजह बन सकता था और शहर सुलग सकता था।

एमेले सोच में पड़ गया, फिर ऑफिस तो आज क्या खुलेगा। अब तो पुलिस का सख्त डंडा राजन भाई की भी खबर ले सकता था, फिर वह क्या करे! उसने छोटा राजन से जानकारी लेने का विचार बनाया और फोन मिला दिया। कुछ देर बाद फोन रिसीव हुआ।

"सलाम राजन भाई! एमेले आपकी सेवा में हाजिर होना चाहता है।" वह बोला।

"अबे! यहां ऐसी-तैसी हुई पड़ी है और तुझे मजाक सूझ रहा है। शहर की हालत के बारे में नहीं मता लगा तुझे। हमारे दहलावर साहब के बारे में सुन, चौबे जी छब्बे जी बनने गए और दूबे जी बनकर आए। लगता है अब 'बे' ही रह जाएंगे।" राजन ने तिक्त स्वर में कहा।

"बॉस, अपना प्रॉपर्टी का बिजनेस तो चलता रहेगा। मेरी तो जॉब बस चौबीस घंटे पुरानी है। क्या मैं फिर से बेरोजगार हो जाऊंगा?" वह रुआंसा हो गया।

"घबरा मत। तुझे बेरोजगार नहीं होने दूंगा।" राजन हंसा था—"तू कह रहा था कि यदि तुझे कोई फोन नंबर दिया जाए तो तू किसी तरीके से उसके मालिक को खोज सकता है। क्या तेरे जैसा साधनहीन आदमी ऐसा कर सकता है?"

"मैं दिखने में साधनहीन हूं बॉस! असल में मेरे सोर्स बड़े संपन्न हैं। आप कोई नंबर दीजिए। दो घंटे में उस बंदे का पता लगा दूंगा जिसके पास मोबाइल होगा।"

"लगा, नंबर लिख। जितनी जल्दी हो सके, पता लगा, वरना पंछी उड़ जाएगा।"

"कौन है? सैयादी?" एमेले ने कहा।

"नहीं, कोई और है। अपने रोजगार की राह का रोड़ा समझ।" छोटा राजन संभलकर बोला—"रोड़ा हट गया तो तेरा रोजगार और मेरा कारोबार फल-फूल उठेंगे। तेरी तनख्वाह भी डबल कर दूंगा।"

"चुपड़ी और दो-दो! नंबर बोलो बॉस।"

राजन ने नंबर बोला जिसे एमेले ने रट लिया। बोल-बोलकर रट लिया ताकि आगे सुन रहा प्रभास उसे नोट कर सके।

"ठीक है बॉस! मेरा कमाल देखना, दो घंटे तो मैंने बोले हैं, काम उससे भी पहले होगा। अपनी नौकरी और डबल तनख्वाह के लिए मैं बड़े फास्ट तरीके से काम करूंगा।"

"ठीक है, किसी को इस बात का पता न चले। जल्दी गुड न्यूज दे।"

फोन कट गया था और एमेले ने उसे घूरा, फिर ऐसे ही बोला।

"बॉस, किसका नंबर हो सकता है?" उसने प्रभास से जवाब मांगा।

"थोड़ी देर में पता चल जाएगा। राजन की राह का रोड़ा तो दहलावर ही समझ। लगता है, ढलते सूरज को लात मारने की सोच ली है उसने। तू जहां भी

Baba Novels Chat Room

है, वहीं रह। अब मामला नवीन और प्राचीन का बन गया है। बहुत मजा आने वाला है।"

"ठीक है बॉस! मैं अपने मोर्चे पर मुस्तैदी से डटा हुआ हूं।" एमेले ने कहा।

सैयादी जरूरत से ज्यादा चालाक था, तभी तो उसने साधु वेश में ही पहले झांसी तक और वहां से बड़ौदा तक ट्रेन में सफर किया। कुछ अन्य साधुओं के साथ सफर में उसे कोई दिक्कत नहीं हुई। बड़ौदा से वह मुंबई आ गया था, जहां कि जाकिर कलोची के आदमियों ने उसे रिसीव कर लिया और उसे मछुआरे का गेटअप दे दिया। अब वहां वह कुछ दिन ठहरने का इरादा रखता था और ऐसे ही किसी ब्लास्ट के बाद वहां से निकल जाने की कोशिश में था।

दिन-भर के सफर के बाद सैयादी थक गया था और थकान दूर करने का उसके पास अपना ही नुस्खा था। वह एक हल्के नीले रंग की टेबलेट खाता था और खुद को तरोताजा महसूस करता था। इसके बाद चिलम पीता जिसमें दहलावर का दिया तंबाकू भरता था। उसे वह तंबाकू कुछ ज्यादा ही पसंद आया था। उसे अफसोस था कि वह ज्यादा मात्रा में उसे साथ नहीं ला सका था। हालात ही ऐसे बन गए थे। अगर दहलावर उसका एंटी न बना होता तो शायद वह कुछ दिन और वहां रुक सकता था, पर उस अपराधी में अभी धार्मिकता जिंदा निकली थी।

कलोची के आदमी उसे अंधेरा होते ही बंदरगाह ले आए, जहां कुछ मजदूरों के साथ उसे एक शिप में सवार कराने की योजना थी।

"यार! मुझे कुछ दिन ठहरने दो, क्या पता फिर कभी मुंबई आ पाऊंगा या नहीं।" उसने प्रतिवाद किया।

"कलोची साहब का कहना है कि तुम्हें जितना जल्दी हो सके, इंडिया से बाहर निकल जाना चाहिए।" एक आदमी कठोर लहजे में बोला—"पुलिस तुम्हारी खोज में कलोची साहब के पास पहुंच गई है और कोई बड़ी बात नहीं कि तुम्हें ट्रेस भी कर ले।"

"ओह! इसका मतलब दहलावर ने गद्दारी की है।"

"जिसने भी की हो, पर तुम्हारा इंडिया में रुकना सेफ नहीं है। पचास लाख का इनाम रखा है तुम्हारे सिर पर! इतना पैसा हमें भी बुरा नहीं लगता। नीयत खराब करता है।"

"तुम्हारी बात मैं समझ गया।" सैयादी सकपकाकर बोला—"उम्मीद है कि मेरे जाने के बाद नीयत खराब नहीं होगी किसी की। पानी में बचा रहना कठिन है।"

"हम डील में बेईमानी नहीं करते। हमें हमारे हिस्से का पैसा मिल गया है।"

"ठीक है, यह शिप मुझे कहां पहुंचाएगा?"

"दुबई। वहां से तुम कहीं भी जा सकते हो।"

"रास्ते में कोई चैकिंग, पूछताछ हुई तो क्या जबाब दूं? कोई आईडी मांगी गई तो क्या कहूं?"

"तुम जिस आदमी की जगह जा रहे हो, उसका रिकॉर्ड उस ठेकेदार के पास है, जो तुम्हें दुबई की किसी कंस्ट्रक्शन कंपनी में काम के लिए ले जा रहा है। कोई पूछताछ होगी तो उससे होगी। तुम मामूली मजदूर हो और कोई तुमसे सवाल नहीं करेगा। हम रोज चार-छह आदमी इधर से उधर पहुंचाते हैं। अभी तक कोई प्रॉब्लम नहीं आई।"

"अच्छी बात है। अच्छा दोस्तो! तुम लोगों ने अपना काम बढ़िया तरीके से पूरा किया। तुम दोनों को मेरी तरफ से छोटा-सा इनाम।" सैयादी ने अपनी जेब से दो छोटे हीरे निकाले-"हीरे हैं। बहुत कीमत के तो नहीं, पर ठीक से सौदा कर सके तो दो लाख तो मिल जाएंगे। उम्मीद है कि अब मैं बिना किसी फिक्र के अपनी जलयात्रा कर लूंगा। मुझे यह भय नहीं सताता रहेगा कि इंडियन कोस्ट गार्ड मेरी खोज में पानी में शिप को नहीं रोकेंगे।"

"हमारी वजह से ऐसा नहीं होगा। विश्वास करो।"

सैयादी विश्वास तो बस अपना ही करता था, मगर आज उसके पास विश्वास करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

Baba Novels Chat Room

43

अश्वत्थामा की अखंड शिवभक्ति

"बॉस! अश्वत्थामा अस्तित्व में है, इसका दावा मैं कर सकता हूं, प्रमाण नहीं दे सकता। वह सच्चा शिवभक्त है और प्रतिदिन पूजा करने शिव मंदिर पहुंचता भी था। किले वाले मंदिर में लोगों का ज्यादा आना-जाना हो गया था और अब वहां सी.आई.एस.एफ. का स्थाई कैंप स्थापित हो गया है। अत: वह अब वहां पूजा करने नहीं आएगा। उसने विकल्प के रूप में शहर के महाकालेश्वर मंदिर में पूजा करने का विचार बनाया, तो वहां भी आज बम ब्लास्ट हो गया। कह सकते हैं कि वह अब अधिक मानवीय हस्तक्षेप से शायद ही ऐसे स्थान पर आएगा।"

वह अखंड शिवभक्त है और शिवपूजा उसकी दिनचर्या का हिस्सा है। सारी दुनिया उसके पीछे पड़ जाए और मंदिरों पर भीड़ लगी रहे, फिर भी वह अपना पूजा-व्रत नहीं तोड़ सकता।

प्रभास ने इंस्पेक्टर राठी को उस नंबर के बारे में बताया और आशा प्रकट की कि उससे बड़ी मछली, दहलावर के फंसने की संभावना थी। राठी ने उसे धन्यवाद दिया।

अब प्रभास सोच रहा था कि वह क्या करे! रात जो घटनाक्रम घटा था, वह आज उसे पहले की तरह भूला नहीं था, बल्कि उसे याद करके रोमांचित हो रहा था। वह शायद पहला शख्स था, जो उस कालखंड में एक महान पौराणिक योद्धा से सप्रेम साक्षात्कार कर चुका था और आगे भी उसके दर्शन

Baba Novels Chat Room

होने की पूरी संभावना थी। अब वह उसे जर्नलिस्ट के नजरिए से नहीं देख सकता था, क्योंकि वह ऐसा वचन दे चुका था। वह उस खोज को, एक सौभाग्यशाली अनुभव को किसी और से न बांटने के लिए वचनबद्ध था, फिर वह सेठी को, अपने एम्प्लॉयर को क्या कहे? क्या उसे कह दे कि वह उस स्टोरी पर अब काम नहीं करेगा! वह वजह पूछेगा तो क्या बताएगा! किसी बहाने से वह बहलने वाला नहीं था और सच्चाई उसे हजम नहीं होने वाली थी, फिर भी उसे कुछ तो कहना ही था। कई दिन हो गए थे, उसने सेठी से बात भी न की थी। आज कोई काम फिलहाल दिखाई नहीं दे रहा था तो उसने सेठी को फोन मिला दिया। कॉल रिसीव हुई।

"बोल जवान! यह क्या पंगा कर दिया तूने? शहर ही सुलगा दिया।" सेठी ने कहा।

"मैंने क्या किया है? यह तो मैं हूं जिसने वह सब होने से रोकने में प्रशासन की मदद की, जो ऐसी घटना के बाद होता है। अगर मैंने समय रहते प्रशासन को स्थिति से अवगत न कराया होता तो अब तक लाशों के ढेर लग जाते।"

"अपने चैनल को कोई खबर भेजी तूने?"

"भेजी न! वीडियो और न्यूज दोनों भेजे हैं। आपने नहीं देखे?"

"मैं कैसे देखता! मैं कपूरथला में हूं। छोटे भाई की बेटी किडनैप हो गई है।"

"ओह, बड़ी फिरौती मांगी होगी। राजशाही परिवार की बेटी है।"

"अरे, थे हमारे परदादा राजा। रजवाड़े गए तो राजशाही गई। तू समझता है कि मैं झूठ बोलता था। देख लेना इतिहास में इसका जिक्र है। रियासत फाजिल्का के राजा हरनाम सेठी! मेरे नाम के पीछे भी सेठी है। मैच करता है न?"

"करता है! अब बताइए, फिरौती कितनी मांगी?"

"एक पैसा नहीं। मामला कुछ और लग रहा है। इनसाइड इंफॉर्मेशन के मुताबिक, मेरे चीफ इंजीनियर भाई पर कोई दबाव बनाना है और कोई बड़ा काम निकलवाना है।"

"चीफ इंजीनियर से बड़ा काम क्या निकल सकता है?"

"वह कपूरथला में बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट के कारखाने में चीफ इंजीनियर है।"

"और यह इनसाइड इंफॉर्मेशन पहले ही मीडिया को थी कि इंडिया के बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट पर पाकिस्तानी आतंकी हाफिज सईद कलप रहा था और सरेआम अपने एक भाषण में वह इस प्रोजेक्ट को उड़ाने की धमकी दे चुका था। पुलिस इस एंगल पर काम नहीं कर रही है क्या?"

"हम पुलिस का दखल नहीं चाहते। हमारा खानदान प्रसिद्ध घराना है। कुछ पैसे ले-देकर मामला निबट जाए तो पहले हम यही कोशिश करेंगे।"

Baba Novels Chat Room

"अगर किडनैपर्स किसी आतंकी संगठन के इशारे पर काम कर रहे हैं तो मुश्किल है। पैसे से बात नहीं बनेगी। देख लेना, प्रोजेक्ट को नुकसान पहुंचाने वाले किसी काम में तुम्हारे भाई का इस्तेमाल किया जाएगा। प्रसिद्ध घराने का आप छोड़िए और पुलिस से मिलिए।"

"मैं भी भाई को यही समझा रहा हूं। अभी किडनैपर्स की मंशा साफ हो जाए, तब हम आगे कार्यवाही करेंगे। तू अपनी बता, तेरा मूल मिशन क्या रहा?"

"अब उसमें कुछ नहीं रखा लगता।" प्रभास संभलकर बोला–"मामला बड़ा पेचीदा हो गया है। अब नहीं लगता कि वह अब किसी को दिखाई भी देगा।"

"अबे, ऐसा क्यों होगा! जब वह है तो दिखाई भी देगा। लगा रहेगा तो एक दिन तुझे भी जरूर दिखेगा और तू दिल्ली के टॉप जर्नलिस्ट की लिस्ट में टॉप पर होगा। सेठी-24 का तू चीफ एडिटर होगा। फाजिल्का के राजशाही घराने का दामाद भी बन जाएगा।"

"मेरी ऐसी किस्मत कहां है! नौकरी ही बची रहे तो बड़ी बात है।"

"सीरियस होकर बता भई! मजाक के हालात नहीं हैं।"

"बॉस! अश्वत्थामा अस्तित्व में है, इसका दावा मैं कर सकता हूं, प्रमाण नहीं दे सकता। वह सच्चा शिवभक्त है और प्रतिदिन पूजा करने शिव मंदिर पहुंचता भी था। किले वाले मंदिर में लोगों का ज्यादा आना-जाना हो गया था और अब वहां सी.आई.एस.एफ. का स्थाई कैंप स्थापित हो गया है। अत: वह अब वहां पूजा करने नहीं आएगा। उसने विकल्प के रूप में शहर के महाकालेश्वर मंदिर में पूजा करने का विचार बनाया, तो वहां भी आज बम ब्लास्ट हो गया। कह सकते हैं कि वह अब अधिक मानवीय हस्तक्षेप से शायद ही ऐसे स्थान पर आएगा।"

"वह आजकल के नेताओं जैसा तो नहीं ही होगा, जो जरा-सा दबाव पड़ते ही बयान बदल देते हैं और काम भी बदल देते हैं। वह अखंड शिवभक्त है और शिवपूजा उसकी दिनचर्या का हिस्सा है। सारी दुनिया उसके पीछे पड़ जाए और मंदिरों पर भीड़ लगी रहे, फिर भी वह अपना पूजा-व्रत नहीं तोड़ सकता। यह तो निश्चित है कि जहां उसका स्थायी गुप्त निवास है, वहां समीप कोई शिव मंदिर नहीं है, वरना वह कभी बाहर नहीं आता और शायद ऐसी कोई व्यवस्था वह करेगा भी नहीं। इलाके में यही दो शिव मंदिर नहीं होंगे। अब तो गांव-गांव दो-चार मिल जाते हैं। तू लगा रह, देखना वह एक दिन जरूर मिलेगा।"

"मुझे क्या फर्क पड़ता है। तनख्वाह मिलती रहनी चाहिए।"

"मन से काम भी कर मेरे वीर जवान! खाली तनख्वाह के लिए ही काम मत कर। चैनल के प्रति कुछ अपनी जिम्मेदारी समझ और इसे कम-से-कम

Baba Novels Chat Room

टी.आर.पी. रैंकिंग में कहीं तो पहुंचा। अभी दिल्ली वाले ही इसे नहीं देख रहे तो बाकी स्टेट में कौन देखेगा?"

"अब चैनल ही इतने हो गए हैं कि सेठी-24 की बारी नहीं आ पाती।"

"इसलिए तो तुझे एक पौराणिक गाथा की सनसनीखेज रिपोर्टिंग करने के लिए फुल खर्चे के साथ भेजा है। तू है कि इसमें दम ही नहीं बता रहा है।"

"अब मेरी कोशिशों में तो कोई कमी नहीं है बॉस! मैं किसी मामूली शख्सियत के पीछे होता तो अब तक उसका ढाई घंटे का वीडियो बना लेता। उसके बारे में कहा जाता है कि किसी भी हाइटेक कैमरे में उसकी फोटो नहीं आती। लोग कोशिश कर चुके हैं।"

"मैं यह सब नहीं जानता। मुझे नतीजा चाहिए। ठोस नतीजा चाहिए। तू कर सकता है। तेरी केपबिलिटी पर मेरा पूरा विश्वास है। बेटा, किसी भी बिजनेस को कामयाबी के शिखर पर पहुंचाने की मेरी क्षमता पर संदेह के बादल मत आने दे। इस चैनल को पॉपुलर कर दे।"

"कोशिश करता हूं बॉस! हालात बदल गए हैं और खर्चा बढ़ जाएगा।"

"तू कामयाबी का वादा कर, खर्चा जितना हो, मैं उठाऊंगा।"

"ठीक है। मैं एक दिन जरूर कुछ करके दिखाऊंगा।"

"ज्यूंदा रह पुत्तर! रब तैनू आगे बढ़ाए। अब फोन रख।"

प्रभास ने फोन रख दिया था, तभी राठी का फोन आ गया, जिसने बताया कि उस फोन नंबर से फंसी बड़ी मछली का नाम दहलावर था। प्रभास ने उससे और भी कुछ कहा।

Baba Novels Chat Room

तानाशाह किम-जोंग-उन बड़ी सौम्यता और विनम्रता से राजभवन के मुख्य द्वार पर पहुंचा और बड़ी श्रद्धा से हाथ जोड़कर भिक्षु नेता को सवंदन प्रणाम किया। सांग-सी ने भी सहज मुद्रा और सौम्य भाव से आशीर्वाद प्रदान किया।

"भगवन्! आज राजभवन आपके चरणों की धूल से पवित्र हो गया।" तानाशाह ने अपने स्वर में मिश्री-सी मिठास घोलकर कहा—"आप प्रबुद्ध संन्यासी जिन्हें जीवन के समस्त तत्त्वों का ज्ञान है, समस्त समाज के वंदनीय हैं। हम सांसारिक सुखों में लिप्त लोग दायित्वों और कर्मों के चलते आपका सान्निध्य पाने के बहुत प्रयास करते हैं, परंतु ऐसा सौभाग्य प्राय: नहीं मिल पाता। आपने बड़ी कृपा की, जो स्वयं आकर हम अकिंचनों को दर्शन दिए। हमारा जीवन धन्य हो गया। अब आप पधारकर अपने श्रीमुख से हमें कुछ शुभ उपदेशों से कृतज्ञ करें भगवन्!"

"सम्राट!" सांग-सी ने शांत स्वर में कहा—"भगवान बुद्ध के पांच महाव्रतों से बढ़कर और कोई शुभ संदेश क्या होगा! तथागत ने अपने ज्ञान से पीढ़ियों के लिए मुक्ति के द्वार खोल दिए थे। उनका अनुसरण ही श्रेष्ठ उपदेश है।"

"हम तथागत बुद्ध के अनुयायी उनके उपदेशों का भली-भांति पालन करते हैं भगवन्! फिर भी सांसारिक मायाजाल में फंसे व्यक्ति से भूल हो जाना स्वाभाविक है। आप जैसे सिद्ध संन्यासी अपने उपदेशों से उन विकारों को दूर करते हैं।"

"उपदेश सुन लेने से ही विकार दूर नहीं हो जाते सम्राट! अपितु मन को दृढ़ करना पड़ता है। यह संसार नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जा कणों से निर्मित है। नकारात्मक ऊर्जा के प्रभावी होने से व्यक्ति में विकार बढ़ जाते हैं जिनके लिए सत्संग एक ऐसा सकारात्मक ऊर्जा-केंद्र है, जो व्यक्ति में संतुलन स्थापित करता है।"

"आपका यह उपदेश भी नवीन और मन को शांति प्रदान करने वाला है। पधारिए भगवन्!"

तानाशाह उन्हें और उसके साथियों को आदर सहित भव्य राजभवन में ले आया, जहां उन्हें विशिष्ट अतिथि कक्ष में ले जाया गया।

"सम्राट! हमें इस भौतिक भव्यता में अशांति का अनुभव होता है। क्या हम किसी ऐसे स्थान पर वार्तालाप नहीं कर सकते, जहां हमें विचलन का अनुभव न हो?"

"भगवन्! आपकी आज्ञा का पालन होगा।" सम्राट ने कहा और उन्हें लेकर राजभवन के भव्य उद्यान में आया। वहां भी बैठने की उचित व्यवस्था थी।

"बैठिए भगवन्!" सम्राट ने आदर सहित कहा।

सांग-सी ने आकर्षक कुर्सियों की ओर देखा तक नहीं और घास पर ही आसन लगा दिया। उनके सभी साथी भी उसका ही अनुसरण करने लगे। सभी बुद्धमुद्रा में पालथी मारकर बैठ गए थे। सम्राट का अपने विशाल डील-डौल के कारण जमीन पर बैठना दुष्कर था और ओहदे की गरिमा भी उसे रोक रही थी, परंतु वह एक शातिर राजनीतिज्ञ था और अपने मतलब के लिए कुछ भी कर सकता था। उसे कठिनाई तो हुई, पर वह जमीन पर ही बैठ गया।

मार्शल हतप्रभ था! उसने कभी कल्पना भी न की थी कि देश का सम्राट, जिसे तानाशाहों की दुनिया में टॉप पर गिना जाता था, जिसकी तुलना तानाशाह हिटलर से होती थी, इतना धर्म-सहिष्णु कैसे हो सकता था कि शत्रु-संन्यासियों के सामने जमीन पर बैठ गया था।

"बुद्धं शरणम् गच्छामि। धम्मं शरणम् गच्छामि! संघं शरणम् गच्छामि!"

Baba Novels Chat Room

सम्राट ने भी बड़ी श्रद्धा से इस महामंत्र को दोहराया।

"सम्राट!" सांग-सी ने बड़े शांत स्वर में कहा—"यह देश यशस्वी सम्राट इल की गाथाओं का भव्य और गौरवशाली इतिहास समेटे हुए है, जिन्होंने इस प्रायद्वीप की कीर्ति सुदूर महाद्वीपों तक प्रकीर्णित कर दी थी। समय के साथ परिवर्तन होते गए और देश विभाजन की पीड़ा से गुजरा। एक मानवनिर्मित सीमा-रेखा ने एक द्वीप की संस्कृति को भी विभाजित कर दिया। परस्पर बंधुत्व की भावना क्षीण होती गई और किसी भी सम्राट ने इसे एकजुट करने का कभी प्रयास नहीं किया। कोरिया का गौरव इसके विभाजन ने ध्वस्त किया था, परंतु अवसर मिलने पर इसे पुनर्जीवित करने का कभी प्रयास नहीं हुआ। राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं ने नागरिक अधिकार सीमित कर दिए। मानवीय स्वतंत्रता का दमन हुआ और देश में विचित्र स्थिति बन गई। भगवान बुद्ध के अहिंसा के संदेशों को भुलाकर हिंसात्मक शक्ति जुटाने पर ध्यान दिया गया जिसने विश्व-बंधुत्व को संकट में डाल दिया है। इससे प्रजा शासन से विरक्त हो रही है।"

"भगवन्, आप विद्वान संन्यासी हैं, अध्यात्मवादी हैं।" सम्राट ने शांत मगर दृढ़ स्वर में अपना उज्ज्वल पक्ष स्पष्ट किया—"प्रसन्नता है कि आप देश का इतिहास और वर्तमान परिस्थितियों पर भी अपनी कृपादृष्टि बनाए हुए हैं। विभाजन क्यों हुआ भगवन्! क्योंकि एक शक्तिहीन देश को दो शक्तिशाली संघों ने शासित किया और अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ते गए। एक प्रायद्वीप को दो हिस्सों में बांट दिया। 36 डिग्री समानांतर रेखा के एक ओर हमें छोटा भूभाग दे दिया गया, जहां न अधिक संसाधन रहे और न अवसर। वर्षों तक हमारी व्यवस्था आश्रित रही, फिर आप जैसे संतों के आशीर्वाद से शासन संभालने का अवसर हमें प्राप्त हुआ। हमने देखा कि हमारे पास तकनीक और ज्ञान के साथ प्रतिभाओं की कमी नहीं है, मगर इनका प्रयोग ठीक से नहीं हो रहा है। बड़े देश हमारे इस भंडार से लाभ उठा रहे थे, तब हमने अपने देश को मजबूत करने में इनका प्रयोग किया। हम जानते थे कि ताकत के अभाव में कोई प्रगति मायने नहीं रखती। हमने देश को शक्तिशाली बनाने की नीति लागू की और आज हमारा छोटा-सा देश वैश्विक शक्ति के रूप में जाना जाने लगा है। शत्रु देश अचंभित हैं और भयभीत भी!"

"भय काहू को देय नहिं, भय नहीं माने आप। एक बड़े भारतीय संत ने कहा है सम्राट! भय दूर करने के लिए भय देना उचित नहीं होता। हिंसा का दमन शक्ति से नहीं, अहिंसा से किया जाता है। प्रगति की रक्षा ताकत से नहीं, उसकी निरंतरता और सदुपयोग से होती है। शक्तिशाली बनने की अपेक्षा सहिष्णु बनना अच्छा है।"

"भगवन्, शैतान से लड़ना है तो आग की जरूरत होती है। हिंसक शत्रु पर

Baba Novels Chat Room

दया नहीं की जा सकती, क्योंकि वह दया का अर्थ नहीं समझता। आप निःसंदेह उच्चतम राजनीतिक दृष्टिकोण रखते हैं, परंतु इसमें निहित नियम और सिद्धांतों को धर्म से जोड़ रहे हैं। राजनीति और धर्म दो विभिन्न क्षेत्र हैं जिनके नियम व सिद्धांत भी पृथक होते हैं। धर्म हमारे अंतःशुद्धिकरण का आस्थापूर्ण मार्ग है और राजनीति हमारे सामाजिक जीवन को संचालित करने वाली पद्धति। धर्म सार्वजनिक होकर भी व्यक्तिगत है, पर राजनीति नितांत सार्वजनिक होती है।"

"सम्राट! उस राजनीति को प्रशंसित नहीं किया जा सकता जिसमें अराजनीतिक नागरिकों के हितों का, अधिकारों का दमन किया जाता है। सामाजिक जीवन में प्रत्येक नागरिक आत्म-स्वतंत्रता का अनुभव न करे तो राजनीति महत्त्वहीन हो जाती है।"

"भगवन्! आप सम्राट को आरोपित कर रहे जिसके नेतृत्व में देश वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। सम्राट ने ये शक्तियां क्या अपनी रक्षार्थ जुटाई हैं? क्या आर्थिक भंडार सम्राट की कब्र के साथ दफन किया जाएगा? क्या सम्राट किसी व्यसन में देश का धन नष्ट कर रहा है? यह सब देशवासियों को ही समर्पित है। सम्राट इसे साथ नहीं लेकर जाएगा। सम्राट के स्थान पर जो आएगा, उसे भी यह भंडार मिलेगा, शक्ति और सामर्थ्य मिलेगी। देश के आम नागरिक किस कारण सम्राट के विरोधी हैं, यह तो स्पष्ट करना ही होगा। सम्राट की किस नीति से लोग असहज हैं, पता चलेगा तो उसमें सुधार करने के प्रयास किए जाएंगे। यदि आप वे कारण जानते हैं तो मुझे बताइए। सर्वज्ञानी तो मैं स्वयं को नहीं मानता। राष्ट्रहित में मेरा समर्पण अधिक हो जाने से संभवतः कुछ उग्रता दिखने लगी हो तो नागरिकों को अधिकार है कि वे इस पर हमारा ध्यानाकर्षण करें।"

"सम्राट! जनता शांति चाहती है, युद्ध नहीं। आपके ध्यानाकर्षण हेतु ही विगत दिनों में जनता ने संन्यास की ओर कदम बढ़ाए हैं।"

"सम्राट युद्ध नहीं कर रहा है। युद्ध की धमकी उन देशों से आ रही है, जो हमारे देश की प्रगति देखकर ईर्ष्यालु हो उठे हैं। सम्राट सुरक्षात्मक प्रतिक्रिया दे रहा है। सम्राट उन धमकियों का मात्र उत्तर दे रहा है और यह सम्राट का दायित्व है। सम्राट की सेनाएं युद्ध करने नहीं जा रही हैं, बल्कि युद्ध करने आने वालों को उत्तर देने को प्रतिबद्ध हैं। हम अब एक ऐसा शक्तिशाली परीक्षण करने जा रहे हैं जिसकी गूंज से धमकियां भी बंद हो जाएंगी, फिर शत्रु देशों के पास दो ही विकल्प होंगे—हमसे मित्रता या युद्ध। हमें दोनों ही स्वीकार होंगे, क्योंकि मित्रता हमारी नीति है और युद्ध उन लोगों की अनीति। इसके अतिरिक्त भी नागरिकों को यदि कुछ चाहिए, तो शासन तैयार है।"

Baba Novels Chat Room

"शांति, स्वतंत्रता और प्रेम ही नागरिक इच्छाएं हैं सम्राट! राजा और प्रजा के बीच संवाद स्थापित रहे। राजा प्रजा की आवश्यकताओं का ध्यान रखे। उसे कठोर प्रतिबंधों में न बांधे। सैनिक सीमा पर अच्छे लगते हैं, घरों के दरवाजों पर नहीं। इनसे उत्पन्न भय नागरिकों को विरक्त कर रहा है और यह आप देख सकते हैं।"

"हम आपके प्रस्ताव पर अमल करेंगे भगवन्! यदि नागरिकों को सैनिकों की उपस्थिति से अपनी निजता भंग होती लगती है तो हम उनकी निजता को सुरक्षित करेंगे, परंतु भगवन्, आप भी हमारी विनती सुनें और भिक्षुओं की संख्या में वृद्धि न होने दें। कम-से-कम आम नागरिक और व्यवसायियों को इसके लिए प्रेरित न होने दें।"

"सम्राट! जब नागरिक समस्याएं समाप्त होती प्रतीत होती हैं तो नागरिक-बोध स्वत: बढ़ता है। आप नागरिकों को अधिकार और सुरक्षा दें तो क्यों उन्हें शांति की खोज में संन्यास ही एकमात्र विकल्प लगेगा?"

"हमें क्या करना है, हम जानते हैं सांग-सी! प्रसन्नता है कि तुम विद्रोही से उपदेशक बन गए, परंतु अभी परिपक्वता शेष है। वह हम सिखा देंगे।" सम्राट ने उसकी आंखों में झांकते हुए कहा, किंतु वहां अब भी भय या आश्चर्य का कोई चिह्न नहीं था।

Baba Novels Chat Room

44

अश्वत्थामा के अभिशाप का प्रभाव

खोजिया कुछ कहना चाहता था कि हकबकाया उसकी आवाज निकलनी बंद हो गई थी।
प्रभास आतंकित होकर देखता रह गया, जब उसने खोजिया की पुतलियों का रंग भी बदलते देखा। यह निश्चय ही अश्वत्थामा के अभिशाप का प्रभाव था। प्रभास ने उसे संभाला।
"खोजिया, खोजिया! क्या हो रहा है तुम्हें?" प्रभास चीखा।
खोजिया के होंठों पर मुस्कराहट तैरी और उसने हाथ के संकेत से बताया कि उस पौराणिक योद्धा का अभिशाप सत्य सिद्ध हो गया था और उसकी वाणी और ज्योति चली गई थी। उसने अपना वचन तोड़ा था जिसका दंड उसे मिलना ही था।

Baba Novels Chat Room

प्रभास ने खोजिया को चालीस हजार रुपये दिए तो वह हैरानी से उसे देखने लगा।

"ये किसलिए?" खोजिया ने पूछा।

"मेरा काम अब खत्म हो गया। मैं वापस दिल्ली जा रहा हूं। शर्त के मुताबिक, मुझे तुम लोगों को कुछ पैसे देने थे। इसमें से बीस हजार एमेले को दे देना और बीस तुम ले लेना।"

"मगर काम कहां खत्म हुआ है? मिशन तो किसी सिरे नहीं पहुंचा। अश्वत्थामा के बारे में कोई नई जानकारी हमारे पास नहीं है।" खोजिया अर्थपूर्ण लहजे में बोला।

"जितनी है, उससे ज्यादा हासिल नहीं हो सकती। अब वह शायद ही कभी किसी को दिखाई दे।"

"आपको तो दिखाई दिया। न केवल दिखाई दिया बल्कि बातें भी हुईं।"

प्रभास सकपकाया।

खोजिया ने उसकी शर्ट के कॉलर के नीचे से वह बटन जैसा ट्रांसमीटर निकालकर उसकी हथेली पर रखा, जो उन्होंने एमेले को पहली बार लगाया था और जो गुम हो गया बताया जाता था।

"यह रात में मैंने आपके कॉलर में लगाया था। इससे मुझे घाट पर हुए उस वार्तालाप को सुनने का अवसर मिला, जो आपके और महान योद्धा के बीच हुआ। चमत्कार यह हुआ कि मैंने उसे रिकॉर्ड किया और वह रिकॉर्ड नहीं हो सका। आपकी आवाज आ रही है, मगर उसकी आवाज तेज गड़गड़ाहट में बदल गई। ऐसा क्यों हुआ, यह अब मैं अच्छी तरह जान गया हूं। वास्तव में जिस युग का अश्वत्थामा है, उसमें उस युग के अनुसार शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बहुत उच्च स्तर की थी। वर्तमान रिकॉर्डिंग तकनीक उनके स्वर के उच्च डेसीबल को संगृहीत नहीं कर सकती। यही बात मुझे उनके वीडियों में कैद न होने का कारण लगती है।"

"हो सकता है, ऐसा ही हो, पर इसे केवल एक अनुमान ही कहा जा सकता है और असली कारण तो वह खुद ही बता सकता है। खैर, तुमने ऐसी चतुराई क्यों दिखाई?"

"इसकी वजह थी" खोजिया गंभीर हुआ—"मेरी उम्र पचपन-साठ के बीच है। मेरा नाम खोजिया किसी और ने नहीं रखा, मैंने ही रखा है। मैं बचपन से ही खोजी प्रवृत्ति का रहा हूं। यह मेरा जुनून है। पुरातत्व विभाग में मैंने कुछ दिन काम किया, काम मेरी पसंद का ही था, पर बंदिश थी। रुटीन था, जो मैंने कभी नहीं किया। मैंने नौकरी छोड़ दी और अश्वत्थामा की स्टोरी पर काम करना शुरू किया। संसाधन सीमित थे और मैं अकेला था, पर मेरा धैर्य कमाल का था। खोजी प्रवृत्ति कमाल की थी। मैंने अश्वत्थामा को कई बार देखा, पर उससे कभी बात करने का साहस न हुआ। मैं उसकी तस्वीर लेना चाहता था, पर सफल न हुआ। करीब जाकर तुम्हारी तरह बात करने की हिम्मत न जुटा सका। उसे देखने की बात को प्रमाणित करने का मेरे पास कोई प्रमाण नहीं था तो मैं किसी से इस बारे में कुछ कहता भी न था।"

"अरे वाह! यानी तुम उसे पहले भी देख चुके थे?" प्रभास आश्चर्यचकित होते हुए बोला।

Baba Novels Chat Room

"हां, कई बार...फिर मैंने अपनी खोज दूसरे सिरे से शुरू की। मैं उसे घाटी के आसपास खोजने में जुट गया और एक दिन मैंने वह रास्ता खोज लिया जिससे अश्वत्थामा घाटी में घुसता-निकलता था। मैं उसमें घुस गया। वह दुर्गम रास्ता था। मैं नीचे उतरता गया तो वहां मैंने उसे समाधिस्थ देखा। उसके शरीर से एक प्रकाश-सा निकल रहा था जिससे वहां कंदरा में उजाला हो रहा था। वहीं समीप खून से रंगे कपड़ों का ढेर लगा पड़ा था।"

"कमाल है! तुम तो बड़े छुपे रुस्तम निकले।" प्रभास की आंखें आश्चर्य से फटी जा रही थीं–"मुझे आज तक भनक न लगने दी कि तुमने इसलिए अपना नाम खोजिया रखा।"

"अभी मेरी बात सुनो। तुम्हारे जवाब मेरी बात में ही शामिल हैं।" खोजिया ने कहा–"मैं गुफा में पहुंचकर समझ नहीं पा रहा था कि क्या करूं। वह साधना में लीन था और मुझे भय था कि कहीं वह समाधि भंग होने पर क्रोध में मुझे भस्म न कर दे। आखिर मैंने उसके निवास के रहस्य को खोज लिया था और उसकी गुप्तता को भी भंग किया था। सहसा उसके नेत्र खुले और मैं बुरी तरह डर गया। उसे क्रोध आ गया लगता था, तभी तो वह बड़बड़ाया और कोई मंत्र पढ़कर मेरी ओर हाथ उठा दिया। मुझे दिखना बंद हो गया और मेरी वाणी भी चली गई, तब शायद उसने मुझे गुफा के बाहर नदी के किनारे फेंक दिया। मुझे मेरे अपराध का दंड मिल गया था। मैं रो रहा था और मन-ही-मन क्षमा मांग रहा था, फिर मैंने अपने करीब ही भेड़ियों की गुर्राहट सुनी तो मेरे प्राण कांप गए। ऐसी दर्दनाक मृत्यु की कल्पना से ही मैं मरा जा रहा था। बचाने की गुहार हलक से बाहर न निकल रही थी। उसी समय वह दयालु महान योद्धा ही मेरे प्राणरक्षक के रूप में आया और मुझे बचाया।"

प्रभास जैसे कोई परीकथा सुन रहा था। उसकी आंखें आश्चर्य से फैली जा रही थीं।

"मुझे यह अंतिम अवसर मिला था क्षमा-याचना करने का–मैंने उसके पैर पकड़ लिये।" खोजिया ने कहना जारी रखा–"उसे मुझ पर दया आ गई थी, किंतु उसने मुझे चेतावनी दी कि भविष्य में मैं वहां न आऊं और उस गुप्त मार्ग तथा उस घटना की चर्चा कभी किसी से भी करूंगा तो मेरी वाणी और नेत्र-ज्योति फिर से चली जाएगी। मैंने आज तक अपने वचन का पूरी तरह पालन किया और किसी से इस विषय में कभी कोई बात न की। आज तुमसे भी कही तो उसका कारण यह है कि वह तुमसे प्रसन्न है और पुनः भेंट का आश्वासन दे गया है तो तुम्हें उसके विषय में सब जानकारी हो जाने से कुछ लाभ ही होगा। मेरी वाणी

Baba Novels Chat Room

और नेत्र-ज्योति चली भी जाए तो मुझे कोई रंज नहीं होगा। आगे तू जो चाहे, कर सकता है।"

"खोजिया! आदमी तो तुम ग्रेट हो।" प्रभास ने आत्ममुग्ध स्वर में कहा—"ऐसी रोचक व रोमांचक स्थिति से गुजरकर आए हो और मुझे आज तक कुछ भी नहीं बताया। मुझे इधर से उधर भटकाते-घुमाते रहे, पर उस गुप्त मार्ग के बारे में न बताया।"

"बताता तो तुम गुफा में उतरे बिना न मानते और परिणाम भयानक होता, ऐसा मुझे भय था, पर रात की घटना ने स्पष्ट कर दिया कि तुम उसके लिए अजनबी न थे। किले में भी तुम उससे मिल चुके थे यानी तुम्हारे बार-बार मिलने पर भी उसे क्रोध नहीं आता।"

"तो फिर मुझे उस गुप्त द्वार के बारे में बताओ। तुम्हारे ऊपर अश्वत्थामा के अभिशाप का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि अंधे और गूंगे तो तुम नहीं हुए यानी उसने तुम्हें भयभीत-भर किया था।" प्रभास ने कहा।

"जो भी हो, पर अब मैं तुम्हें बताऊंगा। घाटी की पहाड़ी जो नदी को दो हिस्सों में बांटती है, उसके ठीक मिलान बिंदु पर एक बड़ी-सी चट्टान है, जो दूर से तो पहाड़ी का ही हिस्सा लगती है, पर वास्तव में जरा-से दबाव से घूमकर रास्ता बना देती है। मैंने बरसों पहले उस चट्टान पर एक स्वास्तिक का चिह्न भी बनाया था, जो यदि होगा तो ढूंढने में आसानी होगी।"

"ढूंढ तो अब मैं लूंगा।" प्रभास दृढ़ता से बोला—"और तुम भी कहां जा रहे हो। तुम मेरे साथ चलोगे। गुफा में न भी घुसो तो बाहर तक ही चलना।"

खोजिया कुछ कहना चाहता था कि हकबकाया। उसकी आवाज निकलनी बंद हो गई थी।

प्रभास आतंकित होकर देखता रह गया, जब उसने खोजिया की पुतलियों का रंग भी बदलते देखा। यह निश्चय ही अश्वत्थामा के अभिशाप का प्रभाव था। प्रभास ने उसे संभाला।

"खोजिया, खोजिया! क्या हो रहा है तुम्हें?" प्रभास चीखा।

खोजिया के होंठों पर मुस्कराहट तैरी और उसने हाथ के संकेत से बताया कि उस पौराणिक योद्धा का अभिशाप सत्य सिद्ध हो गया था और उसकी वाणी और ज्योति चली गई थी। उसने अपना वचन भंग किया था जिसका दंड उसे मिलना ही था।

"खोजिया! मैं उसके पास जाऊंगा।" प्रभास ने नम स्वर में कहा—"उस महाबली से प्रार्थना करूंगा कि वह तुम्हारी वाणी और ज्योति लौटाने की कृपा

Baba Novels Chat Room

करे। वह सामर्थ्यवान और दयालु है। अवश्य ही उसका हृदय द्रवित हो जाएगा। एक अच्छे इंसान पर वह दया करेगा।"

खोजिया ने हाथों से इशारा करके कागज-पेन लाने को कहा तो प्रभास ने उसे एक पेन दिया और हाथ पकड़कर कागज पर रखा। खोजिया ने टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा।

"अपना वचन मत तोड़ना। उस महान योद्धा को गुप्त ही रहने देना। उसके लिए पूजा एक अनिवार्यता है। अतः उसके निवास पर ही शिव प्रतिमा स्थापित करना।"

प्रभास ने उसके हाथ पकड़कर चूम लिये।

"खोजिया! तुम वास्तव में ही अनुभव में पककर बुजुर्ग हुए हो। तुमने मुझे ऐसा मार्ग बताया है जिससे मैं उस पौराणिक योद्धा की सेवा कर सकूंगा। मैं आज ही उसके पास जाऊंगा और संभव हो सका तो उसी के हाथों शिवलिंग की स्थापना कराऊंगा।"

तभी प्रभास का मोबाइल बज उठा। उसने देखा कि एमेले उसे कॉल कर रहा था।

"एमेले!" उसने फोन रिसीव करके कहा–"तू जहां भी है, फौरन आ जा। तेरे उस्ताद को अब तेरी हमेशा जरूरत पड़ेगी। लगता है, उसे लकवा मार गया है और वह न देख पा रहा है और न बोल पा रहा है। तू वहां सब काम छोड़। तेरा काम वहां रहा भी नहीं है।"

"उस्ताद को अचानक क्या हुआ? अच्छा-भला तो छोड़कर आया था।"

"जो हुआ, आकर देख। दहलावर गिरफ्तार हो गया है और तू छोटा राजन के आसपास भी मत फटक। उसकी गिरफ्तारी भी होने वाली है।"

"हो गई साहब! पुलिस जीप में अपने साथियों के साथ बैठा है। मैं भी साथ ही दबोचा गया हूं तो आपसे राठी साहब की बात कराना चाहता था।"

"करा। तू भी घामची है। तेरे को पहले ही बोला था कि अब उनके पास मत फटकना...हां राठी सर, मैं प्रभास बोल रहा हूं। एमेले को मैंने ही इस काम पर लगाया था और इसकी रिपोर्ट की वजह से ही दहलावर पकड़ा जा सका है। वह नंबर इसी के जरिये मिला था।"

"ठीक! पर यह वाचाल बहुत है।" राठी ने कहा–"चार महीने पहले मुझसे हजार रुपये ठग ले गया था। लौटाने का नाम नहीं लेता। सोच रहा हूं कि थोड़ा पुलिसिया रौब दिखा ही दूं।"

"भई, पैसे लौटा देगा। वह अब बेरोजगार नहीं रहा।"

Baba Novels Chat Room

"ठीक है, भेजता हूं। तुम्हारी गारंटी पर।"

"सैयादी के बारे में कुछ पता चला? दहलावर ने कुछ बताया?"

"मुझे लगता है कि वह इंडिया से निकल गया। बुरहानपुर महाराष्ट्र के बॉर्डर पर है। वह उधर कहीं निकल गया हो तो फिर समुद्र के रास्ते से निकल जाना क्या मुश्किल है, फिर भी हमारी कोशिशें जारी हैं। तुम अब क्या कर रहे हो? तुम्हारे मिशन में कोई प्रगति हुई?"

"नहीं, लगता है तुम्हारी ही बात ठीक है। मैं एक-दो दिन में दिल्ली लौट जाऊंगा।"

"मिलकर जाना। ऐसे ही मत चले जाना।"

"ओके।" प्रभास ने फोन काट दिया और सोच-विचार में पड़ गया।

Baba Novels Chat Room

45

अश्वत्थामा-वेदव्यास और लंकापति विभीषण का मानसिक संपर्क

"भगवन्! विध्वंसा के विस्फोट के पश्चात् मैं विचलित था कि क्या मानव अस्तित्व संकटग्रस्त हो गया है, परंतु आपने मुझे निश्चिंत किया। द्रोणपुत्र अपने पराक्रम से अवश्य ही इस संकट को दूर कर देंगे।"

"अवश्य कर देंगे राजन्! इस कार्य में उनके सहायक पवनपुत्र हनुमान और भगवान परशुराम होंगे तो असफलता का प्रश्न ही नहीं उठता।" महर्षि वेदव्यास ने सांत्वना दी।

"भगवन्! क्या कभी ऐसा सुअवसर भी आएगा, जब हम सात चिरंजीवी एक साथ बैठ सकेंगे और अपने-अपने अनुभवों से एक दूसरे का ज्ञानवर्द्धन करेंगे?"

"ऐसा अवसर भी आएगा वत्स! उचित अवसर आने पर आपको आभास हो जाएगा और आपके सभी संगी आपके समक्ष होंगे।"

उस विस्फोट ने पृथ्वी के गर्भ में भीषण हलचल मचा दी थी और इससे तीव्रतम कंपन पैदा हो गया था। पीत सागर में जैसे जलजला आ गया हो। इस महाविस्फोट से पृथ्वी में जो कंपन पैदा हुआ, रिएक्टर पैमाने पर इसकी तीव्रता 6.8 मापी गई थी। बीजिंग समेत चीन के तटवर्ती नगर इस भूकंप की चपेट में आ गए थे। दक्षिण कोरिया इससे सबसे अधिक प्रभावित हुआ था।

Baba Novels Chat Room

सागर की गहराइयों में अति उच्च क्षमता के हाइड्रोजन बम का परीक्षण उत्तर कोरिया ने किया था। इससे जापान के कई कृत्रिम द्वीप जलमग्न हो गए। समूचे एशिया महाद्वीप में इस कंपन को महसूस किया गया। चीन सागर में स्थित छोटे-छोटे अनाम प्राकृतिक द्वीपों को महासागर की उत्ताल तरंगों ने घेर लिया था और भीषण झटके से द्वीप प्रकंपित हो उठे थे।

साधनारत विभीषण उस प्रचंड भूकंप के झटके से असंतुलित हो गए थे और उनका ध्यान भंग हो गया था। विध्वंसा से आधा भरा पात्र भी कंपन कर रहा था। यह विस्फोट पिछली कई शताब्दियों में होने वाले विस्फोटों से अधिक क्षमता वाला था।

"महादेव! यह विध्वंसा का उच्च क्षमता का विस्फोट है।" विभीषण चिंतित स्वर में बड़बड़ा उठे—"यह संसार को प्रलय का आभास दिलाने वाला विस्फोट है! इस दैवीय अस्त्र का प्रयोग यदि पृथ्वी की ऊपरी सतह पर किया जाए तो सृष्टि का विनाश हो जाएगा।"

लंकापति विभीषण को इस समय एकाएक महर्षि वेदव्यास का स्मरण हो आया तो उन्होंने तुरंत उनसे मानसिक संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया, जो तत्काल हुआ।

"भगवान वेदव्यास को मेरा प्रणाम!" विभीषण ने सम्मानजनक स्वर में गंभीरता से कहा।

"आयुष्मान भव रामभक्त विभीषण! अब समय आ गया है कि मानवलोक में मनुष्यों के बीच वर्चस्व की लड़ाई में हस्तक्षेप किया जाए। अब मनुष्य अतिचार के दुष्प्रभाव से विकारग्रस्त हो गया है और शक्तिशाली बनने की महत्त्वाकांक्षाओं ने उसे दानव बना दिया है। वह अपने ही हाथों अपने विनाश के कारण उत्पन्न कर रहा है।"

"महर्षि! समस्त मानव तो ऐसे नहीं होंगे, अन्यथा सृष्टि का विनाश हो ही जाता।"

"ये कुछ राजनीतिक प्रवृत्ति वाले अति दुःसाहसी और अति महत्त्वाकांक्षी मनुष्य हैं वत्स! जो संसार को भयभीत करके आसुरी शक्ति के प्रभाव से कीर्ति पाने की इच्छा रखते हैं।"

"मार्गदर्शन करें भगवन्! हमें क्या करना होगा? हम विध्वंसा को सुरक्षित करना चाहते हैं।"

"लंकेश! मैंने पहले ही कहा था कि आधुनिक विज्ञान ने अनेक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है और उनसे विध्वंसकारी आग्नेयास्त्र बनाने की विधि

Baba Novels Chat Room

विकसित कर ली है। जब विध्वंसा अपने पात्र से गिरा था तो महासागरों में उसके अनंत परमाणु फैल गए थे। आधुनिक मनुष्य ने उन्हें अपने ज्ञान से खोज निकाला। अतः इसके कण-कण को पुनः प्राप्त कर पाना आपके लिए असंभव है। हमें विध्वंसा से निर्मित विध्वंसकारी अस्त्रों को मानव से छीनकर सुरक्षित करते रहना होगा।"

"महर्षि! मुझे बताइए कि यह महास्त्र संसार में कहां है? मैं उसे लेकर आता हूं।"

"हे रामभक्त! यह कार्य आप नहीं, अपितु द्रोणपुत्र अश्वत्थामा करेंगे। आप आधुनिक मानव के विषय में अनभिज्ञ हैं, इसलिए नियति ने इस कार्य को संपन्न करने के लिए द्रोणपुत्र को चयनित किया है। भगवान परशुराम बहुत समय से इसी क्षेत्र में जन-मानस को शांति का संदेश दे रहे हैं और अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।"

"भगवन्! क्या मुझे कभी ऐसा अवसर प्राप्त नहीं होगा कि मैं भी मानव-सेवा हेतु कुछ उपाय कर सकूं। मेरी बहुत इच्छा है कि मैं मानव समाज के बीच रहकर उनका कुछ उपकार कर सकूं।"

"लंकापति! आपने अपनी इच्छा के अनुरूप स्वयं को अनुकूलित नहीं किया और त्रेतायुग की समाप्ति के पश्चात् से ही तपस्यारत रहे। इससे बदलते युग में मानवों के बीच रहने के लिए आवश्यक अभ्यास का अभाव हुआ। आचार्य कृप और असुरराज बलि भी आपकी ही भांति पृथ्वीवासियों से दूर रहकर साधना में लगे रहे हैं। द्रोणपुत्र अश्वत्थामा, भगवान परशुराम और रामभक्त हनुमान ने अपने युग का समापन होने पर भी पृथ्वीवासियों के बीच रहना स्वीकार किया और वे इसके अनुकूल होते गए। अतः यदि आप भी पृथ्वीलोक की मनमोहक विविधता को देखना चाहते हैं, उसका आनंद लेना चाहते हैं तो आपको इसके लिए अनुकूलित होना होगा।"

"भगवन्! मैं अवश्य ही ऐसा प्रयास करूंगा। आपने मेरा उचित मार्गदर्शन किया है। विध्वंसा के विस्फोट के पश्चात् मैं विचलित था कि क्या मानव अस्तित्व संकटग्रस्त हो गया है, परंतु आपने मुझे निश्चिंत किया। द्रोणपुत्र अपने पराक्रम से अवश्य ही इस संकट को दूर कर देंगे।"

"अवश्य कर देंगे राजन! इस कार्य में उनके सहायक पवनपुत्र हनुमान और भगवान परशुराम होंगे तो असफलता का प्रश्न ही नहीं उठता।" महर्षि वेदव्यास ने सांत्वना दी।

"भगवन्! क्या हमें कभी ऐसा सुअवसर भी प्राप्त होगा, जब हम सात

Baba Novels Chat Room

चिरंजीवी एक साथ बैठ सकेंगे और अपने-अपने अनुभवों से एक दूसरे का ज्ञानवर्द्धन करेंगे?"

"निश्चय ही ऐसा अवसर भी आएगा वत्स! नियति अवश्य ही ऐसा अवसर प्रदान करेगी, परंतु अभी उसकी समय सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। उचित अवसर आने पर आपको आभास हो जाएगा और आपके सभी संगी आपके समक्ष होंगे।"

विभीषण उस क्षण की कल्पना करके ही भाव-विभोर हो उठे थे।

"राजन! हमें कुछ मानसिक संदेश प्राप्त हो रहे हैं। प्रतीत होता है कि इस महाविस्फोट से विचलित होकर समसंगी हमसे वार्तालाप करना चाहते हैं।"

"अवश्य महर्षि! मैं पुनः आपसे संपर्क स्थापित करूंगा।"

"ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। आप मौन संपर्क में रहे और वार्तालाप सुनें।"

"जो आज्ञा भगवन्!" विभीषण ने श्रद्धा भाव से कहा।

कुछ क्षण पश्चात् ही उन्हें एक आक्रोशित स्वर सुनाई पड़ा। वह द्रोणपुत्र का स्वर था। उस स्वर में विचलन का स्पष्ट आभास होता था।

"भगवान वेदव्यास को द्रोणपुत्र अश्वत्थामा का सादर प्रणाम!"

"आयुष्मान भव द्रोणपुत्र! आपके स्वर में आक्रोश और पीड़ा का समावेश हो रहा है। इसका मुख्य कारण आपकी इष्ट पूजा में व्यवधान होना है।" महर्षि वेदव्यास ने कहा।

"आप सत्य कह रहे हैं महर्षि! जब कलियुग के पदार्पण से पूर्व मैंने भगवान श्रीकृष्ण से यह पूछा था कि कलियुग में सशरीर रहने पर मानव से दूरी बनाए रखना उचित होगा या अनुचित तो उन्होंने कहा था कि यदि विधाता ने चिरंजीव होने की स्थिति उत्पन्न की है तो उसका उपयोग कलियुग के मानव के बीच रहकर ही करो जिससे कलिमानव का निष्काम कर्म की सत्यता पर विश्वास बना रहे, क्योंकि कलिमानव प्रमाण चाहता है। यद्यपि मुझे किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप से दूर ही रहना है, फिर भी वासुदेव के कहने पर ही मैंने इस स्थान को चुना और यहीं निवास किया।"

"महाबली अश्वत्थामा! वह स्थान आपके गुप्त निवास के लिए सर्वथा उपयुक्त है और संभवतः वहां आपके निवास में कोई विशेष मानवीय हस्तक्षेप भी नहीं हुआ।"

"भगवन्! विशेष हस्तक्षेप तो नहीं हुआ, पर मुझे इष्ट-पूजा के लिए जाना पड़ता था और प्रायः मनुष्य से सामना भी होता था। यद्यपि मैंने किसी को कभी

Baba Novels Chat Room

अपना परिचय नहीं दिया और अधिक वार्तालाप भी नहीं किया, तथापि कुछ दिनों से किसी दुष्ट ने मेरी पूजा में व्यवधान उत्पन्न कर दिया है। उसने मेरी आंखों के सामने मेरे आराध्य शिव का मंदिर ध्वस्त कर दिया। मैं उस अधम को दंडित करने का प्रण कर चुका हूं।"

"तुम्हारा निर्णय आस्था के अनुकूल है। भगवान शिव ने तुम्हें यह अवसर प्रदान किया है, जब तुम शिवद्रोही को दंडित करके न केवल उसे उसके अपराध का दंड दोगे, बल्कि मानव जाति का कल्याण भी करोगे।"

"परंतु भगवन्! मैं उसे कैसे खोजूंगा?"

"शिव कृपा करेंगे। अपने भक्त के आक्रोश को शांति प्रदान करने के लिए भगवान शिव ही मार्ग प्रशस्त करेंगे। भगवान शिव की प्रेरणा से नियति ने ऐसा घटनाचक्र रचा है कि तुम्हें एक विशेष कार्य संपन्न करना होगा। अभी पृथ्वी में हुए कंपन का आपने आभास किया होगा। यद्यपि जिस स्थान पर आपका निवास है, वह कंपन केंद्र से अधिक दूरी पर है और अपनी विशेष बनावट के कारण वह विचलन मुक्त भी है, तथापि विध्वंसा की विस्फोटक तरंगों ने कुछ प्रभाव तो अवश्य ही दिखाया होगा।"

"विध्वंसा! आपने विध्वंसा कहा भगवन्! वह विध्वंसकारी दैवीय अस्त्र, जो नारायणास्त्र से कुछ ही निम्न श्रेणी का है, जो लंकापति रावण ने निर्मित किया था। क्या वह कलिमानव के हाथ लग गया? यदि ऐसा है तो मानव अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा, क्योंकि कलिमानव अब निर्दयी, प्रतिस्पर्द्धी और महत्त्वाकांक्षी हो गया है। कुछ लोग तो अपने आपको संसार का सबसे शक्तिशाली शासक बनाने की महत्त्वाकांक्षा से सभी नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं।"

"विध्वंसा वास्तव में अब प्रत्येक स्थान पर पाया जाता है, क्योंकि आधुनिक मानव ने इसके तत्त्व और इससे अस्त्र निर्माण की विधि विकसित कर ली है। संसार के प्रत्येक देश को इन तत्त्वों का ज्ञान हो गया है और अधिकांश देश इससे अस्त्र निर्माण कर चुके हैं। शांतिप्रिय देश केवल अपनी रक्षा प्रणाली में वृद्धि हेतु इसका भंडारण करते हैं, जबकि कुछ शासक इसे विश्व-विजेता बनने की अकांक्षा से सहेज रहे हैं। यह महाविस्फोट ऐसे ही एक शासक की महत्त्वाकांक्षा का परिणाम है, जो विश्व को भयानक युद्ध में झोंक देना चाहता है।"

"ऐसे क्रूर शासक को तो मृत्युदंड देना चाहिए भगवन्!"

"विधि ने उसके भाग्य में क्या लिखा है, यह तो विधाता ही जाने, परंतु वह तुम्हारे प्रण को पूरा करने में हस्तक्षेप करने का प्रयास कर सकता है। वह उस शिवद्रोही को शरण दे सकता है जिस पर तुम्हारा आक्रोश है। वह समझता है

Baba Novels Chat Room

कि वह सर्वशक्तिमान है और उसकी शरण में बड़े-से-बड़ा अधम भी सुरक्षित रह सकता है।"

"उस शिवद्रोही को अपने अहंकार की शरण देने वाला मेरे क्रोध की अग्नि में जलकर भस्म हो जाएगा भगवन्! मेरे क्रोध से उस शिवद्रोही की रक्षा स्वयं शिव ही कर सकते हैं। मेरा मार्गदर्शन करें भगवान शिव! वह अधम कहां है, मुझे प्रेरित करें।"

"ॐ नमः शिवाय! शिव तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करें।" यह कहते हुए महर्षि वेदव्यास ने संबंध विच्छेद करते हुए कहा।

विभीषण उस वार्तालाप को सुनकर संतुष्ट हुए।

Baba Novels Chat Room

46

बलि, व्यास और विभीषण का मानसिक संवाद

सम्राट बलि ने तत्काल अपने संदेह की पुष्टि करने के लिए चिरंजीवी विभीषण से मानसिक संपर्क स्थापित किया।

"महान दानवीर, परमभक्त सम्राट बलि को दास विभीषण का प्रणाम!"

"आयुष्मान भव वत्स!" सम्राट ने संदेश प्रेषित किया–"वत्स, क्षण-भर पूर्व विध्वंस का भीषण विस्फोट हुआ है जिसने हमारा ध्यान भंग कर दिया है। जिस जलस्थान पर हम समाधिस्थ हैं, वह हमारे तपप्रभाव से अत्यंत शीतल रहता है, परंतु वह भी इस समय उष्ण लगने लगा है। इसका अर्थ यह है कि वह विस्फोट हमारे समीप ही कहीं हुआ है।"

पीतसागर की गहराई के शांत और स्थिर जल में यदि कोई हलचल थी तो वह वहां मौजूद जलचरों की जलक्रीड़ा से थी। विविध जलीय जीवों के आवागमन से होने वाली वह हलचल उस दिव्य पुरुष की समाधि अवस्था पर कोई प्रभाव नहीं डालती थी, जो वहां स्थित एक विशाल शिला पर ध्यानमग्न बैठा था।

उस दिव्य पुरुष के शरीर से स्वर्ण के रंग जैसा प्रकाश प्रकीर्णित हो रहा था, जो जल में एक मनोरम दृश्य उत्पन्न कर रहा था। यह दिव्य पुरुष

Baba Novels Chat Room

कोई और नहीं, बल्कि सात चिरंजीवियों में सबसे प्राचीन, सतयुग के महान असुर-सम्राट बलि थे जिनकी दानशीलता ने देवराज इंद्र को भी भयभीत कर दिया था। इंद्र की अभ्यर्थना पर भगवान श्रीहरि विष्णु ने राजा बलि की परीक्षा लेने के लिए बौने वामन का रूप धारण करके पृथ्वीलोक पर अवतार लिया और बलि से तीन पग भूमि दान में मांगी। तीन पग में ही श्रीहरि ने सम्राट बलि के त्रिलोक का शासन दान में ले लिया और कमी पड़ने पर महादानी सम्राट ने स्वयं को भी प्रस्तुत कर दिया। इससे भगवान श्रीहरि प्रसन्न हुए और महादानी बलि को अमरत्व का वरदान दिया।

श्रीहरि की कृपा से पाताललोक में आकर राजा बलि ने अपना अनंत जीवन प्रभु-स्मरण को समर्पित कर दिया। वैभव और ऐश्वर्य त्यागकर दानवीर बलि अब साधारण तपस्वी की भांति जलमग्न तपस्या में कई युगों से लीन थे। जलदेवता वरुण उनको सभी प्रकार से रक्षित, सुरक्षित करने को तत्पर व उनके आदेश को मानने वाले थे।

आज अचानक ही तपस्यारत राजा बलि के ध्यान को उस प्रकार की भीषण जलतरंगों और जलभंवरों ने भंग कर दिया, जिस प्रकार की महायुद्ध में हुए भीषण विस्फोट से उत्पन्न हुई थीं। जल का तापमान एकाएक इतना बढ़ गया था कि अनेक जलीय जीव तत्क्षण प्राणाहत होकर रह गए। स्वयं सम्राट बलि इस प्रचंड जल उद्वेलन से अस्थिर हो गए थे।

'विध्वंसा!' सम्राट ने स्वतः भाषण किया-'यह तो विध्वंसा का विस्फोट है। उस विध्वंसा का जो महान विज्ञानवेत्ता लंकापति रावण द्वारा आविष्कृत और रामभक्त विभीषण द्वारा संरक्षित किया गया था। सृष्टि को क्षण-भर में नष्ट कर देने की शक्ति रखने वाले विध्वंसा का यह आंशिक परीक्षण ही है। किसने किया? क्या कलिमानव ने?'

सम्राट बलि ने तत्काल अपने संदेह की पुष्टि करने के लिए चिरंजीवी विभीषण से मानसिक संपर्क स्थापित किया।

"महान दानवीर, परमभक्त सम्राट बलि को दास विभीषण का प्रणाम!" विभीषण ने श्रद्धापूर्वक नतमस्तक होते हुए कहा।

"आयुष्मान भव वत्स!" सम्राट बलि ने भी मानसिक संदेश प्रेषित किया-"वत्स, क्षण-भर पूर्व विध्वंसा का भीषण विस्फोट हुआ है जिसने हमारा ध्यान भंग कर दिया है। जिस जलस्थान पर हम समाधिस्थ हैं, वह हमारे तपप्रभाव से अत्यंत शीतल रहता है, परंतु वह भी इस समय उष्ण लगने लगा है। इसका अर्थ यह है कि वह विस्फोट हमारे समीप ही कहीं हुआ है।"

Baba Novels Chat Room

"हे प्रपितामह! आपका सोचना सर्वथा सत्य ही है। यह विध्वंसा के उस लघु अंश के मात्र आंशिक परीक्षण का महाविस्फोट है, जो पात्र से गिरकर समुद्र में विलीन हो गया था और हमारे अत्यधिक प्रयासों के पश्चात् भी पुनः प्राप्त नहीं किया जा सका। कलियुग में मानव ने विज्ञान में अत्यधिक प्रगति कर ली है और विध्वंसा के कणों को प्राप्त कर लिया है। यही हमारी चिंता का विषय है प्रपितामह!"

"वत्स, कलिमानव अति स्वार्थी और महत्त्वाकांक्षी है। ऐसे दैवीय अस्त्र उसकी रक्त-पिपासा में निरंतर वृद्धि करते जा रहे हैं। इससे संपूर्ण सृष्टि का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है। यह हमारे कुल के लिए एक कलंक होगा।" सम्राट बलि चिंतित हुए।

"प्रपितामह! हमने इस विषय पर दिव्यद्रष्टा महर्षि वेदव्यास से विचार-विमर्श किया और इस विस्फोट का केंद्र, कारण और कारक जानना चाहा, परंतु उन्होंने अस्पष्ट-सा उत्तर दिया। उनके अनुसार, नियति ने विध्वंसा का रक्षक हमें नियुक्त कर रखा है, परंतु जो अंश मानव के हाथ लग गया है, उसे निष्क्रिय करने के लिए महाबलि अश्वत्थामा का चयन किया है। अतः हम सहायक की भूमिका में ही नियुक्त हैं।"

"महर्षि वेदव्यास त्रिकालदर्शी हैं वत्स! उनका निर्देश हमें मानना होगा। नियति ने महाबलि अश्वत्थामा का इस कार्य के लिए उचित ही चयन किया है। वे मानव समाज के मध्य रहते हैं और उसकी क्रिया और कार्यशैली से परिचित हैं। यदि हमें उनके सहायक की भूमिका भी मिली है तो यह हमारा सौभाग्य है। हम स्वयं इस विषय पर महर्षि से विचार-विमर्श करना चाहेंगे।"

"अवश्य प्रपितामह! मेरी व्याकुलता को किसी भी प्रकार शांति प्रदान करने की कृपा कीजिए।"

"वत्स, तुम हमारे संपर्क में ही रहो। हम अभी महर्षि से संपर्क स्थापित करते हैं।"

सम्राट बलि ने महर्षि वेदव्यास से संपर्क स्थापित किया।

"परम तेजस्वी सम्राट बलि को हमारा सादर प्रमाण!"

"यशस्वी भव विद्वान महर्षि! हम आपसे विध्वंसा के आंशिक विस्फोट के विषय में मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहते हैं। महाभाग विभीषण भी इस समय हमारे संपर्क में हैं।" सम्राट बलि ने विनीत स्वर में कहा—"यदि कलिमानव को विध्वंसा प्राप्त हो गया है तो यह सृष्टि के लिए प्रलयंकारी संकट का काल है। आज के मानव की महत्त्वाकांक्षाएं उन सीमाओं को भी लांघ गई हैं, जो कभी हमारे

Baba Novels Chat Room

असुरकुल में कुख्यात रूप से विद्यमान थीं। आज मानव ही मानवता का घोर शत्रु हो गया है महर्षि!"

"आप सत्य कह रहे हैं सम्राट! ब्रह्मांड में पृथ्वी ही ऐसा लोक है, जहां बुद्धि, विवेक और करुणा का पारस्परिक प्रभाव है, परंतु कुछ जातकों में विध्वंसकारी रूप में विकसित हो रहे हैं। सात महासागरों से जलप्लावित पृथ्वीलोक जीवात्मा के लिए आदर्श स्थान है, परंतु वर्चस्व की महत्त्वाकांक्षा ने यहां शासक वर्ग में एक हठ और कुंठा उत्पन्न कर दी है। वह इस सत्य को नहीं समझ पा रहा है कि जिस अग्नि का भंडारण वह अपना भय स्थापित करने हेतु कर रहा है, वह स्वयं उसे भी दग्ध कर देगी।"

"शासक वर्ग प्राय: इसी मानसिकता का शिकार रहा है महर्षि! कभी साम्राज्य की सीमा-विस्तार के लिए तो कभी बल-प्रदर्शन के लिए अनेक महायुद्ध हो चुके हैं। आप हमें आदेश करें कि हमें वर्तमान संकट में क्या करना चाहिए? यह तो हम जान गए हैं कि नियति ने द्रोणपुत्र अश्वत्थामा को चिरंजीवियों का प्रमुख सेनापति के रूप में चुना है। अब हमारी सहायक भूमिका क्या होगी, इसका मार्गदर्शन आप ही करें।"

"सम्राट बलि! नियति द्वारा सेनानायक के रूप में महाबली अश्वत्थामा को चुने जाने का कारण तो आप समझ ही गए होंगे। वास्तव में उन्होंने स्वयं को समय और परिस्थिति के अनुसार अनुकूलित किया है। कई बार उनके द्वारा मानवीय हठधर्मिता में हस्तक्षेप हुआ है और उन्होंने सत्य व शांति की स्थापना करने में सफलता प्राप्त भी की है।"

"हम जानते हैं महर्षि! वास्तव में द्रोणपुत्र ही वर्तमान के साथ सामंजस्य स्थापित करने हेतु समुचित रूप से अनुकूलित हैं। हम सप्त चिरंजीवियों में से भगवान परशुराम और द्रोणपुत्र ही वर्तमान मानव के अधिक सन्निकट हैं। महावीर हनुमान भी इस विषय में पारंगत हैं। अत: हम शेष चार का तो सहायक की भूमिका में ही रहना श्रेयस्कर है।"

"एक अन्य कारण भी है सम्राट बलि! आपको स्मरण होगा कि महाभारत के महायुद्ध में एक अप्रितम योद्धा युयुत्सु ने महाराज धृतराष्ट्र का पुत्र होते हुए भी दुर्योधन की ओर से युद्ध नहीं किया था। वास्तव में युयुत्सु धृतराष्ट्र और उनकी एक दासी के संयोग से उत्पन्न हुआ था। दुर्योधन उसे यथोचित सम्मान नहीं देता था, लेकिन युयुत्सु दासी-पुत्र होने के उपरांत भी बड़ा गुणवान, शीलवान और साहसी युवक था। नीति-निपुण विदुर की भांति युयुत्सु भी सत्य, न्याय और धर्म का पक्षधर था। जब भगवान श्रीकृष्ण के बहुत समझाने पर भी दुर्योधन पांडवों

Baba Novels Chat Room

से समझौता करने के लिए तैयार न हुआ तो महाभारत का रण अवश्यंभावी हो गया। ऐसे समय में महाभारत के रण से पूर्व भीष्म पितामह ने सभी योद्धाओं को बुलाकर कहा कि अब सत्य, न्याय और धर्म के लिए निर्णायक युद्ध होने जा रहा है। कोई भी योद्धा कौरवों और पांडवों में से जिस पक्ष को उचित समझे, उसी के पक्ष में युद्ध में भाग ले सकता है। उस समय युयुत्सु ने निर्भीकता के साथ पांडवों को सत्य, न्याय और धर्म का पक्षधर कहते हुए उन्हीं के पक्ष में युद्ध करने की घोषणा की। युयुत्सु द्वारा निर्भीकता के साथ सत्य, न्याय और धर्म का पक्ष लेने के कारण भगवान श्रीकृष्ण ने उसे वरदान दिया था कि संसार में सप्त चिरंजीवी जब भी किसी आपातकाल में सक्रिय होंगे, तब वही माध्यम बनेगा। इस जन्म में वही युयुत्सु प्रभास नामक युवक के रूप में अश्वत्थामा का मित्र बनकर पृथ्वी पर आया है। यही नहीं, बल्कि पूर्वजन्मों में भी वही ऐसे अभियानों का माध्यम और केंद्र बनता रहा है। इस बार भी वही निमित्त होगा।"

"नियति की गति पर कौन संदेह कर सकता है महामुने! कृपा करके यह भी अवश्य बताने का कष्ट करें कि क्या कभी उस युवक से हमारा भी साक्षात्कार होगा।"

"महासम्राट, नियति ने उसे आपके कर्मसंगी के रूप में नियुक्त किया है। आपके अमरत्व को पूर्ण और सार्थक रूप देने का महान कार्य उसी के द्वारा संपन्न होगा। कर्मक्षेत्र में आपका पुनः आगमन उसकी ही प्रेरणा से होगा। अतः साक्षात्कार तो निश्चित है।"

"हमें उस महायोद्धा से मिलकर अत्यंत प्रसन्नता होगी महामुनि! मरणधर्मा होकर भी उस महान आत्मा के हृदय में आज भी पीड़ितों, पराजितों और निर्बलों, निःसहायों के प्रति गहन संवेदना है।"

"सम्राट, नियति सदैव वर्तमान से ही नायक चुनती है, जो आप जैसे महानायकों की अनुकंपा से समाज को सत्य और सद्भाव की दिशा प्रदान करता है। काल की यही तो विशेषता है कि वह अपने प्रत्येक खंड में वर्तमान को ही श्रेष्ठता प्रदान करता है, यद्यपि अपने भूत के योगदान का श्रेय वह कभी विस्मृत नहीं करता और भविष्य को उच्चतर संदेशों से उच्चतम की ओर ले जाता है। द्रोणपुत्र जिस अभियान पर जा रहे हैं, उसमें आप सभी महानायकों को उनकी सहायता करनी है। आप क्योंकि पाताल और जल के अधिपति हैं, अतः समय आने पर आप ही द्रोणपुत्र को सहायता देंगे। महावीर हनुमान उनके मार्ग को निष्कंटक करेंगे। भगवान परशुराम उन्हें अहिंसा से परिचित कराएंगे। हम उनका मार्गदर्शन करते रहेंगे। रामभक्त विभीषण विध्वंसा के अंशों को अपने पात्र में

Baba Novels Chat Room

सुरक्षित करेंगे और आचार्य कृप उन्हें अनावश्यक जनहानि करने से रोकेंगे। ब्रह्मांड के सभी सप्त रक्षक संसार को यह संकेत देंगे कि ईश्वर की सत्प्रेरणा और आज्ञा के अनुसार पंच महाव्रतों की सुरक्षा और सुदृढ़ता हेतु ही आप चिरंजीवी हैं। आपके कार्य को संसार के समक्ष सांसारिक विधियों से लाने का कार्य प्रभास नाम का वह युवक करेगा।"

"हम कृतार्थ हुए महामुने!" सम्राट बलि ने आभार एवं श्रद्धायुक्त स्वर में कहा—"हमारा अमरत्व सार्थकता की ओर अग्रसर हो!"

"ॐ नमः शिवाय!" इस समवेत् उद्घोष के साथ ही उनका मानसिक संवाद समाप्त हो गया।

सम्राट किम-जोंग-उन की दिनचर्या में नींद का सीमित स्थान था। वह मुश्किल से दो घंटे सोता था। आधी रात तक वह प्रयोगशाला में वैज्ञानिक प्रगति का निरीक्षण करता था और फिर भोजन आदि से निबटकर अपने अति सुरक्षित शयनकक्ष में पहुंचता था।

सम्राट का शयनकक्ष जैसे किसी बड़े टेलीकास्ट कंट्रोलरूम जैसा था जिसकी चारों दीवारों पर स्क्रीन्स थीं। इन स्क्रीन्स से वह अपने सभी प्रमुख अधिकारी, प्रशासक आदि की गतिविधियों पर नजर रखता था। इस कक्ष में उसके अलावा कोई प्रवेश नहीं कर सकता था।

सम्राट के कक्ष के बाहर पहली पंक्ति में तकनीकी सुरक्षा का सुदृढ़ जाल फैला हुआ था और दूसरी पंक्ति में उसके विश्वस्त सुरक्षा गार्ड चौबीस घंटे मुस्तैद रहते थे।

आज सम्राट ने हाइड्रोजन बम के उच्चतम स्तर का सफल परीक्षण करके दुनिया को भयभीत कर दिया था।

विश्व के सभी देशों ने उसके इस कदम की निंदा की थी, यहां तक कि चीन भी अब विश्व समाज के साथ हो चला था। वह जानता था कि चीन की दोगली नीति क्या थी। जापान, फ्रांस व रूस ने अमेरिका की भाषा बोली, लेकिन तानाशाह उनके बयानों पर अट्टहास ही करता रहा।

सम्राट आज बहुत प्रसन्न था। उसने शक्तिशाली देशों को चिंतित ही नहीं, बल्कि भयभीत भी कर दिया था। उसके अहंकार को बड़ी संतुष्टि मिली थी। अब वह खुद को हिटलर, नेपोलियन और मुसोलिनी से भी अधिक शक्तिशाली और लोकप्रिय मानने लगा था।

Baba Novels Chat Room

अब संसार के इतिहास में उसे एक ऐसे महान तानाशाह के रूप में याद किया जाएगा जिसने एक छोटे-से देश को शक्तिशाली बना दिया था।

सम्राट ने अमेरिका, फ्रांस, रूस जैसे देशों की चेतावनी को किसी गिनती में नहीं लिया था। उसने युद्ध की धमकी पर अट्टहास करके दिखाया था और वैश्विक स्तर पर कहा था—"युद्ध की धमकी! अमेरिका अब केवल धमकी ही दे सकता है, युद्ध नहीं कर सकता, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि इस युद्ध से किसे कितना नुकसान होगा।"

यह उसका अपना विश्लेषण था कि अमेरिका या उसके सहयोगी देश युद्ध करने से पूर्व इस बात को नजरंदाज नहीं कर सकते कि उत्तर कोरिया के पास विध्वंसकारी परमाणु हथियार हैं। उनके निशाने पर अमेरिका का समूचा आर्थिक बाजार है। सम्राट के इस बयान की भी तीखी आलोचना हुई और उसे मानवता का विरोधी कहा गया।

सम्राट को ऐसे अलंकरणों से प्रसन्नता की अनुभूति होती थी। ऐसे जुमलों को वह उन देशों की हताशा कहता था, जो उसके यश से जलते थे। अब वह सर्वशक्तिमान था। उसके पास विश्व-भर को नष्ट कर देने वाली अपार परमाणु शक्तियों का भंडार था। इनका परीक्षण अभी तक अमेरिका नहीं कर सका था, पर उसने कर दिखाया था।

सम्राट ने इस प्रसन्नता को अपने उस वैज्ञानिक दल के साथ एक ड्रिंक लेकर शेयर किया, जिसने उसके स्वप्न को साकार किया था। सात सदस्यीय वह वैज्ञानिक दल सम्राट के साथ ड्रिंक पार्टी को जीवन का सबसे यादगार पल मान रहा था। सम्राट ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और बड़े-बड़े राष्ट्रीय पुरस्कार देने की घोषणा भी की। यह आयोजन रात दो बजे तक चला और खुशी के मारे तानाशाह ने उस रात भोजन भी स्थगित कर दिया। वह सीधा शयनकक्ष में पहुंचा और अपने विशेष मखमली बिस्तर पर लेट गया। उसने आंखें बंद कर लीं और अपनी स्वघोषित महानता पर विचार करने लगा।

सम्राट ने अपने विचारों से मुदित आंखें खोलीं तो आश्चर्य से उछल पड़ा। अपने सामने का साक्षात् दृश्य देखकर भी उसे अपनी आंखों पर यकीन नहीं हो रहा था। कभी भय न मानने वाला सम्राट किम-जोंग-उन भी एकाएक भयग्रस्त हो गया था। उसके अति सुरक्षित शयनकक्ष में जहां हवा भी उसकी मर्जी से दाखिल होती थी, उस कक्ष के कालीन पर बौद्ध मुद्रा में एक तेजस्वी भिक्षु पालथी मारकर बैठा था। भिक्षु संन्यासी के नेत्रों से शांति और करुणा झलक रही थी।

सम्राट ने थूक गटका और बिस्तर से उतरा। उसे अपने घुटनों में कंपन का अनुभव हुआ और उसने व्याकुलता से इधर-उधर देखा।

Baba Novels Chat Room

"बुद्धं शरणम् गच्छामि। संघं शरणम् गच्छामि। धम्मं शरणम् गच्छामि।" कक्ष में एकाएक बौद्ध-मंत्रों का मधुर उच्चारण गूंज उठा।

संन्यासी ने शांत और प्रभावशाली स्वर में बौद्ध-मंत्रों का उच्चारण किया तो सम्राट करबद्ध होकर कालीन पर बैठ गया। वह एकाटक संन्यासी को देखने का साहस न कर सका।

"भ...भ...भगवन्! आ...आप कौन हैं? इस कक्ष में कैसे प्रवेश संभव हुआ?" उसने प्रश्न किया।

"सत्य को कहीं भी प्रवेश करने से नहीं रोका जा सकता सम्राट! सत्य सर्वत्र और सर्वव्यापी है। वह प्रत्येक स्थान पर रहता है। इस सत्य को स्वीकार करो सम्राट, स्वीकार करो कि सत्य से बढ़कर कोई सत्ता नहीं है। सत्य की दृष्टि से कुछ भी ओझल होना नितांत असंभव है।" संन्यासी ने कहा।

"आप...आप अवश्य ही कोई सिद्धपुरुष हैं भगवन्! इस कक्ष में साधारण व्यक्ति का प्रवेश नितांत असंभव है।" सम्राट ने कहा।

"अपने हठधर्मी प्रतिबंधों को अपने असाधारण होने के परिप्रेक्ष्य में न रखो सम्राट! स्वयं को असाधारण मानने की भूल तब तक न करो, जब तक लोग तुम्हें असाधारण स्वीकार न कर लें। स्वमान्य, स्वघोषित असाधारणता वास्तव में अहंकार है।"

"क्षमा करें भगवन्! मेरे देश में मुझे असाधारण स्वीकार किया जाता है।"

"यह चाटुकारों द्वारा दिया गया संबोधन है सम्राट! मनुष्यों द्वारा नहीं, समाज द्वारा नहीं। योग्यता का सम्मान चाटुकार नहीं जान सकते, यह तो निष्पक्ष, निर्मल हृदय ही जानते हैं। व्यक्ति का असाधारण होना एक बड़े वर्ग को प्रेरणा प्रदान करता है। किसी सामाजिक और मानवीय नियम का हठधर्मी से उल्लंघन करना कभी असाधारण की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।"

"भगवन्! आप सत्य कह रहे हो सकते हैं। मैं आपसे विनती करता हूं कि आप अपना परिचय और उद्देश्य बताने की कृपा करें। आपके इस कक्ष में प्रवेश को लेकर भी मैं असमंजस में हूं। कृपया मेरी जिज्ञासाओं को शांत करें।"

"क्षण-भर के लिए अपने नेत्र बंद करो और पुनः खोलो। संन्यासी ने कहा।

सम्राट ने ऐसा ही किया। पलकें झपकाईं और खोलीं तो स्तब्ध रह गया। वह संन्यासी वहां नहीं था। कक्ष में छुपने लायक कोई जगह भी नहीं थीं, फिर वह कहां गया? दरवाजा उसने स्वयं बंद किया था! वह पसीने-पसीने हो उठा। वह उस अलार्म का बटन दबाने को दौड़ा, जो आज तक प्रयोग में नहीं आया था, पर ठहर जाना पड़ा।

Baba Novels Chat Room

संन्यासी सम्राट के सामने पद्मासन मुद्रा में हवा में स्थिर था। वह जैसे एकाएक प्रकट हुआ था, क्योंकि उसने उस स्थान को अभी तक रिक्त देखा था।

"कक्ष में हमारे प्रवेश का उत्तर तो मिल गया होगा सम्राट!" संन्यासी पुनः कालीन पर आकर बैठ गया–"रहा हमारा परिचय, तो तुम्हें विश्वास नहीं होगा। हमारा उद्देश्य तुम्हारी निर्मलता पर से कुटिलता के आवरणों को हटाना है।"

"अपना परिचय अवश्य दे भगवन्!" सम्राट ने हाथ जोड़े।

"तुमने आर्यावर्त देश की पौराणिक कथाएं अवश्य सुनी होंगी सम्राट! रामायण से परिचित होंगे, जो विश्व-भर में प्रसिद्ध ग्रंथ है।" संन्यासी ने कहा।

"अवश्य भगवन्! संयोग से अध्ययन काल में विश्व-साहित्य में मेरी रुचि थी।"

"अखंड भारत के यशस्वी सम्राट, विष्णु के अवतार, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के समय में एक अधर्म विनाशक, इक्कीस बार पापियों का अंत करने वाले, ऋषि परशुराम के विषय में सुना होगा। हम वही हैं–महर्षि परशुराम। भारतीय मान्यता के अनुसार सप्त चिरंजीवियों में से एक पौराणिक ऋषि!" संन्यासी ने सहज उत्तर दिया।

सम्राट अपलक देखता रह गया और फिर ठठाकर हंस पड़ा।

"भगवन्! सिद्धपुरुषों में मेरा विश्वास है, परंतु असंभव कल्पित कथाओं में मैं विश्वास नहीं करता। आप सिद्धपुरुष अवश्य हैं और कैसी भी सुरक्षा व्यवस्था को भेदकर कहीं भी आने-जाने का चमत्कार कर सकते हैं, यह मैंने स्वीकार किया, परंतु परशुराम! हजारों वर्ष पहले की कथा का एक पात्र जो चिरयुवा दिखता है! मुझे भयभीत करने का प्रयास न करें भगवन्! यह उत्तर कोरिया में नहीं, केवल आर्यावर्त में ही स्वीकार्य हो सकता है।"

"हम जानते थे कि तुम जैसा दंभी तानाशाह, जो स्वेच्छाचारिता का अभ्यस्त है और सत्य को जानने में सर्वथा असमर्थ है, इस सत्य पर विश्वास नहीं करेगा। हमें अपना परिचय देकर तुम्हें भयभीत करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तुम्हें भयभीत करने के लिए तो तुम्हारे अपने कर्म ही पर्याप्त हैं। जिन राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं के चलते तुमने प्रजा के अधिकारों व स्वतंत्रता को प्रतिबंधित किया है, वह घोर शासकीय स्वेच्छाचारिता है। विश्व को युद्ध के कगार पर ला खड़ा करने की कुत्सित मानसिकता वह अक्षम्य अपराध है, जो तुम्हारे पतन का कारण बनेगी।"

"उत्थान और पतन एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है और पतन में चाहे कितना भी कष्ट हो, पर उत्थान के आनंद का कोई मुकाबला नहीं है। पतन! क्षीणता का पर्यायवाची है और क्षीणता प्रकृति का नियम है। उससे भय कैसा! मुझे उत्थान

Baba Novels Chat Room

के चरमोत्कर्ष का आनंद लेना है और आप कृपा करके इसमें अपने उपदेशों से भय उत्पन्न न करें। यदि आप परशुराम ही हैं तो अपना वह जगत्प्रसिद्ध फरसा निकालिए और मेरा वध कर दीजिए।"

"वध को पतन की पूर्ति नहीं कहा जा सकता सम्राट! वध तो एक क्षणिक दंड है और हमें तो तुम्हें दंड देने का अधिकार ही नहीं है। हम तो तुम्हें सत्य का दर्शन कराने आए हैं और वह हम तुम्हें अवश्य कराएंगे। होगा तो वही, जो तुमने अपने लिए चुना है।"

इतना कहकर भिक्षु रूपी महर्षि परशुराम ने अपनी तर्जनी उसके मस्तक पर छू-भर दी तो सम्राट के नेत्रों में अंधकार छा गया, फिर कुछ चलचित्र-सा स्पष्ट हुआ, जिसमें उसने स्वयं को रुग्णावस्था में असहाय देखा! किसी कुष्ठ रोगी जैसा!

"नहीं!" सम्राट ने चीखकर नेत्र खोले और अपने माथे का पसीना पोंछा। वह बुरी तरह हांफ रहा था।

अब वह संन्यासी वहां नहीं था, पर उसके वहां आगमन का प्रमाण उसके बिस्तर पर ऐन उस स्थान पर बिछा अंगरखा था, जहां वह सोता था। स्वप्न तो वह नहीं था। उस कथित महर्षि परशुराम से उसका साक्षात्कार वास्तविक था।

उत्थान के आनंद से पतन का वह दृश्य भयावह था, जो यदि सत्य था तो बहुत कष्टकारी था।

Baba Novels Chat Room

47

अश्वत्थामा : प्राणों का रक्षक

प्रभास 'बचाओ-बचाओ' की तेज पुकार करने लगा था, मगर वह जानता था कि वहां कोई मदद नहीं आने वाली थी। अंतत: उसने एक विश्वासपूर्ण निर्णय लेते हुए उच्च स्वर में पुकार लगाई।

"द्रोणपुत्र! सहायता करो!" वह चीखकर बोला, लेकिन धीरे-धीरे उसके हवास गुम होते जा रहे थे।

हमलावर पूरी निर्दयता से उसे तड़पा-तड़पाकर मार देने वाले थे कि दो सरसराते हुए बाण दोनों हमलावरों की गरदनों पर आकर लगे और वे कटे हुए वृक्षों की तरह गिर पड़े।

प्रभास के विश्वास की जीत हुई थी और अश्वत्थामा प्राणों का रक्षक बनकर आ गया था।

Baba Novels Chat Room

प्रभास मोटरसाइकिल से चल रहा था। शहर में चारों ओर पुलिस के जवान तैनात थे। कर्फ्यू जैसी स्थिति थी और कड़ी सुरक्षा में लोग अपने दैनिक कार्य कर रहे थे।

धारा-144 लागू होने से एक साथ दो से अधिक लोग इकट्ठे होकर बातचीत नहीं कर सकते थे। जैसी घटना हुई थी, उसमें सांप्रदायिक दंगा भड़कने के पूरे आसार थे, पर समय पर सूचना मिलने और प्रशासन की सजगता से स्थिति पर काबू पा लिया गया था।

दहलावर और छोटा राजन की गिरफ्तारी से लोगों में कानून के प्रति विश्वास बढ़ा था। इसके साथ ही शहर के कई गणमान्य व्यक्तियों ने लोगों

से शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की थी। इससे काफी हद तक हिंदू संगठनों के आक्रोश को संभाला जा सका था, फिर भी सुरक्षा व्यवस्था में कोई ढील नहीं दी गई थी।

प्रभास आश्वस्त था कि अबू सैयादी की घिनौनी चाल नाकाम हो गई थी। सुरक्षा के घेरे में अब अमन-शांति थी। वह नदी के पुल पर पहुंचा, जहां उसे सुरक्षाकर्मियों ने रोका।

प्रभास ने इंस्पेक्टर राठी का हवाला दिया तो उसे जाने दिया गया। वास्तव में राठी ने उसे आश्वासन दिया था कि वह उसे सुरक्षा जांच में सिफारिश देकर जाने देगा। राठी ने अपना काम बखूबी किया था और उसे ज्यादा सवाल-जवाब का सामना नहीं करना पड़ा था।

वह पुल पार करके उस सड़क पर आया, जो नदी के दूसरे तट पर ग्रामीण क्षेत्रों को शहर से जोड़ती थी।

अभी दोपहर के दो ही बजे थे। एमेले खोजिया के पास आ गया था और उसका हाल देखकर बड़ा उदास हुआ।

प्रभास ने उसे सांत्वना दी कि खोजिया ठीक हो जाएगा।

एमेले खोजिया को अस्पताल ले जाने की जिद कर बैठा तो प्रभास ने करीब के ही एक निजी अस्पताल में उसे दाखिल करा दिया। एमेले को पैसे देकर प्रभास अपने काम पर चला आया था।

रास्ते में सड़क के किनारे एक बस्ती नजर आई तो प्रभास उस कच्चे रास्ते पर उतर गया।

वहां उसे दो युवक नजर आए। वह उन ग्रामीण युवकों के पास पहुंचा तो वे उसे शिक्षित लगे, क्योंकि उन्होंने उसे प्रणाम किया, पर उनकी आंखों में कुछ संदेह अवश्य था।

"मेरा नाम प्रभास है। प्रेस रिपोर्टर हूं। दिल्ली से आया हूं।" प्रभास आत्मीयता से बोला—"क्या थोड़ी देर बातचीत कर सकता हूं।"

"सर! आप इसे अखबार में छापेंगे। टी.वी. पर दिखाएंगे। हमें ऐसी चर्चा से डर लगता है, पता नहीं कौन किस बात का बुरा मान जाए और हम ठहरे गरीब लोग।" एक लड़के ने समझदारी भरा जवाब दिया—"वैसे ही जीवन बड़ा कठिन हो रहा है।"

"मैं ऐसा कोई सवाल नहीं करने वाला और न कुछ छापने या टी.वी. पर दिखाने के लिए तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं। मुझे तो केवल कुछ मौखिक प्रश्न पूछने हैं।"

Baba Novels Chat Room

"पूछिए साहब!" दूसरे लड़के ने कहा।

"यहां इस बस्ती में या आसपास की किसी बस्ती में क्या कोई शिव मंदिर है?"

"शिव मंदिर तो हर बस्ती में है साहब! यहां बड़े और भव्य मंदिर तो नहीं है, पर हमारी पूजा स्वीकार होती है या नहीं—यह नहीं कहा जा सकता।" लड़के ने स्पष्ट उत्तर दिया।

"पूजा का अर्थ भाव से है, भव्यता से नहीं।" प्रभास ने उन्हें समझाते हुए कहा—"खैर, यहां अश्वत्थामा के बारे में जो कहानियां प्रचलित हैं, क्या उनके बारे में तुम कुछ जानते हो?"

"हमने बस कहानियां सुनी हैं, पर हमारे बुजुर्ग मानते हैं कि वह सच में है। इधर उसके देखे जाने की बातें कम होती हैं, पर उस पर यह चर्चा ज्यादा रहती है।"

संभवतः इसका यह कारण था कि अश्वत्थामा लोगों के अधिक संपर्क में न रहकर अपने गुप्तवास में समय काट रहा था, जो उस पार बीहड़ होने के कारण सरल भी था।

कई ऐसे कारण थे, जो उधर लोगों का आना-जाना कम था। नदी का प्रवाह उसमें सबसे बड़ा बाधक था।

"सर! आपसे पहले भी बहुत से रिपोर्टर आते रहे हैं और उसके बारे में पूछताछ करते रहे हैं, पर हमने आज तक नहीं सुना-पढ़ा कि कोई उसके प्रमाण दे सका है।"

"भई! वह महान पौराणिक योद्धा है। अनेक सिद्धि-शक्तियां होंगी उसके पास। हम जैसे तुच्छ लोग कैसे उसकी इच्छा के बिना उसके समीप भी फटक सकते हैं।"

"ठीक कहते हैं साहब! हम लोगों को उनकी तपस्या में किसी भी तरह का विघ्न नहीं डालना चाहिए। यदि वे स्वयं सामने नहीं आना चाहते तो हमें उनकी महानता को देखते हुए ऐसे प्रयास ही नहीं करने चाहिए, परंतु आप लोग मानते ही नहीं।"

प्रभास मुस्कराकर रह गया। उस युवक ने सरल शब्दों में कितनी गूढ़ बात कही थी।

"क्या करें भई! नौकरी ही ऐसी है! मालिक जो काम देगा, करना ही पड़ेगा। अच्छा चलता हूं, आगे की बस्ती में शायद कुछ नया पता चले।" प्रभास ने मोटरसाइकिल स्टार्ट करके घुमा दी और मुख्य सड़क पर ले आया।

Baba Novels Chat Room

वह क्षेत्र नक्सलाइट था, पर वहां भी आम जनता जरूर शांतिप्रिय थी और उनकी धार्मिक आस्था भी स्वच्छ और दृढ़ थी। अब उसे पैदल जाना था।

प्रभास ने मोटरसाइकिल को एक सुरक्षित स्थान पर छोड़ा और पहाड़ी के ढलान से होते हुए ऊपर चढ़ गया।

पहाड़ी का विस्तार ऊंचाई पर लगभग पांच सौ मीटर था और यह घाटी के चारों ओर था। इसके किनारे से ही घाटी का भव्य दृश्य नजर आता था, जो नीचे झांककर देखने पर हृदय में कंपकंपी भर देता था। सपाट सैकड़ों फीट ऊंची दीवार की तरह। यह प्रकृति का एक अद्भुत नमूना कहा जा सकता था।

प्रभास को लगभग एक किलोमीटर पैदल चलना पड़ा और वह दक्षिणी पहाड़ी पर पहुंचा। सूर्य का प्रकाश नीले पत्थरों पर पड़कर आंखें चौंधियां रहा था। वह ढलान की ओर आ गया और खोजिया के बताए अनुसार पहाड़ी के उस बिंदु की ओर उतरा, जहां नदी विभाजित होती थी। वहां चट्टान से टकराकर पानी ऊंचाई तक आ रहा था।

प्रभास को वहां मिलान बिंदु से ढलान पर उतरने के लिए एक-एक कदम धीरे-धीरे संभालकर रखना था। नीचे उतरने में बड़ा जोखिम था। न पैर रखने की जगह थी और न हाथ से पकड़ने की, फिर खोजिया कैसे वहां पहुंचा था। कोई तो रास्ता होगा ही! ऐसा तो नहीं कि खोजिया किसी रस्सी के द्वारा नीचे पहुंचा हो! यही हो सकता था।

ऊपर से नीचे तो रस्सी से पहुंचा जा सकता था, पर नीचे से ऊपर अश्वत्थामा कैसे आता-जाता होगा। यह पानी में उतरकर ही जाना जा सकता था। उसने यह विचार किया, पर झिझका।

नदी की गहराई और बहाव को जाने बिना उसमें उतरना बेवकूफी भरा कदम था। जबकि उसके पास सुरक्षा का कोई साधन नहीं था। सूरज ढलने तक उसे वह रास्ता नहीं मिला। नदी के विभाजन बिंदु पर बिना साधन के नहीं पहुंचा जा सकता था। उसने विचार किया कि अब उसे दिन में आना होगा, साधन सहित।

वह हताश होकर वापस मुड़ा तो सकपकाया। दो हथियारबंद नकाबपोश उसके सामने खड़े थे।

"कौन है तू और यहां क्या कर रहा है?" सवाल हुआ।

"मैं...मैं एक टूरिस्ट हूं। घूमने आया था। यहां सूर्यास्त का अनुपम दृश्य देखने आया था। कहते हैं पहाड़ी से सूर्यास्त देखने का मजा ही अलग है। आप लोग कौन हैं? प्रभास सहज हुआ।

"अपना कोई पहचान-पत्र दिखा।"

Baba Novels Chat Room

"क्यों भई, सरकारी महकमे से हो, जो आई-कार्ड दिखाना होगा। मेरे कहने का भरोसा नहीं है? बताया तो टूरिस्ट हूं। यहां टूरिस्ट ही आ सकते हैं।"

"हमारे साथ चल।" एक ने गन तान दी।

"कहां और क्यों भाई साहब? मैं एक मामूली-सा आदमी हूं। आपका कोई नुकसान भी नहीं कर रहा हूं। आप चाहो तो मेरे पास जो पैसा-धेला है, वह ले लो।"

जवाब में एक ने उसकी पसली पर बंदूक की बट से प्रहार किया तो प्रभास दर्द से दोहरा होकर रह गया।

"तू कल भी इधर आया था, खोजिया के साथ उसकी जीप में।" एक कहर भरे स्वर में बोला—"तू ही वह दिल्ली वाला जर्नलिस्ट है न जिसने हमारे नेटवर्क को तबाह करने का सामान किया! सोच रहा होगा, कैसे पता चला! एमेले की वजह से पता चला। उसने अपने एक दोस्त को बताया था जिसने आगे हमें बताया। हम तुझे शहर में ही ठोकने वाले थे, पर तेरी किस्मत कि तू आज इधर चला आया।"

"देखो, तुम लोग बेवजह मेरे पीछे पड़े हो।" प्रभास बोला—"तुम्हारे नेटवर्क को तुम्हारे कमांडर ने तबाह किया है। उसने विदेशी आतंकी को यहां बुलाकर जो खतरनाक कदम उठाए, वे देश-भर में भूचाल ला सकते थे। वह मंदिर को उड़ाने आया था और उड़ाकर गया है। विद्रोही होना गलत नहीं, जब व्यवस्था भ्रष्ट हो और अधिकारों का हनन हो, मगर इस तरह देश की आस्था पर आघात करना देशद्रोह है।"

"बकवास मत कर। यह अबू सैयादी की अपनी कुटिलता थी जिसके बारे में कमांडर को भनक तक नहीं थी। होती तो हम ही उसे मार डालते।"

"थी क्यों नहीं, उसने किले के मंदिर में बम लगाकर अपनी मंशा जाहिर न कर दी थी, अगर हैदर ने वह बम न हटाया होता तो हालात जैसे आज हैं, वैसे कई दिन पहले होते। शहर में धमाका कई दिन बाद हुआ था और तब वह दहलावर की सुरक्षा में था।"

"यह जर्नलिस्ट है। बातों में इसे नहीं जीता जा सकता।" एक ने बेरहमी से उस पर प्रहार किया तो दूसरा भी पिल पड़ा।

प्रभास की चीखें गूंजने लगीं। उसे बचाव का मौका नहीं मिल रहा था। हमलावर उसकी जान लेकर ही छोड़ने वाले थे। वह 'बचाओ-बचाओ' की तेज पुकार करने लगा था, मगर जानता था कि वहां कोई मदद नहीं आने वाली थी। अंततः उसने एक विश्वासपूर्ण निर्णय लेते हुए उच्च स्वर में पुकार लगाई।

Baba Novels Chat Room

"द्रोणपुत्र! सहायता करो!" वह चीखकर बोला, लेकिन धीरे-धीरे उसके हवास गुम होते जा रहे थे।

हमलावर पूरी निर्दयता से उसे तड़पा-तड़पाकर मार देने वाले थे कि दो सरसराते हुए बाण दोनों हमलावरों की गरदनों पर आकर लगे और वे कटे हुए वृक्षों की तरह गिर पड़े।

प्रभास के विश्वास की जीत हुई थी और अश्वत्थामा प्राणों का रक्षक बनकर आ गया था।

अश्वत्थामा ने प्रभास के समीप बैठकर उसके शरीर पर हाथ फिराया।

Baba Novels Chat Room

48

बंदरों का भयंकर उत्पात

आश्चर्य तो यह था कि बड़े पेड़ भी जड़ों सहित उखड़े पड़े थे। यह सब दृश्य सैयादी के मन में उस भय भरे विचार को दृढ़ कर रहा था, जो उस विशाल बंदर को देखकर, उसकी आवाज सुनकर उसे आया था।

सैयादी ने इंडिया में गुजारे कुछ दिनों में जो आश्चर्यजनक बातें सुनी थीं, उन पर उसे विश्वास नहीं आया था। रमेश ने उसे बताया था कि भारत में कुछ पौराणिक पात्रों के चिरंजीवी होने की बात मानी जाती थी जिनमें अश्वत्थामा के साथ हनुमान को भी गिना जाता था। सैयादी तब उसे अंधविश्वास, कपोल-कल्पना कहकर खारिज करता रहा था, पर आज जो उसके साथ बीती थी, उससे उसे लग रहा था कि कहीं-न-कहीं उन मान्यताओं में सच्चाई थी। वह असाधारण बंदर हनुमान हो सकता था।

अबू सैयादी मस्कट में ही जहाज से उतर गया था। यहां तक का सफर उसने बड़े तनाव में किया था। उसे हर पल लगता रहा था कि इंडियन कोस्ट गार्ड हिंद महासागर में कहीं भी जहाज को रोक सकते थे और उस चूहेदानी में से उसे घसीटकर ले जा सकते थे। मस्कट आते ही उसने जहाज छोड़ दिया था। यहां उसे आशा थी कि टैरर फंडिग के बादशाह शेख करीम शाह बिन आबिदी उसकी हर तरह से मदद करेगा, जो कि हाफिज सईद का अच्छा दोस्त था।

Baba Novels Chat Room

सैयादी ने बंदरगाह से निकलकर एक एकांत स्थान पर जाकर बैग से अपना इंटरनेशनल सिम कार्ड वाला छोटा-सा मोबाइल फोन निकाला जिसे वह ऐसी ही परिस्थितियों में इस्तेमाल करता था। उसका यह नंबर दुनिया-भर के चुनिंदा लोगों के पास था। उसने हाफिज सईद को कॉल की और अपनी परेशानी बताई। सईद ने उसकी मदद करने का वादा किया और आधी रात हो जाने के बावजूद उसे एक अजनबी मुल्क में मदद मिल गई। सैयादी अब शेख करीम शाह बिन आबिदी के संरक्षण में आ गया, यद्यपि उसकी अभी उससे मुलाकात नहीं हुई थी। शेख के आदमी उसे ले गए थे और एक शानदार फार्म हाउस में वह दर्जनों हथियारबंद लोगों के बीच खुद को सुरक्षित महसूस कर रहा था। उसने शानदार दावत भी उड़ाई और फिर सोने चला गया।

वह कितनी देर सोया, यह तो वह नहीं जान सका, पर जब उसकी आंखें खुलीं तो वहां चीख-पुकार सी मच रही थी। अभी अंधेरा था। वह दूसरी मंजिल पर कहीं था। वह अपने कमरे की लाइट जलाना चाहता था कि ठिठक गया। बिना हालात जाने उसे ऐसी गलती नहीं करनी चाहिए थी। गोलियां चल रही थीं और यह संकट का संकेत था। उसने खिड़की खोली तो सन्न रह गया। आगे के लॉन में खुलने वाली उस खिड़की से उसने जो नजारा देखा, उस पर उसे सहसा विश्वास नहीं हुआ।

लॉन में उजाला था और वहां सैकड़ों बंदर थे जिन्होंने उत्पात मचा रखा था। वहां के सुरक्षागार्ड उन्हीं पर गोलियां चला रहे थे। बड़ा अजीब दृश्य था। उसने खिड़की बंद कर दी। तभी उसके दरवाजे पर दस्तक हुई। एक बार तो बड़ी जोर से दरवाजे को भड़भड़ाया गया।

"क...क...कौन?" उसने डरते हुए पूछा।

"जनाब, आप सुरक्षित तो हैं न!" बाहर से कहा गया—"यहां बाहर बंदरों ने आतंक मचा रखा है। आप खिड़की-दरवाजे बंद रखना।"

"बंदर यहां कहां से आ गए?" उसने पूछा।

"आ जाते हैं कभी-कभी, पर ऐसा उत्पात कभी नहीं करते। समझ में नहीं आ रहा है कि आज क्यों इतने बिगड़े हुए हैं। हम उन्हें भगाने की कोशिश कर रहे हैं। आप अंदर ही रहिए।"

"ठीक है, ठीक है।" सैयादी की जान-में-जान आई। बाहर जो भी था, चला गया था, पर चीख-पुकार की आवाजें अभी भी आ रही थीं। यह आदमियों की चीखें थीं, जैसे उन्हें कोई मार रहा हो। अलबत्ता बंदरों की चीत्कारें भी उनमें शामिल थीं। सैयादी ने फिर से खिड़की खोली तो सन्न रह गया। उसने बंदर

Baba Novels Chat Room

तो बहुत देखे थे, पर उस बंदर को देखकर तो उसकी घिग्घी बंध गई थी। वह विशालकाय था और शायद उस समूह का मुखिया भी था। देखने में वह शेर की तरह लग रहा था और भयानक ढंग से चीत्कार कर रहा था। मैनगेट के पास खड़ा वह विशाल बंदर जैसे उसकी ओर ही देख रहा था। उसने तत्काल खिड़की बंद कर ली और सहमता हुआ अपने पलंग पर बैठ गया। उसे वह दृश्य विचित्र लग रहा था। उसने वैसा बंदर कभी नहीं देखा था और वह उसे क्यों घूर रहा था या उसे ऐसा क्यों लगा कि वह चिम्पैंजी उसी को देख रहा था।

सैयादी के होश गुम थे और वह चाहता था कि उसके पास कोई आदमी आ जाए। बाहर निकलने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी। उसने खिड़की की ओर देखा तो उसकी चीख निकल गई। खिड़की के शीशे से उसे बंदर की परछाई साफ नजर आई।

"ब...ब...बचाओ!" वह चीख पड़ा था–"बचाओऽऽऽ अरे, कोई आओ।"

चीख के बीच ही उसे शीशा टूटने की आवाज आई। बाहर से जैसे प्रचंड वार हुआ था। खिड़की का शीशा तो क्या, उसका फ्रेम भी अपनी जगह से उखड़कर फर्श पर आ गिरा था और वह विशाल बंदर खिड़की पर आदमी की तरह अंदर की ओर पैर लटकाए बैठा उसे ही घूर रहा था।

सैयादी जूड़ी के मरीज की तरह कांप उठा।

"शिवद्रोही!" बंदर के मुंह से स्वर निकला तो सैयादी आतंक से बेहोश हो गया।

जब सैयादी को होश आया तो वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। टूटी खिड़की से दिन का उजाला कमरे में आ रहा था। उसे अपने जिंदा होने पर विश्वास न हुआ था। उस बंदर ने उसे 'शिवद्रोही' कहा था और इसका मतलब वह समझता था। बोलने वाला बंदर! उसके रोमछिद्रों ने ढेर सारा पसीना उगल दिया। यह उसके जीवन का सबसे बड़ा आश्चर्य था। उसे 'शिवद्रोही' कहने वाला बंदर साधारण बंदर नहीं था...। तो क्या वह असाधारण...।

सैयादी को अपनी ही सोच ने आतंकित कर दिया और उसने झपटकर दरवाजा खोला तो चीख पड़ा। बाहर गलियारे में खून के छींटे पड़े थे। कुछ दूरी पर उसे बुरी तरह से नोंचा-खसोटा गया एक आदमी औंधे मुंह पड़ा दिखाई दिया। बंदरों ने उसका यह हाल किया था। वह दूसरी तरफ बढ़ा, जहां नीचे जाने वाली सीढ़ियां थीं। सीढ़ियों पर भी खून के छींटे थे और वहां भी एक आदमी उसी हाल में पड़ा था। उसकी स्टेनगन पास में पड़ी थी। उसने आगे बढ़कर स्टेनगन उठा ली और अपने अंदर कुछ साहस बढ़ता हुआ महसूस किया। इमारत से बाहर आते-आते

Baba Novels Chat Room

उसे सात आदमी ऐसे ही पड़े दिखाई दिए। साफ जाहिर था कि वे बंदरों के हमले का शिकार थे। खून के छींटों से दीवारें और फर्श भयावह कहानी कह रहे थे।

सामने लॉन में भी कुछ लोग नोंचे-खसोटे पड़े थे और वहां कोई पेड़-पौधा सलामत नहीं था। आश्चर्य तो यह था कि बड़े पेड़ भी जड़ों सहित उखड़े पड़े थे। यह सब दृश्य सैयादी के मन में उस भय भरे विचार को दृढ़ कर रहा था, जो उस विशाल बंदर को देखकर, उसकी आवाज सुनकर उसे आया था।

सैयादी ने इंडिया में गुजारे कुछ दिनों में जो आश्चर्यजनक बातें सुनी थीं, उन पर उसे विश्वास नहीं आया था। रमेश ने उसे बताया था कि भारत में कुछ पौराणिक पात्रों के चिरंजीवी होने की बात मानी जाती थी जिनमें अश्वत्थामा के साथ हनुमान को भी गिना जाता था। सैयादी तब उसे अंधविश्वास, कपोल-कल्पना कहकर खारिज करता रहा था, पर आज जो उसके साथ बीती थी, उससे उसे लग रहा था कि कहीं-न-कहीं उन मान्यताओं में सच्चाई थी। वह असाधारण बंदर हनुमान हो सकता था।

सैयादी को अब लग रहा था कि उसने क्या संकट मोल ले लिया था! उसे ठोस और कड़ी सुरक्षा की आवश्यकता थी, जो उसे कहां मिल सकती थी, वह सोच चुका था। उसने कांपते हाथों से दि ग्रेट गियागो को फोन मिलाया।

Baba Novels Chat Room

49

एन.एस.जी. की घेराबंदी

वह स्पेशल कमांडो टीम थी जिसने बिना कोई मौका दिए उन्हें घेर लिया था। हथियार खोपड़ी के ऊपर तने थे। इसके बाद दो आदमी और अंदर आए जिनमें एक की शक्ल तो कपिल सेठी से ही मिलती-जुलती थी। दूसरा कोई अधिकारी था।

"हैलो मिस्टर सेठी, आर यू ओ.के.।" अधिकारी ने कहा—"एंड मिस्टर यू, देख रहे हो कि तुम घिर गए हो। कोई गलत हरकत मत करना। ये सब एन.एस.जी. के स्पेशल कमांडो हैं। ऐसे मिशन के स्पेशलिस्ट हैं। सोच रहे हो कि यहां तक हम कैसे पहुंचे?"

डियागो वास्तव में यही सोच रहा था।

Baba Novels Chat Room

कपिल सेठी चार लोगों से घिरा बैठा था। उसके सामने जो हब्शी बैठा उसे घूर रहा था, वह डियागो था। दि ग्रेट गियागो का भाई, अफ्रीकन डियागो। उसने अभी-अभी सामने रखे अपने टैबलेट आकार के फोन में कपिल सेठी को कुछ दिखाया था।

"क्या समझा इंजीनियर! तेरी बेटी और बेटा भी हमारे कब्जे में हैं। दोनों किस हाल में हैं, यह तू देख चुका है। ये किस हाल में पहुंच सकते हैं, यह भी तू समझ सकता है।" डियागो ने कुटिल स्वर में कहा—"अब फैसला तुझे करना है कि अपनी औलाद की डेडबॉडी संभालेगा या हमारा काम करेगा। मैं समझता हूं कि औलाद के बारे में सोचेगा, क्योंकि अब तेरी बीवी तो औलाद पैदा करने से रही।"

"क्या चाहते हो तुम?" सेठी ने थूक गटककर कहा।

"क्या कर सकता है तू अपनी औलाद के लिए?"

"कुछ भी कर सकता हूं। मौका मिले तो तुम्हारी गरदन भी मरोड़ सकता हूं।" सेठी ने कहा–"आदमी औलाद के लिए क्या नहीं कर सकता?"

"गुड! समझदार आदमी ऐसे ही होते हैं। देख इंजीनियर, हम लोग इंटरनेशनल खिलाड़ी हैं। बड़े गेम खेलते हैं। तुझसे भी छोटा-मोटा काम नहीं करा रहे हैं। बड़ा काम है, इसलिए तेरी दुखती रग पकड़ी है और तब तक पकड़कर मसलते रहेंगे, जब तक तू हमारा काम हमारे मुताबिक नहीं कर देता। तेरी बेटी को ज्यादा तकलीफ होगी।"

"अपना काम बताओ और गारंटी करो कि काम होने के बाद मेरे बच्चे सही-सलामत घर पहुंच जाएंगे। तुम जैसे लोगों का कोई ईमान नहीं होता।"

"ईमान न हो, पर जुबान होती है। जो कह दिया, वह कर दिया। क्राइम वर्ल्ड में हमारी जुबान की बड़ी कीमत है।" डियागो ने दृढ़ स्वर में कहा–"हमें तेरे बच्चों से कोई दुश्मनी नहीं है। हमारा काम हमारी प्राथमिकता है। काम हुआ तो उन्हें सही-सलामत, बिना उंगली छुआए वापस घर भेज दिया जाएगा, वरना...।"

"अब काम भी बता दो।" कपिल सेठी झुंझलाकर बोला।

"हमारा एक आदमी तुझे अपने कारखाने में अंदर पहुंचाना है।"

"ओ तेरी! एक आदमी की नौकरी के लिए इत्ता स्यापा!"

"जोक नहीं इंजीनियर, कोई जोक नहीं।" डियागो ने चेतावनी दी–"काम की बात कर।"

"पहुंच जाएगा जी! अभी भेज दो। जाते ही काम पर लग जाएगा।"

"इतना भोला मत बनकर दिखा। मामले की गंभीरता को समझते हुए भी जोक मत मार।"

"भई, हम पंजाबी हैं। जोक हमारी क्वालिटी है। अभी मेरी बीवी से पाला नहीं पड़ा, वरना हंसते-हंसते रब को प्यारे हो जाते। हाजमा टाइट कर देती है।"

डियागो ने असहाय भाव से गरदन हिलाई।

"नाराज मत हो भाई! काम हो जाएगा। भेज दो मेरे साथ। एक नहीं दो भेज दो।"

"आज नहीं।" डियागो ने कहा–"कल बताते हैं। उम्मीद है कि पुलिस के पास नहीं जाओगे। अब तक नहीं गए तो आगे भी नहीं जाओगे। समझदार बाप लगते हो। अभी अपने घर जाओ। आराम से रहना। बीवी को तसल्ली देना कि बच्चे 'सेफ' हैं और जल्दी घर आ जाएंगे। बड़ी हद कल तक की बात है। परसों पहुंच जाएंगे।"

Baba Novels Chat Room

सेठी ने सहमति में सिर हिला दिया। अंदर से वह बहुत हिला हुआ था।

"तो अब मैं जाऊं?" सेठी ने पूछा।

"जाओ, लेकिन जो समझाया है, उसे याद रखना।"

"तुम भी साथ चलते, तो मुझे याद रहता।" सेठी ने कहा, लेकिन फिर बात बदली—"यह भी कोई कहने की बात है।"

डियागो ने उसे घूरा। वह आदमी इतना खुशमिजाज ऐसी परिस्थिति में! हर बात में जोक, यह पंजाबियों का शगल तो था, पर ऐसा था, वह नहीं जानता था।

अभी डियागो सोच ही रहा था कि भड़ाक से दरवाजा खुला और दर्जन-भर हथियारबंद आदमी अंदर आ घुसे।

डियागो ने हड़बड़ाकर हाथ ऊपर उठा लिए, क्योंकि वह उन लोगों की मूवमेंट और वर्दी से ही जान गया था कि वह स्पेशल कमांडो टीम थी जिसने बिना कोई मौका दिए उन्हें घेर लिया था। हथियार खोपड़ी के ऊपर तने थे। इसके बाद दो आदमी और अंदर आए जिनमें एक की शक्ल तो कपिल सेठी से ही मिलती-जुलती थी। दूसरा कोई अधिकारी था।

"हैलो मिस्टर सेठी, आर यू ओ.के.!" अधिकारी ने तत्परता से कहा—"एंड मिस्टर यू, देख रहे हो कि तुम घिर गए हो। कोई गलत हरकत मत करना। ये सब एन.एस.जी. के स्पेशल कमांडो हैं। ऐसे मिशन के स्पेशलिस्ट हैं। सोच रहे हो कि यहां तक हम कैसे पहुंचे?"

डियागो वास्तव में यही सोच रहा था।

"मिस्टर सेठी राष्ट्रीय स्तर के एक मेजर प्रोजेक्ट में बड़ी पोस्ट पर हैं। इंडियन गवर्नमेंट अपने इतने बड़े अधिकारी को किसी भी प्रॉब्लम में न पड़ने देने को प्रतिबद्ध है और उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी है—एन.एस.जी. की। मिस्टर सेठी को प्रत्यक्ष में तो नहीं, अप्रत्यक्ष में हमेशा हमारी नजर में रहना होता है। इनकी प्रॉब्लम क्या है, यह हमें इनकी बीवी के जरिए पता चल गया था, फिर तुम तक पहुंचना क्या मुश्किल था!"

"प्रॉब्लम तो अभी भी है।" डियागो ने दिलेरी दिखाई—"इनके बच्चे हमारे कब्जे में हैं।"

ऑफिसर ने उसका मेजर साइज फोन अपने कब्जे में लिया।

"और तू किसके कब्जे में है काले गैंडे! क्या यह भी जानता है? हमें पता है, तू पड़ोसी मुल्क के इशारे पर आया है न! अब वापस नहीं जा पाएगा। डियागो! ओह दि ग्रेट गियागो का भाई! डेस्ट्रॉय स्क्वायड का डेस्ट्रायर! तो बुलेट प्रोजेक्ट पर बुरी नजर थी तेरी?"

Baba Novels Chat Room

"इंजीनियर के बच्चे मारे जाएंगे।" डियागो ने चेतावनी दोहराई।

"कोई बात नहीं।" जवाब कपिल सेठी ने ही दिया, सहज अंदाज में दिया–"अगर इतने बड़े प्रोजेक्ट को बचाने में मेरे दो बच्चे कुर्बान होते हैं तो कोई बात नहीं, क्योंकि तेरे मन की हो जाती तो न जाने कितनी जानें जातीं। तू पूछ रहा था कि हम पंजाबी गंभीर परिस्थिति में भी कैसे जोक भिड़ा लेते हैं, तो सुन! वह हमारी आदत भी है और ऐसे देशभक्त कमांडोज का विश्वास भी है। इंडिया बदल रहा है हब्शी नीग्रो!"

"आप जाइए सेठी साहब!" अधिकारी गर्व से बोला–"वी प्राउड ऑफ यू! आपका यह विश्वास हम कभी नहीं टूटने देंगे। आप जोक भिड़ाते रहिए। बहुत जल्दी आपके बच्चे घर पहुंच जाएंगे। क्यों डियागो, सही कहा हमने?"

डियागो कसमसाया तो फौरन उसे कब्जे में लिया गया।

"ऑफिसर!" कपिल सेठी ने जाते-जाते कहा–"मेरी बीवी चिकन बड़ा गजब बनाती है। काम से निबटकर घर आइए। पैग-सैग ते सूटा-बूटा।"

डियागो हैरान था कि उसका पाला कैसे लोगों से पड़ा था।

Baba Novels Chat Room

50

अश्वत्थामा उत्तर कोरिया में

"महामहिम! मैंने देखा कि एक विशाल शरीर वाला योद्धा, जैसा कि इंडियन पौराणिक सीरियल्स में होता है, एक बड़े धनुष से सैनिकों पर तीर बरसा रहा था और उस पर सैनिक गोलियां बरसा रहे थे। सैनिक मारे जा रहे थे और गोलियां व्यर्थ जा रही थीं।"

"क्या बकते हो!" सम्राट किम-जोंग-उन की त्यौरियां चढ़ गईं–"ऐसा कहीं होता है?"

"हुआ है। सैयादी का कहना है कि इसने पाकिस्तान के कहने पर इंडिया में एक मंदिर में ब्लास्ट किया जिसमें कि...महाभारत काल का पौराणिक योद्धा अश्वत्थामा पूजा करने आता था। मंदिर ध्वस्त होने पर वह क्रोधित हो गया और सैयादी को मारने यहां तक चला आया...।"

सैयादी को फिर मदद मिल गई थी। गियागो ने मस्कट में ही मदद उपलब्ध करा दी थी और एक चार्टर में दो हथियारबंद लोगों के साथ वह आकाशमार्ग से उड़ा चला आया था।

चीन सागर से जापान सागर होते हुए वह सुरक्षित उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंगयांग पहुंच गया था और अब वहां जाकर उसकी जान-में-जान आई थी। ग्रेट गियागो उसे वहीं मिला।

सुरक्षाकर्मियों से घिरी उस तीन मंजिला इमारत में सैयादी और गियागो एक कमरे में बैठे थे। सैयादी ने आपबीती सुनाई तो गियागो ठहाका मारकर हंस पड़ा था।

"सपना देखा होगा सैयादी! बोलने वाले बंदर और उड़ने वाले शेर सपनों में ही दिखाई देते हैं। तूने इंडिया में किसी से ऐसी ही कहानियां सुनी होंगी। अब उनका असर हो गया होगा।"

"नहीं ग्रेट गियागो! यह सपना नहीं हकीकत है।" सैयादी ने विश्वास के साथ कहा–"ऐसा बंदर मैंने आज तक नहीं देखा, नेशनल ज्योग्राफिक चैनल पर भी नहीं। वह मुझे गुस्से से घूर रहा था।"

"तो तू जिंदा क्यों बचा?" गियागो ने उसकी आंखों में झांकते हुए गंभीरता से कहा–"एक तरह से तू उसकी पकड़ में आ चुका था। वहां और मौजूद लोग नोंच-खसोट दिए गए, लेकिन तू सही-सलामत रह गया, जबकि तेरा मानना है कि वह तेरे कारण ही वहां पहुंचा था, क्योंकि तू शिवद्रोही था, फिर तो शिवद्रोही को मरना चाहिए था?"

"यह सब मेरी समझ में भी नहीं आ रहा है कि मैं किस तरह और क्यों जिंदा बचकर आ गया।"

"मेरे विचार से, क्योंकि वह बड़ा बंदर जिसे तू हनुमान बता रहा है, तेरे दिमाग में बैठी किसी कहानी से उपजा था। मस्कट में बहुत बंदर हैं–शहर के बाहर तटीय क्षेत्र में पाए जाते हैं। वे भड़क गए होंगे उन लोगों पर किसी बात से। उसे तूने हनुमान की करतूत सोच ली।"

"तुम नहीं मानते तो अलग बात है, पर सच यही है।"

"चल छोड़। भूल जा उस बात को। अब तू सुरक्षित है। तू दुनिया के सबसे शक्तिशाली सम्राट की शरण में आ गया है और यहां कोई तेरी उंगली भी नहीं छू सकता। मजे से रह। अब मैं इंडिया जा रहा हूं। धमाका क्या होता है, यह मैं तुझे दिखाऊंगा। इंडिया तो क्या जापान भी हिल जाएगा। दि ग्रेट गियागो का डेस्ट्रॉय स्क्वायड...।"

अभी गियागो बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि बाहर गोलियों की तड़तड़ाहट गूंजी। दोनों चौंक उठे और तेजी से खिड़की की ओर लपके। वहां से जो नजारा दिख रहा था, उसने दोनों के होश उड़ा दिए।

दर्जनों सुरक्षाकर्मी जमीन पर मरे पड़े थे और कुछ पेड़ों की ओट से जाने किसे लक्ष्य करके गोलियां चला रहा था।

"यहां किसने हमला कर दिया? किसकी हिम्मत हो...?"

आगे के शब्द गियागो के हलक में रह गए, जब उन्होंने एक विशालकाय धनुर्धारी को एक धनुष से तीर चलाते देखा, जो पेड़ों के तने भेदकर अपने लक्ष्य को भेद रहे थे।

Baba Novels Chat Room

धनुर्धारी पर चलाई गई गोलियां जाने कहां जा रही थीं।

"यह...यह कौन है?" गियागो आतंकित भाव से बोला।

"अ...अ...अश्वत्थामा।" सैयादी के नेत्र फटे पड़ रहे थे।

"कौन...कौन अश्वत्थामा?"

"भारत में हजारों साल पहले हुए महाभारत के युद्ध का महान योद्धा! द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा!"

"क्या बकता है? क्या हो गया है तुझे?"

"मुझे बचा लो। यह मेरे प्राण लेने मेरे पीछे आया है। मैंने शिव मंदिर ब्लास्ट किया था तो यह मेरे से किलस गया।" सैयादी भयभीत स्वर में बोला—"यहां से भागो गियागो! यह हमें नहीं छोड़ेगा।"

"लेकिन...लेकिन इतने सैनिकों...।"

"अरे, देख नहीं रहा कि गोलियां भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ पा रही हैं और उसने कितनी लाशें बिछा दीं।" सैयादी भयभीत होकर बुरी तरह चिल्ला पड़ा—"ग्रेट गियागो! वह मुझे मारने के लिए इंडिया से यहां आया है। मस्कट में हनुमान द्वारा मुझे शायद इसीलिए जिंदा छोड़ा गया, क्योंकि यह मुझे यहां मारने के लिए पहुंचने वाला था।"

"तू चार्टर विमान से यात्रा करके मस्कट आया है और इतने-से समय में ही यह पैदल आ गया?"

"अरे, ये सिद्धि प्राप्त लोग हैं। तपस्या करके ऐसी शक्तियां पाई हैं इन्होंने, अब तू यहां से हिल और बचने का तरीका बता।"

गियागो को उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था, पर सामने के दृश्य को भी वह झुठला नहीं पा रहा था।

'एक धनुर्धारी—प्राचीन योद्धा...।' गियागो ने आश्चर्यचकित होकर अश्वत्थामा की ओर देखा। उसने सैयादी का हाथ पकड़ा और कमरे से बाहर निकलकर छत की ओर दौड़ा।

"ऊपर चार्टर है।" गियागो ने चिल्लाकर कहा—"हम यहां से उससे निकल चलते हैं।"

"जल्दी करो, वरना वह ऊपर आ गया तो मसल देगा। मेरे साथ तुम भी मारे जाओगे।"

दोनों लंबी-चौड़ी छत पर आ गए और गियागो चार्टर की पायलट सीट पर विराजमान हो गया। सैयादी फौरन पीछे जा बैठा। चार्टर स्टार्ट हुआ और छत से ऊपर उठ गया।

Baba Novels Chat Room

गियागो ने विमान को इमारत के पीछे की ओर घुमा लिया था। सैयादी की जान में जान आई। पांच मिनट में ही चार्टर एक अन्य बड़ी छत पर लैंड कर गया, जहां और कई चार्टर खड़े थे। दोनों उतरे।

"अब हम कहां हैं?" सैयादी ने व्याकुल भाव से पूछा।

"मिलिट्री हाउस में।" गियागो उसे लेकर एक लिफ्ट में घुस गया और लिफ्ट नीचे सरकने लगी।

थोड़ी देर में लिफ्ट रुकी, दरवाजा खुला तो सामने कई सैनिक गन ताने खड़े थे, जो गियागो को देखकर पीछे हट गए। एक अधिकारी ने आगे बढ़कर गियागो को अपने साथ लिया।

"आप तो सब-स्टेशन में थे ग्रेट गियागो?" अधिकारी ने पूछा।

"वहां बड़ा हमला हो गया है। हमारी जान खतरे में थी। सम्राट को तुरंत सूचित करो।"

"हमला!" अधिकारी ने आश्चर्यचकित होकर कहा—"किसने किया हमला? विद्रोहियों ने! आइए, कंट्रोलरूम में चलते हैं।"

कंट्रोलरूम में बहुत-सी स्क्रीन्स थीं।

ऑफिसर ने ऑपरेटर को सब-स्टेशन पर फोकस करने का आदेश दिया। पल-भर में स्क्रीन पर सब-स्टेशन का दृश्य उभर आया। वहां लाशें बिखरी पड़ी थीं और हमलावर कहीं नजर नहीं आ रहे थे।

"ओह माई गॉड!" ऑफिसर के मुंह से निकला—"वहां सौ सुरक्षागार्ड थे। ज्यादातर तो मारे जा चुके हैं। थैंक्स, मदद पहुंच गई है, मगर हमलावर कहां गायब हो गए?"

"वह एक ही था। तीरों से इतनी सिक्योरिटी को ध्वस्त कर गया।" गियागो ने भय से कांपते हुए कहा—"गोलियां उसके शरीर से छितराकर इधर-उधर गिर रही थीं। फुटेज देखो।"

रिकॉर्डिंग फुटेज देखी गईं, जो हैरान कर देने वाली थीं।

सैनिक गोलियां चला रहे थे और उन पर बाण चल रहे थे। बाण चलाने वाला दिखाई न दे रहा था। धनुष भी दिखाई न दे रहा था, बस हवा में सरसराते लक्ष्य भेदते बाण दिखते थे।

"यह...यह क्या...वह दिखाई क्यों नहीं दे रहा है?"

"नहीं दिखाई देगा।" सैयादी ने बताया—"वह किसी भी तरह के कैमरे में कैद नहीं होता। बहुत लोगों ने कोशिश की है, कभी नहीं हुआ।"

"क्या मतलब? अदृश्य मानव है? हमने तो देखा था।" गियागो बोला।

Baba Novels Chat Room

"इंसान देख सकता है। कैमरे में कैद नहीं होता। इंडिया में किसी ने मुझे बताया था।"

"यू मीन, वह कोई इंडियन है।" अधिकारी ने पूछा–"आप जानते हैं उसे?"

"तुम्हारी समझ में नहीं आएगा। आया भी तो विश्वास नहीं कर सकोगे।" गियागो ने कहा–"सम्राट को सूचित करो। बहुत बड़ा संकट आ गया लगता है। इसकी बात मानी जाए और जो मैंने देखा है, उस पर विश्वास किया जाए तो बहुत बड़ा खतरा आ गया है।"

"क्या कह रहे हैं आप! मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। ठहरिए, महामहिम कुछ कह रहे हैं। लिव लोंग ग्रेट सम्राट!" अधिकारी ने स्क्रीन से झांक रहे सम्राट को देखकर आदर से सिर झुकाया। अन्य सैनिकों ने भी यही किया।

"गियागो! सब-स्टेशन पर यह हमला किसने किया?"

"महामहिम! विचित्र कहानी है। आपके आदेश के अनुसार, सैयादी को सब-स्टेशन में ठहराया गया था। वहां मैं भी था। मैंने देखा कि एक विशाल शरीर वाला योद्धा, जैसा कि इंडियन पौराणिक सीरियल्स में होता है, एक बड़े धनुष से सैनिकों पर तीर बरसा रहा था और उस पर सैनिक गोलियां बरसा रहे थे। सैनिक मारे जा रहे थे और गोलियां व्यर्थ जा रही थीं।"

"क्या बकते हो!" सम्राट किम-जोंग-उन की त्यौरियां चढ़ गईं–"ऐसा कहीं होता है?"

"हुआ है। अब इससे भी आगे सुनेंगे तो और भी हैरान होंगे। सैयादी का कहना है कि इसने पाकिस्तान के कहने पर इंडिया में एक मंदिर में ब्लास्ट किया जिसमें कि...महाभारत काल का पौराणिक योद्धा अश्वत्थामा पूजा करने आता था। मंदिर ध्वस्त होने पर वह क्रोधित हो गया और सैयादी को मारने यहां तक चला आया। विश्वास तो नहीं होता, पर मैंने अपनी आंखों से उसे देखा है। अपने डील-डौल और पहनावे से वह वही लगता है।" गियागो ने जानकारी दी।

सम्राट गंभीर हो गया था, जैसे कुछ सोचने लगा हो।

"सैयादी को हमारे पास लेकर आओ।" सम्राट ने कहा और स्क्रीन से हट गया।

"ग्रेट गियागो! यह क्या फेंटेसी स्टोरी सुना रहे हैं आप?" सैन्य अधिकारी ने हैरानी से कहा–"यह कोई विश्वास करने वाली बात है?"

"तुम्हारे सैनिकों की लाशें पड़ी हैं और तुम्हारे सीसीटीवी फुटेज बता रहे हैं कि वहां हमलावर दिखाई नहीं दे रहा है और सैनिक मर रहे हैं। बाण चलते, लगते दिखते हैं, पर एक भी डैडबॉडी में बाण नहीं दिख रहा। यह आज का इंसान

Baba Novels Chat Room

कर सकता है। नहीं। सैयादी ने जो कहा है, वह सच है। ग्रेट महामहिम को एक पौराणिक योद्धा से चुनौती मिल रही है और यह नियति का फैलाया घटनाचक्र है। सैयादी तो मस्कट में ही मारा जाता, पर जिंदा यहां तक आ गया। क्यों? क्योंकि यहां भी बहुत कुछ होने वाला है।"

"यहां कुछ नहीं होगा। हमारे अत्याधुनिक हथियारों के सामने कोई नहीं टिकेगा।"

"हश्र देख चुके हो। आगे भी देखना।" गियागो ने फिर सैयादी की ओर निराश भाव से देखा–"सैयादी! तुम्हें कोई नहीं बचा सकता।"

"इन्हें यहां कोई हानि नहीं पहुंचा सकता।" अधिकारी ने दृढ़ स्वर में कहा–"महामहिम इनकी सुरक्षा करेंगे।"

"हमें महामहिम के पास पहुंचाओ।" गियागो ने प्रतिवाद न करते हुए कहा।

सैन्य अधिकारी ने सहमति में सिर हिलाया।

Baba Novels Chat Room

51

प्रभास अश्वत्थामा की गुफा में

"सुनाऊं क्या! मिशन तो इम्पॉसिबल लग रहा है। अश्वत्थामा खोजे नहीं मिल रहा है।"

"अबे, वह आउट ऑफ इंडिया है। टी.वी. खोलकर देख। दक्षिण कोरिया ने दावा किया है कि उत्तर कोरिया में आर्मी बेस-स्टेशन पर आज जो हमला हुआ, उसका हमलावर एक भारतीय पौराणिक योद्धा है, जो आंखों से तो दिख रहा है मगर कैमरे में नहीं आ रहा है। अब तू बता?"

प्रभास की समझ में शीघ्र ही आ गया कि दिन में अश्वत्थामा गुफा में क्यों नहीं था! जरूर सैयादी उत्तर कोरिया पहुंच गया था और उसके पीछे-पीछे अश्वत्थामा भी! पर इतनी दूर, इतनी जल्दी! कोई बड़ी बात नहीं थी। वह सिद्धात्मा था। उसके लिए कुछ भी करना कठिन नहीं था।

Baba Novels Chat Room

प्रभास को होश आया तो उसने खुद को अंधकार में घिरा हुआ पाया। उसके कानों में ऐसी आवाज गूंज रही थी, जैसे पास ही ऊंचाई से पानी गिर रहा हो।

'झरना!' प्रभास के मस्तिष्क में एक शोर सा गूंज उठा। वह झटके से उठ खड़ा हुआ और अपनी आंखें फाड़कर देखने लगा। जिस तरह उसकी धुनाई हुई थी, उससे उसका जोड़-जोड़ दुखना चाहिए था, पर उसे जरा भी दर्द का अहसास नहीं हो रहा था।

प्रभास को याद आया कि वह पिटते-पिटते बेहोश हो गया था और उसने अश्वत्थामा को पुकारा था। जरूर उसने उसकी पुकार सुनकर उसे बचाया था और यहां गुफा में ले आया था। इससे ही प्रभास रोमांचित हो उठा था।

"द्रोणपुत्र! कहां हैं आप?" उसने पुकारा तो वहां अंधेरे में उसकी आवाज गूंजकर रह गई।

अब वह अंधेरे का अभ्यस्त भी हो गया था। उसने खुद को उस शिला पर खड़ा हुआ पाया तो वह उससे उतरा। उसे लगा कि जब वह शिला से उतरा था, वह थोड़ी उछली-सी थी और इसी के साथ गुफा में दाहिनी दीवार से प्रकाश की किरण आ गई थी।

अब गुफा में मद्धिम-सा प्रकाश फैला हुआ था और वह देख सकता था। शिला के एक कोने पर एक खंभेनुमा पत्थर गुफा की छत से सटा था और प्रकाश किरण वहीं से आ रही थी। प्रकृति की अद्भुत कारीगरी थी।

शिला पर वजन पड़ने से प्रकाश स्रोत बंद हो जाता होगा। उसने फिर शिला पर चढ़कर देखा, ऐसा ही हुआ। वह उतरा तो पुनः प्रकाश आ गया, तब उसने आसपास का निरीक्षण किया।

शिला के समीप कपड़ों का ढेर लगा हुआ था जिन पर खून के धब्बे थे। वह समझ गया कि उन कपड़ों को अश्वत्थामा अपने माथे पर बांधता होगा और इसके अलावा वहां कुछ नहीं था।

अब महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह था कि अश्वत्थामा कहां है! दिन के समय तो वह बाहर नहीं निकलता था, फिर कहां चला गया! उसने गुफा का कोना खुदरा देखा तो अश्वत्थामा कहीं नहीं था।

प्रभास गुफा के मुख्य द्वार पर गया, जो घाटी की ओर खुलता था तो रोमांच से भर उठा। द्वार ऊपर से गिरने वाली झरने की जल दीवार से ढका हुआ था। पानी द्वार से लगभग चार फीट आगे गिर रहा था।

यूं पानी और दीवार के बीच रास्ता था। वह उससे गुजरकर जल दीवार से बाहर आया तो सामने घाटी का वह मनोरम दृश्य था, जिसे उसने ऊंचाई से भी देखा था, पर अब उसका सौंदर्य और बढ़ गया था। उसने अपनी जेब से मोबाइल निकाला तो आह भरकर रह गया।

मोबाइल के परखच्चे उड़ गए थे। इतने सुंदर दृश्य को कैद करने का साधन नहीं था उसके पास! उसे फिर आना होगा!

प्रभास वापसी के लिए मुड़ा। अश्वत्थामा का वहां न होना उसे हैरान कर रहा था, पर वह कर भी क्या सकता था! वह जाने कहां गया होगा! फिलहाल उसे

Baba Novels Chat Room

बाहर जाना ही श्रेयस्कर लगा। अब वह रास्ता भी देख लेगा, फिर शाम को आ जाएगा। वह शिला के पास ऊपर जाने वाले रास्ते पर बढ़ रहा था कि एकाएक ठिठककर रुक गया।

प्रभास ने सोचा कि वह प्रकाश स्रोत बंद कर देना चाहिए। उसने वहां पड़ा एक बड़ा-सा वजनी पत्थर उठाया और शिला पर रख दिया। अब प्रकाश आना बंद हो गया, फिर वह खुश होता हुआ ऊपर चढ़ता गया।

प्रभास उस स्थान पर पहुंचा, जहां गुफा आगे से बंद थी। उसने चट्टान को धक्का दिया तो वह एक ओर घूम गई और उसे सामने उतावली नदी दिखाई दी। वह द्वार से बाहर आया और यथास्थान द्वार को बंद कर दिया। अब वह धड़ तक पानी में था और उसके पैरों के नीचे चट्टान थी।

प्रभास ने आगे कदम बढ़ाया और संभलकर आगे बढ़ा। वहां पानी में चट्टान थी, जो रास्ता बना रही थी। वह काफी दूर आ गया था और उसने दाहिनी ओर सौ मीटर दूर पहाड़ी का ढलान देखा, तो तैरकर वहां जाने का इरादा कर लिया। बीहड़ की ओर जाने में खतरा था इसलिए उसने उसी रास्ते से लौटने का इरादा किया जिससे आया था।

प्रभास वापस शहर आ गया। उसकी मोटरसाइकिल तो उसे नहीं मिली थी, पर उसे खोजते हुए वहां पहुंचे दो पुलिसवाले मिल गए, जो उसे शहर लाए थे।

प्रभास अस्पताल पहुंचा, तो देखा कि खोजिया बैड पर लेटा था और एमेले स्टूल पर सोया हुआ था। उसके सिरहाने करीब दो फीट ऊंचा और इतना ही चौड़ा एक पैक कार्टून रखा था। उसने एमेले को जगाया तो वह हड़बड़ाकर उठ बैठा और आंखें मलने लगा।

"कहां रहे रात-भर!" एमेले ने उसे देखते ही सवाल किया—"फोन भी नहीं उठा रहे थे, बंद करके रखा था?"

प्रभास ने अपना टूटा-फूटा मोबाइल फोन उसे थमाया।

"कैसे टूट गया?" टूटा हुआ मोबाइल फोन देखते हुए एमेले ने सकपकाकर पूछा।

"तेरे दोस्त गोविंद की वजह से। तूने उसके सामने मुंह फाड़ा था कि मैं वह आदमी हूं जिसने दहलावर को तबाह किया।" प्रभास ने बताया—"उसने आगे नक्सलियों को बता दिया। उन्होंने रात में घेर लिया था मुझे। बच गया किसी तरह से। सुबह होश आया।"

"कमाल है। सुबह को होश आने लायक पिटाई हुई बताते हो और चोट का निशान तक नहीं।"

Baba Novels Chat Room

"भगवान का ही कोई करिश्मा है। अपना फोन दे।" प्रभास ने पास रखे हुए कार्टून की ओर देखते हुए पूछा–"इस कार्टून में क्या है?"

"तूने उस्ताद को बीस हजार रुपये दिए थे। उस्ताद ने आज सुबह पर्ची लिखकर इच्छा जाहिर की कि मैं शिवलिंग लेकर आऊं। मूर्ति बाजार गया तो इक्कीस हजार में मिला। जेब से दिए मैंने एक हजार, पर छोड़ो पुण्य-धर्म में कोई बात नहीं।"

प्रभास का दिल भर आया। उस आदमी ने काम ही ऐसा किया था।

उसने एमेले से फोन लेकर अपने एम्प्लॉयर सेठी को कॉल की। कॉल तुरंत रिसीव हुई।

"बॉस, मैं प्रभास!" वह बोला।

"तेरा फोन कहां गया, जो गैर के फोन से कॉल कर रहा है?"

"पानी में गिर गया। खराब हो गया। उधर सिमरन के केस में क्या हुआ?"

"बड़ा स्यापा निकला यार! इंटरनेशनल क्रिमिनल गियागो, डेस्ट्रॉय स्क्वायड सुप्रीमो का भाई डियागो किडनैपर निकला। तेरा अंदाजा ठीक निकला, पर दक्ष एन.एस.जी. कमांडो यूनिट ने सब संभाल लिया। डियागो अरेस्ट हो गया और बच्चे घर आ गए। भैये! ये कमीने तो बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट डेस्ट्रॉय करने वाले थे। विशाखापट्टनम् में भी ऐसी ही टीम पकड़ी गई है। वहां भी एक बड़े अधिकारी को निशाना बनाया गया था। अब सब कंट्रोल में है और अब तू सुना।"

"सुनाऊं क्या! मिशन तो इम्पॉसिबल लग रहा है। अश्वत्थामा खोजे नहीं मिल रहा है।"

"अबे, वह आउट ऑफ इंडिया है। टी.वी. खोलकर देख। दक्षिण कोरिया ने दावा किया है कि उत्तर कोरिया में आर्मी बेस-स्टेशन पर आज जो हमला हुआ, उसका हमलावर एक भारतीय पौराणिक योद्धा है, जो आंखों से तो दिख रहा है मगर कैमरे में नहीं आ रहा है। अब तू बता?"

प्रभास की समझ में शीघ्र ही आ गया कि दिन में अश्वत्थामा गुफा में क्यों नहीं था! जरूर सैयादी उत्तर कोरिया पहुंच गया था और उसके पीछे-पीछे अश्वत्थामा भी! पर इतनी दूर, इतनी जल्दी! कोई बड़ी बात नहीं थी। वह सिद्धात्मा था। उसके लिए कुछ भी करना कठिन नहीं था।

"मैं क्या बताऊं। नौकरी ही छोड़नी पड़ेगी।"

"वापस आजा...मैं तुझे दक्षिण कोरिया भेजूंगा। तमाम जर्नलिस्ट भाग रहे हैं।"

"कुछ हाथ नहीं आने वाला किसी के, क्योंकि उसकी तस्वीर नहीं कैद की जा सकती।"

"तू फिर भी कुछ करके दिखाएगा। तेरे साथ एक टॉप का स्केच आर्टिस्ट भेजूंगा। हाथ से तो तस्वीर बन जाएगी। मैं उसी में खुश हो जाऊंगा।"

"ओ.के.! मैं शाम को लौटता हूं।" प्रभास ने फोन काट दिया।

"एमेले! इस कार्टून को जीप में रखवा। मैं इसे वहां पहुंचाकर आता हूं, जहां तेरा उस्ताद चाहता है।" प्रभास ने खड़े होकर कहा।

"वहां ध्वस्त शिव मंदिर में? साहब! वहां तो शहर-भर से कितने ही शिवलिंग पहुंच गए हैं। दस-बीस तो मुस्लिम समाज के लोग लेकर पहुंचे हैं।"

"अच्छी बात है। एक तेरे उस्ताद की तरफ से भी। मैं अपना बैग लेकर आता हूं।"

"सीधा दिल्ली जाओगे, उस्ताद को इस हाल में छोड़कर?"

"नहीं, मिलकर जाऊंगा। इतना निर्मोही नहीं हूं।"

दोनों ने मिलकर शिवलिंग वाला कार्टून उठाया और बाहर जीप में लाकर रख दिया। प्रभास ने अंदाजा लगाया, चालीस किलोग्राम से कम वजन नहीं था। वह करीब ही होटल में गया और अपना बैग लेकर आया।

"बॉस! पूर्व विधायक भी दहलावर के साथ लपेट लिया गया है। वह कल रात अरेस्ट हो गया।" एमेले ने बताया।

"अच्छा हुआ! अब नक्सलाइट को पनपने में वक्त लगेगा।"

यह कहकर प्रभास स्टेयरिंग पर जा बैठा और जीप स्टार्ट करके चल पड़ा। रास्ते में नदी घाट पर अब पहरा नहीं था। जाहिर था कि समझदार शहर ने समझदारी की मिसाल पेश की थी।

प्रभास ने समय देखा, दोपहर के दो बज रहे थे। वह एक घंटे की ड्राइव करके वहां पहुंच गया, जहां उसने कल अपनी मोटरसाइकिल छोड़ी थी।

प्रभास ने जीप को भी सुरक्षित स्थान पर खड़ा किया और अपना बैग कंधे पर डाला। जीप में से रस्सी का गुच्छा निकाला और उसे भी कंधे पर टांग लिया, फिर उसने कार्टून को उठाकर सिर पर रखा।

वह ढलान पर ऊपर की ओर चढ़ गया। वजन तो था और रास्ता भी ऊबड़-खाबड़ था। बड़ी सावधानी से चलता हुआ वह आधा घंटे में उस जगह जा पहुंचा, जहां नदी का विभाजक बिंदु था। कार्टून को नीचे रखकर उसने अपनी सांसें व्यवस्थित कीं और रस्सी से कार्टून को कसकर बांधा, फिर उससे छह फुट ऊपर अपना बैग बांध दिया। उसने बड़ी सावधानी से इंच-इंच करके कार्टून को नीचे सरकाया। बैग पानी से फुट-भर ऊपर था, जब कार्टून पानी में डूबकर टिक गया था।

Baba Novels Chat Room

प्रभास ने रस्सी को बड़े भारी पत्थर के गिर्द लपेट दिया और गांठ लगा दी, फिर वह रस्सी के सहारे नीचे उतर आया और द्वार खोला।

बैग खोलकर द्वार में रखा, फिर कार्टून को उठाया और गुफा में सरका दिया। वह हांफ रहा था, पर जोश में था। उसने बैग में से टॉर्च निकाली और अंदर घुसकर पहले दरवाजा बंद किया, फिर बैग लेकर नीचे शिला के पास पहुंचा। बैग शिला पर रखकर वह पत्थर रखना ही चाहता था कि बैग के ही वजन से शिला दब गई और प्रकाश हो गया, फिर वह ऊपर चढ़कर कार्टून को भी लाया।

प्रभास ने शिवलिंग को झरने की ओर गुफा में एक स्थान साफ करके स्थापित किया और अंजलि भर पानी लाकर उसका जलाभिषेक किया, फिर वहीं से पुष्प-पत्र लेकर समर्पित किए। वह बहुत खुश था। उसका दिल अजीब-से आवेग से भर उठा था।

Baba Novels Chat Room

52

अश्वत्थामा डैथ चैंबर में

"अमरत्व का अर्थ सार्वजनिक जीवन का त्याग कदापि नहीं हो सकता महायोद्धाओ!" महर्षि परशुराम ने शांत स्वर में कहा—"यह कार्य तो मृत्यु ही कर सकती है। जीवन तो कर्म का ही द्योतक है। कर्म विरत जीवन तो वसुधा का भार-मात्र है। यदि हम जैसे भगवद्‌भक्त ही इस मर्म को न समझ पाए या विस्मृत करते रहे तो कलियुग के प्रभाव से पतित वर्तमान मानव का क्या होगा? हमें तो आगे बढ़कर आदर्श प्रस्तुत करना होगा जिससे कलिमानव प्रेरित हो सके और पंच महाव्रतों का पालन कर सके। शुभता यह है कि हम सभी समय पर सचेत हो गए हैं।"

Baba Novels Chat Room

अश्वत्थामा एक बौद्ध मठ में पहुंचे, जहां पहुंचने की प्रेरणा उन्हें भगवान परशुराम से मिली थी। वहां पहुंचकर उनके मुख पर आश्चर्य और प्रसन्नता के भाव उभरे। वहां दो दिव्य आत्माएं उपस्थित थीं, सशरीर! अश्वत्थामा ने दोनों को पहचाना। बौद्ध भिक्षु के वेश में शांत-चित्त, करुणामय नेत्रों से वात्सल्य प्रकट करते महर्षि परशुराम और उनके ही समीप खड़े धनुर्धारी कृपाचार्य! अश्वत्थामा कृपाचार्य के भांजे थे। शताब्दियों के पश्चात् उनकी प्रत्यक्ष भेंट हुई थी, यद्यपि मानसिक वार्तालाप यदा-कदा होता रहता था। अश्वत्थामा ने गहन श्रद्धा से दोनों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किया।

"कैसे हो वत्स?" कृपाचार्य ने अश्वत्थामा को अपने अंकपाश में भर लिया—"सदियों के बाद तुम्हें देखा है! हृदय आवेग से भरा जा रहा है।"

"मामाश्री, नियति की इच्छा के समक्ष हम सभी विवश हैं।" अश्वत्थामा

ने आर्द्र स्वर में कहा—"कैसी विडंबना है कि हमें ईश्वर ने अमरत्व तो दिया, परंतु समयांतराल ऐसा दिया कि भेंट होने में शताब्दियां लग जाती हैं, फिर भी आपके दर्शन यहां हुए, इसकी अनुभूति कुछ अत्यधिक ही अभिभूत करने वाली है।'

"तुमसे मिलने की इच्छा सदैव ही रही है वत्स! परंतु समय के साथ हृदय में सांसारिक विरक्ति का भाव बढ़कर उत्तरोत्तर भगवद्‌भजन में रुचि बढ़ती गई। अपने अमरत्व को स्वमुक्ति का मार्ग समझकर हम सार्वजनिकता से दूर हुए और अपने भांजे से भी। वास्तव में हम अपने अमरत्व का उद्‌देश्य ही नहीं जान पाए थे।"

"प्रभु की जैसी इच्छा मामाश्री! उनकी इच्छा न हो तो विद्वान भी विवेकशील नहीं रह पाते। हम भी वर्तमान से दूरी बनाकर ही रहे थे, परंतु धीरे-धीरे इससे सामंजस्य बनाने लगे। आशा है कि अब हम अभ्यासी हो जाएंगे।"

"अमरत्व का अर्थ सार्वजनिक जीवन का त्याग नहीं हो सकता महायोद्धाओ!" महर्षि परशुराम ने शांत स्वर में कहा—"यह कार्य तो मृत्यु ही कर सकती है। जीवन तो कर्म का ही द्योतक है। कर्म विरत जीवन तो वसुधा का भार-मात्र है। यदि हम जैसे भगवद्‌भक्त ही इस मर्म को न समझ पाए या विस्मृत करते रहे तो कलियुग के प्रभाव से पतित वर्तमान मानव का क्या होगा? हमें तो आगे बढ़कर आदर्श प्रस्तुत करना होगा जिससे कलिमानव प्रेरित हो सके और पंच महाव्रतों का पालन कर सके। शुभता यह है कि हम सभी समय पर सचेत हो गए हैं।"

"मेरे लिए क्या आदेश है भगवन्?" कृपाचार्य ने पूछा।

"आप सहायक हैं आचार्य! इस द्वीप पर शांति की स्थापना हेतु हम सप्त चिरंजीवियों को अपने-अपने हिस्से का कार्य करना है। संसार के पीड़ितों एवं शोषितों को यह संदेश देना है कि परमपिता परमात्मा अपने भक्तों की रक्षा के लिए अपने नियुक्त प्रतिनिधियों को अवश्य ही प्रेरणा और आदेश करता है। संसार के जन-जन को निर्भर होने का अवसर तभी प्राप्त होता है, जब उन्हें विश्वास होता है कि उन्हें भय देने वालों को दंडित करने के लिए उनके अंतर्मन की पुकार सुनकर ईश्वर के नियुक्त प्रतिनिधि आ गए हैं या आ जाएंगे। इसी से दुष्ट प्रवृत्तियों में लिप्त निरंकुश अत्याचारी व स्वयंभू अजेय योद्धा भी भयभीत होंगे।"

"भगवान परशुराम!" अश्वत्थामा ने हाथ जोड़कर कहा—"आपके दर्शन पाकर मैं कृतार्थ हुआ। आप सर्वज्ञानी हैं। जानते हैं कि भगवान वेदव्यास ने मुझे एक विशेष कार्य संपन्न करने का आदेश दिया है। मेरा मार्गदर्शन करें गुरुदेव!"

"द्रोणपुत्र! हम बहुत समय से यहीं हैं। भगवान बुद्ध की शांति ने हमें शांत कर दिया। हमने यहां के स्वेच्छाचारी शासक को शांति-मार्ग दिखाने का प्रयास किया, पर हठधर्मिता ने उसकी मति हर ली है। हम चाहते हैं कि आपके पराक्रम

Baba Novels Chat Room

से ही वह भयभीत होकर अपने जीवन की धारा बदल ले। अतः प्रथम उसे भय दिखाकर समझाने का प्रयत्न करें। हम हिंसा का समर्थन नहीं करेंगे और आपसे भी प्रार्थना है कि आप भी हिंसा का व्यवहार न करें।"

"गुरुदेव! उसके पास विध्वंसा से निर्मित घातक अस्त्रास्त्र हैं। वह मानवता को संकट में डाल रहा है। उसके इन अस्त्रों का नाश करना होगा।"

"विध्वंसा नष्ट नहीं होता, अपितु ऐसे प्रयास में भी विध्वंस करता है। वर्तमान समय में वह प्रक्षेपास्त्र निर्माण में प्रयोग किया जा रहा है...मीलों तक लक्ष्य भेदन करने वाले प्रक्षेपास्त्र! उन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता, परंतु एक उपाय है जिससे उनसे उत्पन्न हो रहे संभावित संकट को कुछ समय के लिए दूर किया जा सकता है।"

"वह उपाय क्या है गुरुदेव?"

"ऐसे उच्च तकनीकी ज्ञान को साधारण मस्तिष्क नहीं सहेज सकते। यह विशिष्ट विद्वानों का क्षेत्र है। ऐसे विद्वान लाखों में एक या दो होते हैं। यदि उनके मस्तिष्क से यह ज्ञान विस्मृत करा दिया जाए तो इन प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण और प्रयोग दोनों ही बाधित होंगे। ऐसे मस्तिष्क भी सहज उपलब्ध नहीं होते। इस देश में ऐसे विलक्षण मस्तिष्क गिनती में कुल सात हैं, जो प्रक्षेपास्त्र निर्माण और संचालन में निपुण हैं। यदि उनका स्मृतिकोश रिक्त कर दिया जाए तो विध्वंसा अगले विलक्षण मस्तिष्क के उपलब्ध होने तक अनुपयोगी हो जाएगा।"

"वे सात विलक्षण मस्तिष्क इस समय कहां होंगे गुरुदेव?"

"पृथ्वी के गर्भ की गहराई पर बनी प्रयोगशाला में उनका निवास है। यह पश्चिम में समुद्र तट के समीप है, जहां एक विशाल आयुधशाला है।"

"और वह स्वेच्छाचारी सम्राट इस समय कहां होगा?"

"वह अपने राजभवन में होगा द्रोणपुत्र! वह एक धूर्त, पाखंडी और क्रूर व्यक्ति है, जो विश्वविजेता बनने की इच्छा रखता है। हम जानते हैं कि उसके पास ऐसा कोई शस्त्रास्त्र नहीं है, जो तुम्हें हानि पहुंचा सके, परंतु कपट है। सावधान रहना! आज का मानव बुद्धि-कौशल में प्रवीण है और स्मरण रखना कि जब अत्यंत आवश्यक हो, तभी अहिंसा से विमुख होना।" महर्षि परशुराम ने गंभीर स्वर में कहा।

"मैं आज्ञा का पालन करने का पूरा प्रयास करूंगा गुरुदेव! अनिवार्य होने की स्थिति में ही किसी का वध करूंगा।" अश्वत्थामा ने सिर झुकाया।

"वत्स! हम जानते हैं कि तुम निरर्थक हिंसा करने से बचोगे, परंतु कुटिल शत्रु अपने सैन्य-बल के उन्माद में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर सकता है कि तुम्हें उग्रता और क्रोध धारण करना पड़ सकता है।" महर्षि परशुराम ने गंभीर स्वर में कहा—"यद्यपि तुम क्रोध को वश में रखने के अभ्यासी हो, परंतु इस संभावना

Baba Novels Chat Room

को भी विलग नहीं किया जा सकता कि तुम स्वभावतः क्रोधी हो। अतः ऐसी किसी परिस्थिति में आचार्य कृप तुम्हारे सहायक होंगे।"

"आदेश करें भगवन्!" कृपाचार्य ने हाथ जोड़कर कहा।

"आचार्य, विध्वंसा से संसार को भय देने वाला यहां का सम्राट अति कुटिल और कपटी है। विज्ञान और तकनीक के द्वारा वह स्वयं को सर्वशक्तिशाली मानने का भ्रम भी पाले बैठा है। उसके पास आग्नेयास्त्रों से सुसज्जित सेना है और साथ ही उसके पास एक ऐसा वधिक दल भी है, जो उसके संकेत पर जनसाधारण का नरसंहार कर सकता है। वह कुटिल सम्राट द्रोणपुत्र को किसी अन्य बल से तो न परास्त कर सकेगा, न रोक सकेगा, परंतु अपनी कुटिलता से वह इस असंभव कार्य को संभव कर भी सकता है। अतः ऐसी स्थिति में उसे आपको संभालना होगा।"

"महर्षि! उसकी कोई भी कुटिलता अश्वत्थामा का मार्ग नहीं रोक सकती।"

"नहीं आचार्य कृप! आज के मानव को कदापि निर्बल न समझो। कुटिल पुरुष को तो कदापि नहीं। सोचिए, यदि वह हजारों निर्दोष लोगों को अपने वधिक दल द्वारा बंधक बना ले तो क्या द्रोणपुत्र भी विवश नहीं हो जाएंगे।"

"आप सत्य कह रहे हैं महर्षि! वह कुटिल इतना तो समझता ही होगा कि हम भले ही दोषी को मुक्त कर दें, परंतु किसी निर्दोष के प्राण नहीं जाने देंगे।"

"इसलिए आचार्य कृप को इस स्थिति पर नियंत्रण रखना होगा। उसका वधिक दल ऐसे ही स्थानों पर अवस्थित है, जहां जनसाधारण होता है। आचार्य को अपने तपोबल से बहुगुणित होकर ऐसे सभी स्थानों पर रहना होगा। आचार्य, इससे निश्चय ही आपके संचित तपोबल का एक बड़ा भाग क्षीण तो होगा, परंतु आशा है कि आप इस तथ्य को स्वीकार करेंगे कि तपोबल संचयन इसी हेतु हुआ है।"

"हम आपका अभिप्राय: जान गए भगवन्!" कृपाचार्य ने कहा—"हम आपके निर्देश का पालन करेंगे। अब आप हमें उन स्थानों के विषय में बताइए, जहां यह वधिक दल होगा। हम उन्हें सक्रिय होने का समय नहीं देना चाहते। अतः इसी समय उनका प्रबंध कर देना उचित समझते हैं। शत्रु को समय देने की भूल नहीं करनी चाहिए। आप हमारा मार्गदर्शन करें।"

"द्रोणपुत्र! आचार्य सत्य कह रहे हैं। हम भी चाहते हैं कि तुम्हारा कार्य आरंभ होने से पूर्व ही स्थितियां हमारे नियंत्रण में हों और अनावश्यक रक्तपात से बचा जा सके जिससे प्रजा की हानि न हो।"

"जैसा आप निर्देश दें भगवन्!" अश्वत्थामा ने नतमस्तक होते हुए कहा।

महर्षि परशुराम ने अपनी रक्तहीन रणनीति समझाई।

Baba Novels Chat Room

53

अश्वत्थामा का प्रलयंकारी रूप

"गुरुदेव! अब समुद्र का जल इस इस्पाती कुएं में गिरेगा और अन्य दीवारों में बने छिद्रों के द्वारा इस गर्भगृह को जलमग्न कर देगा। यहां सुरक्षित माने जाने वाले भंडारित प्रक्षेपास्त्र, शोध-पत्र, वैज्ञानिक आदि जलसमाधि ले लेंगे और वर्षों तक आग्नेयास्त्रों का निर्माण नहीं हो सकेगा।" अश्वत्थामा ने कहा-"अब उस दुष्ट सम्राट को दंडित करना शेष है।"

"यहां से निकलने का मार्ग तो खोजो द्रोणपुत्र!"

"गुरुदेव! आपका यहां आगमन इसी हेतु हुआ है। यदि यह मेरी सामर्थ्य होती तो आप यहां आने का कष्ट क्यों उठाते?" अश्वत्थामा ने करबद्ध होकर कहा।

परशुराम मंद-मंद मुस्करा उठे।

तानाशाह के डैथ स्क्वायड का मुख्यालय राजधानी के व्यस्ततम इलाके में था जिसकी विशाल छत पर दर्जनों चार्टेड प्लेन खड़े थे जिनसे डैथ स्क्वायड के खूंखार किलर अपने टॉर्गेट पर आसानी से आते-जाते थे। इस डैथ स्क्वायड का नेतृत्व वैसे तो स्वयं सम्राट के हाथ में था, पर क्रियात्मक रूप से इसकी कमान मारा बार्बोस नाम के एक खतरनाक दैत्याकार हब्शी के पास थी।

ऐसा कहा जाता था कि मारा बार्बोस अफ्रीका महाद्वीप का दुर्दांत हत्यारा था और विश्व के कई बड़े उद्योगपति, राजनीतिज्ञ और मशहूर शख्सियत

Baba Novels Chat Room

उसके हाथों से मारे जा चुके थे। कॉन्ट्रेक्ट किलर के रूप में वह विश्व-भर में कुख्यात था, तब अमेरिका ने उसकी जिंदा या मुर्दा गिरफ्तारी पर ऐसा इनाम रखा कि वह अपने ही हमपेशाओं के निशाने पर आ गया।

कुछ ऐसी ही विषम परिस्थितियों में मारा बार्बोस ने भागकर उत्तर कोरिया में शरण ली, जहां वह सम्राट का विश्वासपात्र बन बैठा।

आज मारा बार्बोस को सम्राट ने जो आदेश दिया, उसे सुनकर वह मामले की गंभीरता को समझ गया और तत्काल अपने कंट्रोल कक्ष में आया।

मारा ने अपने सिस्टम ऑपरेटर को सभी ब्रांचेज के साथ तुरंत इंटरकनेक्ट करने का आदेश दिया। तत्काल आदेश का पालन हुआ और राजधानी में स्थित बारह ब्रांच इंटरकनेक्टिड हो गईं।

"सम्राट का आदेश है कि हम सभी को तत्काल समूची राजधानी में फैल जाना है और ग्रुप में बंटकर जनता को बंधक बना लेना है। किसी अविश्वसनीय शत्रु से देश को खतरा है, उसे काबू में करने के लिए जनता को ढाल बनाना है। सभी अलर्ट हो जाओ और सम्राट के आदेश का पालन करो।"

मारा ने बिना किसी भूमिका के अपनी बात कही, तभी उसका फोन बज उठा। उसने फोन रिसीव किया।

"कमांडर...कमांडर गजब हो गया।" घबराई आवाज आई—"हमारे सभी चार्टर प्लेन कचरा बने पड़े हैं। कबाड़ का ढेर बन गया है।"

"क्या बक रहे हो!" मारा ने हड़बड़ाकर कहा और इमारत की छत का दृश्य देखने के लिए कैमरा व्यवस्थित किया।

मारा को प्राप्त सूचना सच ही नहीं थी, अपितु वहां का दृश्य हैरान कर देने वाला था। एक वृद्ध एवं तेजस्वी साधु हाथ में धनुष लिये वहां उपस्थिति था और उसी ने बाणों से चार्टर प्लेन्स की यह दुर्गति की थी।

अभी मारा कुछ और करता कि उससे पहले ही स्क्रीन्स पर उसके सभी ब्रांच कमांडर्स घबराए हुए नजर आए और सभी ने वही सूचना दी। उसकी आंखें तो तब और अधिक फैलीं, जब उसने सभी इमारतों की छत पर उसी, बिलकुल उसी धनुर्धर योद्धा को देखा। बारह स्थानों पर एक ही व्यक्ति को देखकर उसकी आंखें फैल गईं।

"यह...यह कैसे हो सकता है?" वह भयभीत होकर बड़बड़ाया।

मारा ने तत्काल अपने दक्ष कमांडोज को आदेश दिया और छत की ओर दौड़ा। दो दर्जन हथियारबंद कमांडोज लेकर जब वह ऊपर पहुंचा तो उसे वह वृद्ध पौराणिक योद्धा हमलावार मुद्रा में मिला। उसने बड़ी अद्‌भुत गति से बाण-वर्षा

Baba Novels Chat Room

की और लाशों के ढेर लगा दिए। मारा यह सोचता ही रह गया कि जो यहां हुआ, वह शेष बारह जगह भी हुआ होगा।

तानाशाह सम्राट ने गियागो और सैयादी को प्रयोगशाला के अतिसुरक्षित टनल में भेज दिया था, जहां की सुरक्षा तकनीकी रूप से अत्यंत सुदृढ़ थी। इस टनल में वह अपने विशिष्ट वैज्ञानिकों को रखता था। वह सारे शोध-निर्माता संबंधी दस्तावेज भी वहीं रखता था, जो उसकी आयुधशाला का भंडार बढ़ा रहे थे। उसका दावा था कि वह संसार के सबसे सुरक्षित टनल्स में से एक था।

सम्राट राजभवन में अपने ऑफिसर्स को समझा रहा था कि आगे क्या करना है! तभी मुख्य द्वार से शोर उभरा। उसने स्क्रीन पर देखा तो उछलकर खड़ा हुआ। गार्ड इधर से उधर भाग रहे थे, गोलियां बरसा रहे थे और खुद हवा में उड़कर इधर-से-उधर लुढ़क रहे थे।

"वह आ गया है। अपने रॉकेट लांचर तैयार रखो।" सम्राट बाहर की ओर भागा तो जो उसे स्क्रीन पर नहीं दिखा था, वह अब प्रत्यक्ष दिख रहा था।

लगभग नौ फुट लंबा, बलिष्ठ शरीर, कमर पर लटके बाल, माथे पर कपड़ा लपेटा हुआ, कंधे पर बड़ा धनुष और पीठ पर तरकश। उसके शरीर के निचले हिस्से में धोती बंधी थी और वक्ष पर जनेऊ लटका था। कोई संदेह नहीं था कि वह अश्वत्थामा ही था। उसके माथे पर बंधे कपड़े के बीचोबीच लाल निशान था। वह बाण नहीं चला रहा था, पर अपने रास्ते में आने वाले सैनिकों को दूर फेंक रहा था।

तब तक विशेष सुरक्षा दस्ते ने रॉकेट लांच कर दिया, जो अश्वत्थामा के वक्ष से टकराया। योद्धा एक कदम पीछे-भर हटा। रॉकेट वहीं गिर गया। तानाशाह की आंखों में भय तैर गया। उसका हथियारों पर विश्वास डगमगाया, तब तक अश्वत्थामा उसके बिलकुल सामने था...आंखों-में-आंखें डाले। वह दो कदम पीछे हटा।

"संभवत: तुम ही इस राज्य के शासक हो!" अश्वत्थामा कठोर स्वर में बोला–"तुमने मेरे अपराधी को शरण दी है। इसका दंड जानते हो?"

"महान योद्धा, हमें नहीं पता था कि उसने ऐसा घृणित अपराध किया है और वह आप जैसे पुराण पुरुष का अपराधी है।" सम्राट ने भयभीत स्वर में कहा–"आपके अपराधी को हम आपको सौंप देंगे। कृपया हिंसा न करें...क्रोध न करें।"

"तुम्हारे सैनिक मेरा स्वागत विस्फोटकों से कर रहे हैं।"

"कोई नहीं करेगा महान योद्धा!" सम्राट ने हाथ उठा दिया तो फायरिंग बंद हो गई–"इन लोगों को आपके बारे में कोई जानकारी नहीं...आपके पराक्रम की जानकारी नहीं, लेकिन मुझे जानकारी है। आपमें संसार को एक ही बाण से समाप्त करने की सामर्थ्य है। मैं ही मूर्ख था, जो भगवान परशुराम की बात नहीं माना। क्या करता? विश्वास जो नहीं था। अब हुआ है।"

"अर्थात् तुम उस दुष्ट को हमें सौंपने को तैयार हो?"

"अवश्य! ऐसे पापी के लिए मैं अपने सैनिकों को निश्चित संकट में नहीं डाल सकता।"

अश्वत्थामा को महर्षि परशुराम की बात याद आई! धूर्त! कुटिल!! वाचाल!!!

"इसके अतिरिक्त भी हम तुमसे कुछ चाहते हैं।"

"आज्ञा करें योद्धा!"

"तुम्हारे पास विध्वंसक हथियार हैं और उनसे मानवता पर भीषण संकट मंडरा रहा है। विश्व-शांति विकट दौर में हैं। तुम्हारे पास जो विस्फोटक अस्त्र भंडार है, उनमें अधिक दैवीय अस्त्र हैं, जो भगवान शिव द्वारा प्रतिबंधित हैं। उन्हें समुद्र में फेंक दो और विश्व को शांति का संदेश दो।"

"महायोद्धा, ऐसे अस्त्र एकमात्र मेरे पास ही नहीं हैं। भारत में भी हैं।"

"विध्वंसक शक्तियां शांतिप्रिय लोगों के पास रहकर भी सुरक्षित रहती हैं। तुम्हारे जैसे हठी, स्वेच्छाचारी शासक के पास उनके दुरुपयोग की संभावना बनी रहती है।"

"हम वचन देते हैं कि उनका दुरुपयोग नहीं करेंगे।"

"तुम्हारे वचन का कोई मूल्य नहीं है। हम उन्हें जलमग्न होते देखना चाहते हैं, तभी हमारा उद्देश्य पूर्ण होगा। हमें भगवान वेदव्यास का यही आदेश है।"

सम्राट मौन हो गया, जैसे विचार कर रहा हो।

"महाबली योद्धा! यदि यह आपका उद्देश्य है तो यह आपके ही हाथों पूर्ण होना चाहिए। आप स्वयं अपने हाथों से उन्हें समुद्र में फेंकिए। इस आश्वासन के साथ कि यदि हमारे शत्रु देश हम पर आक्रमण करने लगें तो आप हमारी रक्षा करेंगे।"

"हम तुम्हें आश्वासन देते हैं कि यदि कोई अन्य देश अकारण उत्तर कोरिया पर आक्रमण करेगा तो हम रक्षक के रूप में अवश्य सामने आएंगे।" अश्वत्थामा ने कहा।

"मैं धन्य हुआ। ऐसा पौराणिक महायोद्धा मेरा रक्षक है तो मुझे अस्त्र-शस्त्रों

Baba Novels Chat Room

की क्या आवश्यकता रह जाएगी। आप आयुधशाला चलें। वहीं आपका अपराधी भी है और आयुध भंडार भी। जैसा आप चाहें, वैसा करें।"

बड़ी नम्रता, बड़ी श्रद्धा से बात करता है, पर जरूर कहीं कपट सोच रहा होगा! अश्वत्थामा ने विचार किया।

"हम आयुधशाला पहुंच रहे हैं।" अश्वत्थामा ने प्रत्यक्षत: कहा—"शीघ्र पहुंचना और किसी भी प्रकार के कपट से दूर रहना। हमें साधारण मत समझना।"

"महायोद्धा! मैं ऐसा विचार तक नहीं कर सकता। आप हमारे साथ ही चलिए। हमारे पास सुगम यात्रा के लिए वाहन है।"

उसी समय पीछे की ओर से सांग-सी अपने भिक्षुओं सहित आ गया। उसके आगे सौम्य और सरलता की प्रतिमूर्ति बने महर्षि परशुराम थे।

सम्राट अब चकित नहीं था।

"सम्राट! इस शांति-यज्ञ के लिए हम भी साक्षी बनना चाहते हैं।" सांग-सी ने कहा।

"अवश्य संन्यासी! आपके प्रयासों से ही यह संपन्न हुआ है। मुझे प्रसन्नता होगी कि आप इसके साक्षी बनें और संसार को बताएं कि हम शांति के समर्थक हैं।"

तत्काल सम्राट के आदेश पर गाड़ियां तैयार हो गईं। सांग-सी व उनके साथी एक गाड़ी में बैठ गए। सम्राट अपनी गाड़ी में बैठा। अश्वत्थामा और परशुराम ने गाड़ी में बैठना अस्वीकार किया। सम्राट जानता था कि वे दिव्य योगबल से कहीं भी, कभी भी पहुंच सकते हैं। जब सम्राट का काफिला आयुधशाला पहुंचा तो वे दोनों पहले से ही वहां मौजूद थे। सम्राट चकित नहीं हुआ।

सम्राट उन सबको लेकर टनल में जाने वाले रास्ते पर पहुंचा और एक प्लेटफार्म पर सबको खड़ा होने का अनुरोध किया। वह स्वयं भी प्लेटफार्म पर था, फिर प्लेटफार्म नीचे सरकने लगा। अश्वत्थामा भी उस तकनीक की मन-ही-मन प्रशंसा कर रहे थे। प्लेटफार्म एक गहरे कुएं में जा रहा था। सब ऊपर की ओर देख रहे थे। सम्राट अवसर की ताक में था। एक स्थान पर दरवाजा आया और वह उसमें जंप लगा गया। तत्काल ही एक ढक्कन उस स्थान पर फिट हो गया था। सम्राट ने अपनी समझ से सारे दुश्मनों को 'डैथ चैंबर' में पहुंचा दिया था।

प्लेटफार्म रुका तो सबका ध्यान इस ओर गया कि सम्राट कपट कर गया था। अब ऊपर से एक और प्लेटफार्म तेजी से नीचे आ रहा था।

"भगवन्, सम्राट सुधरने वाला नहीं लगता...देख रहे हैं आप! जब यह आप जैसे परम पुरुषों के साथ धूर्तता कर सकता है तो आम प्रजा के साथ क्या नहीं

Baba Novels Chat Room

करेगा!" सांग-सी ने शांत स्वर में कहा–"यह मूर्ख चिरंजीवी योद्धाओं को मृत्यु देना चाहता है।"

"इस दुष्ट को उसके किए का दंड अवश्य मिलेगा।" अश्वत्थामा क्रोध से कांप उठा।

"भूमि के गर्भ में इसके विध्वंसक आयुध भंडार, विशिष्ट वैज्ञानिक और महत्त्वपूर्ण शोध-पत्र हैं। इसने इस प्रयोगशाला का निर्माण सुरक्षा के उद्देश्य से कराया था।"

"इस गर्भगृह में विध्वंसा से निर्मित इतना आग्नेयास्त्र भंडार है, जो संपूर्ण सृष्टि को नष्ट करने की क्षमता रखता है।" महर्षि परशुराम ने कहा–"यह आप जानते हैं कि किसी भी प्रकार से विध्वंसा को नष्ट नहीं किया जा सकता। इस प्रयास में इसके ऊर्जा कण सक्रिय हो जाने की संभावना है। अतः हमें इन्हें समुचित रीति-नीति से निष्क्रिय करने का उपाय करना होगा।"

"यह तो तभी संभव है, जब विध्वंसा जलमग्न रहे।" अश्वत्थामा ने कहा–"जल की शीतलता ही विध्वंसा की ऊर्जा को संयम प्रदान करती है। जिस इस्पाती महल में हम हैं, वहां इतनी मात्रा में जल की व्यवथा करना कठिन है।"

"इसलिए अब हमें जलाधिपति पातालेश्वर सम्राट बलि का आह्वान करना होगा। वही इस असंभव कार्य को संभव कर सकेंगे। द्रोणपुत्र, तुम आदर सहित उनका आह्वान करो और उनसे सहायता की याचना करो। उस दुष्ट, कुटिल तानाशाह को यदि समय मिला तो वह अपनी सुरक्षा के अन्य विकल्पों पर विचार कर सकता है।"

"उसका अन्य एक विकल्प उसका वधिक दल ही तो बताया था आपने और मामाश्री ने उसे ध्वस्त कर दिया होगा। अपने दायित्व का निर्वहन उन्होंने भली भांति कर लिया होगा।"

"आचार्य ने अपना कार्य भली भांति कर लिया है और इस समय भी वे सम्राट की सैन्य क्षमता का आकलन करके उनके शिविरों पर सजगता से खड़े हैं। अब अतिशीघ्र हमें सम्राट बलि की सहायता की आवश्यकता है।"

अश्वत्थामा ने नेत्र बंद करके सम्राट बलि से मानसिक संपर्क स्थापित किया।

"हे महान सम्राट! सृष्टि को विध्वंसा के भयानक दुष्प्रभाव से रक्षित करने के लिए हमें आपकी सहायता की आवश्यकता है। विध्वंसा की ऊर्जा को सक्रिय होने से रोकने के लिए अपार मात्रा में जल चाहिए और यह स्थान ऐसा है कि यदि हम मेघास्त्र का प्रयोग करते हैं तो इससे जनसाधारण को अत्यधिक हानि होगी। अतः आप हमारा मार्गदर्शन करें सम्राट बलि!" आश्वत्थामा ने सविनय कहा।

Baba Novels Chat Room

"वत्स! हम तो तुम्हारे संकेत की प्रतीक्षा में थे। तुम हमारे सेनापति नियुक्त हुए हो। अतः तुम्हारा निर्देश ही हमें क्रियाशील कर सकता है। हम इस समय समुद्र की सतह पर विराजमान हैं। तुम हमें दिशा व दूरी का ज्ञान कराओ और हम इच्छित जल-भंडार पहुंचाने का कार्य करते हैं।"

अश्वत्थामा ने महर्षि परशुराम की ओर प्रश्नसूचक भाव से देखा, जो सारी मानसिक बात सुन रहे थे। अतः अब महर्षि अश्वत्थामा से बोले–"महाबलि! पीत सागर यहां से तीन मील दूर है। हम सागरीय सतह से आधा योजन नीचे हैं। तुम दक्षिण की ओर मुख करके मृदाक्षरण अस्त्र का संधान करो, जो एक छिद्र बनाकर सम्राट बलि को दिशा का ज्ञान देगा। शेष कार्य सम्राट बलि स्वयं कर लेंगे। वे उस छिद्र को विस्तार देकर पर्याप्त जलधारा यहां तक पहुंचा देंगे। उसी मार्ग से लंकापति विभीषण भी यहां आकर विध्वंसा के कणों को अपने विशिष्ट पात्र में सुरक्षित कर लेंगे।"

सांग-सी और उसके अन्य भिक्षु श्रद्धा और आश्चर्य से उन चिरंजीवी सृष्टि के रक्षकों की गतिविधियों को देख रहे थे। यद्यपि उनके बीच वार्तालाप एक विशिष्ट भाषा (संस्कृत) के माध्यम से हो रहा था, जिसे वे समझ नहीं पा रहे थे, परंतु इतना अवश्य समझ रहे थे कि वे पुराण पुरुष तानाशाह का दर्प चूर-चूर करने वाले थे।

अश्वत्थामा ने बाण को मस्तक से लगाकर मंत्र पढ़ा और घुटनों के बल बैठकर पूरी शक्ति से बाण चला दिया। बाण इस्पात की दीवार में धंसकर आगे बढ़ गया था।

सांग-सी ने उस महान योद्धा को मन-ही-मन प्रणाम किया।

"आप महान हैं, बलशाली योद्धा! आप अतुलनीय पराक्रमी हैं।" सांग-सी ने कहा।

अश्वत्थामा ने अन्य चार बाणों से चारों दीवारें भेद दी थी। आश्चर्य यह था कि बाण का फल छोटा अवश्य था, परंतु उससे बने छेद काफी बड़े थे। चार इंच के पाइप जितने।

"गुरुदेव! अब समुद्र का जल इस इस्पाती कुएं में गिरेगा और अन्य दीवारों में बने छिद्रों के द्वारा इस गर्भगृह को जलमग्न कर देगा। यहां सुरक्षित माने जाने वाले भंडारित प्रक्षेपास्त्र, शोध-पत्र, वैज्ञानिक आदि जलसमाधि ले लेंगे और वर्षों तक आग्नेयास्त्रों का निर्माण नहीं हो सकेगा।" अश्वत्थामा ने कहा–"अब उस दुष्ट सम्राट को दंडित करना शेष है।"

"यहां से निकलने का मार्ग तो खोजो द्रोणपुत्र!"

Baba Novels Chat Room

"गुरुदेव! आपका यहां आगमन इसी हेतु हुआ है। यदि यह मेरी सामर्थ्य होती तो आप यहां आने का कष्ट क्यों उठाते?" अश्वत्थामा ने करबद्ध होकर कहा।

परशुराम मंद-मंद मुस्करा उठे।

"संघ में शक्ति होती है भंते! सब परस्पर आबद्ध हो जाओ।" परशुराम ने कहा और अपने दोनों हाथ फैलाए। एक हाथ अश्वत्थामा ने पकड़ा, दूसरा सांग-सी ने। सांग-सी का हाथ अन्य भिक्षु ने पकड़ा और उसका अन्य ने। भगवान परशुराम अपने योगबल से ऊपर उठते चले गए और वे सभी उनके साथ ऊपर उठ गए, तभी समुद्र के जल की मोटी धार कुएं के फर्श पर गिरी।

इसी समय ऊपर से छत की तरह इस्पाती चादर तीव्रता से नीचे की ओर आ गई। अश्वत्थामा ने उसे हथेली से पीछे की ओर धकेला तो वह भी उन्हीं के अनुपात में ऊपर उठती चली गई। अंततः यह योगबल-यात्रा ऊपर आ गई।

अश्वत्थामा ने चादर को एक ओर फेंका तो सभी उस इस्पाती कुएं से बाहर आ गए। अभी तक तानाशाह का वाहन वहीं पर था।

Baba Novels Chat Room

54

किम-जोंग-उन को महर्षि परशुराम का शाप

Baba Novels Chat Room

"दुष्ट सम्राट!" परशुराम अपने क्रोध पर काबू न रख सके–"तूने एक संन्यासी की मृत्यु का कारण उत्पन्न किया। जा मेरा श्राप है कि तू रुग्ण, कुष्ठ रोगी होकर मृत्यु को प्राप्त होगा।"

सम्राट कंपित होकर वहीं धम्म से बैठ गया।

"यही इसका उचित दंड है द्रोणपुत्र! मृत्यु को यह उपहार समझता है और जीवन को खेल। अब अपने जीवन की नारकीय पीड़ा से इसे ज्ञात होगा कि जीवन में शांति का क्या महत्त्व है।"

"क्षमा, क्षमा! ऐसा कठोर दंड न दें भगवन्! आप दया के सागर हैं।" सम्राट गिड़गिड़ाया।

सम्राट किम-जोंग-उन उस समय हड़बड़ा गया, जब उसने डैथ चैंबर में पानी की तेज धार गिरती हुई देखी। वहां पानी कहां से आ गया था? नौ कि.मी. दूर समुद्र से तो असंभव था। स्क्रीन पर उसे अश्वत्थामा के अलावा परशुराम भी नहीं दिख रहे थे और सांग-सी आदि भी नहीं। कहां गए वे सब? वहां से निकलने का तो कोई रास्ता ही नहीं था। वह खड़ा हुआ तो और भी सन्न रह गया। कंट्रोलरूम के फर्श पर पानी था। पानी कहां से आया? क्या कर दिया था उन पौराणिक लोगों ने? उसने वहां मौजूद लोगों को पानी का स्रोत बंद करने को कहा। उसने स्क्रीन्स पर देखा तो माथा पीट

लिया। टनल में, अति सुरक्षित टनल में जगह-जगह पानी की मोटी धारें गिर रही थीं। कैसे हुआ यह सब? उस मोटे इस्पात में छेद कैसे हो सके? किसने किए? पानी अगर इसी तरह चलता रहा तो निश्चित रूप से टनल जलमग्न हो जाएगा और उसका आयुध भंडार तबाह हो जाएगा, पर वह कर ही क्या सकता था? पानी अब फर्श पर जमा होने लगा था। पैरों के पंजे डूब गए थे। वह खुद भागा और एक छेद को बंद करने की कोशिश करते अपने आदमियों पर भड़का।

"अरे कमबख्तो! इस पानी को रोको, वरना सबकी जलसमाधि बन जाएगी।"

"महामहिम! कोई तरीका काम नहीं कर रहा है। प्रेशर तेज है। छेद चिकना है, इसलिए कोई तरकीब काम नहीं कर रही है। आप ही कुछ सुझाइए।"

वह क्या सुझाए! पानी घुटने छूने लगा था। वह रिकॉर्ड रूम की ओर भागा। कम-से-कम शोध-पत्रों की हार्ड डिस्क तो सुरक्षित कर ले! मगर भय से थमना पड़ा। अश्वत्थामा आ गया था। वह अब नहीं छोड़ेगा। वह दूसरे रास्ते की ओर भागा और लिफ्ट में घुस गया। लिफ्ट ऊपर जाने लगी। सब तबाह हो गया था। उसने गलत निर्णय लिये थे। उसे उन लोगों को आयुधशाला तक नहीं लाना चाहिए था! लिफ्ट ऊपर जाकर रुकी तो वह डरता हुआ-सा बाहर आया। उसने सुरक्षा गार्डों का अपने पास घेरा बना लिया और वहां से अपनी गाड़ी की ओर बढ़ा।

सामने ही सांग-सी और उसके साथी खड़े थे। वह भय से ठिठक गया और अपने गार्डों को गोली चलाने का आदेश दे दिया, पर तब तक बाण-वर्षा होने लगी थी।

अश्वत्थामा ने सम्राट किम-जोंग-उन को लक्ष्य बनाकर बाण छोड़ा था कि सांग-सी उसके सामने आ गया। बाण ने उसके वृक्ष को भेदा तो वह गिर पड़ा।

"महान योद्धा! इसे इतना सरल दंड मत दो।" सांग-सी ने कहा—"इसे क्षमा का दंड दो! यह हमारा सम्राट है और सम्राट की प्राणरक्षा हमारा नागरिक दायित्व!"

अश्वत्थामा दौड़कर उसके समीप आए और सांग-सी के वक्ष से बाण खींच लिया। उन्होंने तत्काल मंत्र बुदबुदाते हुए उसके घाव पर हाथ रखा तो सांग-सी को अपार शांति का अनुभव हुआ।

"दुष्ट सम्राट!" परशुराम अपने क्रोध पर काबू न रख सके—"तूने एक संन्यासी की मृत्यु का कारण उत्पन्न किया। जा मेरा श्राप है कि तू रुग्ण, कुष्ठ रोगी होकर मृत्यु को प्राप्त होगा।"

सम्राट कंपित होकर वहीं धम्म से बैठ गया।

"यही इसका उचित दंड है द्रोणपुत्र! मृत्यु को यह उपहार समझता है और जीवन को खेल! अब अपने जीवन की नारकीय पीड़ा से इसे ज्ञात होगा कि जीवन में शांति का क्या महत्त्व है।"

Baba Novels Chat Room

"क्षमा, क्षमा! ऐसा कठोर दंड न दें भगवन्! आप दया के सागर हैं।" सम्राट गिड़गिड़ाया।

"अहंकारी और हठधर्मी! जो परपीड़ा का आनंद लेते हैं, उन्हें इस पीड़ा का अनुभव होना चाहिए। हम फिर भी तुझे प्रायश्चित्त का अवसर देंगे।"

सम्राट आशापूर्ण नेत्रों से उन्हें देखने लगा।

"जिस दिन तुम्हारे मन से विकार समाप्त हो जाएंगे, तुम स्वस्थ हो जाओगे।"

उसी समय लिफ्ट के रास्ते से सैयादी, गियागो और अन्य कई लोग निकले। सैयादी हिचकिचाकर वापस लिफ्ट में भागा तो गियागो ने भी ऐसा ही किया, मगर जब तक लिफ्ट का दरवाजा बंद होता, तब तक महाबली योद्धा ने बाण-वर्षा कर दी थी और लिफ्ट ही उनका मृत्युघर बन गई।

सम्राट को एकाएक अपने शरीर में विचित्र से परिवर्तन का आभास हो रहा था। यह अवश्य श्राप के कारण था। वह ऐसी जिंदगी जीने का इच्छुक नहीं था। अत: उसने अपना पिस्तौल निकाला और कनपटी से सटाया।

"व्यर्थ प्रयास कर रहे हो!" भगवान परशुराम बोले—"तुम्हारी आयु अभी शेष है, अन्यथा द्रोणपुत्र ही तुम्हारा वध कर देते। नियति के नियम में हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता।"

सम्राट ने ट्रेगर दबा दिया था, पर गोली नहीं चली। उसने हकबकाकर पिस्तौल को देखा तो गोली 'धांय' के साथ निकलकर उसकी ठोड़ी को ले उड़ी और वह दर्द से दोहरा हो गया। ठोड़ी से खून की धार बह निकली। वहां बहुत से लोग थे, जो आयुधशाला के ऊपरी भाग में काम करते थे। वे अपने सम्राट की इस हालत पर सहम गए।

"इसे उपचार हेतु ले जाओ!" परशुराम ने कहा तो कई लोगों ने मांस के उस भारी लोथड़े को बड़ी मुश्किल से उठाया और उसकी गाड़ी में ले जाकर पटका।

"द्रोणपुत्र! सात विद्वान वैज्ञानिक अभी हमारे उद्‌देश्य की बाधा हैं।"

"गुरुदेव! कहां हैं? बाहर तो वे नहीं आए।"

"वे एक सुरक्षित स्थान पर हैं, जो इसी भूमिगत तलघर में है। संयोग से उनका निवास जलस्तर से थोड़ा ऊपर है और तुम्हारे बाण उसमें छिद्र नहीं कर सके होंगे।"

अश्वत्थामा ने दिशा और दूरी पूछी और वहां प्रवेश के लिए तुरंत तत्पर हो गए।

"द्रोणपुत्र! उनका वध नहीं करना।" परशुराम बोले—"योग्यता का सम्मान करना।"

Baba Novels Chat Room

अश्वत्थामा ने स्वीकृति में सिर हिलाया। वे नीचे पहुंचे तो पानी उनके कंधों तक आ गया था, पर वे तो पानी के अंदर यात्रा के अभ्यस्त थे। उन्होंने उस स्थान को खोज लिया और एक भीषण मुष्टि प्रहार से इस्पात की दीवार तोड़ दी। अंदर बड़ी प्रयोगशाला थी और वहां वे सात वैज्ञानिक विद्यमान थे जिन्होंने प्रक्षेपास्त्र निर्मित किए थे। अश्वत्थामा को वहां देखकर वे सभी चौंक पड़े थे।

"विद्वजनो! यह स्थान जलमग्न हो रहा है। यहां जलप्रलय आ गई है। आप सभी अपना जीवन बचाएं और मेरे साथ चलें।" अश्वत्थामा ने कहा।

"आप कौन हैं? आप इस युग के तो नहीं लगते!" एक वृद्ध वैज्ञानिक ने प्रश्न किया।

"जल यहां आ गया है, आप देख ही रहे हैं। प्रश्न आवश्यक नहीं, प्राणरक्षा आवश्यक है।"

सातों वैज्ञानिक पानी के रैले को बढ़ता हुआ देख रहे थे। अश्वत्थामा ने बांहें ऊर्ध्वाधार फैला दीं और उन्हें उन पर बैठने का संकेत किया। आश्चर्य में पड़े सातों वैज्ञानिक अश्वत्थामा की बांहों में झूल-से गए। उन्हें प्रतीत हुआ कि उनके सिर से कोई ऊर्जा नीचे उतरती जा रही है। अश्वत्थामा ने उन्हें बाहर लाकर छोड़ा तो वे सभी विस्मित थे।

"यह कौन-सा स्थान है?" सातों एक साथ बोले।

परशुराम मुस्कराए।

अश्वत्थामा ने अपना काम कर दिया था। उनकी स्मृति से उनका कार्य-व्यवसाय निकल गया था।

Baba Novels Chat Room

55

पौराणिक और आधुनिक युग की मित्रता

"महायोद्धा! क्या आप अपने इस अभियान का वर्णन करके मुझे उसे लिपिबद्ध करने की अनुमति देंगे?" प्रभास ने आशा भरे स्वर में कहा।

"अवश्य मित्र!" अश्वत्थामा ने धीर-गंभीर स्वर में कहा—"हम चाहते हैं कि स्वेच्छाचारी शासकों तक यह संदेश पहुंचे कि यदि उन्होंने शक्ति के अहंकार में मानवता को पीड़ित किया तो हम 'ब्रह्मांड के सप्त रक्षक' उसे दंडित करेंगे। हम नियति द्वारा नियुक्त शांति की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

"आपका यह संदेश संसार-भर में पहुंचेगा महायोद्धा!" प्रभास ने डायरी और पेन निकाल लिया और अश्वत्थामा की ओर देखने लगा। महाबली अश्वत्थामा और पत्रकार प्रभास के रूप में पौराणिक व आधुनिक युग की जैसे मित्रता हो गई थी।

अश्वत्थामा ने शिवद्रोही का विनाश करने के पश्चात् अपने निवास पर आकर देखा तो वहां शिवलिंग स्थापित था। उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

अब उन्हें पूजा-अर्चना हेतु कहीं जाने की आवश्यकता नहीं थी। यह काम अवश्य उस आस्थावान युवक का था। जिसकी उनसे दो बार भेंट हो

Baba Novels Chat Room

चुकी थी। उन्होंने भगवान वेदव्यास से मानसिक संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया, जो शीघ्र ही हुआ।

"प्रणाम भगवन्!" अश्वत्थामा पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा से बोले—"आपके आदेश का पालन हुआ!"

"आयुष्मान भव द्रोणपुत्र! तुमसे यही आशा थी। नियति ने तुम्हारा उचित चुनाव किया। तुमने क्रोध पर संयम रखकर जिस प्रकार उद्देश्य को पूर्ण किया, वह महत्त्वपूर्ण था।"

"सब आपके उचित मार्गदर्शन और भगवान परशुराम एवं रामभक्त हनुमान की कृपा से ही संभव हुआ भगवन्! आधुनिक मानव के विषय में भगवान परशुराम अधिक जानते हैं। उन्होंने ही मुझे लक्ष्य तक पहुंचने में सहायता की। भगवन्, मेरा भी एक कलिमानव मित्र है जिसने उपहार में मेरे इष्ट की पूजा को अति सरल बना दिया।"

"वह निमित्त-मात्र बना द्रोणपुत्र! वास्तव में यह उस व्यक्ति का विचार था, जो बहुत समय पूर्व अचानक ही तुम्हारी गुफा में जा पहुंचा था। उसे तुमने शाप दिया था कि यदि वह तुम्हारे विषय में कभी किसी को कुछ भी बताएगा तो उसकी वाणी और नेत्र-ज्योति चली जाएगी। उसने ही तुम्हारे उस मित्र प्रभास को तुम्हारे निवास स्थान के विषय में बताया था जिसके कारण प्रभास वहां शिवलिंग की स्थापना कर सका, लेकिन तुम्हारे शाप के कारण उस व्यक्ति की वाणी और ज्योति चली गई द्रोणपुत्र!"

"भगवन्, उस व्यक्ति ने मेरी पूजा सरल करने हेतु वास्तव में मुझ पर उपकार किया है!" अश्वत्थामा ने गंभीरता से कहा—"कृपा करके उसे स्वस्थ करने का उपाय बताइए।"

"तुम्हारे पास अपार संकल्प की शक्ति है। कुछ तप उसके नाम से संकल्प करोगे तो अवश्य वह स्वस्थ हो जाएगा। हम तुम्हारे कार्य से प्रसन्न हैं। कोई वरदान मांग सकते हो।"

"आपका स्नेह ही मेरा वरदान है। बस, मैं चाहता हूं कि आप मेरा मार्गदर्शन करते रहें।"

"कल्याणं अस्तु! द्रोणपुत्र! हम तुम्हें ऐसी शक्ति प्रदान करते हैं कि तुम जब चाहो अदृश्य रहो, जब चाहो सदृश। इससे आधुनिक मानव के बीच आने-जाने में तुम्हें किसी प्रकार की समस्या नहीं होगी और तुम मानव कल्याण करते रहोगे।"

"जो आज्ञा भगवन्!" अश्वत्थामा ने नेत्र बंद किए तो जैसे उनके अंदर नई ऊर्जा का संचार हुआ।

Baba Novels Chat Room

"द्रोणपुत्र! संकल्पित ऊर्जा का संचय करो और उस उपकारकर्ता के हित हेतु उसका उपयोग करो।"

अश्वत्थामा ने ऐसा ही किया। संकल्पित ऊर्जा का संचय करने के लिए उन्होंने अपने नेत्र बंद कर लिये।

इसी बीच उनका महर्षि वेदव्यास से संपर्क विच्छेद हो गया।

अश्वत्थामा ने संकल्प करके तप-ऊर्जा का कुछ भाग उस व्यक्ति को प्रदान किया जिसने उनकी पूजा को सरल करने का विचार दिया था और परमपिता परमात्मा से उसके पूर्ण स्वस्थ होने की कामना की।

अब उनकी पूजा का भी समय हो चला था।

पूजा हेतु अब अश्वत्थामा को कहीं जाने की आवश्यकता नहीं थी। झरने में स्नान किया। फूल-पत्र तोड़े और जल भर लाए।

अश्वत्थामा का कार्य अब कितना सरल हो गया था। वे सोच रहे थे कि समय निकालकर एक दिन वे उस व्यक्ति से अवश्य मिलेंगे और उस युवक प्रभास से भी!

चित्त को शांत एवं एकाग्र करके उन्होंने पूजा आरंभ कर दी-"ॐ नमः शिवाय।"

Baba Novels Chat Room

प्रभास दिल्ली लौटने से पहले इंस्पेक्टर राठी से मिलने पहुंचा, जहां बड़ी गर्मजोशी से उससे मिला और तत्काल उसके लिए कोल्ड ड्रिंक मंगाई।

"क्या बात है?" प्रभास ने राठी के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा-"बड़े खुश नजर आ रहे हो?"

"खुशी की बात ही है। मुझे प्रमोशन मिला है।" राठी ने कहा-"पूरे स्टाफ को प्रमोशन मिला है। आई.जी. साहब ने खुद मेरी पीठ थपथपाई कि मैंने बड़ी कुशलता से विषम परिस्थितियों में शांति बनाए रखने में सफलता प्राप्त की है। वास्तव में यह तुम्हारे कारण मिला प्रमोशन है। अब तुम कल जाना, क्योंकि मेरे स्टाफ ने एक छोटी-सी पार्टी रखी है।"

"मुबारक हो इंस्पेक्टर साहब!" प्रभास ने बधाई दी-"काम तो आपने वाकई शानदार किया है।"

"अपने मित्र खोजिया और एमेले को भी लेते आना।"

"खोजिया तो नहीं आ सकता। उस बेचारे पर तो किस्मत की ऐसी मार पड़ी है कि अचानक उसकी नजर और आवाज दोनों ही चली गईं।"

"अरे...ऐसा कैसे! अच्छा-भला तो था?"

"होम करते-करते हाथ जल गए। आशा है, शीघ्र ही ठीक हो जाएगा। हॉस्पिटल में है। अच्छा, अब चलता हूं। जब आज और रुकना है तो कुछ और काम देखता हूं।"

प्रभास वहां से चला आया और हॉस्पिटल पहुंचा। वहां उसे एमेले उदास बैठा हुआ मिला।

"क्या हुआ?" प्रभास ने उसके चेहरे पर दृष्टिपात करते हुए पूछा—"इतना उदास क्यों है?"

"एक गम खाए जा रहा है। आप तो चले जाओगे। खोजिया की देखभाल कौन करेगा?"

"अबे तू करेगा!" प्रभास ने सांत्वनात्मक ढंग से निर्देश देते हुए कहा—"तनख्वाह मिलेगी तुझे हर महीने।"

"कितनी! लाख-दो लाख? चौबीस घंटे की ड्यूटी। जैसी बीवी को देनी होती है।"

"पुण्य भी तो कितना मिलेगा तुझे! अगला जन्म सुधर जाएगा। वैसे भगवान ने चाहा तो खोजिया जिस करिश्मे से इस हाल में पहुंचा है, उसी से ठीक भी हो जाएगा। मैंने एक बड़े वैद्य का नाम सुना है। अभी उसके ही पास जा रहा हूं। सुबह तक आ जाऊंगा।"

"आप रात्रिचर होते जा रहे हैं।" एमेले हंसकर बोला—"गलत आदत पड़ती जा रही है।"

प्रभास हंसा और बाहर आ गया। वह फिर गुफा में जाना चाहता था और जानना चाहता था कि अश्वत्थामा वापस आया है कि नहीं।

उत्तर कोरिया से जैसी खबरें आ रही थीं, उनकी पुष्टि इसी तरीके से हो सकती थी। वह खोजिया की जीप लेकर उसी समय निकल पड़ा था और अश्वत्थामा की गुफा में आ गया था। वहां कोई नहीं था यानी अश्वत्थामा अभी नहीं आया था।

प्रभास झरने की दाहिनी दिशा में जा बैठा और न जाने कब उसे नींद आ गई। उसकी आंखें खुलीं तो वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने मोबाइल में समय देखा, तब साढ़े चार बज रहे थे। वह उठकर गुफा के अंदर आया तो उसकी खुशी का ठिकाना न था, किंतु वह ठिठककर रुक गया।

अश्वत्थामा लीन होकर पूजा कर रहा था और **'ॐ नमः शिवाय'** की पवित्र गूंज से गुफा भक्तिमय हो गई थी।

Baba Novels Chat Room

प्रभास पूरी श्रद्धा से उसके पीछे जा बैठा और नेत्र बंद करके उसके स्वर में स्वर मिलाया।

आज वह एक महान पौराणिक योद्धा के समीप बैठा पूजा कर रहा था और यह अनुभूति उसे रोमांचित कर रही थी। जब पूजा संपन्न हुई तो भी प्रभास मंत्र उच्चारण करता रहा।

महायोद्धा ने चौंककर प्रभास की ओर देखा और वात्सल्य से उसके सिर पर हाथ रखा। ऐसा करते ही जैसे कोई दिव्य ऊर्जा प्रभास के शरीर में प्रवेश कर गई। उसे अपने शरीर में झनझनाहट का अनुभव हो रहा था। कई क्षण पश्चात् वह सामान्य हुआ।

"द्रोणपुत्र! मेरा प्रणाम स्वीकार करें।" प्रभास अश्वत्थामा के चरणों में नत हो गया।

"आयुष्मान भव मित्र! हम तुम्हारी मित्रता से अति प्रसन्न हुए। तुमने हमारे हृदय में कलिमानव के प्रति प्रेम उत्पन्न कर दिया। तुमने जिस प्रकार हमारी पूजा को सरल करने का अद्भुत कार्य किया है, वह न केवल हमें प्रसन्न कर गया, वरन् उससे हम अभिभूत भी हो गए।"

"आपने मुझे अपना मित्र कहा महावीर! मैं कृतार्थ हुआ। मित्र होने के नाते मैं आपसे एक आशा रखता हूं। मेरा एक मित्र, जो बरसों पूर्व अपनी खोजी प्रवृत्ति के कारण आपकी गुफा में आ गया था और श्रापित हुआ था...।"

"हमें उसके विषय में ज्ञात हो गया है मित्र! उसकी श्रद्धा-भक्ति, त्याग और उदारता से हम प्रसन्न हैं। वह स्वस्थ हो जाएगा और शीघ्र ही हम उससे भेंट भी करेंगे।"

"आप महान हैं द्रोणपुत्र! मेरा आपसे एक प्रश्न है। क्या आप समुद्र पार कहीं गए थे?"

"हां मित्र! महर्षि वेदव्यास के मार्गदर्शन और नियति के आदेश पर हम पश्चिम में एक स्वेच्छाचारी शासक को दंडित करने गए थे जिसने विध्वंसक प्रक्षेपास्त्रों के भंडार से विश्वशांति को संकट में डाल दिया था। वह नराधम, जिसने शिवालय ध्वस्त किया था और जो उसी अहंकारी सम्राट की शरण में था, उसे भी उसके पापों का दंड देने गए थे।"

"महायोद्धा! क्या आप अपने इस अभियान का वर्णन करके मुझे उसे लिपिबद्ध करने की अनुमति देंगे?" प्रभास ने आशा भरे स्वर में कहा।

"अवश्य मित्र!" अश्वत्थामा ने गंभीरता से कहा—"हम चाहते हैं कि स्वेच्छाचारी शासकों तक यह संदेश पहुंचे कि यदि उन्होंने शक्ति के अहंकार में

Baba Novels Chat Room

मानवता को पीड़ित किया तो हम 'ब्रह्मांड के सप्त रक्षक' उसे दंडित करेंगे। हम नियति द्वारा नियुक्त शांति की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

"आपका यह संदेश संसार-भर में पहुंचेगा महायोद्धा!" प्रभास ने डायरी और पेन निकाल लिया और अश्वत्थामा की ओर देखने लगा।

महाबली अश्वत्थामा अपने अभियान को बिंदुवार सुनाते रहे और प्रभास उसे शार्टहैंड में लिखता रहा। अब उसके पास बिना उत्तर कोरिया गए भी वहां घटे घटनाक्रम का लिखित व प्रामाणिक विवरण उपलब्ध था, जो उसके बॉस को खुश कर देने वाला था।

महाबली अश्वत्थामा और पत्रकार प्रभास के रूप में पौराणिक व आधुनिक युग की जैसे मित्रता हो गई थी।

Baba Novels Chat Room

56

'अश्वत्थामा का अभिशाप' के अमर पात्र

महायोद्धा अश्वत्थामा

महाभारत काल के अतुलनीय धनुर्धर, कौरव और पांडवों के गुरु आचार्य द्रोण का पुत्र अश्वत्थामा सप्त चिरंजीवियों में से एक हैं। परम शिवभक्त अश्वत्थामा अमरत्व के कारण इस युग में भी भटक रहे हैं। जनश्रुति के अनुसार, वे भारत के प्रांत मध्य प्रदेश में स्थित बुरहानपुर जिले के दुर्गम जंगल में खंडहर हो चुके असीरगढ़ के किले के प्राचीन शिव मंदिर में प्रतिदिन पूजा करने आते हैं। उन्हें देखने वाले कई लोगों की तरह-तरह की कहानियां भी ग्रामीण अंचल में फैली हुई हैं। सामाजिक जीवन से पूरी तरह विमुख, निरुद्देश्य अमरत्व को भोगते अश्वत्थामा के पास शिवभक्ति और अन्य छः चिरंजीवियों से यदा-कदा मानसिक वार्तालाप के अतिरिक्त कोई काम नहीं है। क्रोधमुक्त, निर्भय अश्वत्थामा के जीवन में तब उथल-पुथल मच जाती है, जब एक शिवद्रोही आतंकी महाकालेश्वर के मंदिर को बम विस्फोट से ध्वस्त कर उत्तर कोरिया के तानाशाह की शरण में जा छुपता है। तब क्रोध से भरे अश्वत्थामा उस शिवद्रोही को दंड देने निकल पड़ते हैं और तानाशाह सहित उस शिवद्रोही को दंडित करते हैं। इस शत्रुदमन अभिमान में

Baba Novels Chat Room

उनकी सहायता महाबली हनुमान और महर्षि परशुराम प्रत्यक्ष रूप से करते हैं और उनके मामा कृपाचार्य, पाताललोक के सम्राट बलि, लंकापति विभीषण व महर्षि वेदव्यास अप्रत्यक्ष रूप से। इसी अभिमान के साथ अश्वत्थामा का आधुनिक समाज से संपर्क स्थापित होता है और वे अपने निरुद्देश्य जीवन को एक उद्देश्य देने में सफल होते हैं।

रुद्रावतार हनुमान

महापराक्रमी रामभक्त हनुमान भगवान शिव के ग्यारहवें रुद्रावतार माने गए हैं। भक्ति और पराक्रम में सर्वश्रेष्ठ हनुमान भी भगवान श्रीराम की कृपा से राम-भक्तों के कल्याण हेतु धराधाम पर अमर चिरंजीवी के रूप में विद्यमान हैं। महाभारत के समय पांडुपुत्र भीम का अभिमान नष्ट करके वे उन्हें दर्शन देते हैं। संसार के कई द्वीपों में उनकी उपस्थिति के प्रमाण आज भी मिलते हैं। अश्वत्थामा जब शिवद्रोही सैयादी को दंड देने निकलते हैं तो हनुमान भी उनकी सहायता करते हैं।

Baba Novels Chat Room

महामुनि वेदव्यास

पौराणिक कथा के अनुसार, महामुनि पाराशर और मत्स्यगंधा सत्यवती का वह पुत्र जिसने समस्त वेद-वेदांग कंठस्थ कर लिये और द्वैपायन द्वीप में कठोर तपस्या करके अमरत्व प्राप्त किया, वेदव्यास के नाम से विख्यात हुए। उनके अमरत्व का उद्देश्य मृत्युलोक की नियत और सतत् गतिविधियों का निरीक्षण करते रहना और समय आने पर उनमें संतुलन बनाने हेतु योग शक्तियों द्वारा सहयोग करना है। सभी चिरंजीवी उन्हीं के दिशा-निर्देश के अनुसार सक्रिय होते हैं। पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त वेदव्यास सभी परिवर्तनों पर तीक्ष्ण दृष्टि रखते हैं।

इन्हीं महामुनि वेदव्यास ने निरुद्देश्य भटकते महाबली अश्वत्थामा को प्रेरित किया कि अब नियति उनकी सामाजिक सक्रियता का द्वार खोल रही है। प्रायश्चित्त,

तपश्चर्या और पराक्रम की त्रिगुण शक्ति से संपन्न अश्वत्थामा को शनैः शनैः कलियुग के मानव से सौहार्द्र स्थापित करने में महामुनि वेदव्यास की अहम भूमिका होती है। क्रोध पर विजय पा चुके अश्वत्थामा को महामुनि के इन शब्दों से प्रेरणा मिलती है कि पराक्रम कभी क्रोध रहित नहीं होना चाहिए और महावीर को कभी समाज से विरक्त नहीं होना चाहिए। धीरे-धीरे नियति चक्र अश्वत्थामा को वेदव्यास के मार्गदर्शन में एक ऐसे अभियान पर ले जाता है, जहां संसार को समाप्त कर देने की शक्तियां ऊर्जास्त्रों का संग्रहण करके महाविनाश की ओर बढ़ रही होती हैं।

भगवान परशुराम

महर्षि जमदग्नि के पराक्रमी पुत्र परशुराम में अपार विद्वता व पितृभक्ति थी। पिता के आदेश पर अपनी माता का शीश काट देने वाले परशुराम अत्यंत क्रोधी हैं। वे अपने पराक्रम से इक्कीस बार उन क्षत्रिय राजाओं का वध करते हैं, जो अन्याय व अत्याचार में लिप्त थे। सारंग नाम के दिव्य धनुष और भगवान शिव से प्राप्त विद्युदभि परशु से वे अजेय योद्धा थे और सभी वेद-शास्त्रों में पारंगत प्रकांड विद्वान भी थे। भगवान श्रीराम से जब उनका साक्षात्कार हुआ तो उन्होंने परशुराम को सृष्टिपर्यंत पृथ्वीलोक पर जन-कल्याण

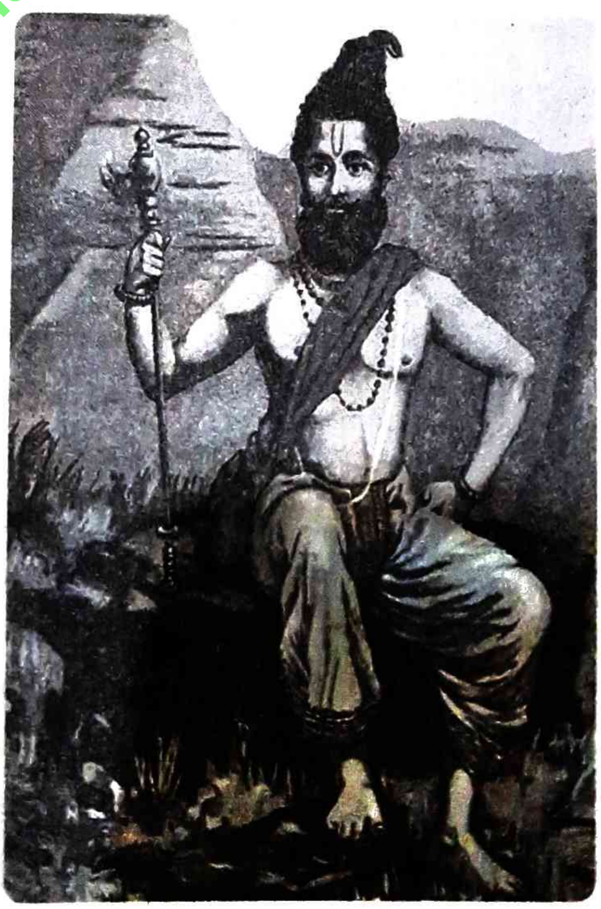

Baba Novels Chat Room

हेतु वास करने का निर्देश दिया। कालांतर में उन्होंने अपने पराक्रम और ज्ञान से जन-कल्याण के कार्य किए और फिर तथागत बुद्ध की अहिंसा से प्रेरणा लेकर शांतिपूर्वक बुद्धत्व के मार्गी बने। उनकी तपस्थली कोरिया प्रायद्वीप का उत्तर कोरिया था, जहां नियति एक विशेष उद्देश्य से उन्हें वहां पहुंचाती है। उत्तर कोरिया का तानाशाह सम्राट परमाणु विध्वंसकों का भंडारण करके संसार में अशांति फैलाना चाहता है, जबकि परशुराम शांति-समर्थक हैं। नियति-चक्र महाबली अश्वत्थामा को उत्तर कोरिया पहुंचाता है और परशुराम के सहयोग से वे परमाणु निरस्त्रीकरण का कार्य संपन्न करते हैं।

Baba Novels Chat Room

राम-भक्त विभीषण

राक्षसराज रावण के अनुज विभीषण प्रकांड विद्वान, न्यायप्रिय व रामभक्त हैं। जब रावण माता जानकी का हरण कर लाता है, तब विभीषण उसे धर्मोपदेश देते हुए समझाते हैं कि श्रीराम भगवान श्रीहरि के अवतार हैं और उनसे द्रोह करना कुल के विनाश का मार्ग तय करना है। रावण उन्हें लात मारकर लंका से बहिष्कृत कर देता है और वे श्रीराम के शरणागत हो जाते हैं। राम-रावण युद्ध में रावण मृत्यु को प्राप्त होता है और भगवान श्रीराम, प्रिय विभीषण को लंका का राजा बना देते हैं। विभीषण लंका का शासन संभालते हैं और अपने भाई परम वैज्ञानिक रावण द्वारा आविष्कृत विध्वंसा नामक विनाशकारी ऊर्जास्त्र को संभालते हैं, परंतु वह विध्वंसा रसायन संयोगवश फैलकर समुद्र में मिल जाता है और विनाशकारी शक्तियों के हाथ लग जाता है। विभीषण वेदव्यास से अपनी चिंता व्यक्त करते हैं तो वे आश्वस्त करते हैं कि अब सप्त चिरंजीवियों द्वारा संसार में शांति और व्यवस्था की स्थापना हेतु विशेष अभियान शुरू किया जाएगा जिसमें महाबली अश्वत्थामा के नेतृत्व में सप्त चिरंजीवी अपना योगदान देंगे। विभीषण आधुनिक संसार और समाज के विषय में नई-नई बातें सुनकर चमत्कृत रह जाते हैं और स्वयं को उनसे जुड़ने की उत्सुकता दिखाते हैं, तब वेदव्यास उन्हें अनुकूलन का उपदेश देते हैं, क्योंकि आधुनिक मानव के साथ रहने के लिए पौराणिक पुरुष विभीषण अभी अनुकूलित नहीं थे।

कुलगुरु कृपाचार्य

कुरुवंश के कुलगुरु कृपाचार्य महर्षि शरद्वान के पुत्र थे जिनका पालन-पोषण महाराज शांतनु ने किया और इन्हें अपना कुलगुरु नियुक्त किया। धनुर्विद्या में निपुण कृपाचार्य ने राजनिष्ठा का पालन किया और कौरवों की ओर से युद्ध लड़ा। कृष्णप्रिय होने से इन्हें भी अमरत्व प्राप्त हुआ। ये अपनी एकनिष्ठ भक्ति में लीन समाज से विरक्त होकर हिमालय पर तपस्यारत रहे। कालांतर में कलियुग में वेदव्यास के निर्देशानुसार ये भी जन-कल्याण और विश्व-शांति के लिए समाज के संपर्क में आए और अपने पराक्रम से दुष्ट शक्तियों का विनाश किया।

दैत्यराज बलि

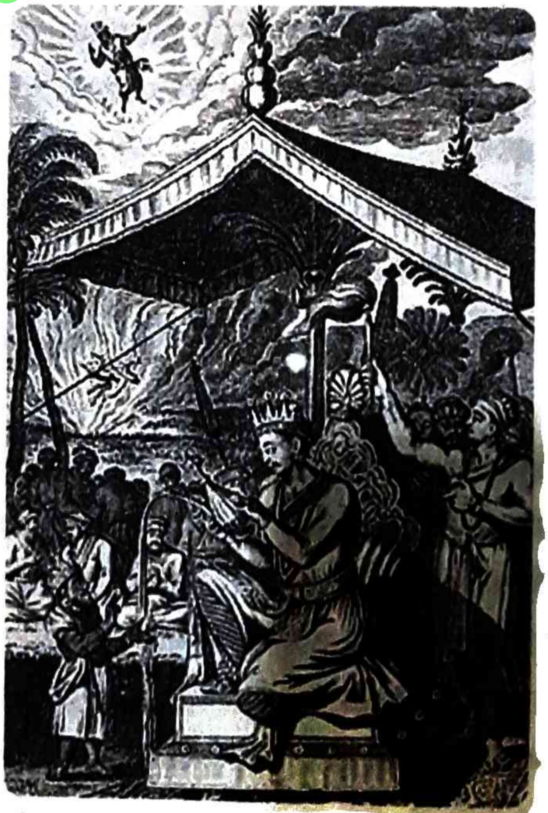

दैत्यवंश के महापराक्रमी विष्णु-भक्त सम्राट बलि सप्त चिरंजीवियों में सबसे पुरातन हैं। दान, दया और पराक्रम में श्रेष्ठ बलि ने कई बार देवताओं को परास्त करके तीनों लोकों में दैत्यकुल की ध्वजा फहराई। देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने बौना वामन का अवतार लिया और छलपूर्वक राजा बलि का तेजोहरण कर लिया। उनकी दानशीलता पर प्रसन्न होकर श्रीहरि ने उन्हें पाताललोक में अनंतकाल तक राज्य करने का अधिकार प्रदान किया। प्रत्येक कल्प में एक बार सप्त चिरंजीवियों की होने वाली बैठक के अधिपति वही होते हैं। कलियुग में यह बैठक हुई तो वेदव्यास ने सम्राट बलि को कलि-प्रभाव से पीड़ित मानवता का उद्धार करने हेतु उनसे विनय की और इस प्रकार सप्त चिरंजीवी विश्वरक्षक के रूप में एकजुट हुए।

Baba Novels Chat Room

अन्य प्रमुख पात्र

अश्वत्थामा का मित्र प्रभास

आधुनिक युग का शिक्षित, समझदार और जोशीला पत्रकार प्रभास दिल्ली के एक नए, कम प्रसिद्ध न्यूज चैनल सेठी-24 में कार्यरत है। उसका एंप्लॉयर प्रफुल्ल सेठी उसे अश्वत्थामा की स्टोरी पर काम करने के लिए बुरहानपुर भेजता है, जो नक्सलाइट एरिया है। यहां प्रभास नक्सलवाद से जूझता है और अपनी स्टोरी पर काम करते हुए अश्वत्थामा से भी साक्षात्कार करता है। दोनों के बीच मित्रता हो जाती है, जो नवीन व प्राचीन युग का जबरदस्त समन्वय है।

नक्सली कमांडर दहलावर

मध्यप्रदेश के बीहड़ों में फैले नक्सलाइट का खतरनाक मुखिया दहलावर पैसे के लिए कुछ भी कर सकता है। नक्सलवाद को मोडिफाई करके बिजनेस बना लेने वाला दहलावर आतंकवादी संगठनों से भी सांठ-गांठ करके सैयादी नाम के कुख्यात अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी को आतंक फैलाने की ट्रेनिंग लेने के लिए बुला लेता है। वह अपनी खतरनाक योजना से हिंदू-मुस्लिम दंगा फैलाने के लिए बुरहानपुर के प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर को बारूद से ध्वस्त कर देता है और अश्वत्थामा का कोपभाजन बनता है। इसी बीच दहलावर भी कानून का मोस्ट वांटेड बन जाता है और वह प्रभास के जरिए सूत्र देने पर पुलिस द्वारा पकड़ लिया जाता है। अंततः बीहड़ का स्वघोषित बादशाह अपने अंजाम को पहुंचता है।

प्रभास का सहायक खोजिया

एक यायावर पुरातत्ववेत्ता जो अपनी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के चलते अश्वत्थामा के शांत व एकांत जीवन में हस्तक्षेप कर देता है और उसके क्रोध का शिकार होकर मौत की ओर बढ़ता है। क्षमा-याचना करने पर दयालु अश्वत्थामा उसे जीवनदान तो दे देता है, पर उसे श्राप भी देता है कि वह कभी किसी के सामने उसका रहस्य खोलेगा तो दृष्टि और वाणी से बाधित हो जाएगा। खोजिया इस श्राप के साथ जीता रहता है। जब प्रभास उसकी जिदंगी में आता है तो खोजिया की जिंदगी में उथल-पुथल हो जाती है और उसे अश्वत्थामा के अभिशाप का शिकार बनना पड़ता है।

खोजिया का शागिर्द एमेले

मोहन लाल अकेला अर्थात् एम.एल. ए., स्वयं को 'एमेले' लिखना और कहलवाना पसंद करता है। वह एक सड़कछाप तुकधारी कवि है, जो दीवारों पर बेतुकी

Baba Novels Chat Room

कविताएं लिखता है और लोगों से मार खाता है। काम के नाम पर कुछ नहीं करनेवाला एमेले जब भूखा मरने लगता है तो खोजिया का शागिर्द बन जाता है। दोनों छोटी-मोटी ठगी करने लगते हैं, पर जब प्रभास उनकी ठगी का शिकार होता है तो एमेले और खोजिया दोनों का जीवन बदल जाता है। भावुक हृदय एमेले कथानक का सबसे मजेदार पात्र है।

उत्तर कोरिया का तानाशाह किम-जोंग-उन

सम्राट किम-जोंग-उन अपने देश में अपने बनाए नियम-कानून लागू करता है। उत्तर कोरिया को संसार का सबसे शक्तिशाली देश बनाकर वह संसार पर शासन करने की इच्छा रखता है। इसी कारण वह परमाणु अस्त्रों का भंडारण करके अति विध्वंसक हाइड्रोजन बम का परीक्षण करता है और विश्व को भयभीत कर देता है। उसका दुर्भाग्य तब शुरू होता है, जब वह भारत में बम विस्फोट करके भागे अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी सैयादी को शरण देता है और अश्वत्थामा के कहर का शिकार बनता है।

विद्रोही नेता सांग-सी-चिन

तानाशाह किम-जोंग-उन की ज्यादतियों से तंग सांग-सी-चिन अपने देश की जनता को शांति और सुरक्षा दिलाने के लिए प्रतिबद्ध विद्रोही नेता है। वह रक्तपात से जुल्मी शासन का अंत करना चाहता है, पर असफल रहता है। इसी बीच उसका साक्षात्कार एक तेजस्वी बौद्ध भिक्षु से होता है, जो वास्तव में सप्त चिरंजीवियों में से एक महर्षि परशुराम होते हैं। वे उसे शांतिपूर्वक विद्रोह करने का ऐसा मार्ग सुझाते हैं, जो अहिंसा के आंदोलन से प्रेरित है। सांग-सी इसी शांति-आंदोलन से तानाशाह की नींद हराम कर देता है।

डेस्ट्रॉय स्क्वायड के चीफ डियागो-गियागो बंधु

डेस्ट्रॉय स्क्वायड नाम की वैश्विक संस्था के चीफ दो सगे भाई, जो संसार के किसी भी देश में बड़े प्रोजेक्ट्स और नरसंहार का कॉन्ट्रेक्ट लेते हैं। भारत की बुलेट ट्रेन परियोजना से जले-फुंके पाकिस्तानी आतंकवादी हाफिज सईद से वे इस प्रोजेक्ट को ध्वस्त करने का कॉन्ट्रेक्ट ले लेते हैं। डियागो इसके लिए तानाशाह किम-जोंग-उन से विस्फोटक खरीदने जाता है और गियागो भारत व जापान में तैयारी करता है। दुर्भाग्य से प्रभास के हस्तक्षेप से दोनों भाइयों की योजना ही असफल नहीं होती, बल्कि जिंदगी भी खत्म हो जाती है।

Baba Novels Chat Room

एम.आई. राजस्वी

उ.प्र. हिंदी संस्थान से सम्मानित लेखक

Baba Novels Chat Room

लेखक के बारे में

2 जून, 1967 को उत्तर प्रदेश के ग्राम लांक, वर्तमान जिला शामली (तत्कालीन मुजफ्फर नगर) में जन्मे एम.आई. राजस्वी ने विद्यालयी जीवन से ही लेखन कार्य आरंभ कर दिया था। इनकी सर्वप्रथम लिखी गई कहानी 'प्रतिशोध की ज्वाला' बाद में **'आग का दरिया'** शीर्षक से 'गृहनंदिनी' और 'हरियाणा हैरिटेज' में प्रकाशित हुई।

इतिहास में एम.ए. एम.आई. राजस्वी की भारत के स्वर्णिम अतीत, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत में गहन रुचि है। यही कारण है कि इनकी 100 से अधिक लिखी गई पुस्तकों में से लगभग 70 पुस्तकें ऐतिहासिक–पौराणिक पृष्ठभूमि, चरित्रों एवं घटनाओं पर आधारित हैं। गंभीर प्रकृति के पत्रकार होने के कारण इनकी पत्रकारिता के साथ ही इनके लेखन एवं संपादन में तथ्यपरक विश्लेषण, गहन विचारशीलता और तर्कसंगत आकलन के दर्शन होते हैं।

दिल्ली प्रेस की पत्रिका **'गृहशोभा'** के अलावा **'शुभ इंडिया'**, **'हरियाणा हैरिटेज'** **'गृहनंदिनी'** और देश के कई प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थानों में राजस्वी ने संपादन एवं लेखन कार्य किया है। इन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा वर्ष 2017 के पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

द्रोणपुत्र अश्वत्थामा के मस्तक से मणि निकालकर भगवान श्रीकृष्ण ने उसके घाव को अनंतकाल तक रिसते रहने का अभिशाप दिया था। इस अभिशाप के फलस्वरूप द्वापरयुग के बाद कलियुग की कई सहस्राब्दियां बीत जाने पर आज भी अश्वत्थामा पृथ्वी पर भटक रहा है। अभी तक न तो श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए अभिशाप का अंत हुआ और न ही अश्वत्थामा के घाव और उसके जीवन का।

- ऐसा कहा जाता है कि भगवान जो भी करते हैं, उसमें कहीं-न-कहीं जग का कल्याण छुपा होता है, तभी तो द्वापरयुग में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया 'अश्वत्थामा का अभिशाप' कलियुग में 'ब्रह्मांड के रक्षक' के रूप में बदल गया।
- महाभारत के [illegible] 'अश्वत्थामा के अभिशाप' की यह लघुकथा कलियुग में [illegible]' वाली महागाथा के रूप में ऐसी पतित-पावन प्रवाहिनी [illegible] जिसमें पतितों के पापों का अंत भी है तो पावनों के पुण्यों का प्र[illegible]।
- राष्ट्रीय स्तर पर भारत में आतंकवाद और नक्सलवाद तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्तर कोरिया जैसे तानाशाही राष्ट्रों के भीषण नर-संहारक परमाणु प्रक्षेपास्त्रों की जटिल समस्या का जब संसार के पास कोई समाधान नहीं था...तो समाधान की किरण प्रकट हुई महाभारत के महायोद्धा अश्वत्थामा के नेतृत्व में ब्रह्मांड के अमर सप्त रक्षकों के अस्तित्व से...मगर कैसे?

अश्वत्थामा और ब्रह्मांड के अमर सप्त रक्षकों के संबंध में प्रश्न अनेक हैं, किंतु सबका उत्तर एक है, प्रस्तुत पुस्तक- 'अश्वत्थामा का अभिशाप'।

Baba Novels Chat Room

FiNGERPRINT!
ISBN 978-93-8943-266-4
Fiction
9 789389 432664
00019900 US$ 6.99
www.fingerprintpublishing.com